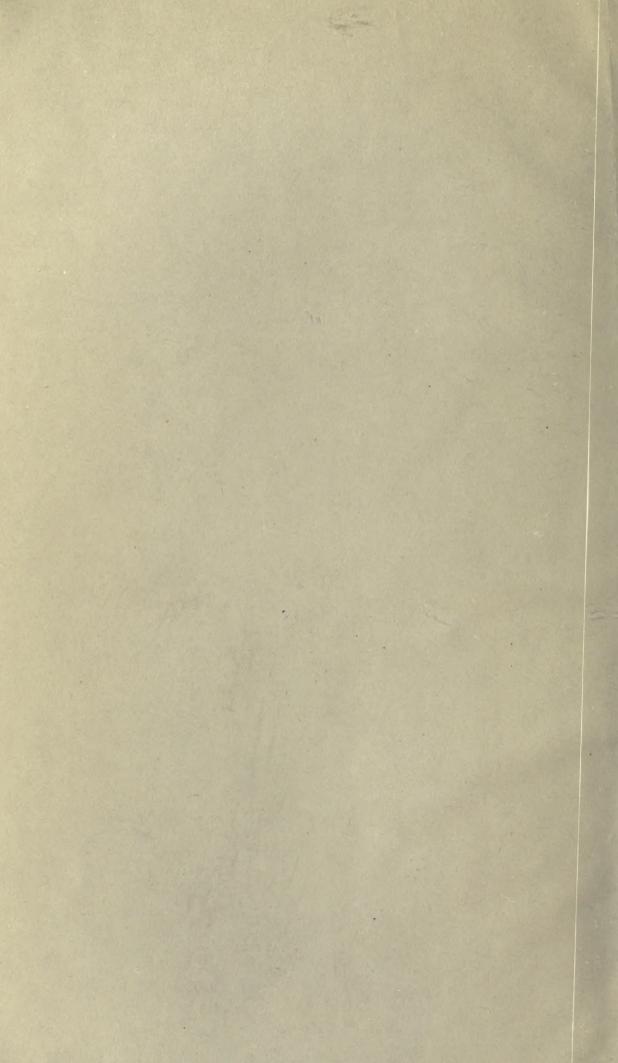


Digitized by the Internet Archive in 2007 with funding from Microsoft Corporation

http://www.archive.org/details/descriptivecatal13madruoft



OF THE

SANSKRIT MANUSCRIPTS

IN THE

GOVERNMENT ORIENTAL MANUSCRIPTS LIBRARY, MADRAS.

BY

M. RANGACHARYA, M.A., RAO BAHADUR.

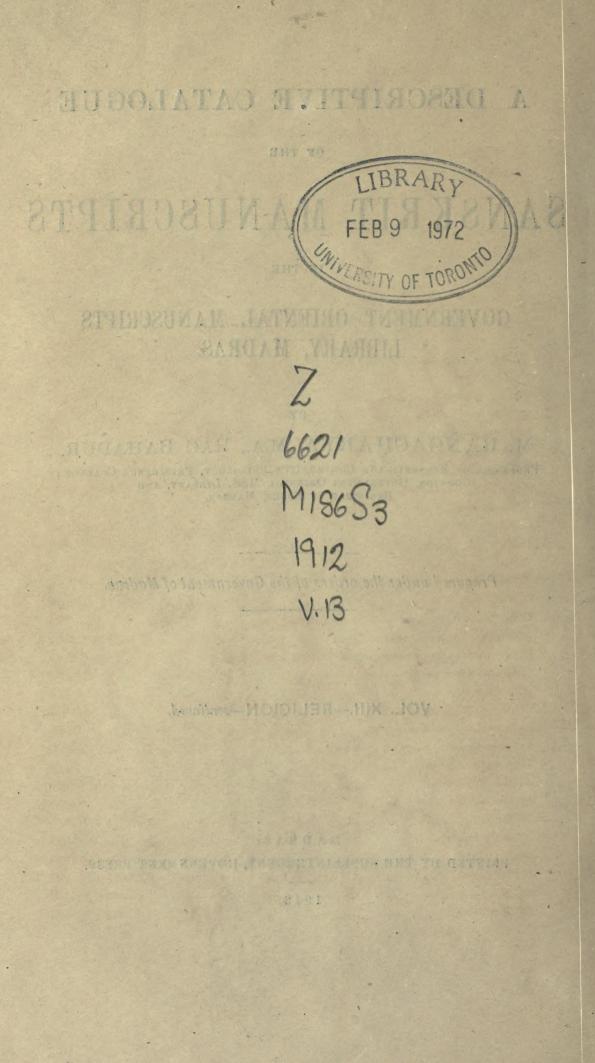
PROFESSOR OF SANSERIT AND COMPARATIVE PHILOLOGY, PRESIDENCY COLLEGE; CURATOR, GOVERNMENT OBIENTAL MSS. LIBRARY, AND REGISTRAR OF BOOKS, MADRAS.

Prepared under the orders of the Government of Madras.

VOL. XIII.-RELIGION-continued.

M A D R A S : PRINTED BY THE SUPERINTENDENT, GOVERNMENT PRESS.

1912.



.STRETKOO

(housilies) BABTRAM-S

vi

in wound if i

CLASS VIII.

RELIGION—(continued). 5.—MANTRAS (continued).

| THE - WARD - and - For | | | | | | | Number. |
|----------------------------|--------|-------|-----------|----------|-------------|--------|--------------|
| Grahabandhanamantra | | | | | | | 6267 |
| Candagarudamantra | | | | | | | 6268 |
| Caņdamātangimantra | ' | | | | | | 6269 to 6271 |
| Caņdikādēvīkavaca | | | | | | | 6272 to 6275 |
| Caņdikānavāksarīmūlamantra | B | | | | | | 6276 |
| Candikāmahāmantra | | | | | | | 6277 |
| Candikahrdaya | | | | | | | 6278 |
| Catușșașțisiddhāmantra | | ••• | | | •••• | | 6279 to 6281 |
| Candrakavaca | *** | | *** | | | | 6282 |
| Candramantra | | | | | | | 6283 to 6286 |
| Candrayakşinimantra | | | | | | | 6287 |
| Candrikāmantra | •••• | ••• | | | 10 11 10 A | | 6288 to 6290 |
| Caramaślōkamantra | | | | | 171 | | 6291 |
| Citivāsinībhairavīmantra | | | | | 10 | | 6292 |
| Citravidyādharīmantra | | | | | and the set | | 6293 |
| Cidambaranațanamantra | , | | | | | NAL DA | 6294 to 6296 |
| Cidambaranațēśvaramantra | | | | | n () () () | | 6297 |
| Cidambaramēlanakavaca | | | | | | | 6298 |
| Cintāmaņimantra | *** | | | | | | 6299 to 6301 |
| Cintāmaņisarasvatīmantra | | | | | . Antio | | 6302 |
| Jaganmohanagopalamantra | | | au que se | · | | i hafs | 6303 |
| Jaganmohanahayagrivamahā | mantra | a | ~~~ | | | | 6304 |
| Jaganmöhinīmantra | | | | | | 1 | 6305 |
| Jaladargāmantra | | | | · · · · | 10.2003 | 1.000 | 6306 |
| Jātavēdasadurgāmantra | | | | | | | 6307 to 6309 |
| Jātavēdasanyāsa | | | | | | | 6310 |
| Jalandharapithamantra | | | 10:21(10) | and free | Bagest | | 6311 to 6313 |
| Tattvanyāsa | | | | | LANDA'IN | 15.0 | 6314 to 6316 |
| Tarakabrahmamantra | | 10.00 | | Turit | | 112 | 6317 |
| Tiraskaraņīmantra | ú., | | | | | nd da | 6318 to 6322 |
| Turiyāmbāmantra | | | | * | | | 6323 to 6325 |
| Turyagāyātrīmantra | | | ••• | | | | 6326 to 6328 |

5.-MANTRAS (continued).

| | | | | | | Number. |
|--|-------|-------------|-----------|--------------|----------|--------------|
| Tulasīkavāca | | | | | *** | 6329, 6330 |
| Treamantra | | 1 | 0.0 | | | 6331 |
| Tripuțimantra | | | | | | 6332, 6333 |
| Tripurasundarīkavaca | | ····· | | | | 6334 |
| Tripurasundarītrailokyamohanakav | aca | | | | | 6335 to 6338 |
| Tripurasundarimantra | | MR.A.T | | | | 6339 |
| Tripurasundarimantranyāsa | | | | | | 6340 |
| Tripurasundarīmālāmantra | | | | | | 6341 to 6345 |
| Trivikramagayatri | mu. b | A 19.9. W P | 11 | | | 6346 |
| Trailōkyamangalakavaca | | | | | | 6347 |
| Trailökyamöhanaramakavaca | | | | | | 6348 to 6350 |
| Tryambakamantra | | | | | | 6351 to 6357 |
| Tryambakamrtyuñjayamantra | | | | | | 6358 |
| Tryambakarudrakavaca | | | | | | 6359 |
| Tvaritāpārvatīmantra | | | | | | 6360 |
| The state of the s | | | | | | 6361 to 6364 |
| Dalain latil and the | | | | | | 6365 |
| Debeinebälskenee | | | | | | 6366 |
| Deheinsmäutigenen | | | | | | 6367 to 6372 |
| Dakşiņāmūrtitrailõkyavijayakavaca | | | ••• | | | |
| | | | | | *** | 6373 |
| Dakşiņāmūrtidvādasākşarīmantra | | | | | | 6374 |
| Dakşiņāmūrtinavākşarīmantra | | | | | | 6375 |
| Dakșiņāmūrtipañjara | | | | | 6-11- FA | 6376, 6377 |
| Dakșiņāmūrtimantra | | | | | | 6378, 6379 |
| Dakşiņāmūrtimālāmantra | | | | •••• | | 6380 to 6383 |
| Dakşināmūrtyaştādaśākşarīmantra | | | , | | | 6384 |
| Dakşiņāmūrtyānustubhamahāmant | ra | | | (adments) | | 6385 |
| Dattātrēyakavaca | | | | **** | | 6386, 6387 |
| Dattātrēyagāyatrī | | | | | | 6388 |
| Dattātrēyadigbandhana | | | | 10.000 miles | •••• | 6389 |
| Dattātrēyadvādasāksaramantrarāja | mant | tra | | | | 6390 |
| Dattātrēyanavāksaramantra | | | Contra Da | 1000000000 | | 6891 |
| Dattātrēyamantra | | | | 1 | | 6392 to 6395 |
| Dattatrēyamālāmantra | | | | | ••• * | 6896 to 6399 |
| Dattātrēyavajrakavaca | | | ••• | ••• | | 6400 to 6403 |
| Dattātrēyavašya:nantra | | | | | | 6404 |
| Dattātrēyaşadakşarīmantrarājaman | itra | | | | | 6405 |
| Dattātrēyasodasāksaramantra | | | | | | 6406 |
| Dattātrēyaşödasāksaramantrarājam | ahā | mantra | | | | 6407 |
| Dattätrēyastambhanamantra | | | | | | 6408 |
| Dattātrēyāstāksarīmantra | | | | ••• | ••• | 6409 |
| | | | | | | |

Y

MT-

5.-MANTRAS (continued).

| Andrew M. | N | | | Number. |
|-----------------------------------|------|--------------------|------------|--------------|
| Dattātrēyaikāksaramantra | | | | 6410 |
| Dattātrēyoccāțanamantra | | | | 6411 |
| Dadhivāmanamantra | | | | 6412 |
| Daśavirāvalimantra | | | | 6413 |
| Daśaślökīmantra | | | | 6414 |
| Dākşāyaņīmantra | | | | 6415 |
| Dikpalastakamantra | | | | 6416 |
| Digabaragopālamantra | | | 2 | 6417 |
| Divyarūpagõpālamantra | | | | 6418 |
| Dipinimantra | | | | 6419 |
| Durgābijaikāksaramantra | | | | 6420 |
| Durgāmālāmantra | | an | | 6421, 6422 |
| Durgāşadakşaramantra | | here | *** | 6423 |
| Durgaikarcamantra | | | | 6424 |
| Dēvatānyāsa | | | | 6425 |
| Dēvasābarahanumanmantra | | | | 6426 |
| Dēvīkavaca | | | | 6427 |
| Dēvīmālāmantra | | | | 6428 |
| Dēvīsūktamālamentra | | | | 6429 |
| Drāviņīmantra | | | | 6430 |
| Dyādašāksarīmantra | | and the second | | 6431 to 6435 |
| Dyādasārdhāmbāmantra | | | | 6436 to 6438 |
| Dvārakāvāsagopālamantra | | | | 6439 |
| Dhanyantarīmantra | | | | 6440 to 6442 |
| Dhūmāvatīmantra | | | - | 6443 to 6447 |
| Dhūmāvatīmālāmantra | | | Inciden | 6448, 6449 |
| Dhūmāvatīmūlamantra | | | | 6450 |
| Dhumrayarahimantra | | | | 6451, 6452 |
| Nakşatranyāsa | | | and see | 6453 |
| Națanagopălamantră | | | | 6454 |
| Narasimhamantragrahoccața | | | | 6455 |
| Navagrahamantra | | | | 0456 to 6460 |
| Navadūtīmantra | | | | 6461, 6462 |
| Navanitacoragopalamantra | | | in margine | 6463 |
| Navamudrāmantra | | | | 6464 to 6466 |
| Navasiddhamantra | | | | 6467 |
| Navākşarīdurgāmahāmantra | | | | 6468 |
| Navākşarīmahālakşmīmantra | | and the second | v plike o | 6469 |
| Nāmatrayamantra | | | A large a | 6470 to 6472 |
| Nāmadvādašapañjara | | | TRUITOUS | 6473 |
| Nārasimhamālāmantra | | A | Lauran | 6474 |
| Contraction of the contraction of | | | | |

5,-MANTRAS (continued).

| .rodau M | | | | | Number. |
|--|---------|-----|----------|---------------|--------------|
| Nārāyaņakavaca | | | | | 6475, 6476 |
| Narayanadigbandhanamantra | | | | 10,000 | 6477 |
| Nārāyaņamantra | See. | ••• | | | 6478 |
| Narayanamalamantra | | | | | 6479 |
| Nārāyaņavarmamantra | | | | | 6180 to 6486 |
| Nārāyaņabrdaya | | | | | 6487 to 6491 |
| Nārāyaņāstāksarīmantra | | | | | 6492, 6493 |
| Nārāyaņāstramantra | | | | | 6494 |
| Niga'acchēdanamantra | | | | | 6495, 6496 |
| Nityaklinnāmantra | | | | | 6497 |
| Nilakanthapārāvatamantra | | | | | 6498 |
| N Ilakanthabadabanalamalamantra | | | | | 6499 |
| Nilakanthabadabanalaströbiamantu | a | | | | 6500 to 6504 |
| Nilakanthamantra | | | | | 6505 to 6507 |
| Nilakanthamālāmantra | | | | | 6508, 6509 |
| Nrsimhakavaca | | | ···· (1) | | 6510 to 6512 |
| Nrsimhakhadgamālāmantra | | | | | 6513 |
| Nrsimhagāyatrīmantrā | | | | | 6514 to 6516 |
| Nrsimhatāpanīyamantra | | | | | 6517 |
| Nrsimhadigbandhana | | | | | 6518 |
| Nrsimhadvätrimsadaksaramantra | | | | | 6516 |
| Nrsimhamantra | · · · · | | | in the | 6520 to 6523 |
| Nrsinhamālāmantra | | | | in trail | 6524 to 6529 |
| Nrsimhaşadakşaramantra | | | | | 6530 to 6532 |
| Nrsimhaşödasakşarımantra | | | | | 6533 |
| Nrsimhasahasrāksarīmantra | | | | | |
| Nrsimhānustubhamantra | | | | | 6535 to 6539 |
| Nrsimhäyutäksarīmālāmantra | | | | . B | 6540 |
| Nrsimhaikaksaramantra | | | | | 6541 to 6545 |
| Pakširājasāluvamantra | | | | 2 | 6546 |
| Pañcakūtēśvarīmantra | | | | -A | 6547 |
| Pañcadaśākşarīmantra | | | | | 6548 to 6550 |
| Pañcadaśikavaca | | | | | 6551 |
| Pañcadaśīmūlamantravyākhya | | | 5 | a the trian | 6552, 6553 |
| Pañcaprāņamantra | | | | | 6554 |
| Pañcabāņamantra | | | | | 6555, 6556 |
| Pañcabānēśvarīmantra | | | Sind and | in the second | |
| Pañcamukhaśarabhasāluvamantra | | | | | |
| Pañcamukhahanūmanmantra | | | | | 6561, 6562 |
| Pañcayaktrahanūmanmantra | 4. | | | | 6563 to 6565 |
| Pañcayaktrahanūmanmālāmantra | | | | | 6566 to 6568 |
| A MARCH I WAS DE WAS DE RATURE RATURE DE | - | | | Sec. St. | |

5.-MANTRAS (continued).

| | | | | | | | Number. |
|---|----------|-------------|----------|-------|-------|---------|---------------------|
| PañcasimhäsanöśvarIman | tra with | Sükta | | ••• | ••• | | 6569, 6570 |
| Pañcākşarimantra | | | | | | ••• | 6571 to 6574 |
| Pañcākşarīmālāmantra | | | | • • • | **1 | | 6575 |
| Pañcāngarudranyāsa | | ** | | | | | 6576 to 6578 |
| Padayugamantra | | | | | * 4 | | 6579 to 6581 |
| Parabrahmavidyāmantra | | | | | | | 6582 |
| Paramagurumantra | | | | | *** | | 6583 to 6585 |
| Paramēsthigurumantra | | | | | | | 6586 to F588 |
| Parasurāmamantra | | | | | | | 6589 |
| Parāprasādamantra | | | •. | | | | 6590, 6591 |
| Parāmantra . | | | | | | | 6592 |
| Parāmbāmantra | | | | | | | 6593, 6594 |
| Parāśāmbhavīmantra | | | | | 18.0 | | 6595, 6596 |
| Parasamputitamätrkänyä | isa | | | | | | 6597 |
| Parasamputitamätrkäma | | | | | | | 6598 |
| Paromatrayetimantra | | | | | | | 6599 |
| Pāņimantra | | | | | | | 6600 |
| Patalagarudamantra | | | | | | | 6601 |
| Pādukāňjana | | | | | | | 6602 |
| Pādukāmantra | | | | | *** | •• | 6603 |
| Pārijātāpahārakagopālan | | | **,* | ••• | *** | | 6604 |
| Pärthivéśvarasaubhägyad | | imahāvi | dvām | antra | | | 6605 |
| Parvatīpancākşaramantri | | | Ť | | | | 6606 |
| Danastrasta | | ••• | | •• | ••• | | 6607 |
| Diánastomantus | | ••• | • • • | | | • • • | |
| Dafu na tratus mantus | | ••• | | ••• | | ••• | 6608, 6609 |
| | | | | ••• | *** | *** | 6610 to 6615 |
| Päšupatāstramālāmantra Pindegārālomentra | | | • • • | •• | *** | • • • • | 6616 |
| Piņdagöpālamantra | | • • • | ••• | | • • • | *** | 6617 to 6619 |
| Puņdarikāksamantra | | | ••• | • • • | *** | *** | 6620 |
| Putrakāmēstisaubharima | | • | • • • | ••• | ••• | *** | 6621 to 6623 |
| Patraprasādagaurīmantr | | • • • | - # + | | . *** | | 6624 |
| Purandarapañcamukhah | anumann | nantra | ••• | | *** | ••• | 6625 |
| Puraścaryāsańkalpa | • ••• | ••• | | ••• | *** | *** | 6626 |
| Purusasüktamantra | • ••• | ••• | • • • | | | | 6627 |
| Palindinimantra | | ••• | | ••• | ••• | | 6628 |
| Pütanāstanapatrgöpālan | antra | • • • | • • • | | | | 6629 |
| Parņagiripīthamantra | • ••• | ••• | *** | | *** | | 6630 to 6632 |
| | ••••• | | | | | | 6633 |
| Pracandabhairavadigban | | ••• | | | | ••• | 6634 |
| Praņavapañcākşarimantr | 8 | •• | ••• | •••• | *** | | 6635, 6636 |
| Prenavamantra | | | *** | | | *** | 0637 |
| | | | | | | | |

.

5.-MANTRAS (continued).

| | | | | | | | Number. |
|------------------------------|--------|--------|------|-----|-----|-----|--------------|
| Pratapasundarimantra | | | | *** | | | 6638 |
| Pratāpahanumanınantra | | | | | | *** | 6639 |
| Pratāpahanūmanmālāmantra | , | | | | | •• | 6640 |
| Pratikriyāsūlinīdigbandhanan | mäläm | antra | | | | | 6641 |
| Pratikriyāsūlinīdurgavidyām | | ~ | | | | | 6642 |
| Pratikriyasūlinīmantra | | | | | | | 6643, 6644 |
| Pratyangirākavaca | | | | | ••• | | 6645, 6646 |
| Pratyangirädigbandhana | | | | | | | 6647 to 6649 |
| Pratyangirāparmēšvarīmūlav | ridyām | ahāma | ntra | | | | 6650 |
| Pratyangiräbhadrakälimantra | | | *** | | | | 6651 |
| Pratyangirāmantra | | *** | | | | | 6652 to 6656 |
| Pratyangirāmantrapārāyaņa | | | | | | | 6657 |
| Pratyangirāmālāmantra | | | | | | 606 | 6658, 6659 |
| Pratyangiräsükta | | | | | | | 6660 to 6665 |
| Pratyangiräsüktavyäkhyä | | | | | | | 6666, 6667 |
| Pradoșapañcakșarimantra | | | | | | | 6668 |
| Prapañcanyāsa | | | | | | | 6689 |
| Pralayakālabhairavamālāma | | | | | | | 6670 |
| Pralayakālavīrabhadrabadab | | nantra | | | | | 6671 to 6673 |
| Pralayakālahanūnianmantra | | | | | | | 6674 |
| Pralayakālānalabhairavamālā | | | | | | | 6675 |
| Prasūtim ntra | | | | | | | 6676 |
| Pränapratisthämantra | | | | | | | 6677 to 6685 |
| Prāņapratisthāvidhi | | | | | | | 6686 |
| Prāņēśvarīmantra | | | | | | | 6687 |
| Prāsādapañcāksarīmantra | | | | | | | 6688 to 6693 |
| Präsädaparäparäpräsädaman | | | | | | | 6694 to 6696 |
| Präsädaparämantra | | | | | | | 6697 |
| Bagalānusthānavidhi | | | | | | ••• | 6698 |
| Ragaläbrahmästramantra | ••• | | | | | | 6699 |
| Bagalābrahmāstramālāmantr | | *** | | ••• | | | 6700 |
| Bagalāmukhī-ēkākşarīmantra | | | | | *** | | 6701 |
| Bagalāmukhīkavaca | | | | | | | 6702, 6703 |
| Bagalāmukhicāturaksarīman | | | | | | | 6704 |
| Bagalāmukhīmantra | | | *** | | | | 6705 to 6714 |
| Bagalāmukhīmālāmantra | | | | | | | 6715 |
| Bagalāmukhīstötramantra | | | | | | | 6716 |
| Bagalāstāksarīmantra | | | | | | | 6717 |
| Bagalāștambhinimālāmantra | | | | | | | 6718 |
| Bedabānalabhairavamantra | | | | | | | 6719 |
| Badabānalabhairavamālāman | | 0.041 | | *** | | | 6720 to 6722 |
| | | | | | | | 1 |

viii

5.-MANTRAS (continued).

| | | | | | | | Number. |
|---------------------------|--------|-------|-------|-----|-----|-------|--------------|
| Badabänalamantra | | | | | | *** | 6723, 6724 |
| Badabanalarandravirahan | umann | antra | | | | •• | 6725 |
| Badabānalasudarsanaman | tra | | | | | | 6726 |
| Badabānalāñjanēyamālāma | antra | | | *** | | | 6727 |
| Bandhavimõcanimantra | | | | | *** | | 6728, 6729 |
| Bandhī-ēkākšarīmantra | | | | | | | 6730 |
| Bahirmätrkänväsa | | | | | | *** | 6731, 6732 |
| Bahirmätrkäsarasvätiman | tra | | | | *** | ••• . | 6733, 6734 |
| Bālagopālamantra | | | | | | • • • | 6735 |
| Bālākavaca | | | | *** | | | 6736 to 6745 |
| Bālātripurasundarīmantra | | | • • • | | | | 6746 to 6755 |
| Bālātripurāsarasvatīmantr | 8 | | * * T | *** | | • • • | 6756 to 6758 |
| Bālātrailokyamohanakavad | 66 | *** | *** | ••• | ••• | | 6759 |
| Bālādēvīmantra | | | | *** | | ••• | 6760 |
| Bālānyāsamantra | | | | *** | ••• | | 6761 |
| Bālāparamēśvaritripurasur | ndarim | antra | | | | | 6762 |
| Balaparameśvarinyasa | *** | | | | *** | ••• | 6763 |
| Bālāparamēśvarīmantra | | | | ••• | *** | | 6764 to 6786 |
| Bālāparamēśvarīmālāmant | ra | | | | | | 6767 to 6770 |
| Bālāmantra | *** | | | | | | 6771 |
| Bālāmālāmantra | | | | | | ••• | 6772 |
| Bālāsampuțitamātrkānyāsa | amanti | ra | *** | | | | 6773, 6774 |
| Bālāhrdaya | | | | | *** | | 6775 to 6777 |
| Bindomätrkänyäsamantra | *** | | | | *** | | 6778 |
| BindumätrkäsarasvatIman | tra | | *** | | | ••• | 6779 |
| Budhakavaca | | | | | ••• | • • • | 6780 |
| Budhamantra | | | | | | | 6781 |
| Brhadvārāhīmantra | | | | | | | 6782 to 6785 |
| Brhaspatikavaca | | ••• | | *** | | | 6786 |
| Brhaspatimantra | *** | | | | | ••• | 6787 |
| Bētālakavaca | | | | *** | | | 6788 |
| Bētālabhairavamantra | | | | *** | | | 6789 |
| Bētālabhairavamahāmantr | 8 | | | *** | | ••• | 6790 |
| Bētālamantra | | ••• | ••• | | | | 6791 to 6794 |
| Bētālamālāmantra | | ••• | ••• | ••• | | ••• | 6795 to 6800 |
| Bētalarūpadaksiņāmūrtima | intra | | | | *** | | 6801 |
| Bētālēśvaramantra | *** | | | | | | 6802 |
| Brahmagāyatrī | *** | | | ••• | *** | | 6803 |
| Brahmapañcākṣaramantra | | | | | ••• | | 6804 |
| Brahmasudarśanamantra | ••• | | | *** | ••• | | 6805 |
| Brahmāņīrimantra | *** | | | | | ••• | 6806 |
| L | | | | | | | |

ix

.

5.-MANTRAS (continued).

| | | | | | | | Number. |
|--------------------------------|------------------|-------|-------|-------|---------|---------|--------------|
| Brahmäņīpañcāksarīmantr | a | | *** | | | | 6807 |
| Brahmāņīmantra | | | | | | | 6808 |
| Brahmāstramantra | ••• | | ••• | | *** | | 6809 to 6812 |
| Brāhmīmantra | | | | | | *** . | . 6813 |
| Bhaginīmantra | | | | | * * * * | | 6814 |
| Bhadrakālīmantra | | | | • • | | | 6815 |
| Bhavānikavaca | | | | | | | 6816 |
| Bhasmadhāraņamantra | | | * * * | | | | 6817, 6818 |
| Bhasmanyāsa | ••• | | | | • • • | | 6819 |
| Bhāratīpañcākṣarīmantra | | | | •• | | | 6820 |
| Bhāratīmantra | ••• | | | | | | 6821 to 6823 |
| Bhārgavāstāksaramantr a | | • • • | | | | | 6824 |
| Bhārgavaikākšaramantra | | | | | | | 6825 |
| Bhuvananyāsa | | | | | | | 6826 |
| Bhuvanēśvarītrailokyamoh | anakav | aca | | | | | 6827 |
| Bhuvanēśvarīmantra | | | | | | | 6828 to 6834 |
| Bhuyanēsvarīmantrakavac | | | | | | | 6835 |
| Bhuvanēśvarīmātrkāmantr | | | | | | | 6836 |
| Bhuvanëśvarīsammöhanaka | | | | | • • • | | 6837 |
| Bhūtaśuddhimantra | | | | | | | 6838, 6839 |
| Bhupañcaksaramantra | | | | | | | 6840 |
| Bhūbījaīkākšaramantra | | | | | •• | | 6841 |
| Bhūśuddimantra | | | • • • | • • • | | | 6842 to 6844 |
| Bhairavabadabānalamantra | •••• . a. | •••• | • • • | ••• | • • • | *** | 6845 |
| Bhairavamantra | | • • • | | • • • | *** - | 2 040 | 6846 to 6849 |
| Bhairavamālāmartra | * * * | • • • | • • • | ••• | | | 6850 |
| Mandalatrayamantra | ••• | ••• | ••• | • • • | | *** | 6851 to 6853 |
| Madanagopāladvādašāksar | ••• 977959 | ••• | ••• | | ••• | • • • | 6854 |
| Madanagopālamantra | | ••• | * * * | • • • | | *** | 6855, 6856 |
| Madanayakşinighatikaman | tra | ••• | *** | •••• | ••• | • • • | 6857 to 6859 |
| Madhumatimautra | | •••• | *** . | ••• | • • • | • • • | 6860 |
| Madhyāhnavārāhīmantra | | ••• | | | | *** | 6861, 6862 |
| Mantrauyāsa | *** | ••• | *** | * * * | *** | | 6863 |
| M The sector | | *** | • • • | | | *** | 6864 to 6868 |
| Mantrasandhyāvandanapra | •••• 9.17.009 | | ••• | | | · | 6869 |
| 36 1 - 31 | ayoga | | ••• | ••• | • • • | ••• | 6870 |
| Manuallamanting | | ••• | * * * | ••• | ••• | *** | . 6871, 6872 |
| Malayālabhagavatīmantra | * * * | ••• | ••• | ••• | | *** | |
| Mallamardanagöpälamantı | | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | 6873 6874 |
| Mahakalidurgamantra | | B-4 8 | • • • | • • • | • # 3 | 8.8.1 · | 6875 |
| | • • • | ••• | *** | *** | | ••• | 6876 to 6885 |
| Mahāgaņapatimantra | | *** | ••• | *** | *** | • • • | 0010 10 0000 |

X 2 -

5.-MANTRAS (continued).

| , | | | | | | | | Nun | nber. |
|-----------------------|---------|---------|---------|--------|-------|-------|-------|---------|--------------|
| Mahācintāmaņimantra | ••• | | | | ••• | | ••• | | 6886 |
| Mahātripurasundarīpai | icadasi | ikşarın | antra | *** | • • • | | | 6837, | 6888 |
| Mahātripurasundarīma | ntra | | | | | | | | 6889 |
| Mahātripurasundarīma | ntraraj | jamant | ra · | | | | | | 6890 |
| Mahā ripurasundarīma | ntraśē | şa. | | | | | | | 6891 |
| Mahapañoakanyasa | | | | | | •••• | ••• | | 6892 |
| Mahāpādukāmantra | | | | | ••• | | | | 6893 |
| Mahāpāśupatāstraman | tra | | •••• | | | | | | 6894 |
| Mahābāņanyāsa | | ••• | ••• | ••• | ••• | · · · | | | 6895 |
| Mahābbairavīmantra | | | | | | * * * | | 6896 to | 6898 |
| Mahamāyāmantra | ••• | | ••• | | ••• | | ••• | | 6899 |
| Mahāmārīstötramantra | | ••• | | ••• | ••• | | | | 6900 |
| Mahārdhāmbāmantra | | ••• | ••• | | | • • • | | 6901 to | 6903 |
| Mahālakşmikavaca | | ÷ | ••• | •••• | ••• | | ••• | | 6904 |
| Mahāvākyamantra | *** | | | | | • • • | | 6905, | 6906 |
| Mahāvidyānavavidyāna | avadur | gāprat | yangiri | āmantı | 8 | | • | | 6907 |
| Mahāvidyāvanadurgām | antra | | | *** | ••• | | | 6908, | 6909 |
| Mahāvidyāvanadurgās | tõtiam | antra | | ••• | ••• | | | | 6910 |
| Mahāvirapratāpahanūr | nanmā | lāmant | ra | | ••• | ••• | | | 6911 |
| Mahāśarabhamantra | | | | | •• | ••• | *** | 6912, | 6913 |
| Mahāśāstāmantra | • • • | | | | *** | ••• | | 6914 to | 6917 |
| Mahāśūlinīmantra | | | •• | * • • | ••• | • • | ••• | | 6918 |
| Mahāşõdhādvayinyāsa | | | | ••• | ••• | ••• | • • • | | 6919 |
| Mahāsudaršavamantra | | | | | | ••• | ••• | | 6920 |
| Mahāsaurāstāksarīmant | tra | | | | | ••• | ••• | | 6921 |
| Mātangikavaca | ** | *** | | ••• | | | | 6922, | 692 3 |
| Mätangiśvarimantra | | ••• | ••• | | •• | | | 6924 to | 6926 |
| Mātrkānyāsa | | ••• | | | ••• | | • • • | 6927 to | 6929 |
| Mätrkämantra | *** | | ••• | • • • | ••• | ••• | | 6930 to | 6932 |
| Mätrkäsarasvatimantra | ե | ••• | • • • | • • • | •• | | • • | | 6933 |
| Māyādēvīkavaca | | | ••• | | | ••• | ••• | | 6934 |
| Māyāmantra | • • • | - | | •• | | | ••• | | 6935 |
| Māyānohinmantra | | | | | | | | | 6936 |
| Mälavidurgāmantra | | | ••• | ••• | ••• | | | | 6937 |
| Mālinīmantra | ••• | ••• | | •• | • • | • • • | ••• | 6938 to | 6941 |
| Mälinimätrkänyäsman | tia | | | | | ••• | ••• | | 6942 |
| Miśrāmbāmantra | | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | | 6943 to | 6945 |
| Mukhyaprāņamantra | * * 4 | | ••• | | ••• | ••• | ••• | | 6946 |
| Mudränavakamantra | | ••• | | | *** | ••• | 4. Pr | 6947, | 6948 |
| Mudrāmantra | | *** | • • • | | ••• | | ••• | | 6949 |
| Mūrtinyāsa | *** | *** | | | ••• | | *** | | 6950 |
| | | | | | | | | | |

xi

.

5.—MANTRAS (continued).

| | | | | | | | | | Num | ber. |
|---|------------------------|--------------------------|--------|-------|-------|-----|------|-----|---------|------|
| | Mūrtipañjaranyāsa | | *** | ••• | *** | ••• | ••• | | | 6951 |
| | Mrtasañjivinimantra | | | | | | | | | 6952 |
| | Mrtyuñjayatryambak | amantra | 6 | | | | *** | *** | | 6953 |
| | Mŗtyuprayōgamautra | | | ••• | | | | | | 6954 |
| | Mŗtyulāngūlamantra | | | *** | *** | ••• | | *** | 6955, | 6956 |
| | Medhadakşiņāmūrtim | antra | | ••• | ••• | | ••• | | 6957 to | 6965 |
| | Mēdhādaksiņāmūrtim | antrarāj | amahā | mantr | a | | | | 6966, | 6967 |
| | Mēdhādakşiņāmūrtim | a hāma n t | tra | ! | *** | | | | 6968, | 6969 |
| | Mailāradēvamantra | ••• | ••• | | ••• | ••• | | | 6970 to | 6972 |
| | Ya-imā-viśvēti-sūktar | nantra | | | *** | | | | | 6973 |
| | Yantrapratisthämanti | ra | | ••• | ••• | | *** | | | 6974 |
| | Yamalārjunabhañjana | ıgöpāl <mark>a</mark> n | nantra | | | •• | | | | 6975 |
| | Yamunājalavihāragop | ālamant | ra | ••• | | ••• | | *** | | 6976 |
| | Yuktamātrkāsarasvat | imantra | , | | | | ••• | | | 6977 |
| | Yogininyasa | | | | ••• | | | | | 6978 |
| | Yö-jäta-iti-süktamanti | ra | *** | | | | | | | 6979 |
| • | Raktacāmuņdīmantra | • | | | | | *** | | | 6980 |
| | Raņarangabhairavama | intra | | | ••• | ••• | | | | 6981 |
| | Ratipriyāmantra | | | | ••• | | ** * | | 6982 to | 6984 |
| | Ratnavarşagöpälaman | tra | ••• | | | | | | | 6985 |
| | Ratnagopalamantra | | | | | | | | | 6986 |
| | Rāghavamantra | | | | ••• | | | | | 6987 |
| | Räghavaikäksaramant | ra | ••• | *** | *** | *** | *** | | | 6988 |
| | Rājamātangīmantra | | ••• | | ••• | | ••• | | 6989 to | 6993 |
| | Rājamātangīmālāmant | ra | ••• | | | | | | | 6994 |
| | Rājarājēśvarīkavaca | ••• | | | | | | | 6995 to | 6997 |
| | Rājarājēsvarītripurasu | ır darî ma | antra | | | | | ••• | 6998, | 6999 |
| | Rājarājēśvarīmantra | | | ••• | | | | ••• | | 7000 |
| | Rājarājēsvarīsodasāksa | rīmantr | a | | | | ••• | | 7001, | 7002 |
| | Rājarājēšvarīsodasībra | hmavid | yā | ••• | ••• | | ••• | | | 7003 |
| | Rajalakşminarayanahr | daya | | | •• | | | | | 7004 |
| | Rājala ksmihrda ya | | | | • • • | | •• | ••• | | 7005 |
| | Rajasyāmalāmantra | ••• | | | *** | | | , | | 7006 |
| | | | | | | | | | | |

....

....

....

INDEX

3.0.

...

...

•••

.

i to x

xii

A DESCRIPTIVE CATALOGUE of the SANSKRIT MANUSCRIPTS. VOLUME XIII.

CLASS VIII.-RELIGION-(continued).

5. MANTRAS-(continued).

No. 6267. ग्रहबन्धनमन्त्रः.

GRAHABANDHANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 5858. Complete.

This Mantra is supposed to counteract the evil influences of witchcraft and of the planets.

Beginning:

आ(अस्य)देवदत्तस्य यछयनामधेयस्य सर्वप्रहं बन्धय बन्धय । ओन्न-मश्चण्डकोधाय कुरु कुरु मुरु मुरु भूतावेशसमये तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । End:

भूतप्रेतपिशाचशल्यतन्तुकियातन्तुकियासंहारकारिणि कुहूयोगसमये आं हीं कों स्वाहा ॥

No. 6268. चण्डगरुडमन्त्र:.

CANDA JARUDAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16*a* of the MS. described under No. 6157. Complete.

This Mantra is addressed to Garuda and is supposed to remove very quickly the effects of poison.

Beginning:

ओन्नमः चण्डगरुडाय नमः । ओन्नमो भगवते चण्डाय पक्षिराजाय तीक्ष्णदंष्ट्राकरालाय सुवर्णदेहाय ।

394

End:

नाशय नाशय भं दं हां हीं हुं (विहगा)धिराज निरशक्कं विषं हर हर ओन्नमः चण्डगरुडाय नमः ॥

No. 6269. चण्डमातङ्गीमन्त्रः.

CANDAMĀTANGĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2756 of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Mātangī, who is a manifestation of Pārvatī. It is supposed to have the effect of enabling one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीचण्डमातङ्गीमन्त्रस्य कपिल ऋषिः, शकरी छन्दः, चण्ड-मातङ्गी देवता; हां बीजं, स्वाहा शक्तिः, इष्टकाम्यार्थसिच्चर्थे विनि-योगः ।

End:

ओं हीं हेरि हेरि चण्डमातङ्गिनी स्वाहा ॥

पुनश्चरणं चतुर्दशलक्षम् ॥

Colophon:

इति चण्डमातङ्गी

No. 6270. चण्डमातङ्गीमन्त्रः. CANDAMÁTANGIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 87*a* of the MS. described under No. 5556. Incomplete.

Same as the above.

No. 6271. चण्डमातङ्गीमन्त्रः.

CANDAMĀTANGĪMANTRAH

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 2816 of the MS. described under No. 581. Incomplete.

Same as the above.

4750

No. 627%. चण्डिकादेवीकवच:. CANDIKADEVIKAVACAЩ

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14/1 of the MS. described under No. 429. Complete

Addressed to Candikā or Šakti, and believed to have the power of protecting one from thieves and evildoers and of bringing about the accomplishment of one's de ires.

Beginning:

अस्य श्रीदुर्गाकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचण्डिका भद्रकाली श्रीमहालक्ष्मीर्देवता; हीं बीजं, ह्रां शक्तिः, स्वाहा कीलकम्, श्रीमहालक्ष्मीचण्डिकाभद्रकालीप्रीत्यर्थे चोरादिदुष्टमय-नाशनार्थे ममार्थसंरक्षणे इष्टार्थसिद्धौ च जपे विनियोगः ।

> प्राच्यां रक्षतु माहेन्द्री आमेय्याममिदेवता । दक्षिणे रक्ष वाराही निरृत्यां खडुधारिणी ॥

End:

इदं तु कवचं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम् । तिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं प्रयतइश्रद्धयान्वितः ॥

ब्रह्मणा निर्मितं यत्तु कवचं वज्रसन्निभम्।

विसन्ध्यं कीर्तयेद्भकत्या पामोति परमां गतिम् ॥

Colophon:

इति ब्रह्मविरचितं देवीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6273. चण्डिकादेवीकवचः. CANDIKADEVIKAVACAH.

Pages, 20. Lines, 6 on a page. Begins on fol. 70*a* of the MS. described under No. 5819. Complete.

Similar to the above.

394-A

Beginning:

शतानीक उवाच---

यदुब्धं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् । यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ ब्रह्मा उवाच—

> अस्ति गुह्मतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् । देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छ्रणुष्व महामुने ॥

प्राच्यां रक्षतु माहेन्द्री आंग्नेय्याममिदेवता । दक्षिणे रक्ष वाराही नैरृत्यां खड़्रधारिणी ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेत् वायव्यां मृगवाहना ।

End:

इदन्तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्ल्ञभम् । यो नरः पठते नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥

या माया मधुकैटभन्रशमनी या माहिषोन्मूलि या धूम्राक्षकचण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशनी । शक्तिः शुम्भनिशुम्भदर्पदलनी या सिद्धलक्ष्मीः परा सा चण्डी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥ Colophon:

इति श्रीदेवीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6274. चण्डिकादेवीकवचः.

CAŅDIKĀDĒVĪKAVACAH.

Substance, palm-leaf. Size, $6\frac{3}{4} \times 1\frac{3}{8}$ inches. Pages, 14. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 6a. The other works herein are Subrahmaņyāstottaraśatanāmāvalī 1a, Śābaramantra (Tamil) 4a, Argalāstotra

4752

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

13a, Kīlakastötra 16a, Dēvīstötra 19a, Šrīvidyāmālāmantra 21a, Āmnāyastötra 25b, Lalitāsahasranāmastötra 29a.

Complete.

Slightly different from the above.

Beginning:

अस्य श्रीदेवीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता; ह्वां बीजं, ह्वीं शक्तिः, ह्वं कीलकं, देवीकवचप्र-सादसिद्धच्यर्थे जपे विनियोगः ।

The remaining portion is the same as in the work described under the previous number.

No. 6275. चण्डिकादेवींकवचः. CANDIKADEVIKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 214b of the MS. described under No. 119 Complete.

Slightly different from the above in the beginning as shown below :-

मार्कण्डेय उवाच---

यद्भु परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।

यत्र कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥

ब्रह्मोवाच----

अस्ति गुह्यतमं लोके सर्वभूतोपकारकम् ।

देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥

No. 6276. चण्डिकानवाक्षरीमूलमन्त्र:.

CANDIKĀNAVĀKSARĪMŪLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 2006 of the MS. described under No. 124, Complete.

This Mantra is addressed to Candikā, who is the same as Pārvatī. It consists of nine syllables and is supposed to be helpful in bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीचण्डिकानवाक्षरीमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, गा-यत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि, महाकाली महालक्ष्मीमेहासरखती देवता; पे बीजं, ह्वीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम इष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

मातर्मे मधुकैटभ इति ध्यानम् ।

मनुः—

ऐं हीं क्वीं चामुण्डाये विचे ।

द्वितीयमनुः—

ऐं हीं क्लीं चण्डिकाये नमः ॥

No. 6277. चण्डिकामहामन्त्र:.

CANDIKÂMAHÂMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 896 of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is addressed to Candikā and is supposed to have the power to nullify the effects of black magic and witchcraft.

Beginning:

अस्य श्रीचण्डचामुण्डिकादेवतामहामन्त्रस्य मार्कण्डेयभगवान् ऋषिः

गायती छन्दः, श्रीचण्डचामुण्डिका देवता; ओं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम वैरिमुखस्तम्भनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

रं वहितत्त्वात्मने श्रीचण्डचामुण्डिकायै नमः—र्दापं समर्पयामि । वम् अमृततत्त्वात्मने श्रीचण्डचामुण्डिकायै नमः—अमृतनैवेद्यं समर्प-यामि । तत्न मनुः—

> गुबातिगुबगोप्तृ(प्त्री)त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपन् । शिधिक्(सिद्धिर्)भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

No. 6278. चण्डिकाहृदयम्. CANDIKAHRDAYAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page. .

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 429.

Complete.

Addressed to Candikā with a view to secure help in regard to the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अथातस्संप्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथातथम् । चण्डिकाहृदयं दिव्यं शृणुष्वैकाग्रमानसः ॥

ओं सां हीं क्षूं श्रीं हीं जय जय चण्डि चामुण्डि चण्डिके त्रिदशमकुटकोटिसङ्घटितचरणारविन्दे सावित्रीगायत्रीसरस्वतीमहामिलिता-भरणे भैरबद्धपधारिणि प्रकटितरक्तदंष्ट्रार्द्रवदने.

End:

एं हां हीं हूं हैं हों हः हूं हीं हं क्षों हों हः इति विंशति-वारं जपेत्, पठेद्वा ॥

राजद्वारे इमशानेऽपि विवादे शत्रुसंकटे । द्यूत[स्थित]मध्यस्थितौ वा(पि) सर्वकार्याणि साधय साधय ॥ Colophon:

इति चण्डिकादेवीहृदयं संपूर्णम् ॥

No. 6279. चतुष्षष्टिसिद्धामन्त्रः. CATUSSASTISIDDHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 6*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is addressed to the 64 Sakta-gurus.

Beginning:

अस्य श्रीचतुष्षष्टिमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीचतुष्पष्टिसिद्धा देवता; ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम श्रीचतुष्पष्टिसिद्ध(ा)प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वकालनाथश्री, पूतानाथश्री, शर्वरीनाथश्री, व्योमनाथश्री, सर्व-गानाथश्री,—इति पश्चिमाम्नायगुरून् खाधिष्ठाने हुतवहचके नाभौ च पूजयेत् ॥

No. 6280. चतुष्षष्टिसिद्धामन्त्रः.

CATUȘȘAȘȚISIDDHÂMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 236 of the MS. described under No. 2848. Complete.

Sane as the above.

4756

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6281. चतुष्षष्टिसिद्धामन्त्रः.

CATUSSASTISIDDHÂMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Slightly different at the end as shown below :---

व्योमनाथदिव्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः । दूतीमण्डलवीरदशक-चतुष्षष्टिसिद्ध(I)सहिताय त्रिसहस्रदेवतासहिताय जालन्धरपीठदिव्यश्रीपा-दुकां पूजयामि नमः ॥

No. 6282. चन्द्रकवचः. CANDRAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 51*a* of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Intended to propitiate the Moon and secure her protection and help.

Beginning:

अस्य श्रीचन्द्रकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य गौतम ऋषिः, गायती छन्दः, सोमो देवता, सोमग्रहप्रसादासिद्धचर्थे विनियोगः।

शशी पातु शिरोदेशं फालं पातु कलानिधिः । चक्षुषी चन्द्रमाः पातु श्रुती पातु कलात्मकः ॥

End:

एतडि कवचं दिव्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

Colophon :

इति ब्रह्मकैर्वे (वर्ते) चन्द्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6283. चन्द्रमन्त्र:. CANDRAMANTRAH

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 292*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Intended to propitiate the Moon.

Beginning:

अस्य श्रीचन्द्रमन्त्रस्य बह्या ऋषिः, पाक्किश्छन्दः, श्रीसोमो देवता, सों बींजं, आयेति शक्तिः, चन्द्रपीत्यर्थे विनियोगः। End:

सों सोमाय नमः॥

अक्षरलक्षजपं कुर्यात्, पायसेन दशांशहोमः ॥

No. 6284. चन्द्रमन्त्र:. CANDRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 247b of the MS. described under No. 581. Wants beginning.

Same as the above.

No. 6285. चन्द्रमन्त्र:.

CANDRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 97*a* of the M8. described under No. 5566. Incomplete.

Same as the above.

No. 6286. चन्द्रमन्त्र:. CANDRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page. Begins on fol. 310*a* of the MS. described under No. 5477 Complete. Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीचन्द्रमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, गायत्री छन्दः, मम चन्द्रप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः।

End:

ओं चां द्रां चन्द्राय नमः॥ लक्षं जपः दशांशं होमः॥

No. 6287. चन्द्रयक्षिणीमन्त्रः. CANDRAYAKŞINİMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 297*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to a spirit known as Candrayaksini, and is supposed to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

ऋष्यादिकं पूर्ववत् ।

ऐं हीं लक्ष्मि लघ्वाधारिणि हुं फट् स्वाहा ॥

End:

गुग्गुल्लल्ड्डुकेन दशांशहोमं कुर्यात् ॥ ददाति सङ्गमं तस्याः तेन बन्धितरूपिणी । चिन्तितार्थं ददात्येव नात्र कार्या विचारणा ॥

> No. 6288. चान्द्रकामन्त्र:. CANDRIKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 297b of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to a certain Yaksinī called Candrikā, and is supposed to be capable of bestowing prosperity and long life.

Beginning:

ऋष्यादिकं पूर्ववत् । चन्द्रिका हं स स्वाहा।।

End:

नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं स प्रयच्छति । लक्षायुर्दिव्यवर्षाणां दत्तं सा(स्यात्)शङ्करोदितप्॥ बुग्गुलेन दशांशहोमः॥ इति॥

No. 6289, चन्द्रिकामन्तः. CANDRIKAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 251b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6290. चन्द्रिकामन्त्र:.

CANDRIKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6291. चरमश्लोकमन्त्रः. CARAMASLOKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16 of the MS. described under No. 5854. Complete. This Mantra is addressed to Vișnu. It contains the last lesson given in the Bhagavadgītā and teaches the doctrine of renunciation and self-surrender to God.

Beginning:

चरम छोकमन्त्रः---

अस्य श्रीचरमस्लोकमन्त्रस्य धनज्जय ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-रुष्णो देवताः भगवत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ; सर्वधर्मानिति बीजं, परि-त्यज्येति शक्तिः, मामिति कीलकं, भगवत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं त्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ Colophon:

इति चरमश्लोकमन्त्रः समाप्तः ॥

No: 6292. चितिवाासिनीभैरवीमनत्रः.

CITIVĀSINĪBHAIRAVĪMANTRAH.

· ,

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 56 of the MS. described under No. 2886. Complete.

This is an incantation addressed to a spirit named Bhairavi inhabiting the cremation ground; it is supposed to enable one to destroy one's enemies.

Beginning:

क्षपण ऋषिः, गायत्री छन्दः, चितिवासिनौ भैरवी देवता। हामि-त्यादिषडङ्गन्यासः.

> हिमुजां ऋष्णवर्णाञ्च त्रिणेत्रां सर्पभूषणाम् । कपालशूलौ दधतीं चिन्तयेचितिवासिनीम् ॥

End:

इति सीसपटं विलिख्य अष्टसहस्रं जप्य शत्रु(चत्वर)वृक्षमूले नि-खनेत् । तस्य मारणं भवति ॥

No. 6293. चित्रविद्याधरीमन्तः. CITRAVIDYADHARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 307a of the MS. described under No. 5477.

This Mantra is addressed to a spirit known as Citravidyā, and is supposed to have the power of making people spellbound and of bestowing protection on the supplicant.

Beginning:

अस्य श्रीचित्रविद्याधरीमन्त्रस्य संवर्त ऋषिः, शकरी छन्दः, चित्रविद्याधरी देवता; अमृतवज्रवीजं, जृं शक्तिः, इष्टार्थे विनियोगः। End:

सर्वजनं मोहय मोहय मां पालय पालय श्रीं हीं ठं जं झं णै। सं वं स्वाहा ॥

दशसहस्रं जपः, दशांशहोमः ॥

No. 6294. चिदम्बरनटनमन्त्रः.

CIDAMBARANAȚANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 283*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to Națarāja as worshipped in the temple at Cidambaram. It is supposed to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीचिदम्बरनटनमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, नाना छन्दांसि, नित्यानन्दताण्डवाडम्बरपरमशिवो देवता ; हंस बीजं, हरहर शक्तिः, श्रीं श्रीं कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिद्धार्थे विनियोगः।

End:

सौः शिवाय नमः सौः ।

परा पश्वाक्षरी देवी वाक्सिद्धिं कुरुते सदा॥

Colophon:

इति चिदम्बरनटनम् ॥

No. 6295. चिदम्बरनटनमन्त्रः.

CIDAMBARANATANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 240b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6296. चिदम्बरनटनमन्त्रः. CIDAMBARANATANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 926 of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No 6297. चिदुम्बरनटेश्वरमन्त्रः.

CIDAMBARANATĒŚVARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 17*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above,

Beginning:

अस्य श्रीचिदम्बरनटेश्वरमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, महाविराट् छन्दः, चिदम्बरनटेश्वरो देवता ; हं वीजं, सः शक्तिः, श्रीचिदम्बरप्री-त्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

शिवशिवचरणं शिवानन्दं शिवशिवशिवाय श्री(शि)वाय नमथं(श्वि) दम्बरनटः ॥

No. 6298 चिदम्बरमेलनकवचः.

CIDAMBARAMĒLANAKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 220*a* of the MS. described under No. 5661. Complete.

Copied by Pāpayyalinga son of Mājēți Sarvēśalinga, and the copying completed on Friday the 2nd Bahula of the Vaiśākha month in the year Bhava.

A prayer addressed to Națarāja and Tripurasundarī for securing their protection.

Beginning:

वक्ष्यामि कवचं दिव्यं संमेलनसभापते । आयुष्करं शुभकरं सर्वामीष्टप्रदायकम् ॥ ऋषिर्नन्दीश्वरः प्रोक्तः छन्दोऽनुष्टुप् महाद्युते । देवता चित्सभानाथः सर्वार्थे विनियुज्यते ॥ तारादिमायाषड्दीर्घबीजैरङ्गानि विन्यसेत् ॥

अस्य श्रीचिदम्बरसंमेलनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य नन्दिकेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचिदम्बरेश्वरत्रिपुरसुन्दरी देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, योगः ।

> चिदम्बरेश्वरः पातु शिरस्निपुरसुन्दरी । ललाटं मे सदा पातु बालाहेमसमेश्वरः ॥

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

4765

End:

इदं संमेलनन्दिव्यं कवचं वज्रपञ्जरम् । सर्वसारस्वतकरं सर्वक्षुद्रग्रहापहम् ॥ सर्वरोगप्रशमनं पापदारिद्यन्नाशनम् । अ(ति)कालं प्रजपेन्मन्त्रं सुप्रसन्नो भवेच्छिवः ॥

Colophon:

इत्याकाशभैरवे प्रत्यक्षफलसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे चिदम्बरसं. मेलनकवचं नाम त्रयस्त्रिंशदुपदेशः ॥

चिदम्बरमेलनकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6299. चिन्तामणिमन्त्रः.

CINTÂMAŅIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2936 of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to a mythical gem supposed to be capable of enabling one to obtain all that one may desire. Beginning:

अस्य श्रीचिन्तामणिमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, उमा-महेश्वरो देवता; रेफो बीजं, ऊकारश्शक्तिः, मम इष्टार्थे विनियोगः । End:

रकषमरय औ ऊ ओं र्हम्य्रौं । लक्षपुनश्चरणं, त्रिमधुरयुतातिल-तण्डुलेन अयुतहोमः ॥

No. 6300. चिन्तामणिमन्त्रः. CINTÁMAŅIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 248*a* of the MS. described under No. 581, Complete.

Same as the above.

895

No. 6301. चिन्तामाणिमन्त्रः. CINTAMAŅIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 97a of the MS. desoribed under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6302. चिन्तामणिसरखतीमन्त्रः. CINTĂMANISABASVATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 165*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Sarasvatī and is supposed to enable one to secure the favour of that goddess.

Beginning:

अस्य श्रीचिन्तामणिसरस्वतीमन्त्रस्य काण्व ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीचिन्तामणिसरस्वती देवता; हीं बीजं, हैं शक्तिः, हां कीलकं, श्री-चिन्तामणिसरस्वतीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ध्यानम्—

हंसाधिरूढां वलयावृताङ्गि रम्भोरुकामन्तरचारुका श्रीम् ।

हेमाञ्जकोशस्तनलम्बहारां चिन्तामणिं चन्द्रमुर्खी भजेऽहम् ॥ मूलमन्त्रः—

ओं हीं हां ओं सरस्वत्ये नमः ॥

No. 6303. जगन्मोहनगोपालमन्त्रः. JAGANMOHANAGOPALAMANTRAH

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 55*a* of the MS, described under No. 5885 Complete This Mantra is addressed to Kṛṣṇa and is supposed to enable one to bring the whole world under the control of one's magic spell. Beginning:

अस्य श्रीजगन्मोहनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, जगन्मोहनगोपालो देवता; ह्स्क्ल्य्रां बीजं, ह्स्क्रीं शक्तिः, हस्क्रूं की-लकं, श्रीजगन्मोहनगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः---हस्क्ल्य्रां, ह्स्क्लीं, ह्स्क्लें हस्क्लैं, ह्स्क्लीं, ह्स्क्लाः ॥

No. 6304. जगन्मोहनहयत्रीवमहामन्त्रः. JAGANMÖHANAHAYAGRĪVAMAHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 3696. Complete.

Supposed to enable one to bring the whole world under one's control through the favour of Hayagrīva to whom this Mantra is addressed.

Beginning:

अस्य श्रीजगन्मोहनहयग्रीवमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, त्रिष्ठुप् छन्दः, श्रीइयग्रीवो देवता; हे सौ बीजं, सहौ शक्तिः, जगन्मोहन इति की-लकं, मम श्रीहयग्रीवप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो हयग्रीवाय चन्द्रमण्डलवासिने नारकाक्षरशुभोत्तुङ्गपुञ्जाग-गम्याय

> अभिमन्त्र्य पिबेत् क्षीरं महाप्रज्ञामवामुयात् । तापत्रयावीनिर्मुक्तो भवत्येव न संशयः ॥

Colophon:

एतत् संपूर्णम् ॥ 395-A

No. 6305. जगन्मोहिनीमन्त्रः. JAGANMOHINIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 303b of the MS. described under No. 5477. Incomplete.

This Mantra is supposed to make people become favourably disposed to the person using it. It is also believed to have the power of making one's enemies become tongue-tied and of removing one's poverty.

Beginning:

ओं नमो भगवति प्रतिवादिनि वाग्बन्धनप्रतिवादिनि ताडय हुं फट् स्वाहा । मोहनमोहिनि ओं नमो भगवति जगन्मोहिनि रीङ्कारि परमानन्दमानिनि सर्वजनमनोवश्यकारिणि ।

End:

मम करुणाकटाक्षवीक्षणे मम दारिद्यनाशिनि मम प्रतिवादिजन-जिह्वास्तम्भिनि मम सर्वकल्मषभञ्जनि ममर्तप्रिये.

> No. 6306. जलदुर्गामन्त्रः. JALADURGAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 48*a* of the MS. described under No. 5445. Complete.

This Mantra is addressed to Jaladurgā, and is supposed to possess the power of removing the inauspiciousness attributed to a house injured by fire.

Beginning:

अस्य श्रीजलढुर्गामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, जल्दुर्गा देवता; वं बीजं, हीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम तत्प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

4768

End:

अमुकसाध्यं वेष्टय वेष्टय वेष्टय बन्धय बन्धय उच्चाटय उच्चाटय रे रे खे खे हुं फट् स्वाहा । ओं आं हीं कों वज्रकिराणि वाचा सिद्धिकरि आं क्लीं सौः ग्लौः कों एहि एहि स्वाहा ॥

सप्तवारं जपित्वा महदहनशान्तिभवति ॥

No. 6307. जातवेदसदुर्गामन्त्रः. JĀTAVĒDASADURGĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 2356 of the MS. described under No. 581. Complete.

This Mantra is addressed to Jātavēdasadurgā, and is intended to save one from difficulties and to weaken one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीजातवेदसदुर्गामन्त्रस्य मरीचिपुत्रः कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, जातवेदज्ञी(रश्रीः) देवता; दुं बीजं, आयेति शक्तिः, मम इष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यसिः—इति मूलमन्त्रः ॥ मतान्तरे—

> अमये जातवेदसे हन हन हुं फट् स्वाहा ॥ अयुतं च जपपुरश्चरणम्, आज्येन दशांशहोमः ॥

No. 6308. जातवेदसदुर्गामन्त्रः. JATAVEDASADURGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 278*a* of the MS. described under No. 5477. Incomplete.

Same as the above, but without the portion containing the Mantra proper.

No. 6309. जातवेदसदुर्गामन्त्रः. JATAVEDASADURGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 90a of the MS. described under No. 5566 Complete.

Same as the above.

No. 6310. जातवेदसन्यासः. JATAVEDASANYASAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 24b of the MS. described under No. 2902. Complete.

Regarding the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering at the same time the words forming the Jātavēdasa-mantra. Beginning:

अस्य श्रीजातवेदस(न्यास)मन्त्रस्य मरीचिपुत्रः कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, जातवेदााग्नेः दुर्गा देवता ; आग्निरिति बीजं, रुद्र इति शक्तिः, दुर्गा इति कील्रकं, प्रकटितबन्धनोच्चाट-नार्थे जपे विनियोगः ।

End:

अभयं भिण्डिपालं च दघानां दक्षिणामुजे । शक्कं खेटं धनुश्चैव कपालं मुसलं तथा ॥ शक्तिं गदाङ्कुशं घण्टां दघानां चोत्तरामुजे । प्रप्रहं कलशं चैव धारयन्तीं त्रिलोचनीम् ॥ त्वामिमां विष्णुभगिनीं त्वामिमां रुद्रसंयुताम् । एवं ध्यात्वा द्विजस्सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥

Colophon:

जातवेदसन्यासः समाप्तः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6311. जालन्थरपीठमन्त्रः. JÁLANDHARAPĪŢHAMANTRAӉ.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 3a of the M³. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is uttered in the way of worshipping the divina seat known as Jālandharapīțha, on which the goddess Śakti is represented as sitting. The seat itself is herein considered to be a divinity.

Beginning:

अस्य श्रीजालन्धरपीठमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, जगती छन्दः, श्री-जालन्धरपीठगौरी देवता; सौः बीजं, ऐं शक्तिः, हीं कीलकं, मम जालन्धरपीठशक्तिगौरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः---

ऐं क्लीं सौः श्रीं हीं ऐं श्रीजालन्धरपीठरुदात्मशक्तिश्री इति पूर्वाझायगुरून् मुलाधारे च पूजयेत् ॥

No. 6312. जालन्धरपीठमन्त्रः.

JĀLANDHARAPĪTHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 186 of the MS. described under No. 2848. Complete.

Same as the above.

No. 6313. जालन्धरपीठमन्त्रः. JÁLANDHARAPÍTHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 2296 of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

No. 6314. तत्त्वन्यासः. TAITVANYASAH.

Pages, 2. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 6b of the MS. described under No. 424. Complete.

On the touching of certain parts of the body, uttering at the same time certain appropriate words denoting the different Tattvas of the Sāńkhyas.

Beginning:

अथ तत्वन्यासः—

ओं हं नमः—पराय परमात्मतत्त्वाय नमः। स्वां नमः—पराय पुरु षतत्त्वात्मने नमः। ओं यं नमः—पराय प्रटुतितत्त्वात्मने नमः। ओं यं नमः—पराय प्रठुतितत्त्वात्मने नमः। तृतीयव्यापकम्। ओं मां नमः— पराय मद्दातत्त्वात्मने नमः। ओम् आं नमः—पराय अहंकारतत्त्वात्मने नमः। द्वयं हृदि। ओं वं नमः—पराय आकाशतत्त्वात्मने नमश्शिरसि।

End:

ओं पं नमः पराय अप्तत्त्वात्मने गुद्धे । ओं गां नमः । पराय पृथ्वीतत्त्वात्मने नमः पादयोः ।

Colophon :

इति तत्त्वन्यासः ॥

No. 6315. तत्त्वन्यासः. TATTVANYĀSAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

The Tattvas mentioned herein are those which relate to Vaisnavism.

Beginning:

अथ तत्त्वन्यासः—

ओन्नमो नारायणाय ओं इति प्राणायामः।

ओं मू: अग्न्यात्मने अनिरुद्धाय हृदयाय नमः । ओं मुवः वाय्वा-त्मने प्रद्युन्नाय शिरसे स्वाहा ! ओं सुवः सूर्यात्मने सङ्कर्षणाय शिखायै वौषट् । ओं मूर्भुवस्सुवः प्राणात्मने वासुदेवाय कवचाय हुम् ।

एषां तत्त्वमन्त्राणामन्तर्यामी भगवानृषिः, देवी गायत्री छन्दः तत्त्वान्तर्यामिश्रीलक्ष्मीनारायणो देवता ; श्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया श्री. लक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थं तत्त्वन्यासमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

ओं पराय आकाशात्मने महागणपत्तये नमः । ओं पराय वाय्वात्मने वायवे नमः । (ओं) पराय तेजआत्मने वह्वये नमः । ओं पराय अबात्मने वरुणाय नमः । ओं पराय पृथिव्यात्मने धरण्यै नमः ॥

No. 6316. तत्त्वन्यासः. TATIVANYÁSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 117b of the MS. described under No. 673. Complete.

Similar to the above.

The Tattvas herein mentioned are those that relate to the Sākta religion.

Beginning:

अथ तत्त्वन्यासः----

भूततत्त्वाय नमः हृदि । (अप्)तत्त्वाय नमः दक्षिणपार्श्वयोः । अग्नितत्त्वाय नमः वामपार्श्वे । वायुतत्त्वाय नमः अधरे । आकाशतत्त्वाय नमः नाभौ । शब्दतत्त्वाय नमः गुह्ये । स्पर्शतत्त्वाय नमः दक्षकटचाम् ।

रूपतत्त्वाय नमः वामकटचाम् । रसतत्त्वाय नमः दक्षनासिके । गन्धतत्त्वायं नमः वामनासिके ।

End:

चित्ततत्त्वाय नमः दक्षस्कन्धे । अहङ्कारतत्त्वाय नमः वामस्कन्धे । विज्ञानजीवतत्त्वाय नमः हृदि । परमांत्मतत्त्वाय नमः ब्रह्मरन्धे ।

इति षट्त्रिंशत्तत्वमयस्सन् जीवोऽहमिति शिवं ध्यायेत् ॥

No. 6317. तारकब्रह्ममन्त्रः.

TĀRAKABRAHMAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 165*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Rāma, and is intended to please Him and thus help one to attain salvation.

Beginning:

अस्य श्रीतारकब्रह्ममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सीतारामो देवता ; रां बीजं, नम इति शक्तिः, सीतारामायेति कीलकं, श्रीमहाराम प्रसादासिच्चर्थे जपे विनियोगः।

End:

ध्यानम्---

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनघं वीरासनाध्यासितं मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरे(रं)हस्ते(स्ता)म्बुजं जा(नु)नि । सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं पश्यन्तं मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ॥

मूलमन्त्रः—

ओं श्रीं रां रामाय नमः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6318. तिरस्करणीयन्त्रः. TIRASKARANİMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 104b of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is upposed to have the power of casting a spell on people so as to cause them to become spellbound and ever invisible.

Beginning:

अस्य श्रीतिरस्करणीमन्त्रस्य आनन्दमैरव ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, तिरस्करणी महाविद्या देवता ; हीं बीजं, हैं शक्तिः, हीं कीलकं, श्रीमहा-तिरस्करणीविद्याप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मूलमन्त्रः----

ओं नमो भगवते (ति)तिरस्कराणि महामाये सर्वपशुजनमनश्चक्षु-इश्रोत्रजिहाघाणप्राणतिरस्करणं कुरु कुरु हीं स्वाहा ॥

No. 6319. तिरस्करणीमन्त्रः.

TIRASKARAŅĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 230b of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीतिरस्करणीमहामन्त्रस्य अदृश्याव्यक्तभैरव ऋषिः, अष्टि-रछन्दः, श्रीतिरस्करणी देवता ; श्रीं बीजं, ह्रैं। शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्री-तिरस्करणीप—–गः।

End:

ऐं ही श्री ऐं ही सौः ओं नमो भगवति तिरस्कराणि महामाये सकलपशुजनमनश्चक्षुइश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा।

ऐं क्लीं सौं हीं मदद्ववानुमते हसौंः दक्षिणाझायसमयविद्येश्वरि भोगि-न्यम्बादिब्यश्री . . मः ।

No. 6320. तिरस्करणीमन्त्र:.

TIRASKARANĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page. Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 673. Complete. Same as the above.

No. 6321. तिरस्करणीमन्त्र:. TIRASKARANĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page. Begins on fol. 300b of the MS. described under No. 5477. Complete. Similar to the above.

Beginning and End :

ओं नमो भगवति कालि नीलकालि नीलवर्णे सर्वजनमुखचक्षमनस्तिर-स्करणि तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा इति ॥

> No. 6322. तिरस्करणीमन्त्र:. TIRASKARANĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 5686. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीतिरस्करणीमहामन्त्रस्य अदृश्यवत्त्र्ये(श्याव्यक्त) ऋषिः, पक्किरछन्दः, श्रीमहातिरस्करणी देवता; श्रीं बीजं, हीं शक्तिः, छीं कीलकं, मम श्रीतिरस्करणीमन्त्रदेवताष्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ओं नमो भगवति महामाये तिरस्करणि त्रैलोक्यमोहिनि सकलपशुजनमनोबुद्धचहङ्कारचक्षुरादिकं सर्वं तिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् खाहां॥

No. 6323. तुरीयाम्बामन्त्रः. TURĪYĀMBĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Sakti.

Beginning:

अस्य श्रीतुरीयाम्बामहामन्त्रस्य भोगानन्दभैरव ऋषिः, उाष्णिक् छन्दः, श्रीतुरीयाम्बा देवता ; हीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम श्री-तुरीयाम्बाप्रसादसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

इसकल हसकहल हीं श्रीतुर्याम्बाश्री ॥

No. 6324. तुरीयाम्बामन्त्रः. TURĪYĀMBĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 673. Complete.

Same as the above.

No. 6325. तुरीयाम्बामन्त्रः. TURĪYĀMBĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page. Begins on fol. 232a of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

तुरीयाम्बा महार्धा च अश्वारूढा तथैव च । मिश्राम्बा च तथा देवी श्रीमद्वाग्वादिनी तथा ॥

अस्य श्रीतुरीया(म्बा)महामन्त्रस्य महाभोगानन्दमैरव ऋषिः, अष्टि-रुछन्दः, तुरीषाम्बा देवता; हीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, हादिविद्यया खण्डत्रयेण करहृदयन्यासः ।

End:

हसकलहसकहलसकल ही तुरीयविद्याम्बादिव्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

No. 6326. तुर्यगायत्रीमन्त्र:.

TURYAGĀYATRĪMANTBAH.

Page, 1. Lines, 10 on a pag-.

Begins on fol. 98b of the MS. described under No. 5566. Complete.

This Mantra is addressed to Gāyatrī and is believed to have the power of absolving an individual from all his sins.

Beginning:

अस्य श्रीतुर्यगायत्रीमन्त्रस्य अथर्वपुत्रो विमल ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, परमात्मा देवता, मम समस्तपापक्षयार्थे विनियोगः । End:

मन्त्रः----परो रजसि सावदोम् ॥

No. 6327. तुर्यगायत्रीमन्त्रः

TURYAGĀYATRĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 250*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

No. 6328. तुर्यगायत्रीमन्त्रः. TURYAGAYATRIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 295b of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6329. तुरुसीकवचः. TULASIKAVACAH.

Pages, 25. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 55*a* of the MS. described under No. 5958. Complete.

Addressed to the Tulasi plant which is looked upon herein as a goddess.

Beginning:

ऋषय ऊचुः—

श्रुतं नस्सूत सकलं संस्तवं मङ्गलात्मकम् । तुलस्याः कवचं दिव्यं वक्तुमर्हस्यशेषतः ॥

सत उवाच-

पुरा रुते युगे विमाः कैलासशिखरे वरे । तारकस्य वधार्थाय कृतोद्योगस्तु शक्तिभृत् ॥ भगवन्तमुमानाथं पप्रच्छ प्रयतइशुचिः । * * * तुलसीकवचमन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः स्मृतः । अनुष्टुप् छन्द इत्युक्तं देवता तुलसी स्वयम् ॥ यो यं कामयते मर्त्यः तं तत्र विनियोजयेत् । तुलसी मे शिरः पातु फालं पङ्कजधारिणी ॥

End:

श्रुत्वैतद्वचनमनन्यमानसोऽयं देवस्य त्रिपुरहरस्य शक्तिहेतिः । तज्जप्त्वा क्षणमवधार्य तारकाख्यं हत्वारिं सुखतरमाप देवलोकम् ॥

Colophon:

्रति श्रीत्रवाण्डपुराणे ईश्वरत्रोक्ते तुलसीकवचं नाम दशमोऽ-ध्यायः ॥

> No. 6330. तुरुसीकवचः. TULASĪKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 5953. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीतुलसीकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,

श्रीत्रल्सी देवता, तुल्सी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

तुलसी मे शिरः पातु फालं पङ्कजधारिणी । दृशौ मे पद्मनयना श्रीसखी श्रवणं मम ॥

End:

नमस्ते तुलसीदेवि नमस्ते विष्णुवल्लमे । नमस्ते नारदनुते नारायाणि नमोऽस्तु ते ॥

> No. 6331. <u></u> **ਹ**चमन्त्र:. TRCAMANTRAH.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 125a of the MS. described under No. 5661. Complete.

This Mantra is addressed to the Sun-god and is believed to have the power of curing various ailments and also of bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning:

एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ छायासमेतश्रीसूर्यनारायणदे-वतामुद्दिश्य श्रीसूर्यनारायणदेवनाप्रीत्यर्थमादित्यपुराणोकतृचकल्पाविधानेन हरिहरब्रह्मात्मकस्य मित्रादिद्वादशनामात्मकस्वरूपिणोऽरुणादिद्वादशमा-साधिपतिस्वरूपस्य मित्रादिद्वादशवरुणसाहितस्य त्रयीमूर्तेर्भगवतः श्रीसूर्य-

अस्य श्रीतृचमन्त्रस्य कण्वपुत्रः 'प्रस्कण्व ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मित्ररविसूर्यभानुखगपूषहिरण्यगर्भमरीच्यादित्यसवित्रर्कमास्करा देवताः ; उ-दात्तस्स्वरः, ज्ञानं नेत्रं, सूर्यस्तत्त्वं, ह्वां बीजं, ह्वीं शक्तिः, श्रीसूर्यनारा-यणायेति कीलकं, पादार्धर्चकात्स्न्यैः तृचमन्नेण तिरावृत्त्याङ्गन्यासपूर्व-कार्घ्यप्रदाने विनियोगः ।

End:

उद्यन्नचेति मन्नोऽयं सौरः पापप्रणाशनः । ददाति परमां सिद्धिं मनसाभीष्टदर्शनम् ॥

प्वमर्घ्यप्रदानेन सर्वसिद्धिर्भवेद्दृढः ॥ दिनमेकं च यः कुर्यात् ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् । त्रिदिनं कारयेदेवमर्घ्यं यच्छन् समाहितः ॥ शिरोरोगो विमुच्येत नात्र कार्या विचारणा । प्रवं सप्तदिनं कुर्याच्छूलो नश्यति तत्क्षणात् ॥ कुर्या(द्वा दि नमेकं(यः)कुष्ठो नश्यति तत्क्षणात् । बाह्मणान् भोजयेत् पश्चात् भानुवारे विशेषतः ॥

> No. **6332.** त्रिपुटीमन्नः. TRIPUŢĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 87b of the MS. described under No. 5566. Complete.

This Mantra is addressed to a certain supernatural being known as Tripuțī, and is supposed to be helpful in enabling one to obtain the fulfilment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीत्रिपुटीमन्नस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्रिपुटीसंज्ञाः श्रीङ्गा(गौ)यों देवताः; क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिः, मम इष्टकाम्यार्थसिच्चर्थे विनियोगः । End:

श्रीं हीं क्वीं मूलमन्नः बहाबीजमित्यादि द्वादशलक्षं जपेत् । श्रीराजवृक्षसामिद्धोमदशांशः ॥

No. 6333. त्रिपुटीमन्नः. TRIPUTĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6334. त्रिपुरसुन्दरीकवचः.

TRIPURASUNDARĪKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 47b of the MS. described under No. 675. Complete as found in Rudrayāmala.

A prayer addressed to the goddess Tripurasundarī for protection.

Beginning:

पावेत्युवाच----

भगवन् सर्वल्लोकेश सर्वलोकोपकारकम् । यदुक्तं मे महादेव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥ सर्वार्थसाधकं देव सर्वसंपत्तिपूरकम् । ऋषियों दक्षिणामूर्तिः छन्दः प्रज्ञा(पङ्कि)रुदाहता ॥ देवता सुन्दरी प्रोक्ता नियोगः कार्यरक्षणे ।

ककारः पातु मे शीर्षमेकारः पातु फालकम् । ईकारः पातु वक्त्रं च लकारः कण्ठदेशकम् ॥

End:

अष्ठम्यां वा चतुर्देइयां यः पठेल्रयतः सदा । प्रसन्ना सुन्दरी तस्य सर्वसौभाग्यदायिनी ॥

Colophon:

इति रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे त्रिपुरसुन्दरीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6335. त्रिपुरसुन्दरीत्रैलोक्यमोहनकवचः.

TRIPURASUNDARÎTRAILŌKYAMŌHANAKAVACAH. Pages, 9. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 547.

Complete. Similar to the above: said to form the 15th Adhyāya of the 5th Khanda of Rudrayāmala.

Beginning:

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य शिव ऋषिः, वि-राट् छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनि-योगः ।

त्रैलोक्यमोहन बेति नाम यत्कथितं पुरा।

इदानीं श्रोतुमिच्छामि सर्वार्थ कवचस्य तु ॥ श्रीशिवः----

श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे । त्रैलेक्यमोहनं नाम महाविद्यौघविग्रहम् ॥

शिरो मे वाग्भवं पातु क ए इ ळ हीं स्वरूपकम् । हसकहळहीं ललाटश्व पातु कामेश्वरी मम ॥

End:

तस्मात् सर्वप्रयलेन कवचं धारयेत् सुधीः ।

सर्वान् कामानवाप्येह अन्ते देव्याः पदं लभेत् ॥ Colophon:

इति श्रीरुद्रयामले पत्रमखण्डे उमामहेश्वरसंवादे त्रैलोक्यमोइन-कवचं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ ३१६-А

No. 6336. त्रिपुरसुन्दरत्रिलोक्यमोहनकवचः.

TRIPURASUNDARĪTRAILŌKYAMŌHANAKAVACAĻ.

Pages, 6. Lives, 6 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 5686. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अमन्दं कलये नाथ नन्दस्वामिपदाम्बुजम् । मम भृङ्गायते यत्र शेर(चेत)श्चिन्मधुदित्तया(लिप्सया) ॥

श्रीदेव्युवाच---

महात्रिपुरसुन्दर्या या या विद्याः सुदुर्लभाः । रूपया कथितास्सर्वाः श्रुता बुद्धिगता मयि ॥ प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मन्त्रविग्रहम् । त्रैलेक्यमोहनं नाम नामतः कथितं पुरा ॥

महात्रिपुरसुन्दर्याः कवचस्य ऋषिः शिवः । छन्दो विराट् देवता च महात्रिपुरसुन्दरी ॥

End:

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेत्सुन्दरीं पराम्। नवल्रक्षं प्रजप्तापि तस्य विद्या न सिध्यति ॥

स शस्त्रघातमामोति सोऽचिरान्मृत्युमामुयात् । तस्मान्नित्यं पठेडीमान् मुक्तिकामार्थसिद्धये ॥

Colophon :

इति श्रीरुद्रयामळे श्रीत्रिपुरसुन्दरीत्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6337. त्रिपुरसुन्दरत्रिेलोक्यमोहनकवचः.

TRIPURASUNDARĪTRAILŌKYAMÕHANAKAVACAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 54b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Slightly different from the above at the beginning as shown below :---

श्रीमत्रिपुरसुन्दर्या या या विद्याः प्रकाशिताः । तास्तास्सर्वा महादेव श्रुताश्चाधिगता मया ॥ प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मन्त्राविप्रहम् । त्रैलोक्यमोहनं चेति नामतः कथितं पुरा ॥

No. 6338. त्रिपुरसुन्दरीत्रैलोक्यमोहनकवचः.

TRIPURASUNDARĪTRAILŌKYAMŌHANAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 82*a* of the MS. described under No. 3472. Complete.

Same as the above.

No. 6339. त्रिपुरसुन्द्रीमन्त्र:.

TRIPURASUNDARĪMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56*a* of the MS. described under No. 3691. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the goddess Tripurasundarī.

Beginning:

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य स्वच्छन्दभैरव ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता; ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थे जपे विनियोग

End:

कए ईल हीं हसकहल हीं सकल हीं।

No. 6340. त्रिपुरसुन्दरीमन्त्रन्यासः.

TRIPURASUN DARIMANTRANYĀSAH.

Substance, palm-leaf. Size, 8 × 1¹/₄ inches. Pages, 8. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Complete.

Regarding the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering the appropriate letters of the Tripurasundarimantra while doing so.

Beginning:

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः मूर्भि, पक्कि रछन्दः मुखे, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता हृदये; ऐं बीजं नाभौ, सौः शक्तिः पादयोः, क्लीं कीलकं सर्वाङ्गे, इति ऋष्यादिन्यासः । End:

श्रीं ललाटे, हीं गले, झीं हृदि, ऐं नामौ, सौः मुलाधारे, ओं वसरन्ध्रे, झीं मुखे, श्रीं वस्तौ; ५ मूलाधारे, ६ हृदये, ४ वसरन्धे; सौः दक्षकरे, ऐं वामकरे, झीं दक्षपादे, हीं वामपादे, श्रीं महाहृदये — इति महासौभाग्यन्यासः ॥

सम्पूर्ण हृदि न्यसेत् ॥

No. 6341. त्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रः.

TRIPURASUNDARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 547 Complete.

This Mantra is in praise of Tripurasundarī. It describes her various characteristics under different significant names.

For the beginning, see under No. 6343.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

End:

महामहागुप्ताये नमः महामहाभुक्ताये नमः महामहानन्दाये नमः महामहास्पन्दाये नमः महामायाये नमः महामहाश्रीचक्रनगरसम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं हीं ऐं श्रीराजराजेश्वर्ये नमः ओं तत्सत् ॥

No. 6342. त्रिपुरसुन्द्रीमालामन्त्रः.

TRIPURASUNDARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 16a of the M5. described under No. 5864. Complete.

This is associated with an Uccāțanamantra ințented to drive away evil spirits.

Similar to the above otherwise.

Beginning :

त्रिपुरसुन्दर्युचाटनमन्त्रः----

ओं नमो भगवति महादेवि जगज्जननि चतुर्भुवनाधीश्वरि राज-राजेश्वरि महिषासुरमर्दनि त्रिशूलखडुपाशाङ्कराधरे महारौद्रशक्तिरुद्रस्व-रूपिणि ।

End:

चण्डिग्रहरुण्डिग्रहमुण्डिग्रहवन्धग्रहविध्वंसिनि हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6343. त्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रः.

TRIPURASUNDARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 16 of the MS. described under No. 547. Complete.

Slightly different from No. 6341.

Beginning:

अस्य शक्तिशुद्धीशमहात्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधि-ष्ठायि(ता)वरुणादित्य ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः,सात्त्विकाकारभद्दारिकापीठ- स्थितकामेश्वरकामेश्वराङ्कानिलयकामेश्वरकामेश्वरीनिलयनामललितादेवताश्री श्रीभट्टारिका देवता; खडुसिद्धौ विनियोगः ।

For the end, see under No. 6341.

No. 6344. त्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रः. TRIPURASUNDARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57*a* of the MS. described under No. 3691. Complete.

Same as the above.

No. 6345. तिपुरसुन्द्रीमालामन्तः.

TRIPURASUNDARÌMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 61b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रस्य वरुणादित्यः, देवी गायत्री, महात्रिपुरसुन्दरी परा भट्टारिका, महा---गः

मों ऐं हीं श्रीं नमस्तिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्तदेवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वहि-वासिनि ।

End:

श्रीचकनगरसम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

श्री हों ऐं जों।

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रतः । वद्विवातभयक्षोमे राजराजस्य विष्ठवे ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

आपत्काले नित्यपूजां विस्तरात् कर्तुमक्षमः । एकवारं जपेदेनं सर्वपूजाफलं लभेत् ॥

Colophon:

इति मालामन्त्रस्सम्पूर्णः ॥

No. 6346. त्रिविकमगायत्री. TRIVIKRAMAGAYATRI.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 5786. Complete.

This is the Gāyatrī-mantra relating to Viṣṇu in the incarnation of Trivikrama.

Beginning:

ओं त्रिविकमाय विद्महे विश्वरूपाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्र-चोदयात् ओं । इति प्राणायामः । त्रिविकमाय विद्महे हृदयाय नमः ।

अस्य श्रीत्रिविकमगायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-त्रिविकमो देवता; त्रिविकमप्रेरणया त्रिविकमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। End:

त्रिविक्रमगायत्रीमन्त्रजपक्करिष्ये--

त्रिविकमाय विद्यहे विश्वरूपाय धीमहि ।

तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

इति जपः उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6347. त्रैलेक्यमङ्गलकवचः. TRAILOKYAMANGALAKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page. Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 831. Complete.

This Mantra is supposed to have the power of securing protection for one in all the three worlds.

Beginning:

पुरुस्त्य उवाच-

भगवन् सर्वधर्मज्ञ कवचं यत् प्रकाशितम् । त्रैलेक्यमङ्गलं नाम कवचं कथय प्रभो ॥

सनत्कुमार उवाच----

श्रृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् । नारायणेन कथितं कृपया वसणे पुरा ॥

त्रैरोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः । ऋषिरछन्दो हि गायत्री देवो नारायणरखयम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।

प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च। फारुं पायानेत्रयुग्ममष्टार्णो भुवि संस्थितः ॥

End:

त्रैलोक्यमङ्गलं नामं कवचं ब्रह्मरूपिणम् । ब्रह्मेशानसुरेभ्यश्र नारायणमुखाचयुतम् ॥

त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥ इदंकवचमज्ञात्वा यो जपेत् पुरुषोत्तमम् । शतलक्षं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रस्सिद्धिदायकः ॥

Colophon :

इति सनत्कुमारतन्त्रे त्रैलोक्यमङ्गळं नाम कवचः समाप्तः ॥

No. 6348. त्रेलोक्यमोहनरामकवचः. TRAILOKYAMOHANARAMAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 757. Complete.

This is a portion of Brahmayamala.

This Mantra is supposed to enable one to win the favour of Rāma and thus obtain protection.

Beginning:

पार्वत्यवाच---

भगवन् सर्वदेवेश सर्वदेवनमस्कृत । सर्वे मे कथितं देव राममन्त्रं विशेषतः ॥ त्रैलेक्यमोहनं रामकवचं पूर्वस्चितम् । कथयस्व महादेव यद्यहं तव वस्त्रभा ॥

अस्य श्रीरामचन्द्रकवचमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; ओं बीजं, नमइशक्तिः, रामायेति कील्रकं, श्री-रामचन्द्रप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

> भों(कारो मे)शिरः पातु तारकं वसरूपधृत् । अनन्ताग्निस(ज्ञान)हा सेन्दुर्नासामेकाक्षरोऽवतु ॥ ओं रां रामाय नम इति षड्वर्णो अक्तिमुक्तिदः । फाळं पायान्नेत्रयुग्मं रामाद्यक्षरसंज्ञिकम् ॥

End:

प्रणवादिनमोन्तोऽयं मालामन्त्र उदीरितः। राजस्थाने सदा पातु रघुवंशसमुद्भवः ॥

सम्यग्ज्ञास्वा तु कवचं मन्त्ररस्याच्छीघ्रासिद्धिदः । तस्मान्मन्त्रं जपेन्नित्यं सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥

Colophon:

इति श्रीवद्मयामले पार्वतीश्वरसंवादे श्रीरामस्य त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं संपूर्णम् ॥

> No. 6349. त्रैलोक्यमोहनरामकवचः. TRAILOKYAMOHANABAMAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 2549. Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

ततरत कवचं सम्यक् सर्वकार्याणि साधयेत् । मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्रयौं विना ततः ॥ (यो भक्त्या चिन्तयन् रामं) कवचं धारयेत् सुधीः । गद्यपद्यमयी वाणी (तस्य वक्ने प्रवर्तते) ॥

No. 6350. त्रैलोक्यमोहनरामकवचः. TRAILÔKYAMÔHANARĀMAKAVACAH.

Pages, 7. Lines, 5 on a page. Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 5263. Complete. Same as the above.

No. 6351. ज्यम्बकमन्त्र:. TRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 5987. Complete.

This Mantra is addressed to Siva and is supposed to bestow on one long life and prosperity.

Beginning:

अस्य श्रीव्यम्बकस्तोत्रमहामन्त्रस्य मैत्रावरुणपुत्रो वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मृत्युझयव्यम्बकरुद्रो देवता; देवदेव्यौ प्रणवौ बीज-शक्ती, अत्र मूलमन्त्रेण करशुद्धिं दृत्वा प्रणवं करतलयोर्विन्यस्य । End:

ञ्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्ध-नान्मृत्योर्भुक्षीय मामृतात् । मम पत्नीपुत्रपरिवारसमेतस्य आयुस्समृाद्धे-(ध्य)तां, मृत्युं नाशय स्वाहा । ओं ह्रीं ह्रां जुं सः ओं भूर्भुवस्सु-वस्स्वाहा ॥

No. 6352. ज्यम्बकमन्तः.

TRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 134*a* of the MS. described under No. 29. Complete

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

ज्य(त्रिय)म्बक महादेव त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥ तावकस्त्वद्गतप्राणः त्वचित्तोऽहं सदाशिव । इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं त्रियम्बकम् ॥ ज्यम्बकं मामृतात् ॥

No. 6353. ज्यम्बकमन्त्र:.

TRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 116a of the MS. described under No. 119.

Complete.

Same as the above.

Colophon:

इति ज्यम्बकमन्त्रः संपूर्णः ॥

No. 6354. ज्यम्बकमन्त्र:. ТВУАМВАКАМАНТВАН.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 42*a* of the MS. described under No. 432. Complete.

Same as the above.

No. 6355. **эयम्बकमन्त्र:.** TRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 60*a* of the MS. described under No. 6032. Complete.

Same as the above.

No. 6356. эयम्बकमन्त्र:. ТRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 98*a* of the MS. describe l under No. 446. Complete.

Same as the above.

No. 6357. эयम्बकमन्त्र:. ТКҮАМВАКАМАNTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीव्यम्बकरुद्रमहामन्त्रस्य बन्ना ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, व्यम्बकमहारुद्रो देवता, मम मृत्युआयप्रसाद —गः।

End:

आदौ---

प्रागादि(षु)चतुर्दिक्षु दिग्बन्धं कारयेत्कमात् । दुर्गा विनायकश्चैव वागीशः क्षेत्रपालकः । एते दिग्बन्धमन्त्रास्स्युरन्ततो नम उच्यते ॥

मूलम् -

ञ्यम्बकं मामृतात् ॥

No. 6358. ज्यम्बकमृत्युझयमन्त्र:.

TRYAMBAKAMRTYUÑJAYAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 54*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Supposed to aid one in overcoming the bondage of death.

Beginning:

अस्य श्रींच्यम्बकमृत्युझयमहामन्त्रस्य मैत्रावरुणपुत्रो वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीव्यम्बकमृत्युझयरुद्रो देवता; देवदेव्यौ प्रणवौ बीज-शक्ती, ओं बीजं, क्लीं शक्तिः, मं मृत्युमोचन इति कीलकं, मम चिन्ति-तमनोरथासिदिद्वारा श्रीव्यम्बकमृत्युझयरुद्रप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

ओं हीं ज्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

No. 6359. ज्यम्बकरुद्रकवचः.

TRYAMBAKARUDRAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 986 of the MS. described under No. 446. Complete.

A prayer to Siva beseeching protection.

Beginning:

त्र्यम्बकरुद्रकवचम्---

अस्य श्रीरुद्रकवचस्तोत्रमन्तस्य दुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-ज्यम्बकरुद्रो देवता ; ओं बीजं, हीं शक्तिः, कीं कीलकं, मम शरीररक्षणार्थ रुद्रकवचस्तोतमन्त्रजपं करिष्पे

> एवं सर्वगतं देवं सर्वदेवमयं शिवम् । कवचं संप्रवक्ष्यामि अङ्गप्राणांश्र(णादि) रक्षकम् ॥

शिवो मे शिरसं पातु ललाटं नीललोहितः । नेत्रे (द्वे) त्र्यम्बकः पातु मुखं पातु महेश्वरः ॥

End:

त्राहि लाहि त्रिलोकेश त्राहि त्राहि त्रिलोचन । त्राहि मां पार्वतीनाथ त्राहि मां भवभञ्जन ॥

पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम् । काम्यार्थी लभते कामान् मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ॥ Colophon :

इति श्रीव्यम्बकरुद्रकवचं संपूर्णम् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6360. त्वारितापार्वतीमन्त्रः. TVARITĀPĀRVATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1666 of the MS. described under No. 537. Complete.

Addressed to Parvatī and supposed to be helpful in making the animate and inanimate beings in the three worlds become favourably disposed towards one.

Beginning:

अस्य श्रीत्वरितापार्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्वरिता पार्वती देवता ; हीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, क्वीं कीलकं, मम त्रैलोक्य• वश्यसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

मूलमन्त्रः---

हीं योगिनि योगिनि योगीश्वरि योगिभयङ्करि सकलस्थावरजङ्गममुख-हृद्यं मम वशमाकर्षय आकर्षय स्वाहा ॥

No. 6361. त्वरितामन्त्रः. TVARITĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 276a of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6362. त्वरितामन्त्रः. TVARITAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886. Complete. Similar to the above.

4798 A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF Beginning:

त्वरितायाः सद्योजात (ऋषिः), अतित्रिष्टुप् छन्दः, त्वरिता देवता त्वं बीजं, भं शक्तिः, स्वेच्छाकरणसिद्धचर्थे । End :

कराय भीमवेषाय हुं फट् च विजयद्वयम् । ह्रां खं फट् च रिपून् फट् च स्वाहान्तं मन्त्रमुच्यते ॥ अक्षरसहस्रं जपः ।

ठकारमध्ये परिलिख्य मात्रां बाह्येऽष्टपत्रेषु च हुं फडर्णम्। संवेष्टच पाशाङ्करामातृकार्णमाराधयेत् रयामलवीरभद्रम् ॥ आराधनानन्तरं मातृकावर्णपूर्वकं जपेत् ॥

> No. 6363. त्वरितामन्त्रः. TVARITĂMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 89*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Addressed to Parvati: supposed to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीत्वरितामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीत्वरिता पार्वती देवता; हीं बीजं, श्रीं शक्तिः, मम इष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थे जपे विनि-योगः ।

End:

ओं हीं हुं खे च च्छिक्षस्ति हूं हीं फट् लक्षजपपुरइचरणं कुर्यात्। मधुरत्रयाक्तैः बिल्वसमिद्धिर्दशांशहोमः॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6364. त्वरितामन्त्र:.

TVARITĂMANTRAH.

Page, 1. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 234b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6365. दक्षिणकालिकामन्त्रः.

DAKSINAKĀLIKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Daksinakālikā, who is the same as the Pārvatī who is worshipped in the South-

Beginning:

अस्य श्रीदक्षिणकालिकामहामन्त्रस्य महाकाल भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीदक्षिणकालिका देवता; कां बीजं, कीं शक्तिः, हैं(कैं)कीलकं, मम श्रीदक्षिणकालिकाप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

की की की ही ही ही दक्षिणकालिके ही २ की २ हु फट् स्वाहा ॥

No. 6366. दक्षिणकालीकवचः.

DAKŞINAKĀLĪKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 48*b* of the MS. described under No. 2886. Complete.

Taken from Rudrayāmala.

Addressed to Daksinakālikā with a view to obtain help and protection.

397-A

Beginning :

श्रीशिव उवाच—

श्रुणु देवि महाविद्यां सर्वविद्योत्तमोत्तमाम् । सर्वेश्वरीं महाविद्यां सर्वदेवप्रपूजिताम् ॥

अस्य श्रीदक्षिणकाळीत्रैलोक्यमोहनकवचस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, इमशानकालिका देवता, चतुर्वर्गसिद्धये जपे विनियोगः ।

> ल्लाटे पातु वका मे हरेणाराधिता पुरा । . नेत्रयुग्मं सदा पातु कां कीं श्रीं विष्णुसेविता ॥

End:

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्काळिकामनुम् । ध्यानेन कोटिजाप्येन तस्य विद्या न सिध्यति ॥

यदिदं कवचं दिव्यं प्रकाशात्सिवहा(द्विदं) भवेत् । भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय साधकाय प्रदापयेत् ॥

Colophon:

इति श्रीरुद्रयामळे हरपार्वतीसंवादे श्रीदक्षिणकाळिकायाः त्रैलोक्य-मोहनकवचं समाप्तम् ॥

No. 6367. दक्षिणामूर्तिकवचः.

DAKŞINĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 173a of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Siva as Daksināmūrti, and is supposed to be capable of bestowing on the supplicant whatever he may desire.

Beginning:

बसा उवाच-

श्रुण्वन्तु ऋषयस्सर्वे गुह्यादुद्धतमं महत् । दक्षिणामूर्तिदेवस्य कवचं च वदाम्यहम् ॥ नारदेन कृतं पूर्वे श्रीरामस्य महात्मनः । रहस्यं कथितं तस्य अगरत्येन महात्मना ॥

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारदभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिभगवान् रुद्रो देवता; ओं बीजं, खाहा शक्तिः, नमः कीलकं, श्रीदक्षिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्थे जेपे विनि-योगः ।

> प्राच्यां रक्षतु देवेशः प्रतीच्यामभयप्रदः । दक्षिणस्यां जगन्नाथ उत्तरस्यां सदाशिवः ॥

End:

तसातिकं बहुनोक्तेन कवचं धारयेद्यदि । सर्वान् कामानवामोतीत्यन्ते मुक्तिर्न संशयः ॥ ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदाद्विमागिने । व्योमवद्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ॥

Colophon:

इति श्रीमन्त्ररत्नाकरे शिवरहस्ये दक्षिणामूर्तिकवचं नामाष्टमः पटलः समाप्तः ॥

No. 6368. दक्षिणामूर्तिकवचः. DAKŞIŅĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 16. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 408 Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि बीजानि, खाहा शक्तिः, मम सकलाभीष्ट-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

> शिरो मे दक्षिणामूर्तिरव्यात्फालं महेश्वरः । दृशौ पातु महादेवः श्रवसी चन्द्रशेखरः ॥

End:

इतीदं कवचं देवि परमानन्ददायकम् । आयुरारोग्यसौभाग्यसुज्ञानैश्वर्यवर्धनम् ॥

Colophon:

इति श्रीउमामहेश्वरसंवादे दक्षिणामूर्तिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6369. दक्षिणामूर्तिकवचः. DAKŞIŅĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1866 of the MS. described under No. 119. Complete.

Similar to the above.

Supposed to enable one to become an inspired poet.

Beginning:

पावेत्युवाच---

देवदेवं जगन्नाथं विश्वमूर्ति परात् परम् । कवचं दक्षिणामूर्तेः कृपया वद मे प्रभो ।

ईश्वर उवाच--

वक्ष्येऽहं देवि देवेशं दक्षिणामूर्तिमव्ययम् । अणिमादिमहासिद्धिविधानचतुरं शुभम् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

ऋषिर्वसा समुद्दिष्टः छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतः । देवता दक्षिणामूर्तिः परमात्मा सदाशिवः ॥ * * * शिरो मे दक्षिणामूर्तिर्लेलाटं तु महेश्वरः । दृशौ पातु महादेवः श्रवणे चन्द्रशेखरः ॥

End:

जानू त्रियम्बकः पातु जङ्घे पातु पिनाकघृत् । अपसारहरः पादौ पातु सर्वाङ्गमीश्वरः ॥ यदिदं कवचं देवि परमानन्दकारकम् । प्रातःकाले शुचिर्मूत्वा तिवारं सर्वदा जपेत् ॥

गद्यपद्यन्तथा काव्यनाटके स्वयमेव हि । निर्गच्छान्ति मुखाम्भोजात्तस्य वक्रान्न संशयः ॥

Colophon:

दक्षिणामूर्तिकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6370. दक्षिणामूर्तिकवच:. DAKSIŅĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 129*a* of the MS. described under No. 29. Complete.

Same as the above.

In the end, the following additional stanza is found :---

आधयो व्याधयश्चेव न भवन्ति कदाचन । स विनाशयते नित्यं कालमृत्युमपि ध्रुवम् ॥ 4803 ,

No. **6371. दक्षिणामूर्तिकवचः.** DAKŞIŅĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 85*a* of the MS. described under No. 5568. Complete.

Similar to the above.

The proper repetition of this Mantra is supposed to bestow on one everything which one desires even including salvation.

Beginning:

श्रुण्वन्तु ऋषयरसर्वे गुह्यादुद्धतरं महत् । दक्षिणामूर्तिदेवस्य कवचं जपतामहम् ॥ नारदेन ऌतं सम्यक् श्रीरामस्य महात्मनः । रहस्ये कथितं सम्यगगस्त्येन महात्मना ॥ * * * माच्यां रक्षतु गौरीशः प्रतीच्यामभयप्रदः । दक्षिणस्यां जगन्नाथ उत्तरस्यां सदाशिवः ॥

End:

तस्मात्किमिह(म्बहु)नोक्तेन कवचं धारयेदादि । सर्वान् कामानवामोति अन्ते मुक्तिर्न संशयः ॥

Colophon:

दक्षिणामूर्तिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6372. दक्षिणामूर्तिकवचः.

DAKŞIŅĀMŪRTIKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 75b of the MS. described under No. 5568. Complete.

Similar to the above.

This Mantra is supposed to enable one to become a poet and also to accomplish one's desires.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

Beginning:

श्रीपार्वत्युवाच----

देवदेव जगन्नाथ विश्वमूर्ते परात्पर । नमस्तेऽस्तु त्रयीनाथ परमानन्ददायक ॥ कवचं दक्षिणामूर्तेः ऌपया वद् मे प्रभो ।

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिकवचस्तोत्रमहामन्नस्य न्नह्या ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिर्देवता; आं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

> शिरो मे दक्षिणागूर्तिरव्यात्फालं महेश्वरः । दृशौ पातु महादेवः श्रवणे चन्द्रशेखरः ॥

End:

नाटकादिप्रबन्धस्य कर्तृत्वं तेन लभ्यते । दक्षिणामूर्तिसायुज्यं तसिन्नेव न संशयः ॥

Colophon:

इति रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे दक्षिणामूर्तिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6373. दक्षिणामूर्तित्रैलोक्यविजयकवचः.

DAKSIŅĀMŪRTITRAILŌKYAVIJAYAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is supposed to confer on one success in all the three worlds.

Beginning:

परा शक्तिरुवाच-

देवेश श्रोतुमिच्छामि रहस्यातिरहस्यकम् । यन्न कस्यापि सम्त्रोक्तं गोपितं वर्णरूपकम् ॥

ईश्वर उवाच----

लोक्यजयदं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् । सर्वमन्त्रमयं दिव्यं शैवषट्कसमान्वितम्॥ कवचं शुभदं भद्रे दक्षिणामूार्तीशर्मणः ।

बह्यरन्ध्रे भृतौम(भ्रुवोर्म)ध्ये ललाटेऽव्यातु पत्रमः । अक्षियुग्मन्तथा पातु प्रणवोक्तः प्रपत्रमः ॥

End:

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः । गोपनीयं प्रयत्नेन किमन्यच्छोतुमिच्छासे ॥

Colophon:

इति श्रीचिदम्बरनटनतन्त्रे दक्षिणामूर्तिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6374. दक्षिणामूर्तिद्वादशाक्षरीमन्त्रः.

DAKȘIŅĀMŪRTIDVĀDAŚĀKȘARĪMANTRAĻ Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 816 of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is addressed to Siva conceived as Daksiņāmūrti. It consists of 12 syllables.

Beginning :

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिद्वादशाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तीश्वरो देवता ; आं बीजं, हां शक्तिः, सौः कीलकं, विनियोगः ॥

End:

मनुः---

ओं सौः हां साम्बशिवाय तुभ्यं स्वाहा ॥

No. 6375. दक्षिणामूर्तिनवाक्षरीमन्त्रः. DAKSINĀMŪRTINAVĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 81*a* of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is also addressed to Sivaas Daksināmūrti. It consists of 9 syllables.

Beginning:

. अस्य श्रीदाक्षिणामूर्तिनवाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायती छन्दः, श्रादक्षिणामूर्तीश्वरो देवता, आं बीजं, अः शक्तिः, नम इति कीलकं, जपे विनियोगः ।

End:

ओं अः नमः शिवाय अः ओं ॥

No. 6376. दुक्षिणामूर्तिपञ्चरम्. DAKŞIŅĀMŪRTIPAÑJARAM.

Pages, 12. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 831. Complete.

This manuscript was transcribed by Šivațeńka Vīrēśalińga for Paņditārādhya Sarvēśalińga, and the transcription was completed on Monday the 5th Bahula of Śrāvaņa in the year Dhātu.

The good results which this Mantra is supposed to bring about are described in the first two stanzas and in the last stanza.

Beginning:

नष्टराज्यरच सिद्धिश्च तथा निगलमोचनम् । ऋणदारिद्यनाशश्च तनयप्राप्तिरेव च ॥ अश्रुतरय प्रबन्धस्य सम्यग्व्याख्यानपाटवम् । प्रतिभोन्मेषणं चैब प्रबन्धरचना तथा ॥ 4808

ऋषिस्तस्य शुकः प्रोक्तः छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतः । देवता दक्षिणामृर्तिः प्रणवो बीजमिष्यते ॥

शिरो मे दक्षिणामूर्तिः पातु पाशविमोचनः । फालं पातु महादेवः पातु मे विश्वदग्दशौ ॥

दारान् पातु विरूपाक्षः पुत्रान् पातु जटाघरः । पशून् पशुपतिः पातु आतॄन् भूतेश्वरो मम ॥ इतीदं पञ्जरं यस्तु पठेन्नित्यं समाहितः । गद्यपद्यात्मिका तस्य वाणी निस्सरति ध्रुवम् ॥

End:

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन क्षेमार्थो सर्वदा पुमान् । इदमावर्तयेत्रित्यं दक्षिणामूर्तिपज्जरम् ॥ सालेक्यमपि सामीप्यं सारूप्यं च समाप्य च। प्रसादात्तस्य देवस्य सायुज्यं चाधिगच्छति॥

Colophon:

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे गुहनारदसंवादे दक्षिणामूर्तिपञ्चरं नामाष्टमोऽ ध्यायरसमाप्तः ॥

> No. 6377. दक्षिणामूर्तिपज्जरम्. DAKSINĀMŪRTIPAÑJARAM.

Pages, 9. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 90b of the MS. described under No. 5568.

Complete as found in the Markandeya-purana.

This Mantra is supposed to enable one to accomplish one's desires and to protect one's self from all dangers.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS, 4089

Beginning:

प्रणम्य साम्बमीशानं शिरसा वैशि(णि)को मुनिः । विनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ स्कन्दमादरात् ॥

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिपज्जरमहामन्त्रस्य शुक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ओं बीजं, विद्या शक्तिः, शुक्कवर्णं कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

> ध्यायेदेवं महादेवं प्रजपेत्पञ्चरं ग्रुभम् ॥ शिरो मे दक्षिजामूर्तिः पातु पाशविमोचनः । फालं पातु महादेवः पातु मे विश्वदृग्दशौ ॥

End:

सालोक्यमपि सारूप्यं सायुज्यं(माप्य) समवाप्यं च। प्रसादात्तस्य देवस्य सायुज्यं चाधिगच्छति॥

Colophon :

इति मार्कण्डेयपुराणे गुहनारदसंवादे दक्षिणामूर्तिपञ्चरं नामाष्टादशोऽ-ध्यायः ॥

No. 6378. दक्षिणामूर्तिमन्त्रः. DAKŞIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92a of the MS. described under No. 5566.

Complete.

This Mantra is also addressed to Siva conceived as Dakşiņāmūrti, and is supposed to enable one to become a wise and learned person.

Beginning:

अस्य श्रीदाक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य शुक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-दक्षिणामूार्तर्भगवान् रुद्रो देवताः; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, मम वाग्ज्ञान-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः---ओं हीं॥

दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने । ध्यानैकनिरताङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे ॥

No. 6379. दक्षिणामूर्तिमन्त्रः. DAKŞIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 239*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6380. दक्षिणामूर्तिमालामन्त्रः. DAKŞINĀMŪRTIMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is intended to counteract the evil effects caused by the Mantras used against one by one's enemies.

Beginning:

आ नमें। भगवते दक्षिणामूर्तये ब्रह्मरुद्रावतारेण पार्वतीमनोहर-त्रियाय नीलकण्ठाय महामणियकुटमाणिक्यभूषणाय वज्रनखवज्रकृप(केश)-वज्राक्षरावताराय ।

End:

परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रपरप्रयोगपरमारणपरस्तम्भनादि मम बलं वनं कुरु कुरु हर हर त्रिशूलधारिणे हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6381. दुक्षिणामूर्तिमालामन्त्रः.

DAKSINĀMŪRTIMĀLĀMANTRAH.

Pager, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 986 of the MS. described under No. 5568. Complete.

Similar to the above.

This Mantra is intended to enable one to destroy one's enemies and to cure epilepsy and other such diseases.

Beginning:

ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्तिये महाप्रलयकालरुद्राय सत्कुलसर्प-भूषणाय मुसलमुद्गरकटाक्षसंहरणाय जटाभरणभूषिताय गङ्गाधराय । End :

आत्मतन्त्रत्रयोगान् संहारय संहारय शूलेन दह दह पाशेन बन्ध बन्ध सकलापस्मारान् नाशय नाशय दक्षिणामृत्ये हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6382. दक्षिणामूर्तिमालामन्त्र:.

DAKSINĀMŪRTIMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Linés, 16 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5568. Complete

This Mantra is supposed to have the power to destroy all unseen evil agencies and to protect one from all dangers.

Beginning:

ओन्नमो भगवते वीरासगस्थिताय ज्ञानमुद्रापराय वटमूलवासिने सर्व-भूताधिपतये कपर्दिने महादेवाय अभिनवगोक्षीरधवळाय नागयज्ञोपवीताय नीलप्रीवाय ।

End:

भूतप्रेतपिशाचबसराक्षसघोरापसारान् सर्वग्रहान् दह दह मां त्रा-(य)स्व हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6383. दक्षिणामूर्तिमालामन्त्रः. DAKSINĀMŪRTIMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 97*a* of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is also in praise of Siva conceived as Daksināmūrti and is supposed to be capable of curing certain diseases and of sharpening the intellect.

Beginning:

अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिमालामन्नस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिर्देवता; ह्रांैबीजं, मेधा शक्तिः, श्रीं कीलकं, श्रीदक्षिणा-मूर्तिप्रसादासिच्द्यर्थे जपे विनियोगः ।

ओन्नमो भगवते दक्षिणामूर्तये स्मरणमात्रेण सन्तुष्टाय महाभय · निवारणाय.

End:

जाड्यं दह दह मेघां प्रकाशय प्रकाशय ऐं ऐं क्रीं क्रीं श्रीं-फट् फट् सौः सौः फट् स्वाहा ॥

No. 6384. दक्षिणामूर्त्यष्ठादशाक्षरीमत्रः.

DAKȘIŅĀMŪRTYAȘŢĂDAŚĀKȘARĪMANTRAH. Page, 1. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 81b of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra is supposed to be able to bestow wisdom on one. It consists of 18 syllables.

4813

Beginning:

अस्य श्रीदक्षिणामूर्त्यछादशाक्षरीमहामन्नस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तीश्वरो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, जपे विनियोगः ॥

End:

मनुः---ओं ब्लं नमः हीं ऐं दक्षिणामूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा ॥

No. 6385. दक्षिणामूत्यानुष्ट्रभमहामच्रः.

DAKŞINĀMŪRTYĀNUŞTUBHAMAHĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 82*a* of the MS. described under No. 5568. Complete.

This Mantra consists of 32 syllables.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीदक्षिणामूर्त्यानुष्टुभमहामन्त्रस्य विष्णु ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तीश्वरो देवता; आं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नम इति कीलकं, जपे विनियोगः ।

End:

ओं नमो भगवते तुभ्यं वटमूलनिवासिने । वागीशाय मम ज्ञानदायिने हीं स्वाहा ॥

> No. 6386. दत्तात्रेयकवचः. DATTÄTRĒYAKAVACAӉ.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5868. Complete as found in the Brahmāndapurāņa.

Addressed to Dattātrēya for help and protection.

Dattātrēya is the son of Atri and Anasūyā. and is considered to be an incarnation of Vișnu.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयकवचमहामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, दत्तात्रेयो देवता; वां बीजं, हीं शक्तिः, मां कीलकं, मम दत्ता योगः ।

> आत्रेयो मे शिरः पातु फालं मे मौनिशेखरः । योगीश्वरो दृशौ पातु हृदयं राजयोगिनः ॥

End :

खेचरत्वं सदा नॄणां सर्वकाम्यार्थसाधकम् । शिखायां धारयेत्रित्यं फलमेति न संशयः ॥

Colophon:

इति ब्रह्माण्डपुराणे नरनारायणसंवादे उत्तरखण्डे दत्तात्रेयकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6387. दत्तात्रेयकवचः. DATTĀTRĒYAKAVACAH.

Substance, palm-leaf. Size, $11\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 17*a*. The other works herein are Bhūtōccāţanahanumanmantra 1*a*, Dattātrēyāsţōttaraśatanāmastōtra 7*a*, Vīranṛsimhamantra 9*a*, Dattātrēyāsţākṣarīmantra 16*a*, Dattātrēyamālāmantra 19*a*, Nṛsimhakarāvalambanastōtra 20*b*.

Complete as found in the Uddamarēśvaratantra. Similar to the above.

Beginning:

दत्तात्रेयंसु(रेन्द्राद्यम)रमुनिगणैस्सेवितं विष्णुरूपं चन्द्राक्षंचा(कीक्षा)क्षमालाजिनजडधरं(धरजटिलं) पित्त(पीत)वर्णं शुभाङ्गम् । नानायोगाधिकारं सकल ऋषियुतं पावनं मौनिराजं

ध्यायेदेवं(ध्येयं देवैः) नराणामखिलगुभकरं देवदेवं नमामि ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

आत्रेयो मे शिरः पातु फालं मे मौनिशेखरः ।

योगीश्वरो दशौ पातु अलङ्घिकप्रियसुती(नस्यासुतइश्रुती) ॥

End:

दत्तात्रेयं महाकालि कवचं मठते सदा ॥

आयुष्यं योगवृद्धि च ऐश्वर्यमतुलं तथा।

पुत्रपौत्राभिवृद्धिं च वाकृसिद्धिं दाय(राज)योगिनः(ताम्) ॥

Colophon:

इति श्रीउजामरेश्वरीतन्त्रे दत्तात्रेयकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6388. दत्तात्रेयगायत्री.

DATTĀTRĒYAGĀYATRĪ.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 16*a* of the MS. described under No. 5868. Complete.

This is a Gāyatrīmantra in praise of Dattātrēya, and is supposed to enable one to win his favour.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयगायञ्याश्शवर ऋषिः, गायत्री छन्दः, दत्तात्रेयो देवता ; द्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकं, मम दत्तात्रेयप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ध्यानम्---

रविमण्डलमध्यस्थं रक्तं रक्ताब्जसंस्थितम् ।

योगारूढं ज्ञानघनं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

ओं दत्तालेयाय विद्महे योगीश्वराय धीमहि । तन्नो दत्तः प्रचोद-यात् ॥

इति यथाशक्ति गायत्रीं जपेत् ।।

398-A

No. 6389. दत्तात्रेयदिग्बन्धनम्.

DATTÁTREYADIGBANDHANAM.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 16*a* of the MS. described under No. 5868. Complete.

This Mantra is addressed to Dattātrēya, and is intended to safeguard the various quarters so as to prevent all dangers that may possibly come therefrom.

Beginning:

ओं आं हीं कों क्ष्मां क्ष्मी मत्सो(त्स्ये)न्द्राय पूर्वदिशं दत्तात्रे-यास्त्राय ठ ठ ठ ठ स्तम्भय स्तम्भय, हं द्रां दत्तात्रेयाय कबलेन्द्राय आम्नेयदिशं दत्तात्रेयास्त्राय ठ ठ स्तम्भय स्तम्भय, हरि निर्विष निर्विष गोरक्षणाय याम्यां दिशं दत्तात्नेयास्त्राय ठ ठ स्तम्भय स्तम्भय ।

End:

अरुणगेयाय ईशानदिशं दत्तात्रेयास्त्राय ठ ठ स्तम्भय स्तम्भय, ऐं क्लीं सौः आदिनाथाय ऊर्ध्वदिशं दत्तात्रेयास्त्राय ठ ठ स्तम्भय स्त-म्भय, ह्रीं श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नागदिशं दत्तात्रेयास्त्राय ठ ठ स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ॥

No. 6390. दत्तात्रेयद्वादशाक्षरमन्त्रराजमन्त्र:.

DATTĀTRĒYADVĀDAŠĀKṢARAMANTRARĀJA-MANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is intended to please Dattātrēya. It consists of 12 syllables.

Beginning:

(दत्तात्रेय)द्वादशाक्षरमन्त्रराजमन्त्रस्य शबररूपी शङ्कर ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीदत्तात्रेयपरमात्मा देवता; द्रां बीजं, नमः शक्तिः, दत्तात्रेयेति कीलकं, विनियोगः ।

End:

मनुः— ओं आं ही कों एहि दत्तात्रेय स्वाहा ॥

No. 6391. दत्तात्रेयनवाक्षरमन्नः.

DATTĀTRĒYANAVĀKŞARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No 5786. Complete.

This Mantra consists of 9 syllables. Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेय(नवाक्षर)मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, बृहती छन्दः, दत्तात्रेयो देवता, दत्तात्रेयप्रेरणया दत्तात्रेयप्रीत्यर्थे नवाक्षरदत्तात्रेयमन्त्र-जप विनियोगः ।

End:

नवाक्षरदत्तात्रेयमहामन्त्रजपं करिष्ये----

ओं दं दत्तात्रेयाय नमः । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6392. दत्तात्रेयमन्त्रः.

DATTĀTRĒYAMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 83*a* of the MS. described under No. 1872. Complete.

This is also addressed to Dattātrēya, and is intended to increase one's prosperity and to gain for one the good will of others.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयमन्त्रस्य श्रीभगवान् ऋषिः, मम सकल्लसंपद्धनै-श्वर्यवर्शाकरणार्थे जपे विनियोगः; ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय नमः— हूां अङ्कुष्ठाभ्यां नम ; ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय नमः—हूीं तर्ज-नीभ्यां नमः; ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय नमः—हूौं मध्यमाभ्यां नमः; ओं नमो भगवते ।

मूलमन्त्र:---

ओं हीं कीलकं श्रीं ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय कपिलपिङ्गल-जटाधराय.

End:

गङ्गास्नानविशेषपुण्यफलढं शीतं सुसाध्वन्वितं प्रेङ्कत्संस्कृतगद्यपद्यलहरीधारालधाराधरम् । नानाशास्त्रपुराणपारगमिदं श्रीकृष्णभक्तात्रियं दत्तात्रेयपदाराविन्दुयुगलं ध्याये(त्) जगत्पावनम् ॥

> No. 6393, दत्तात्रेयमन्त्रः. DATTĀTRĒYAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $4\frac{1}{2} \times 1$ inches. Pages, 4. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 3*a*. The other works herein are Hanumanmantra 1*a*, Sudarśanakavaca 5*a*, Sūryakavaca 8*a*, Dattātrēyāstöttarastōtra 12*a*, Vīrabhadrabadabānalamālāmantra 17*a*, Hanumatkavaca 19*a*.

Complete.

This Mantra which is also addressed to Dattātrēya is supposed to enable oue to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, दत्तात्रेयो देवता ; आं बीजं, कों शक्तिः, दत्तात्रेयेति कीलकं, मम इष्टार्थे जपे विनियोगः ।

End:

मन्त्र:--

ओं ही कों एहि दत्तात्रेय स्वाहा ॥

No. 6394. दत्तात्रेयमन्त्रः.

DATTATREYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 5786. Complete. Similar to the above.

Beginning and End :

गुरुनमस्कारः ॥

ओं दं दत्तात्रेयाय नमः । इति प्राणायामः 12. पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

No. 6395. दत्तात्रेयमन्त्र:.

DATTATREYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

आदौ प्रणवमुच्चार्य श्रीबीजं तदनन्त म्। मायाबीजं ततः पश्चात्कामबीजं ततः परम् ॥

4820

द्रां दत्तात्रेयाय नमः---अष्टाक्षरम्। End:

> उत्ताडिते करतलेऽप्यपसव्यसव्ये सोपानपर्वसदृशे उपरि स्वनाळे। प्रस्तार्य चर्म भसिताङ्गराग मत्रिसुतं रक्ताकिरीटजटाकलापम्(?) ॥

No. 6396. दत्तात्रेयमालामन्त्र:.

DATTĀTRĒYAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is supposed to have the power to protect one from all dangers and to destroy one's enemies.

Beginning:

ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय स्मरणमात्रसन्तुष्टाय महाभयानिवारणाय महाज्ञानप्रदाय चिदानन्दात्मने बालोन्मत्तपिशाचवेषाय महायोगिने अव-धूताय अनसूयानन्दवर्धनाय ।

End:

आकर्षय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय उच्चाटय उच्चाटय स्तम्भय स्तम्भय खे खे मारय मारय सम्पन्नय सम्पन्नय स्वाहा। मां पाळय पाळय दुष्टग्रहनिवारणाय विद्रावय विद्रावय पोषय पोषय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वपछवस्वरूपाय ओं नमो महासिद्धाय स्वाहा—इत्युपनिषत् ॥

No. 6397. दत्तात्रेयमालामन्त्रः. DATTĀTRĒYAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 46*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय सर्वदुष्टान्तकाय तपोवलपराक्रमाय. End:

महाशक्तिमते ब्रह्माविष्ण्वीश्वररूपाय सहस्रदहन हुं फट् स्वाहा ॥ Colophon:

मालामन्त्रः ॥

No. 6398. दत्तात्रेयमालामन्त्र:.

DATTĀTRĒYAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 6387. Complete.

This Mantra is supposed to make one wise and unattached to worldly life.

Beginning:

चिदानन्दगुरून् नत्वा मालामन्त्रं स(रम)राम्यहम् ॥

ज्ञानवैराग्यसिद्धचर्थं दत्तात्रेयं नमाम्यहम् ॥

ओं नमो भगवते दत्तात्रेयाय स्मरणमात्रसन्तुष्टाय महाभयनिवारणाय महाज्ञानप्रदाय.

End:

सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्रस्वरूपाय सर्वतन्त्रस्वरूपाय सर्वफलस्वरूपाय सर्वयोगनिधे (धये) सर्वभोगनिधे(धये) सर्वसुखनिधे(धये) ओं नमो महा सिद्धाय स्वाहा ॥

No. 6399. दत्तात्रेयमालामन्त्रः.

DATTĀTRĒYAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 15*a* of the MS. described under No. 5868. Complete.

A series of Mantras addressed to Dattätrēya.

Beginning:

4822

ओं ऐं क्वां क्वीं क्वूं श्रीं हूं हीं हूं सौः दत्तात्रेयाय नमः । End:

ओं श्रीं हीं क्वीं दत्तात्रेयाय विष्णवे नमः ॥

No. 6400. दत्तात्रेयवंज्रकवचः. DATTATREYAVAJRAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the fifth Pațala of the Uddāmarēśvaratantra.

This is intended to protect one from all dangers.

Beginning:

दत्तात्रेयवज्रकवचमहामन्त्रस्य व्यासो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तात्रेयपरमात्मा देवता ; द्रां बीजं, द्रीं शक्तिः, द्रूं कीलकं, श्रीदत्ता-त्रेयप्रीत्यर्थे मम आत्मरक्षणार्थे जपे विनियोगः ।

> भक्तप्रियो मुक्तिदाता जीवन्मुक्तिप्रदायकः । एवन्ध्यात्वानन्यचित्तो मद्वज्रकवचं जपेत् ॥ दत्तात्रेयः शिरः पातु सहस्राराब्जसांस्थितः। फार्ल्ण पात्वानसूयेयश्चन्द्रमण्डलमध्यगः ॥

End:

यः पठेद्वज्रकवचं दत्तात्रेयसमो भवेत् ॥ एवं शिवेन कथितं हिमवत्सुता [य]यै प्रोक्तं द(शि)लादमुनयेऽत्रिसुतेन पूर्वाच(वेम्)। यः कोटिवज्जकवचं पठाति (तीह) दत्ता-त्रेयोपमो योगी चिरायुश्र भविष्यति (भवति योगिसमश्चिरायुः)॥ Colophon:

इत्युड्डामरेश्वरतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे अतिरहस्य[नाम]दत्तात्रेयवज्रकवचं नाम पत्रमः पटलः॥

> No. 6401. दत्तात्रेयवज्रकवचः. DATTĀTRĒYAVAJRAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 5868.

Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is supposed to make one like Dattātrēya.

Beginning:

जटाजिनधरं देवं कोटिचन्द्रप्रकाशकम्।

प्रत्यक्षं स्मरणान्नित्यं दत्तात्रेयं नमाम्यहम् ॥

ऋषय ऊचुः--

कथं सङ्कल्पसिद्धिस्स्याहेदव्यास महामुने।

दशा(शिल)दनमुनिः प्राह मया किमपि नोच्यते । ममास्ति वज्रकवचं गृहाणेत्यवदन्मुनिः॥

अस्य श्रीवज्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य भैरव ऋषिः, दत्तात्रेयो महाख्यातः छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तितः। दैवता(त्व)हमेवास्य द्रां बीजमिति कीर्तितम् ॥ आं शक्तिः कीलकं स्यादोमात्मा (तु)ह्यं मनोर्मम ।

दत्तात्रेयहिशरः पातु सहस्राराब्जसंस्थितः । फालं पात्वानसूयश्च चन्द्रमण्डलमध्यगः ॥ End:

ऊर्ध्व पातु महासिद्धः पात्वधस्ताज्जटाधरः । रक्षाहीनं तु मे स्थानं रक्षत्वादिमुनीश्वरः ॥ एतन्मे वज्रकवचं यः प्रठेच्छृणुयादापि । बज्रकायः चिरं जीवेत् दत्तात्रेयवर्म ब्रुवन् ॥ * * * * * * इत्युवाच शिवो गौर्ये रहस्यं परमं शुभम् । यः पठेद्वज्रकवचं दत्तात्रेयसमो भवेत् ॥ एवं शिवेन कथितं हिमवत्सुतायै प्रेाक्तन्दशा(शिल्ला)द[नन]मुनयेऽत्रिसुतेन पूर्वम् । यः कोऽपि वज्रकवचं पठतीह दत्ता— त्रेयोपमश्चरति योगिसमश्चिरायुः ॥

Colophon:

इति दत्तात्रेयवज्रकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6402. दत्तात्रेयवज्रकवचः. DATTÄTREYAVAJRAKAVACAH.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 15*a* of the MS. described under No. 5788. Complete.

Similar to the above. Also supposed to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तालेय(वज्र)कवचस्तोत्रमन्नस्य शतरुद्र ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयः परमात्मा देवता; ओं बीजं, द्रां शक्तिः, द्रूं कीलकं, समस्तकार्यार्थे कवचमन्त्रपठने विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

दत्तात्रेयरिशरः पातु सहस्रांशुसमप्रभः । फालं पात्वानसूयेयश्चन्द्रमण्डलमध्यगः ॥

See under the previous number for the end.

No. 6403. दत्तात्रेयवज्रकवचः. DA1TĀTRĒYAVAJRAKAVACAH.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 5445. Complete.

Same as the above.

No. 6404. दत्तात्रेयवरयमन्त्र:.

DATTĀTRĒYAVAŚYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 15*a* of the MS. described under No. 5868. Complete.

This Mantra is supposed to win over people, so as to make them become favourably disposed towards one.

Beginning:

अस्य श्रीवश्यदत्तात्रेयमन्त्रस्य आत्रि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-दत्तात्रेयो देवता; आं बीजं, हीं शक्तिः, कों कीलकं, श्रीदत्तात्रेयप्रसाद-सिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम सानिध्यं कुरु कुरु मम मुख-दर्शनसर्वजनवशीकर हं हं श्रीं क्लीं हीं ओं अम्बिकादत्तात्रेयाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6405. दत्तात्रेयषडक्षरीमन्त्रराजमन्त्र:.

DA FTÄTR ÉYAŞADAKŞARÎMAN FRARÂJAMANTRAH. Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS, described under No. 5788. Complete.

This Mantra is supposed to have the power to remove one's sins and to increase one's wisdom and to enable one to accomplish one's desires.

• It consists of 6 syllables.

Beginning:

गुरुर्बसा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुस्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

प्राणानायम्य, अनन्तकोटिजन्माद्यवस्थापापनिवृत्त्यर्थमखण्डज्ञानसि-च्द्यर्थं मनोवाञ्छितफलसिद्धचर्थं दत्तात्रेयमुद्दिश्य दत्तात्रेयप्रीत्यर्थं दत्तात्रेय-मन्त्रजपं करिष्ये—

अस्य श्रीदत्तात्रेयषडक्षरीमन्त्रराजमहामन्त्रस्य शवर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता; ओं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम पश्यजनवशीकरणार्थे मानसाभीष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

पश्चपूजा । श्रीसद्भुरुचरणारविन्दाभ्यां नमः । श्रीदत्तात्रेयाय नमः ॥

No. 6406. दत्तात्रेयषोडशाक्षरमन्तः.

DATTĀTRĒYASÕDAŚĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra consists of 16 syllables and is supposed to be capable of removing one's poverty.

Beginning:

षोडशाक्षरी—

ओं ऐं क्लीं क्लूं हूां हूीं हूं सः दत्तात्रेयाय नमः ।

End:

मन्दारमूले मणिपीठसंस्थं सुवर्णदामाध्वरबद्धदीक्षम् । ध्यायेत्पुनीतं(त्सुपूतं) नवनाथसिद्धं दारिद्यदावानलदेवमेघम् ॥

No. 6407. दत्तात्रेयषोडशाक्षरमन्त्रराजमहामन्त्रः. DATTĀTRĒYAṢÕŅAŚĂKṢARAMANTRARĂJĀ-MAHĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

(दत्तात्रेय)षोडशाक्षरमन्त्रराजमहामन्त्रस्य शबररूपी शङ्कर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयपरमात्मा देवता; द्रां बीजं, नमश्शक्तिः, दत्तात्रेयेति कीलकं, विनियोगः ।

End:

ओं ऐं क्लां क्लीं क्लूं ह़ां ह़ीं ह़ूं सौः दत्तात्रेयाय नमः । उत्तर-न्यासः ॥

No. 6408. दत्तात्रेयस्तम्भनमन्त्रः.

DATFĀTRĒYASTAMBHANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 5868. Complete.

This Mantra is supposed to bewilder one's opposing disputants in a controversy and to make them mute and powerless to argue.

Beginning:

अस्य श्रीस्तम्भनदत्तात्रेयमन्तस्य भृगु ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री दत्तात्रेयो देवता; मां बीजं, हूं शक्तिः, ठं कीलकं, मम श्रीदत्तात्रेय-प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वेषां वादिनां सर्ववाक्चक्षुर्भुखमतिगतिं स्तम्भय सर्वजनं मे वश्यं कुरु कुरु दत्तदो देै हूं हीं दं दं जं जं ठं ठं दत्तात्रेयाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6409. दत्तात्रेयाष्टाक्षरीमन्तः.

DATTĀTRĒYĀSTĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 16*a* of the MS. described under No. 6387. Complete.

This Mantra consists of 8 syllables, and its repetition is supposed to please Dattātrēya.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयाष्टाक्षरीमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, दत्तात्रेयभगवान् देवता, मम दत्तात्रेयप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः, द्वां बीजं, द्वीं शक्तिः, द्वं कीलकम् ।

End:

मन्त्रः—

ओं श्रीं हीं कीं झौं दां एहि एहि दत्तात्रेयाय स्वाहा ॥

No. 6410. दत्तांत्रेयैकाक्षरमन्त्रः.

DATTĀTRĒYAIKĀKṢARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 45*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

This Mantra contains only one word, viz., द्वां, and Ai is not to be taken as forming part of the Mantra.

Beginning:

अस्य श्रीदत्तात्रेयैकाक्षरमहामन्त्रस्य शबररूपी शङ्कर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयपरमात्मा देवता; द्रां बीजं, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, मम श्रीदत्तात्रेयप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

पञ्चपूजा । मनुः--ओं द्रां । उत्तरन्यासः ॥

No. 6411. दत्तात्रेयोचाटनमन्नः.

DATTATREYOCCATANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol 14% of the MS described under No. 5868. Complete.

This Mantra is supposed to enable one to drive off evil spirits and to destroy all evil agencies.

Beginning:

अस्य श्रीउच्चाटनदत्तात्रेयमन्त्रस्य परब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, दत्तात्रेयो देवता; फं बीजं, वं शक्तिः, वुं कीलकं, श्रीदत्तात्रेयप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

हन शीघ्रं शीघ्रम् उचाटय उचाटय में में में में में में गच्छ गच्छ उचाटय उचाटय दत्तात्रेयाय में में बबद्ध विगच्छ विगच्छ कुरु कुरु खाहा ॥

No. 6412. द्धिवामनमन्त्रः.

DADHIVAMANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is intended to please Visnu conceived as foodgiving Vāmana

Beginning:

अस्य श्रीदधिवातनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, धृतिरुछन्दः, दधि-वामनो देवता, दधिवामनप्रेरणया दधिवामनप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End :

द्धिवामनप्रेरणया द्धिवामनप्रीत्यर्थे द्धिवामनमहामन्त्रजपङ्कारिष्ये — ओन्नमो भगवते श्रीविष्णवे अन्नाधिपतये स्वाहा ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6413. दुशवीरावलीमन्त्रः.

DAŚAVĪRĀVALĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 231b of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is intended to please the assemblage of ten Sāktagurus.

Beginning:

अस्य श्रीदशवीरावलीमन्त्रस्य परमानन्दभैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, दशवीरावली देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिूः, फट्कीलकं, दशवीरावलीप्र— गः ।

End:

हूं श्रीं फट् फं फां फीं सृष्टिवीरभैरवदि---मः ।

मार्तण्डवीरभैरवदि . . मः । कालाग्निभैरवदि — मः ॥

No. 6414. दशरलोकीमन्त्रः.

JAŚAŚLÔKĪMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $14 \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 11. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, injured Appearance, old.

Begins on fol. 4*a*. The other works herein are Upamanyustötra 1*a*, Mahānyāsa 9*b*, Saundaryalaharī!13*a*, Laghumātangī-

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

mantra 37a, Šivapañeāksarīmantra 38a, Mēdhādaksiņāmūrtimantra 39a. Mahāganapatimantra 40a, Sūryanārāyaņasaptāryāstotra 40b, Bhuvanēśvarīstotra 42a, Prāņapratisthāmantra 46a, Mūrtipratisthāmantra 49a, Prāņapratistākalpa 98a, Kalašapūjāprakāra 10ta Šatarudrīyajapahomāreanābhisēkanyāsavidhi 109a, Šivasahasranāmāvali 144a, Rudrahoma 162a.

Complete.

This Mantra contains a collection of ten Vēdic Rks, addressed to Sarasvatī, and is supposed to be able to bless one with learning.

Beginning:

ऋषय ऊचुः

कथं सारस्वत[ः]प्राप्तिः केन ध्याये(ने)न सुव्रत । महासरस्वती येन तुष्टा भवति तद्वद् ॥

आश्वलायन उवाच-

शृण्वन्तु ऋषयस्सर्वे गुह्यादुह्यतरं महत् । दशस्त्रोक्यमि(क्या इ)दं स्तोत्रं ध्यानपूर्वे वदाम्यहम् ॥

अस्य श्रीदश स्त्रोकीस्तोत्रमन्त्रस्य आश्वलायन ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीवागीश्वरी देवता; यद्वाग्वदन्तीति बीजं, देवीं वाचमजनयन्नि(न्ते)ति शाक्तिः, प्र णो देवीति कीलकं, परब्रह्माधिदैवत्यं, मम सारस्वतप्रसादसिच्चर्थे विनियोगः ।

प्र णो देवीत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सरस्वती देवता, ओं बीजं, मम वाक्सिद्धचर्थे विनियोगः। प्र णो देवी सरस्वती अवित्र्यवतु ।

End:

नामरूपात्मकं संवे यस्यामाविश्यतां मनः । ध्यायन्ती ब्रह्मरूपैका सा मां पातु सरस्वती ॥ यः कवित्वं निरातङ्कं भुक्तिं मुक्तिं च वाञ्छति। सोऽभ्यच्येंनां दश्चश्लोक्या भक्त्या स्तौति सरस्वतीम् ॥ शरदिन्दाविकासमन्दहासां स्फ़रदिन्दीवरलोचनाभिरामाम् । अरविन्दसमानसुन्दरास्यामरविन्दासनसुन्दरीमुपासे ॥ छन्दःपादयुगा निरुक्तसनखा शिक्षा . अस्मिन्नन्तर्गता दशस्त्रोकीमन्त्र। लिख्यन्ते-(१) प्रणो देवी . . अवित्र्यवत. (२) आ नो दिवो बृहतः उशती श्रणोत. (३) पावका नस्सरस्वती . धियावसः. (४) चोदयित्री सन्तानां . . यज्ञं दधे सरस्वती. (५) महो अर्णः . . विराजति. (६) चत्वारि वाक् पारीमता . . मनुष्या वदन्ति. . (७) यद्वाग्वदन्ति . जगाम. (८) देवीं वाचमजनयन्त सुष्ट्रतेतु. (९) उत त्वः पर्यन् . सवासाः. (१०) अम्बितमे नस्कृधि.

No. 6415. दाक्षायणीमन्त्रः.

DĀKSĀYANĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 6173. Complete.

This Mantra is addressed to Pārvatī, and is supposed to be able to destroy the effects of black magic.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

Beginning:

ओं नमो भगवति दाक्षायाणि कालिके सकलप्रयोगवेगान् संहर संहर दह दह पच पच शान्तिं कुरु कुरु. End :

> कुयोगसमये आं हीं कों स्वाहा ॥ सहस्रं जपात् सिद्धिः॥

No. **6416**. दिक्पालाष्टकमन्त्रः. DIKPĀLĀṢŢAKAMANTRAӉ.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 27*a* of the MS. described under No. 5786. Complete

This Mantra is addressed to the eight dieties presiding over and protecting the eight quarters.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । इन्द्राय नम इति प्राणायामः 12.

इं हृदयाय, द्रां शिरसे,.

श्रीइन्द्रप्रेरणया इन्द्रप्रीत्यर्थमिन्द्रमहामन्त्रजपङ्करिष्ये ।

ओं इन्द्राय नमः ओं। इति जप उपसंहारः पूर्ववत् ।

End:

गुरुनमस्कारः । ओं ईशानाय नम इति प्राणायामः 12.

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ईशानाय नम इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ।!

No. 6417. दिगम्बरगोपालमन्त्र:.

DIGAMBARAGOPÁLAMANTRAH,

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is supposed to please Krsna conceived as a naked young child.

Beginning:

अस्य श्रीदिगम्बरगोपालमन्त्रस्य नारद झिषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री दिगम्बरगोपालो देवता ; क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीदिगम्बरगोपाल-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End:

मनुः—

क्लीं ऋष्णाय जगन्मोहनविग्रहाय श्रीविष्णवे स्वाहा॥

No. 6418. दिव्यरूपगोपालमन्त्रः.

DIVYARŪPAGÕPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 54b of the MS. described under No. 5885. Complete.

Addressed to Krsna conceived as a cow-herd of resplendent divine appearance.

Beginning:

अस्य श्रीदिव्यरूपगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, दिव्यरूपगोपालो देवता ; लिं बीजं, लिं शक्तिः, इं कीलकं, दिव्यरूपगो-पालत्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

अं आं ई ई उं ऊं एं ऐं ओं औं अं अः श्रीविष्णवे स्वाहाः ॥

No. 6419. दीपिनीमन्त्र:. DĪPINĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 156*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sakti.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

Beginning:

अथ दीपिनी

तारं लक्ष्मीं च वाग्बीजं मन्मथं भुवनेश्वरीम् । एतज्जप्त्वा ततः पश्चात् वाग्भवारूयं समुच्चरेत् ॥ प्रणवं भुवनेशानि रमां कामं च वाग्भवम् । कामराजं ततो जप्त्वा त्रैलोक्यक्षोभकारकम् ॥

End:

कलसहहीं ओं ऐं क्ली श्रीं हीं कहलसं हीं कहलसं हीं कहयलसहीं कस कलहीं। ओं हीं श्रीं हूं हं सः ऐं क्लीं सौः ऐं हीं श्रीं ॥

No. 6420. दुर्गावीजैकाक्षरमन्त्रः.

DURGÁBĪJAIKÄKŞARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol 20*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is addressed to Durgā conceived as Laksmī. It consists only of one syllable.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । ओं दुः इति प्राणायामः 12. दां हृदयाय, दें शिरसे, दूं शिखायै, दं कवचाय, दौं नेलाभ्यां, दः अस्त्राय फट्, भू-र्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः ।

अस्य श्रीएकाक्षरदुर्गाबीजमन्त्रस्य कपिल ऋषिः, गायत्री छन्दः, दुर्गानामिका लक्ष्मीर्देवता, लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे एकाक्षरदुर्गाबीज-मन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

एकाक्षरदुर्गावीजमन्त्रजपं करिष्ये - ओं दुः ओं इति जपः। उपस हारः पूर्ववत् ॥

No. 6421. दुर्गामालामन्त्र:. DURGAMALAMANTRAH.

Pages, 16. Lines ,5 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is a Idressed to Durgā, and is intended to counteract the effect of certain Mantras tending to disable the various organs of one's body.

Beginning:

ओं लं हीं दुं दुर्गे नमो भगवति गजारूढे वज्रधारिणि इमशानवा-सिनि ऊर्ध्वकेशि लम्बचिबुके सूक्ष्माङ्गे षोडशकलाभरणे नररुधिरमांसभक्षिणि महाचोरभयङ्करि ज्वल ज्वल ज्वालामालिनि ज्वल ज्वल शूलिनि उच्चा-टनशूलिनि ।

End:

शिरोललाटभ्रूचक्षुरश्रे।त्रजिह्वाघाणकर्णमुखोष्ठदन्ततालुहनुमीवाबाहुस्क-न्धगुदवक्षस्थलोरूदरजानुजङ्घापादाङ्गुलीषु अवयवेषु परकट्ट्च्छेदिनि शिरःकट्ट् खण्डय खण्डय मन्त्रकट्ट् मर्दय मर्दय सकलकट्ट् नाशय नाशय बन्धय बन्धय आमय आमय ओं हीं रं ठं फट् स्वाहा ॥

No. 6422. दुर्गामालामन्त्रः. DURGAMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 5864. Complete.

Here both Sanskrit and Telugu lines are found mixed up.

This Mantra is addressed to Durgā and is supposed to be efficacious both in driving away evil spirits and in making them enter into a person with a view to annoy him.

Beginning:

ओं नमो भगवाति पार्वति परमेश्वरि वीरभादि विरूपाक्षि नागवादि (वाग्वादिनि) चामुाण्डि रत्नभूषि(णि) सर्वरूपिणि याक्षीणि कामाक्षि आवेशय आवेशय पुत्रि आवेशय बाह्याणि आवेशय आवेशय सर्वलोकैकपालकि आज्ञादुर्गि वनदुर्गि जलदुर्गि ज्वलदुर्गि शूलिदुर्गि.

End:

दैत्यदानवयक्षराक्षसत्रह्मराक्षसादि आवेशय आवेशय शीघ्र शीघ्र धुन धुन कम्पं कम्पं कालकम्पं कालकम्पं . . . स्वाहा ॥

No. 6423. दुर्गाषडक्षरमन्त्रः.

DURGĀSADAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20% of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra consists of 6 syllables and in intended to propitiate Durgā.

Beginning:

गुरुनमस्कारः, ओं दुंः दुर्गायै नम इति प्राणायामः १२.

End:

दुर्गाषडक्षरमहामन्त्रजपङ्कारिष्ये-----

ओं दुः दुर्गायै नम ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6424. दुर्गेकर्चमन्त्रः.

DURGAIKARCAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 5786. Complete. This Mantra is addressed to Laksmī conceived as Durgā. It is in the form of a Vēdic Rk.

Beginning:

ओं दुः दुर्गायै नम इति प्राणायामः १२.

जातवेदसे सुनवाम सोमं हृदयाय, भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । अस्य श्रीएकर्चेदुर्गामहामन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, दुर्गानामकलक्ष्मीर्देवता, लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्री. त्यर्थे एकर्चदुर्गामहामन्त्रजपे विनियोगः । End:

एकर्चदुर्गामहामन्त्रजपङ्कारिष्ये । जातवेद्से सुनवाम

दुरितात्याम्नः । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6425. देवतान्यासः.

DĒVATĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49*a* of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the names of the different manifestations of Sakti with the appropriate Mantras.

Beginning:

अथ देवतान्यासः ----

ओम् ऐं श्रीं हीं श्रीं हसौंः सहौं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै निवृत्त्यम्बादेव्यै नमः —दक्षपादाङ्गुष्ठे, इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवि-तायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः —दक्षगुल्फे, उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुल. सेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः —दक्षजङ्घे, ऋं ऋं सहस्रकोटिऋषिकुल-सेवितायै शान्त्यम्बादेव्यै नमः —दक्षजानुनि ।

End:

हं ळं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै शक्त्यम्बादेव्यै नमः --- वाम-पादाङ्गुष्ठे, क्षां ऐं ह्रीं श्रीं हसौं सहौं अं आं सर्वदेवात्मकायै श्रीपरा-म्बादेव्यै नमः ----सर्वाङ्गेष्वावाहयेत् ॥ Colophon:

इति देवतान्यासस्समाप्तः ॥

No. 6426. देवशाबरहनुमन्मन्त्र:.

DÉVAŚĀBARAHANUMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 47*a* of the MS. described under No. 235.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat and is intended to counteract the effects of black magic.

Beginning:

ओं पाणि(हि)पाणि(हि)हनुमन् पाहि परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रपरशून्य-पाक्षितन्त्रमृगतन्त्र.

End:

हनूमन् पूर्वमन्त्रे ईश्वर उवाच ॥

No. 6427. देवीकवच:. DĒVĪKAVACAH

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 2832 of the MS. described under No. 537. Complete.

Addressed to the goddess Devi or Sakti for obtaining safety and protection.

Beginning:

अस्य श्रीदेवीकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महालक्ष्मीदेवदेवी देवता, महामायाप्रीत्यर्थे विनियोगः । प्राच्यां रक्षतु माहेन्द्री मा(आ)मेय्याममिदेवता । दक्षिणस्यां च वाराही नैरृत्यां खड़ाधारिणी ॥

End:

इदं तत्कवचं धैर्याछिखितं पुस्तकं गृहे । यस्य तिष्ठति वै पूज्यः स सर्वभयवर्जितः ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत् सर्वैरपि दुर्रुभम् । तत्पदं समवामोति यावदाभूतसंष्ठवम् ॥

Colophon:

इति श्रीबसवैवर्तपुराणे बसनारदसंवादे हरिहरविरचितं देवीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6428 देवीमालामन्त्र:.

DĒVĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 156b of the MS. described under No. 537.

Incomplete.

This Mantra is supposed to enable one to fascinate others and to bewilder bad people so as to make them become tongue-tied.

Beginning:

ओं नमो भगवति श्रीमातङ्गेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वसकल्(मु)खर अनि क्लीं हीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टम्गवश-ङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

End:

जम्मे जम्मिन्यै नमः, मोहि(नि) मोहिन्यै नमः, स्तम्मे स्तम्भिन्यै नमः, अमुकं स्तम्भय स्तम्भ(य)सर्वप्रदुष्टानां सर्वजिह्वास्तम्भं कुरु कुरु शी-व्रम्.

No. 6429. देवीसूक्तमालामन्त्रः. DÉVISUKTAMÁLÁMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 786 of the MS. described under No. 537. Incomplete.

This Mantra is addressed to the goddess Sakti as Devi, and is supposed to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीदेवीसूक्तमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयमेधा ऋषिः, श्रीत्यै(चिति)-रूपिण्ये (णी) चण्डिका[ये] देवता, गायव्यादीनि छन्दांसि, विजयादीनि बीजं, षट्कं विचेमाया बीजं, जीवकामराज शक्तिः, प्राणजयादि कीलकं, मम सकलकामनासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । ततो बीजदशकेन कर-न्यासः ।

End:

महामहिषासुरमायाविनाशिनि शुम्भिनि राजकण्टकच्छेदिनि वरखडु-त्रिशूलायुधे रूपानुर(सुरभे) अहो विषपादपद्म(द्मे) अष्टादशभुजे चतुर्भावका-रिणि गरुडगामिनि क्रोङ्कारे ही्ड्रारे झङ्कारे नाना,

No. 6430. द्राविणीमन्त्र:. DBĀVINĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 446 of the MS. described under No. 2886 Complete.

This Mantra is supposed to enable one to enchant people and thus make them agreeable to one's self.

Beginning:

द्राविणीदेव्याः वरुणः, बृहती, द्राविणी, द्रां बीजं, स्वाहा श, स्वेच्छाद्रावकसिद्धचर्थे गः, द्रामित्यादिन्यासः ।

End:

सर्वलोकाक्षिहृच्छ्रोत्रं द्रावयेति द्वयं ततः । प्रोक्तं नानाचतुस्त्रिंशद्राविणीमन्वमव्ययम् ॥ जपमक्षरसाहस्रं तर्पणं(णा)हुतिभोजनात् । तद्दशांशकमेणैव कुर्यात्सर्वे यथाकमम् ॥

नराश्च विविधा योषामहामोहवशा वराः । स्वयमेव चवा(महा)देवि क्षिप्रं तद्वशमामुयात्(युः) ॥

Colophon:

चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

No. 6431. हादशाक्षरीमन्त्रः. DVĀDAŚĀKṢABĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 93*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

This Mantra is addressed to Vāsudēva or Viṣṇu and is supposed to enable one to obtain salvation.

It consists of 12 syllables.

Beginning:

अस्य श्रीद्वादशाक्षरीमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः, विष्णुर्देवता। न्यासः—ओं हृदयाय नमः, नमश्शिरसे स्वाहा, भग-वते शिखायै वषट्, वासुदेवाय कवचाय हुं, नमस्ते अस्त्राय फट्। End:

ओन्नमो भगवते वासुदेवाय । द्वादशलक्षपुरश्ररणम् । शुद्धैर्वा तिलैर्द्वादशसहस्रं जुहुयात् ॥

No. 6432. द्वादशाक्षरीमन्त्र:. DVĀDAŚĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 284*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

No. 6433. हादशाक्षरीयन्त्रः. DVĀDAŠĀKṢARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 2416 of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the allove.

No. 6434. द्वादशाक्षरीमन्त्र:. DVADASAKSARIMANTRAH.

Page, i. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 38*b* of the MS. described under No. 2821. Complete. Similar to the above.

CILINAL CO DIC WOOL

Beginning:

अस्य श्रीद्वादशाक्षरीमन्त्रस्य सङ्कर्षण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, गरुडवाहनो वासुदेवो देवता; ओं बीजं, नमः शक्तिः, श्रीवासुदेवो देवता, मम मोक्षार्थे द्वादशाक्षरीजपे विनियोगः ।

See under number 6431 for the end.

No. 6435. द्वादशाक्षरीमन्त्रः.

DVĀDAŚĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page

Begins on fol. 36% of the MS. described under No. 3056. Complete.

Slightly different from the above in the beginning as given below :--

अस्य श्रीवासुदेवद्वादशाक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीवासुदेवो देवता, अं बीजं, नमश्शक्तिः, श्रीमते कीलकं, ओं वासुदेवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

No. 6436. द्वादशार्धाम्बामन्त्रः. DVADASARDHAMBAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS described under No. 673. Complete.

This Mantra is addressed to Dvādaśārdhāmbā, a manifestation of Pārvatī, and its repetition is supposed to enable one to obtain the favour of that goddess.

Beginning:

अस्य श्रीद्वादशार्धा(म्बा)महामन्त्रस्य परमानन्दमैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, द्वादशार्धा(म्बा)देवता ; हसकलुर डैं बीजं, हसकलुर डीं शक्तिः हसकलुर डौं कींलकं, मम द्वादशार्धा(म्बा)प्रसादसिद्धद्यर्थे जपे विनियोगः. End :

मनुः—

हसकलर डैं, हसकलरडीं, हसकलरडौं ; हसकलर डौः, हसकलरडीं हसकलरडैं द्वादशार्धा(म्वा) श्रीपा . . नमः ॥

No. 6437. द्वाद्शार्धाम्बामन्त्र:.

DVĀDAŠĀRDHĀMBĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No. 5673 Complete

Same as the above.

No. 6438. द्वादशार्धाम्बामन्त्रः. DVADASARDHAMBAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 228b of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

4845

No. 6439. द्वारकावासगोपालमन्त्रः. DVÄBAKÄVÄSAGÖPÄLAMAN'URAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is intended to please Kṛṣṇa who is conceived here as the divine cow-herd of Dvārakā.

Beginning:

अस्य श्रीद्वारकावासगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, जगती छन्दः, श्री-द्वारकावासगोपालो देवता, ओं बीजं, हीं शक्तिः, हूं कीलकं, श्रीद्वार कावासगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

श्रीं हीं श्रीं रूष्णाय गोविन्दाय सर्वभूताधिपतये स्वाहा ॥

No. 6440. धन्वन्तरिमन्त्रः.

DHANVANTARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 307*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantrà is addressed to Dhanvantari, who is considered to be none other than Vișnu, and it is supposed to have the power to cure one's diseases.

Beginning:

अस्य श्रीधन्वन्तारमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहा-विष्णुर्देवता, श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे विनियोगः।

End:

भों नमो भगवते वासुदेवाय धन्वन्तरये अमृतकल्रशहस्ताय वज्र-जऌकहस्ताय सर्वामयाविनाशनाय त्रैले।क्यनाथाय महाविष्णवे स्वाहा ॥ 400

अच्युतानन्त गोविन्द(विष्णो)नारायणामृत । रागान्मे नाशयाशेषानाशु धन्वन्तरे हरे ॥

> No 6441. धन्वन्तरिमन्त्रः. DHANVANTARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 296 of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

गुरुनमस्कारः, ओं धं धन्वन्तरये नम इति प्राणायामः 13-पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः। अस्य श्रीधन्वन्तारीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा श्रींमुख्यप्राणान्तर्गतधन्वन्तरिर्देवता; धन्वन्त-रिप्रेरणया धन्वन्तारिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End:

श्रीाधन्वन्तरिप्रेरणया धन्वन्तरिप्रीत्यर्थे धन्वन्तरिमहामन्त्रजपं करिष्ये धं धन्वन्तरये नम इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6442. धन्वन्तरिमन्त्रः.

DHANVANTARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।

अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः । इति प्राणायामः 12-भस्य श्रीधन्वन्तरिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीधन्वन्तरि-देवता, धन्वन्तारेप्रेरणया धन्वन्तरिप्रीत्यर्थे धन्वन्तरिमहामन्त्रजपे विनि-योगः ।

End:

अयं मे हस्तो भगवान् . . . शिवाभिमर्शनः॥ इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. **6443. धूमावतीमन्त्रः.** DHŪMĀVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 90% of the MS. described under No. 5566. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Dhūmāvatī, and is supposed to enable one to compass the destruction of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीध्मावतीमन्त्रस्य स्कन्द् ऋषिः, पक्किश्छिन्दः, श्रीधूमिनी देवता; धूं बीजं, प्रणवः कीलकं, स्वाहा शक्तिः, मम शत्रुक्षयार्थे विनि योगः ।

End:

ओं धूं धूं धूं धूमावति स्वाहा ॥ एकलक्षजपेनैव सिद्धिर्भवाते देवता ॥ तर्पण . . होमदशांशः ॥

No. 6444. धूमावतीमन्त्रः.

DHUMAVATĪMANTRAH

Pages, 2. Lines, 18 on a page. Begins on fol. 2366 of the MS. described under No. 581 400-A

4848

Complete. Same as the above.

No. **6445. धूमावतीमन्न:.** DHŪMĀVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 279*a* of the MS. described under No. 5477. Incomplete

Same as the above.

No. 6446. धूमावतीमन्त्रः.

DHŪMĀVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

क्षपणक ऋषिः, गायती छन्दः, धूमावती देवता, यामिति षडक्र-न्यासः ।

End:

अन्तर्धूमे विश्वधूमे विश्वधूमे मम शत्रून् गतिमतिप्राणान् मारय मारय हुं फट् स्वाहा ॥

इति ताम्रपट्टे विलिख्याष्टसहस्रं जप्त्वा शत्रुगृहे निखनेत्। तस्य नाशो भवति॥

No. 6447. धूमावतीमग्रः.

DHŪMĀVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 175*a* of the MS. described under No. 673. Complete:

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

The proper repetition of this Mantra is supposed to be capable of bringing about the following results :----

(1) Destruction of ene's enemies: (2) Creation of discord and dissension between any two required persons: (3) Restraining the powers of the organs: (4) Curing various diseases: (5) Counteracting the evils arising from hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

पूर्वोक्तातिथौ मारणद्वेषणस्तम्भननानारोगमन्त्रयन्त्रतन्त्रप्रयोगविच्छि-न्नार्थे धूमावतीमन्त्रजपं करिष्ये—

End:

खं रं यं धूं शूलिनि दुष्टमह हुं फट् फट फट स्वाहा॥

No. 6448. धूमावतीमालामन्त्र:.

DHŮMĀVATĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5864. Complete.

This Mantra is supposed to enable one to destroy one's enemies and all evil-doers and to obtain protection from all dangers.

Beginning:

ओं धूं धूमावति चतुर्दशभुवननिवासिनि सकल्प्रहच्छेदिनि सक-लशत्रुरक्तमांसभाक्षीणि मम शरीररक्षाणि भूतप्रेतपिशाचबद्यराक्षसादि-सकल्प्रहसंहारिणि.

End:

धूं धूं धूं धूं धूं धूमावति मां रक्ष रक्ष शींघं शीघमागच्छ आगच्छ क्षिप्रमेवारोग्यं कुरु कुरु हुं फट् धू धूं धूमावति स्वाहा ॥

No. 6449. धूमावतीमालामन्त्र:.

DHUMÄVATIMÄLÄMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 656 of the MS. described under No. 21.

Incomplete. Same as the above.

No. 6450. धूमावतीम्लमन्त्रः. DHŪMĀVATĪMŪLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 65a of the MS. described under No. 21. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभूमावतीमन्त्रस्य नारसिंह ऋषिः, पक्किश्छन्दः, ज्येष्ठ देवी देवता; धू बीजं, खाहा शक्तिः, मम धूमावतीप्रसादासिद्धार्थी सकल्रशत्रुनिग्रहे विनियोगः । End:

मनुः---धूं धूमावति स्वाहा ॥

No. 6451. धूमवाराहीयन्त्र:. DHŪMRAVĀRĀHÎMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 11*a* of the MS. described under No. 5864. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Dhumravarahi and is supposed to have the power to enable one to bring about the destruction of one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीध्म्रवाराहीमहामन्त्रस्य कालमृत्यु ऋषिः, बृहती छन्दः, भूम्रवाराही देवता; धूं बीजं, हुं शक्तिः, ओं कीलकं, मम भूम्रवाराही प्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

Ind:

धूं धूं मृत्युधूमे, धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूमवाराहि हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6452. धूम्रवाराहीमन्तः.

DHŪMRAVĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 23*a* of the MS. described under No. 5737. Incomplete.

Same as the above.

No. 6453. नक्षत्रन्यासः.

NAKSATRANYÄSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body uttering the appropriate names of the well-known 27 constellations of stars on the ecliptic circle.

Beginning:

अथ नक्षत्रन्यासः---

ज्वलत्कालानलप्रख्यास्सर्वाभरणभूषिताः ।

नतिपाण्योद्यनिमुख्या(१)वरदाभयसंयुताः ॥

इति ध्यात्वा न्यसेत्---

अं थां अश्विनीदेवतायै नमः ललाटे, इं ईं भरणीदेवताये नमः (दक्षे)नेत्रे, उं ऊं कृत्तिकादेवताये नमः वामनेत्रे, ऋं ऋं ऌं ॡं रोहिणी-देवताये नमः दक्षकर्णे, एं मृगशिरोदेवताये नमः वामकर्णे, ऐं आर्द्रा-देवताये नमः दक्षनासापुटे ।

End:

लं शततारकादेवतायै नमः दक्षजङ्घायां, वं शं पूर्वाभाद्रादेवताये नमः वामजङ्घायां, षं सं हं उत्तराभाद्रादेवतायै नमः दक्षपादे, ळं शं अं आः रेवतीदेवताये नमः वामपादे -- इति मातृकावर्णेन न्यसेत् ॥ Colophon:

इति नक्षत्रन्यासस्समाप्तः ॥

No. 6454. नटनगोपालमन्त्रः.

NATANAGÕPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 48*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

Intended to propitiate Krsna.

Beginning:

अस्य श्रीनटनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-नटनगोपालो देवता; आं बीजं, कों शक्तिः, खाहा कीलकं, नटन-गोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

आं कों कृष्णाय देवकीसुताय श्रीविष्णवे स्वाहा ॥

No. 6455. नरसिंहमन्त्रग्रहोचाटनम्.

NARASIMHAMANTRAGRAHÕCCÄTANAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5864. Complete.

This Mantra is addressed to Nrsimha, and is supposed to enable one to drive off and also destroy evil spirits.

Beginning:

ओं नमो भगवते वीरनारसिंहा(य) अमिनेत्राय अनलोग्राय ती-श्णदंष्ट्राय ब्रिश ब्रिश सुरलोकनाशनाय. End:

भूतप्रेतपिशाचभेताळशाकिनिडाकिनि दह दह चट चट रोचनाय फट् स्वाहा ॥

No. 6456. नवग्रहमन्तः.

NAVAGRAHAMANTRAH.

Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5*a* of the MS. described under No. 2820. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the nine planets. Beginning :

केतुं रूण्वनित्यस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, केत्रग्रहो देवता ।

चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व ।

ज्ञं नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु वीतये । शं योरभिस्नवन्तु मः ॥

No. 6457. नवग्रहमन्त्र:.

NAVAGRAHAMANTRAH.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 40*a* of the MS. described under No. 2040. Complete.

Same as the above, but without the portion indicating Rai, Chandas and Devata.

No. 6458. नवमहमन्त्र:.

NAVAGRAHAMANTRAH.

Pages, 19. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 898. Complete.

Same as the above.

No. 6459. नवग्रहमन्त्र:.

NAVAGRAHAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $12\frac{7}{5} \times 1\frac{1}{5}$ inches. Pages, 12. Lines, 10 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 4*a*. The other works herein are Navagrahastötra 1*a*, Śvāsakāśakarmavipāka 3*a*, Navagrahakalpa 9*b*.

Complete.

Same as the above.

This manuscript is said to have been copied by a certain accountant named Sāmayya, son of Anantayya of Pākalapatti.

No. 6460. नवमहमन्त्र:.

NAVAGRAHAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 11⁷/₃ × 1¹/₄ inches. Pages, 10. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 16a. The other works herein are Sarasvatipūjāvidhāna 1a, Viṣṇupūjāvidhāna 5a, Nityārcanādimantra 9a, Haritālikāvrata 14a.

Incomplete.

Same as the above.

No. 6461. नवद्तीमन्त्र:.

NAVADŪTĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 5673.

Complete.

This Mantra is addressed to the nine Gurus who are considered to be manifestations of Sakti and are described in the Daksināmnāyamantra. All the Sākti-mantras are classified into six of which Daksināmnāya-mantra is one.

1 -

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS. * 4855

Beginning:

अस्य श्रीनवद्ग्तीमन्त्रस्य मन्मथ ऋषिः, गायत्री छन्दः, नवद्तीत्रि-विकमो देवता ; अं बीजं, श्रीं शक्तिः, आं कीलकं, मम नवदूनीप्रसाद-सिद्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

शङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्री, पद्मयोन्यम्बादूतीश्री, पद्मयोनिसिद्ध-नाथाम्बाद्तीश्री,

इति दक्षिणाझायगुरून् मणिपूरके जलचके लिङ्गस्थाने च पूजयेत्॥

No. 6462. नवदूतीमन्त्र:. NAVADŪTĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 2316 of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

No. 6463. नवनीतचोरगोपालमन्त्रः. NAVANĪTACÕRAGÕPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 45*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is addressed to Krana conceived as a young child stealing butter.

Beginning:

अस्य श्रीनवनीतचोरगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, नवनतिचेारगोपालो देवता ; श्रीं बीजं, नमइशक्तिः, श्रीनवनीतचोरगोपाल-मीत्यर्थे जपे विनियोगः। End:

ओं श्रीं कृष्णाय गोविन्दाय नमः॥

No. 6464. नवमुद्रामन्त्रः. NAVAMUDRAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 6b of the MS. described under No. 673. Complete.

This is the Mantra in relation to the nine Mudras each of which is represented by a different deity according to Sakta religion.

Beginning:

अस्य श्रीनवमुद्रामन्त्रस्य अष्टमैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमानन्द-मैरवो देवता ; ऐं बीजं, श्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम नवमुद्राप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सः — सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्री ; कों — सर्वमहाङ्कुशमुद्राशक्तिश्री ; ह्रौं — सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्री ; ह्सौं — सर्ववीजमुद्राशक्तिश्री ; ऐं — सर्व-योनिमुद्राशक्तिश्री ॥

No. 6465. नवमुद्रामन्तः.

NAVAMUDRĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

No. 6466. नवमुद्रामन्त्रः. N& VAMUDRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 5673.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

Complete.

Same as the above.

No. 6467. नवासिद्धमन्तः. NAVASIDDHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 231a of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is addressed to the nine recognized Gurus of the Sakta religion.

Beginning:

नवसिद्धानां मन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अव्यक्तगायत्री छन्दः, सिद्धा[नां]देवता ; अं बीजं, आं शक्तिः, ऐं कीलकं, सिद्धानां--गः। End :

कराल्यम्बासिद्धश्री, खरणसाम्बासिद्धश्री, विशालनयनाम्बासिद्धश्री - मः ॥

एते सिद्धाः ॥

No. 6468. नवाक्षरीदुर्गामहामन्त्रः — न्याससहितः. NAVÁKŞARĪDURGĀMAHĀMANTRAḤ : WITH NYĀSA.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 745.

Two leaves in the beginning are lost.

This Mantra is addressed to the goddess Cāmuņdā, a form of Durgā.

The ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the Mantra is also described herein.

Beginning:

इत्यनेन मन्त्रेण श्रीगुरवे लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि, पुनः अरुणामरुणाकरुपामित्युचार्य श्रीगुरवे हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि, पुनरुषार्य श्रीगुरवे यं वाय्वात्मकं धूपं बहिर्मातृकाविधिं कुर्यात्, एवं ध्यात्वा मनसाभ्यच्यं नवाक्षर्यामेका-दशन्यासान् कुर्यात् ।

अस्य श्रीनवाक्षरीदुर्गामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, गायत्री-त्रिष्टुबनुष्टुप् छन्दांसि मुखे, महाकालीमहालक्ष्मीरसरस्वती देवता द्ददि. End:

ओं वैकृत नमः वायुगर्भावरणे । एवमछादशतेजोभिर्न्यस्य मूळं जापित्वा, मनुः ओं ऐं हीं क्वीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा इति जपेत् ॥

No. 6469. नवाक्षरीमहालक्ष्मीमनत्रः.

NAVAKSARIMAHALAKSMIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 38*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is addressed to Mahājakṣmī who is conceived here to be a manifestation of Durgā. It consists of 9 syllables,

Beginning:

अस्य श्रीनवाक्षरीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनवाक्षरी महालक्ष्मीः देवता; ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्ठीं की-लकं, मम श्रीनवाक्षरीमहालक्ष्मीश्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

ऐं हीं क्वीं चामुण्डाये विचे। श्रीशाक्तसमयविद्यादर्शनदेवतादुर्गा म्बाश्री.

इति अमध्ये च पूजयेत्॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6470. नामत्रयमन्त्र:. NAMATRAYAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $16 \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, much injured. Appearance, old.

Begins on fol. 10*a.* The other works hererin are Jyautisa (Yõgādhyāya) 1*a*, Daśāphalanirūpaņa 11*b*, Praśnalaksaņa 16*b*, Svalpajātaka 18*a*, Yavanahörā 31*a*, Grahamaitryādinirņaya 50*a*, Ārūdhagrantha 52*b*, Bhuvanapradīpikā ('Ielugu) 64*a*, Astakavarga 71*a*, Maņidarpaņa (Telugu) 75*a*, Jyantisa 87*a*, Dhātrīkalpa 93*a*, Hörāsāstra (with Telugu commentāry) 97*a*, Ṣaṭpañcāsikā 119*a*, Trividhacakranirņaya 124*a*, Jātakasārāvali 137*a*, Nārasimhasamhitā 147*a*.

Complete.

This Mantra is addressed to Visnu.

It inculcates the repetition of three famous names of Vișnu, namely, Acyuta, Ananta and Gōvinda.

Beginning:

अस्य श्रीनामत्रयमन्त्रस्य काश्यपभगवान् पराशर ऋषिः, श्रीमहा-विष्णुर्महावराहो लक्ष्मीनृसिंहो देवता; अच्युत इति बीजं, अनन्त इति शक्तिः, गोविन्द इति कीलकं, श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। End:

अशुचिर्वाप्यनाचारो मनसा पापमाचरेत् ।

शुचिरेव भवेन्नित्यं नामत्रयजपान्वितः॥

श्री अच्युताय नमः, श्री अनन्ताय नमः, श्रीगोविन्दाय नमः॥ Colophon :

इति नामत्रयन्यासं संपूर्णम्।

No. 6471. नामत्रयमन्त्र:.

NAMATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins ou fol. 38b of the MS. described under No. 3056.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीनामत्तयमहामन्त्रस्य व्यासपराशरनारद ऋषिः, निरार् छन्दः, श्रीनारायणो देवता; अच्युताय नमः बीजं, अनन्ताय नमः कीरुकं, नामत्रयप्रसादासिच्द्यर्थे जपे विनियोगः । End:

मनुः—

भच्युतानन्तगोविन्द ॥

No. 6472. नामत्रयमन्त्र:.

NAMATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 300 of the MS. described under No. 2821. Complete.

Same as the above.

No. 6473. नामहोद्शपअरम्.

NÁMADVÁDAŠAPAŇJARAM.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 87*b* of the MS. described under No. 5922. Complete.

Addressed to Visnu for securing divine protection : consists of the repetition of a set of twelve names of Visnu.

Beginning:

पुरस्तात्केशवः पातु चक्री जाम्बूनदप्रभः। पश्चान्नारायणश्शङ्खी नीलजीम्त्तसन्निभः॥

End:

एवं सर्वत्र निर्दिष्टं नामद्वादशपझरम् । प्रविष्टोऽहं न मे किश्विद्वयमस्ति कदाचन ॥ भयं नास्ति कदा चनों नम इति ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6474. नारसिंहमालामन्त्रः. NARASIMHAMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 68*b* of the MS. described under No. 5819. Complete.

This Mantra is addressed to Vișnu conceived as Nrsimha, and is supposed to have the power to enable one to drive off all evil sprits and enemies.

Beginning:

ओं नमें भगवते नारसिंहाय श्वेतशरीराय सर्वमालालङ्कृताय निटिल-लोचनाय करालवदनाय भीकरदंष्ट्राय हिरण्यकशिपुवक्षरस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापनाय भूतप्रेतपिशाचशाकिनीडाकिनीकुलोन्मूलनाय । End:

ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय विसर विसर चलक चलक हुं फट् ठं ठं एहि एहि श्रीवीरनारसिंहाय फट् स्वाहा ॥

> No. 6475. नारायणकवचः. NĀRĀYAŅAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 57b of the MS. described under No. 2043. Complete.

This Mantra is addressed to Nārāyaņa and is supposed to have the power to enable one to secure protection from dangers.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, श्रीमान् नारायणो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीं बीजं, लक्ष्मीः शक्तिः, सुदर्शन इति कीलकं, मम श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्.

401

नारायणं गरुडवाहनमञ्जनामं

चक्राद्यदायुधमशेषमनन्तमूर्तिम् ।

भोगीन्द्रभोगशयनं प्रणतोऽस्मि नित्यं

वन्देऽरविन्दनयनं सुरसिद्धवन्द्यम् ॥

शिरो नारायणः पातु ललाटं मधुसूदनः ।

जिह्वां मधुरिपुः पातु कण्ठं वैकुण्ठवल्लभः

नारायणस्य कवचं सर्वोपद्रवनाशनम्।

श्रङ्खलाबन्धसमये दुर्गे भूतभये निशि॥

व्याघ्रसिंहगजश्वानः (श्वभ्यः) सर्वकार्येषु सर्वदा ।

रोगी रोगभयान्मुक्तः कामी कामानवामुयात् ॥

पठेद्भक्तचा नरः प्रातः पन्थानं (सन्ध्यायां) नियतस्सदा ।

4862

Colophon :

End:

इति सुरगुरुविराचितं सकलरिपुहरं विजयं श्रीराजवश्च्यं नारायण-कवचं संपूर्णम् ॥

No. 6476. नारायणकवच:.

NĀRĀYAŅAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 5858. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणकवचस्तोत्रमहामन्नस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, श्रीमान्नारायणो देवता; श्रीमन्नारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

नारायणं महाविष्णुं महालक्ष्म्या प्रसेवितम् । गरुडेन विनीतेन भृग्वादिमुनिसत्तमैः ॥ ध्यात्वा नारायणं देवं कवचं पठतां द्विजैः । शिरो नारायणः पातु ललाटं मधुसूदनः ॥ नेत्रे च केशवः पातु मुखं मकरकुण्डलः ।

End:

बृहस्पतिरुवाच---

नारायणस्य कवचं वक्ष्ये श्रृणु सुरेश्वर । सर्वपापहरं पुण्यं संसारभयनाशनम् ॥

त्रिसन्ध्यं पठते नित्यं वश्यं गुह्यतमं महत् ॥ Colophon :

इति श्रीमन्नारायणकवचं संपूर्णन् ॥

No. 6477. नारायणदिग्बन्धनमन्त्रः.

NĀRĀYAŅADIGBANDHANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 2373. Incomplete.

Wants beginning.

This Mantra, consisting of the several names of Nārāyaņa, is intended to protect the person who uses it from all possible dangers coming from all quarters.

Beginning:

मुखे, माधवं भुजयोः, गोविन्दं कण्ठे, विष्णुमुरासि, मधुसूदनं हृदये, त्रिविकमं जठरे, वामन कट्यां, श्रीधरमूर्वोः, हृषीकेशं जान्वोः, पद्मनामं जड्वयोः, दामोदरं पादयोः, इति देहन्यासः ।

401-A

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे । प्रद्युन्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे ॥

End:

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः । अटव्यां नारसिंहस्तु संवेतः पातु केशवः ॥ एवं कृत्वा तु दिग्बन्धं विष्णुं सर्वत्र संस्मरेत् ॥

No. 6478. नारायणमन्त्र:. NĀRĀYAŅAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 2373. Complete

This Mantra is intended to win the favour of Nārāyaņa.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणमन्त्रस्य परबद्ध ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, श्री-मन्नारायणो देवता; हां वीजं, हीं शक्तिः, ह्वं कीलकं, मम श्रीनारा-यणप्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

नारायणो नाम रसौषधानां कल्कं कषायं हरिकृष्णवाक्यम् । चिकित्सितं अ(ह्य)च्युतपादतीर्थं शान्तं भजे रोगहरं मुकुन्दम् ॥

मनः—

ओं नमो भगवते अघोरवीरनारायणाय स्वाहा इत्यष्ठोत्तर(शत)-जपं कुर्यात् ॥

No. 6479. नारायणमालामन्त्र:.

NARAYANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a rage.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 2373. Complete.

This Mantra is also addressed to Nārāyaņa, and is supposed to have the power to enable one to drive off and also destroy all evil spirits

Beginning:

ह्यां ओं नमो भगवते अघोरवीरनारायणाय, हीं अरुणप्रभाकर-प्रज्वलितकिरीटकुण्डलघराय, ह्वं कौस्तुभाभरणदिव्यपीताम्बरघराय, हैं अष्टादशभुजकोटीरवलयकिङ्किणीकरवालाय.

स्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रसंरक्षणाय सर्वभूतप्रेतपिशाचयक्षराक्षसदानवबद्ध-राक्षसशाकिनीडाकिनीकामिनीमोहिनीगन्धर्वमोहिनीमहामोहिनीभूतान् प्रभेद प्रभेद ।

End:

क्षां क्षीं क्षूं फट् स्वाहा ओं नमो भगवते अघोरवीरनारायणाय स्वाहा—इत्यष्टाविंशतिजपं कृत्वा ॥

No. 6480. नारायणवर्ममन्त्रः.

NĀRĀYAŅAVARMAMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No 2373. Complete.

This forms the 8th Adhyāya of the 6th Skandha in the Šrī-Bhāgavatam.

The proper repetition of this Mantra is supposed to be able to remove all kinds of fear, to confer prosperity on one, and to help one in obtaining salvation.

Beginning:

अस्य श्रीमहानारायणवर्ममहामन्त्रस्य श्रीविश्वरूपभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमन्नारायणो देवता; कचिन्नानाछन्दांसि, ओं इति

बीजं, हरिर्विदद्य इति शक्तिः, दग्दभि दग्दभि इति कीलकं, मम संमंस्तभयनिवारणार्थे भोगमोक्षासिच्चर्थे विनियोगः ।

> चकं युगान्तानलतिग्मनेमि अमत्समन्ताद्भगवस्रयुक्तम् । दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाग्रु कक्षं यथा वायुसखो हुताशः ॥

End:

य इदं शृणुयात्काले यो घारयति चाहतः ।

तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ॥

श्रीशुकः—

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतकतुः ।

त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मुदे(मखे)ऽसुरान् ॥

Colophon:

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे नारायणवर्मोपदेशो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

> No. 6481. नारायणवर्मेमन्त्रः. NĀRĀYAŅAVARMAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 57*a* of the MS. described under No. 12.4 Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणवर्मकवचमहामन्त्रस्य निरञ्जनः परबद्ध ऋषिः, गायत्री छन्दः, अन्तर्यामिश्रीमान्नारायणः परमात्मा देवता; ओं बीजं, ई शक्तिः, ऊं कीलकं, मम श्रीमन्नारायण-योगः । ओं नमो नारायणाय महावज्रकवचास्त्राय ठं इन्द्रदिशं बन्ध बन्ध मां रक्ष रक्ष ठां ठीं छं ठैं ठैं ठैं ठैं ठर हुं फट् ओं विष्णवे नमः ।

See under the previous number for the end.

No. 6482. नारायणवर्ममन्त्रः.

NĀRĀYANAVARMAMANTRAH.

Pages, 11. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 31*a* of the MS. described under No. 1872 Wants beginning.

Same as the above.

No. 6483. नारायणवर्ममन्त्रः.

NÂRĂYANAVARMAMANTBAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4*a* of the MS. described under No. 139. Incomplete. Same as the above.

No. 6484. नारायणवर्ममन्त्रः.

NĀRĀYANAVARMAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 2398.

Complete

Same as the above; without the portion indicating the Rsi, Chandas, and Dēvatā.

The transcription of this manuscript is said to have been completed on Wednesday the 2nd of Puşyaśukla in the year Vşiu.

No. 6485. नारायणवर्मेमन्त्रः. NĀRĀYANAVARMAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $7\frac{1}{5} \times 1$ inches. Pages, 10. Lines, 6 on a page. Character, Kanarese. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 16*a.* The other works herein are Rāmastavarāja 1*a*, Mādhavastavarāja 9*a*, Sūryanārāyaņastōtra 21*a*, Kṛṣṇāstōttaraśatanāmāvali 23*a*.

Wants beginning. Same as the above

No. 6486. नारायणवर्ममन्त्रः.

NĀRĀYANAVARMAMANTRAH.

Pages, 12. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 2825.

Complete

Same as the above.

No. 6487. नारायणहृदयम्.

NARAYANAHRDAYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $8\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Nandināgarī. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 4b. The other works herein are Nārāyaņāstōttarasata 1a, Ranganāthastōtra 2b, Laksmīhrdaya 7b

Complete.

From Atharvanarahasya.

This Mantra, relating to Nārāyaṇa, is supposed to have the power of enabling one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, नारायणो देवता, श्रीनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

श्रीमन्नारायणो ज्योतिरात्मा नारायणः परः । नारायणपरं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥

यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरं भवेत् ॥ नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्ठफल्प्रदम् ॥ * * * * * गोपनात्साधनान्ठोके धन्यो भवति तत्त्वतः । नित्यं पठति यो मर्त्यः सर्वान् कामानवामुयात् ॥

Colophon:

End:

इति श्रीमदथर्वणरहस्ये उत्तरभागे नारायण(हृदय)स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

 No. 6488.
 नारायणहृदयम्.

 NĀRĀYANAHRDAYAM.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 52a of the MS. described under No.2043.

Complete.

Same as the above, with the difference in the beginning as noted below :---

अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा श्रीमान् नारायणो देवता; ओं बीजं, ओं हीं शक्तिः, ओं रं कीलकं, मम भगवत्कैङ्कर्यार्थे जपे विनियोगः।

No. 6489. नारायणहृदयम्.

NĀRĀYAŅAHŖDAYAM.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 78*a* of the MS. described under No. 29. Complete.

Same as the above.

No. 6490. नारायणहृदयम्. NĀRĀYAŅAHŖDAYAM.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 118*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above.

No. 6491. नारायणहदयम्. NĀRĀYAŅAHŖDAYAM.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 90*a* of the MS. described under No. 204. Complete.

Same as the above.

No. 6492 नारायणाष्टाक्षरीमन्त्रः. NÁRĂYAŅĂȘŢĂKȘARĨMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 5673. Complete.

The well-known eight-lettered prayer-formula relating to Nārāyaņa.

Beginning:

अस्य श्रीनारायणाष्टाक्षरीमहामन्त्रस्य आदित्यनारायण ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता ; श्रों बीजं, नमइशक्तिः, नारायणायेति-कीलकं, मम श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं नमो नारायणाय॥

श्रीवैष्णवदर्शनसमयविद्याश्री इति विशुद्धे च पूजयेत्॥ अथाज्ञायाम्-—

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

प्रकृतिः परमा शक्तिश्चिन्मयी ज्योतिराकृतिः । नित्यानन्दमयी ध्येया सा शाक्तसमयेश्वरी॥

No. 6493. नारायणाष्टाक्षरीमन्तः.

NĀRĀYAŅĀSTĀKSARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 93*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Similar to the above.

अस्य श्रीनारायणाष्टाक्षरीमन्त्रस्य साध्यनाराधण ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, साध्यनारायणनामानन्तर्यामी प्रत्ये-कमक्षराणां गौतमभरद्वाजविश्वामित्रजमदग्निवासिष्ठकश्यपात्रेयागस्त्या ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्किस्त्रिष्टुब्जगतीविराट् छन्दांसि, धरध्रुवसोमापााग्नि-वायुप्रत्यूषप्रभासा देवताः ।

End:

मन्त्रः---ओं नमो नारायणाय ॥

No. 6494. नारायणास्त्रमन्त्रः. NĀRĀYAŅĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2956 of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is intended to be repeated in connection with the discharge of Nārāyaņāstra.

Beginning and End :

ओं नमेा नारायणाय घृणिस्सूयों आदित्यों साह (स्वाहा) सहस्रार हुं फट् स्वाहा। सहस्रार हुं .फट् ॥ Colophon:

इति नारायणास्तम् ॥

No. 6495. निगलच्छेदनमन्त्रः.

NIGALACCHEDANAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 5819. Complete.

This Mantra is addressed to Krsna, and its repetition is supposed to have the power to enable one to free one's self from enchained bondage.

Beginning:

अस्य श्रीनिगलच्छेदनकष्णमन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायली छन्दः, रुष्णो देवता; आं बीजं, स्वाहा शक्तिः, कृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। End:

वसुदेवनिगलच्छेदनकरवासुदेवाय हुं फट् स्वाहा इति मूलमन्त्रः॥

No. 6496. निगलच्छेदनमन्त्रः.

NIGALACCHEDANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 5819. Incomplete.

Same as the above.

No. 6497. नित्यक्किनामन्त्रः.

NITYAKLINNÄMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 60*a* of the MS. described under No. 5819. Complete.

'I his Mantra is intended to propitiate Nityaklinnā, as a manifestation of the goddess Śakti. **Beginning**:

अस्य श्रीनित्यक्किन्नामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीपार्वती देवता ; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नित्यक्लिन्नोदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनि-योगः ।

End:

नित्यक्किने मदद्रवे स्वाहा इति मूलमन्त्रः ॥ लक्षजपपुरश्चरणम् ॥

No. 6498. नीलकण्ठपारावतमन्त्रः.

NĪLAKAŅŢHAPĀRĀVATAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 5828. Complete.

This Mantra is addressed to Siva and is supposed to be efficacious in bestowing prosperity, in destroying one's enemies and in removing the evil effects of snake-poison, etc.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठपारावतमहामन्त्रस्य जैमिनि ऋषिः, नीलकण्ठ-सदाशिवो देवता; अं वीजं, गिरिराजतनया शक्तिः, ह्रां कीलकं, मम समस्तपापक्षयद्वारा परमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ओं नमो भगवते नाकाय नाकाय छिन्धि छिन्धि आवेश(य) आवेश(य) परमेश्वराय अघोराघोररूपाय अघोरवासनाय ह्रीं हूं ज्वल ज्वल अमुक(कं) अमुक(कं)य[1]स य[1]स महाबल्ख(ल हुं फ)ट् महाबल्ख(ल हुं फ)ट् ॥

सप्तवारे अष्टोत्तरशतं मन्त्रसिद्धिर्भवति । द्वितीये सर्वशत्रुविनाशनं भवति । तृतीये सर्वसमृद्धिर्भवति । चतुर्थे सर्वशान्तिर्भवति । अनेन मन्त्रेण स र्पाद्यवग्रहसर्वव्याधिविनाशनं भवति ॥

No. 6499. नीलकण्ठबडबानलमालामन्त्र:.

NĪLAKAŅŢHABADABĀNALAMĀLĀMANTRAĻ. Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 179a of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is supposed to be efficacious in curing various kinds of diseases such as fever, headache and pain in the stomach. It is also supposed to act as an antidote to snake-poison and to be helpful in driving away and destroying evil spirits.

Beginning:

ओं नमो भगवते नीलकण्ठाय श्वेतवृषभवाहनाय सर्पमालालङ्कृत-भूषणाय ओं भुजङ्गपरिकराय नागवज्ञोपवीताय नागाभरणभूषिताय का-लामिनाशाय उम्रतेजः प्रचण्डाय उम्रदंष्ट्राकरालवदनाय कर्पूरागरुचन्दनधू-पायिताय।

End:

बद्धराक्षसज्वरं छिन्धि छिन्धि मारीज्वरं छिन्धि छिन्धि उष्णज्वरं छिन्धि छिन्धि शीतज्वरं छिन्धि छिन्धि सर्वज्वरं छिन्धि छिन्धि शिरोव्याधि-शूलादिरोगान् छिन्धि छिन्धि । श्रीनीलकण्ठगुर्वाज्ञया अनेन मन्त्रेण भूतप्रेतापशाचराक्षसज्वरसर्पविषाणि नश्यन्तु इदं त्रिवारं जपित्वा भस्म द्ध्यात् ॥

Colophon:

इति नीलकण्ठबडबानलमालामन्त्रः समाप्तः ॥

No. 6500. नीलकण्ठबडबानलस्तोत्रमन्त्रः.

NĪLAKANŢHABADABĀNALASTŌTRAMANTRAH. Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 5836. Complete.

This Mantra which also is addressed to Siva is supposed to be efficacious in driving away and destroying evil spirits.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठबडबानलस्तोत्नमन्त्रस्य नाना छन्दांसि, जैमिनि ऋषिः, नीलकण्ठसदाशिवो देवता, ब्राह्मचादिपार्वती(त्यः) शक्तयः, मम समस्तपापक्षयद्वारा भूतप्रेतविनाशनार्थे विनियोगः ।

End:

ओं नमो भगवते नीलकण्ठाय हां हीं हूं हें हैं हों हों हां हा हरः हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6501. नीलकण्ठबडबानलस्तोत्रमन्तः.

NĪLAKANTHABADABĀNALASTÕTRAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 75*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is considered to be helpful to one in the attainment of the four Purușārthas or principal aims of life, viz., Dharma, Artha, Kāma, and Mōkṣa. Also supposed to be efficacious in the curing of all diseases.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठवडबानलस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीनीलकण्ठमहेश्वरो देवता; ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रों कील-कं, मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धचर्थ श्रीनीलकण्ठत्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

शिरोललाटकर्णनयननासामुखदंष्ट्राजिह्वातालुग्रीवहनुग्रीवबाह्वोदरगुह्यो -दरपादाङ्गुष्ठादिसर्वव्याधिहराय सर्वज्वरहराय ओं नमरिशवाय ओं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6502. नीलकण्ठबडबानलस्तोत्रमन्त्र:.

NĪLAKAŅŢHABADABĀNALASTÕTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 37*a* of the MS. described under No. 2424. Complete.

This Mantra is supposed to enable a person to accomplish his desires and to drive off all evil spirits.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठवडवानल(स्तोत्र)मन्त्रस्य जलमुनि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनीलकण्ठो देवता; ह्रां वीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्वं कीलकं, मम सर्वामीष्टसिच्चर्थे सर्वग्रहोच्चाटनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हौं रीं उं हर हर कपर्दि(ने)कालकूटाविषभक्षणाय नीलकण्ठिने स्वाहा ॥

No. 6503. नीलकण्ठवडवानलस्तोत्रमन्त्रः.

NĪLAKAŅŢHABADABĀNALASIŌTRAMANTRAH. Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begius on fol. 114*a* of the MS. described under No. 119. Complete.

This Mantra is addressed to Siva conceived as Nilakanthabadabānalarudra and is supposed to have the power to cure all kinds of diseases and to act as an antidote to snake-poison.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठबडबानलस्ते।त्रमन्त्रस्य अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनील-कण्ठबडबानलरुद्रो देवता, ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रौं कीलकं, मम नींल-कण्ठबडबानलमन्त्रजपं करिष्ये ।

End:

सर्पदोषसर्पवीर(र्य)सर्पकृत्यसर्वव्याधिविनाशनाय हुं फट् हुं फट् हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon:

इति नीलकण्ठबडबानलं संपूर्णम् ॥

No. 6504. नीलकण्ठबडबानलस्तोत्रमन्तः.

NÎLAKANTHA BADA BĀNALASTŌTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 100*a* of the MS. described under No. 446. Complete.

This Mantra is supposed to act as an antidote to snake-poison and to enable one to live long without suffering from any disease.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठवडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य यम ऋषिः, अनुष्टुप् इन्दः, श्रीनीलकण्ठसदाशिवो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कों कीलकं, मम सर्पविषहरणार्थं नीरोगशतायुष्याभिवृद्धचर्थं श्रीनीलकण्ठसदाशिव· स्तोत्रमन्त्रमे(न्त्रै)कादशवारं(र)जपे विनियोगः ।

End:

सप्तवारे सप्तधा अष्टोत्तरशतं जयं (पात्) मन्त्रासिद्धिः भवति । त्र्यम्बक-मिति जपेत् । द्वितीयवारे मन्त्रसिद्धिः तृतीयवारे शत्रुर्मित्रं भवति ॥ Colophon:

इति नलिकण्ठबडबानलस्तोत्रमन्त्रस्समाप्तः ॥

No. 6505. नीलकण्ठमन्त्र:.

NĪLAKAŅŢHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92*a* of the MS. described under No. 556⁶. Complete.

This Mantra is supposed to please Siva and to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीनीलकण्ठमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, श्रीनील-कण्ठसदाशिवो देवता; ओं बीजं, ह्री शक्तिः, श्रीनीलकण्ठसदाशिव-प्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End:

4878

मन्त्रः—

ओं नमो भगवते रुद्राय नीलकण्ठाय एहि एहि भगवन् महा-मभीप्सितं(त)र्सिद्धि प्रयच्छ स्वाहा ॥

No. 6506. नीलकण्ठमन्त्रः.

NĪLAKANTHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 240*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6507. नीलकण्ठमन्त्र:.

NILAKANTHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 282*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6508. नीलकण्ठमालामन्त्र:.

NĪLAKANTHAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 40*a* of the MS. described under No. 2424. Complete.

This Mantra is supposed to be efficacious in removing the officets of poison, in curing diseases and in counteracting the evils caused by evil spirits.

Beginning:

ओं नमो भगवते प्रलयकालरुद्राय महाकालप्रचण्डाय कोदण्ड-

ताण्डवाडम्बराय खट्वाङ्गकपालधराय डमरुकत्रिशूलहस्ताय नागयज्ञोप-वीताय.

End:

सर्वविषनाशनाय सर्वग्रहनिवारणाय सर्वरोगनिवारणाय ओं नमो नमरिशवाय श्रीनीलकण्ठाय ओं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6509. नीलकण्ठमालामन्त्रः.

NĪLAKANTHAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 38*a* of the MS. described under No. 2424. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

ओं नमो भगवते श्रीनीलकण्ठाय श्वेतशरीराय श्वेतवृषभारूढाय सर्प-मालालङ्कृतभूषणाय अनेककालानिर्णयाय युगान्तकालप्रचण्डाय उग्रदंष्ट्रा-करालाय शशाङ्करुतशेखराय

End:

श्रीनीलकण्ठाय घोरघोराघोररूपाय ओं नमरिशवाय श्रीनीलकण्ठाय नमो नमः ॥

No. 6510. नृसिंहकवचम्.

NRSIMHAKAVACAM.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 126 of the MS. described under No. 3546. Complete.

A prayerful appeal to Laksminrsimha for protection and for the destruction of enemies.

402-A

Beginning:

4880

अस्य श्रीनृसिंहकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनृसिंहो देवता। श्रींमछक्ष्मीनृसिंहप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनि-योग ।

> नृसिंहः पातु मे शीर्षे फालं भयनिवारणः । नेत्रे करालवदनः कर्णौ पातु महामुजः ॥

End:

रक्ष रक्ष महाकाय रिपुं हन हनाहवे । वश्यं कुरु जगत्सर्वं श्रीनृसिंह नमोऽस्तु ते ॥

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय मङ्गलम् ॥

Colophon:

सम्पूर्णम् ॥

No. 6511. नृसिंहकवच:.

NRSIMHAKAVACAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 18b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

नमस्कृत्वा जगन्नाथं सर्वविघ्ननिवारणम् । नृसिंहकवचं वक्ष्ये प्रह्लादेनोदितं पुरा ॥

नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थसम्भवः । सर्वव्यापी स्तम्भवासः फालं मे रक्षताद्वली ॥ End:

क्षीराब्धिमध्यसुरवृक्षविराजमानश्वेताद्रिश्वङ्गमणिमण्टपमध्यपीठे । शेषाहिमस्तकमणिप्रभवप्रकाशप्रयोतमाननृहरिं शरणं प्रपद्ये ।

No. 6512. २सिंहकवचः. NRSIMHAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 8*a* of the MS. described under No. 2902. Complete. Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहकवचस्तोत्रमन्त्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, लक्ष्मीनृसिंहो देवता; क्षौं बीजं, श्रीं शक्तिः, लक्ष्मीनृसिंहेति कीलकं, लक्ष्मनिृसिंहप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

नृसिंहकदचं वक्ष्ये प्रह्लादेनोदितं पुरा ।

ध्यात्वा नृसिंहदेवेशं हेमसिंहासने स्थितम् ॥

स्फुरत्कमलसङ्काशं कृत्वा तु कवचं पठेत् ॥

अस्य श्रीदिव्यनृसिंहदिव्यकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्ठुप् छन्द , श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता, लक्ष्मीनृसिंहत्रसादसिद्धचर्थे जपे विनि-योगः ।

नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थसंभवः ।

दिव्यासशोभितभुजो नृसिंहः पातु मे भुजौ ॥

End:

इति परमरहस्यसारमेतत्कवचवरं पठतीह भक्तिमान् यः । स भवति धनधान्यपुत्रभोगी भवविगमे समुपैति नारसिंहम् ॥

Colophon:

इति नृसिंहकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6513. नृसिंहखडुमालामन्त्र:.

NRSIMHAKHADGAMÁLÁMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{3}{8} \times 1\frac{3}{8}$ inches. Pages, 4. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Nysimha presumably for securing his protection.

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहखड़ुमालामहामन्त्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता; हं बीजं, हिं शक्तिः, नमाम्यहामिति कीलकं, श्रीमन्नृसिंहप्रीत्यर्थे नृसिंहखडुमालामहामन्त्रजपे विनियोगः। End:

श्रीनृसिंहाय घे घे घे घे कुरु कुरु कुरु कुरु क्षं क्षं क्षं क्षं मां रक्ष मां रक्ष मां रक्ष हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6514. नृसिंहगायत्रीमन्त्र:.

NRSIMHAGAYATRIMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $8\frac{1}{4} \times 1\frac{3}{2}$ inches. Page, 1. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 36. The other works herein are Gurupādukāmantra 16, Nṛsimhānuṣṭubhamantra 2a, Bālātripurasundarīmantra 36, Laghuśyāmalāmantra 46, Nṛsimhasahāsranāmastōtra 6a. Complete.

This Gāyatrīmantra in relation to Nṛsimha is obviously intended to propitiate that diety. Beginning and End:

तदङ्गगायत्रीमन्त्रानुष्ठानं करिष्ये---

वज्रनखाय विद्यहे तीक्ष्णदं ष्ट्राय धीमहि ।

तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥

अनेन नारसिंहगायत्रीमन्त्रानुष्ठानेन श्रीमन्नृसिंहस्सुप्रीतो वरदो भवतु ॥

स्वाहान्तेनैव होमः स्यान्नमोऽन्तेन च तर्पणम् ॥

No. 6515. नृसिंहगायत्रीमन्त्रः.

NRSIMHAGĀYATRĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 3056.

Contains only the bare Mantra.

Complete.

Same as the above.

No. 6516. नृसिंहगायत्रीमन्त्रः. NRSIMHAGAYATRIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

नृसिंहाय विद्महे महावलाय धीमहि ।

तन्नोऽनन्तः प्रचोदयात् । इति प्राणायामः ।

अस्य श्रीनृांसहगायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-नृसिंहो देवता, श्रीनृसिंहप्रेरणया श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

नृसिंहगायत्रीमन्त्रजपं करिष्ये— नृसिंहाय विद्यहे महाबलाय धीमहि । तन्नोऽनन्तः प्रचोदयात् । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6517. नृसिंहतापनीयमन्त्रः.

NRSIMHATÁPANĪYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 18*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra, addressed to Nrsimha, is intended to enable one to secure the favour of that diety.

Beginning:

भद्रं कर्णेभिः शान्तिः शान्तिरशान्तिः ।

ओं देवा वै प्रजापातिमब्रुवन् । अथ कैर्मन्त्रैर्देवः स्तुतः प्रीतो भवति । स आत्मानन्दर्शयति । तन्नो ब्रूहि भगवन्निति । स होवाच प्रजापतिः। ओं उं ओं यो वै श्रीनृसिंहो देवो भगवान् यश्च ब्रह्मा ओं मूर्भुवस्दुवस्तरमै वै नमो नमः । ओं प्रं ओं ओं यो . . नमः ।

End:

ओं हं ओं ओं यो वै श्रीनृसिंहो देवो भगवान् यश्च सर्वम् ।

ओं भूर्भुवस्सुवस्तस्मै वै नमो नमः—इति तान् प्रजापतिरत्न-वीत् । य एतैर्मन्त्रैर्देवं स्तुवाति ; स देवं पश्याति स सर्वे(वै) पश्यति । य एवं वेद, इत्युपानिषत् ॥

Colophon:

इति द्वितीयः खण्डः ॥

शन्नो मित्रः शं वरुणः । 🦼 ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. **6518. नृसिंहदिग्बन्धनम्.** NRSIMHADIGBANDHANAM.

Pages, 3. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 5574. Complete.

This Mantra, addressed to Nrsimha, is supposed to have the power of safeguarding one from dangers coming from various evil spirits and other beings of that kind to be found in the various quarters It is also believed to be helpful in causing the destruction of one's enomies and the accomplishment of one's desires, and is supposed to belong to a larger collection of Mantras known as Astasyadigbandhana.

Beginning:

अष्टास्यगण्डमेरुण्डनृसिंहदिग्बन्धनाविधानमुच्यते । इन्दमण्डले अष्टमुखनृसिंहाय गजारूढाय वज्रहस्ताय सहस्राक्षाय हेमवर्णाय इन्द्रदिशिस्थितभूतप्रेतपिशाचासुरब्रह्मराक्षसबेतालगणान् बन्धय बन्धय मां रक्ष रक्ष अष्टमुखनृसिंहाय हुं फट् स्वाहा । End:

अधस्ताद्दिशि वासुकिमण्डले कूर्मारूढनृसिंहाय पद्महस्ताय नील वर्णाय पातालदिशिस्थितभूतगणान् बन्धय बन्धय मां रक्ष रक्ष महा-विष्णवे हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति अष्टमुखनृसिंहदिग्बन्धनम् ॥

बन्नसनत्कुमारसंवादे नृसिंहदिग्बन्धनं, परसैन्यबन्धनं, परशतु-बन्धनं, वाग्बन्धनं, परमृत्युहरं, सर्वकार्येषु साधनं, दिग्बन्धनं यथा-पूर्वे यन्त्रराजं ततः ॥

Colophon:

अष्टास्यगण्डभेरुण्डदिग्बन्धनं समाप्तम् ॥

No. 6519 नसिंहदात्रिंशदक्षरमन्त्रः.

NŖSIMHADVĀTRIMŠADAKṢARAMANTRAH. Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 96 of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is intended to win the favour of Laksmi-Nrsimha. It consists of 32 syllables.

Beginning:

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।

नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

इति प्राणायामः ।

अस्य श्रीद्वातिंशदक्षरनृसिंहमहामन्त्रस्य बद्या ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता; श्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रेरणया श्रीलक्ष्मीनृह(रि)-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

नसिंहमहामन्त्रजपं करिप्ये ।

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।

नसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6520. नृसिंहमन्त्र:. NRSIMHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 80*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is supposed to enable one to destroy one's enemies and to protect one from all dangers.

Beginning:

ओं नमो भगवते श्रीवीरनारसिंहज्वालाय सहस्रकराय दीर्घदंष्ट्रा-करालाय महाभीषणनिनदाय महाभयङ्कररूपाय अनन्तार्कप्रकाशाय सर्व-लोकरक्षाय सर्वज्वरविनाशाय भूतदमनाय सर्वशत्रुविदाराय. End:

मारय मारय मर्दय मर्दय हन हन हत (न) हत (न) ठ ठ ठ ठ ठ छ छ छ चट चट कह कह ममाभयं कुरु कुरु मां रक्ष रक्ष स्वाहा ॥

No. **6521. न**सिंहमन्त्र:. NRSIMHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 133*a* of the MS. described under No. 295^r. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

ओं नमो भगवते ओं अघोरोग्रनृसिंहाय ओं: अघोरवीरवऋनृसिं-हाय ज्वालामालिने ओमघोरनृसिंहाय कह कह र र र लल ल क्ली लि लि लि कु लु लु रूं खें खें खें अनन्तरुद्रावतार । End:

उमनसिंहाय स्वाहा ॥

No. 6522. नृसिंह्मन्त्रः.

NRSIMHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 10*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is intended to enable one to win the grace of Nrsimha. It consists of 24 syllables.

Beginning:

जय जय नृसिंहाय सर्वज्ञाय महातेजोवलवीर्याय स्वाहा इति प्राणायामः । अस्य श्रीनृसिंहमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायती छन्दः, नृसिंहो देवता, नृसिंहप्रेरणया नृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

नृसिंहपेरणया नृसिंहत्रीत्यर्थं चतुर्विंशत्यक्षरनृसिंहमहामन्त्रजपं क-रिष्ये । ओं जय जय नृसिंहाय सर्वज्ञाय महातेजोबलवीर्याय स्वाहा । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6523, नृसिंहमन्त्रः.

NRSIMHAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2126 of the MS described under No. 537. Complete.

This Mantra is also addressed to Nrsimha and is supposed to have the power to remove diseases and poisons from the body and to counteract the magical aims of an adversary.

Beginning:

ओं नमो भगवते महाघोरवीरविदारणनारसिंहाय कालामिज्वाला(य) जलजनेत्राय प्रलयकालामिरुद्रावतारज्वालानारसिंहाय भस्माङ्गरागवर्बरकेस-राय सर्वमुखदंष्ट्रानखकरालाय हिरण्याक्षकुक्षिच्छेदनाय रक्तमांसाय्रसेवित-मुखाय्रज्योतिर्वडबानलनृसिंहाय.

End:

ओं नमो भगवते नारसिंहाय त्रिदंष्ट्राय वज्रदेहाय कपिल्रप्रभाय बभ्रुवे(के)शाय सर्वरोगनिवारणाय सर्वविषनिवारणाय परविद्याछेदनाय दह दह पच पच हुं फट् स्वाहा ॥ Colophon:

नृसिंहकवच(मन्त्रः)संपूर्णः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6524. नृसिंहमालामन्त्रः.

NRSIMHAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 31*a* of the MS. described under No. 764. Incomplete.

This Mantra is addressed to Nrsimha, and is supposed to have the power to secure protection from all dangers and to drive away evil spirits.

Beginning:

अघोरवीरनारसिंहाय चन्द्रामिज्वालामज्वलितनेत्रत्रयाय प्रलयकाल-रुद्रावताराय ज्वालानृसिंहाय भस्माङ्गरागवभ्रुवेषाय नरमृग(न)ाभिलवराह-नारसिंहाय अष्टादशवा . . प्रचण्डविकमविरुद्धाकारविश्वरूपस्तम्भो-द्भवाय अनन्तदिव्यायुधधराय दानवकुलसंहरणाय भूतप्रेतपिशाचोच्चाटनाय स्वदेहरक्षणाय ओं ह्रां ह्रीं क्षां हुं फट् स्वाहा ।

End:

ओं नमो नारसिंहाय सदाखण्डलमुनिवन्दिताय उग्रग्रहोच्चाटनाय अनेकस्तुतिदैवताय सर्वग्रहोच्चाटनाय हुं फट् स्वाहा। ओन्नम उथनार-सिंह ज्वालानृसिंह दारुणनृसिंह विदारणनृसिंह अघोरनारसिंह प्रचण्डनारसिंह भुगभुगनारासिंह कुङ्कमनारसिंह रुक्मिणीनारसिंह तुल्लुकोट्टुनारसिंह.

No. 6525. नृसिंहमालामन्त्रः. NRSIMHAMALAMANTRAH

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 20*b* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is supposed to safeguard the supplicant from the dangers that may possibly come from various quarters.

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहमालामन्त्रस्य नारदो भगवानृषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, श्रीनृसिंहदिग्बन्धनार्थे जपे विनियोगः, अं बीजं, लं शक्तिः, गं कील-कम् ।

X

श्रीमन्नृसिंहविभवे गरुडध्वजाय तापत्नयोपशमनाय भवौषधाय । कृष्णाहिवृश्चिकजलांम्रिभुजङ्गरोगक्केशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ॥

No. 6526, नृत्तिंहमालामन्त्रः.

NRSIMHAMALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

Supposed to be efficacious in driving away evil spirits.

Beginning:

ओन्नमो भगवते श्रीनृसिंहाय अनलोग्रदंष्ट्राकरालवदनाय स्तम्भो द्ववाय दिरण्यकशिपुवक्षस्खलविदारणाय भूतमण्डलप्रेतमण्डलरुद्रमण्ड-लान् कम्पय कम्पय आवेशयावेशय हुं फट् स्वाहा । End:

कां कों वि रुं दृं स्तुं स्नां स्नीं क्लूं क्षां अं हुं फट् स्वाहा॥

No. 6527. नृसिंहमालामन्तः. NRSIMHAMÄLÄMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 3546. Complete.

This Mantra is supposed to secure protection from all dangers and to remove all kinds of troublesome obstacles.

Beginning:

ओं नमो भगवते अघोरवीरनृसिंहाय रौद्राय प्रज्वलितनेत्राय ज्वालानृ(सिं)हाय मानवगुरुसाधकाय ज्वरमरणदारिद्यानिवारणाय पर-मन्त्रयन्त्रतन्त्रशून्यग्रहदहनान्तकाय.

End:

आत्मानं विन्नविच्छेदं कुरु कुरु मां रक्ष स्वाहा ॥

No. 65?8. नृसिंहमालामनत्रः.

NRSIMHAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 205a of the MS. described under No. 424. Complete.

This Mantra is supposed to enable one to destroy evil spirits and to cure various kinds of ailments.

Beginning:

अस्य श्रीनृत्तिंहमालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-नारसिंहरूपश्रीमहाविष्णुर्देवता, सर्वभूतप्रेतपिशाचज्वरशून्यक्षुद्रवा(चा)रादि-समस्तरोगविनाशनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

ऐकाहिकदितीयाहिकतृतीयाहिकचातुर्थिकज्वरं नाशय नाशय हां ही हुं फद स्वाहा ॥

No. 6529. नृसिंहमालामन्त्र:.

NRSIMHAMALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under Nc. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

ओन्नमो भगवते ऽघोरवीरनारसिंहाय रौद्रामिज्वालाप्रज्वलितनेत्रत्र-याय प्रलयकालामिरुद्रावताराय भस्माङ्गरागबहुकेशनरमृगनखदंष्ट्राकरा-लाय ज्वरमरणभयदारिद्यनिवारणाय अस्मन्मन्त्र यन्त्रतन्त्ररक्षणाय परमन्त्रोच्चाटने भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसदानवशाकिनि-डाकिनिकाामिनिगन्धर्वगणभयोच्चाटनाय । End:

श्रीमत्रृसिंहाय क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षों हं हं खं खं खें खें छं छं ठ ठ ठ ठ यं यं हुं हुं फट् स्वाहा ॥

> No. 6530. नृसिंहषडक्षरमन्त्रः. NRSIMHASADAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2996 of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is in praise of Nrsimha and consists of six syllables. The ceremonial touching of certain parts of the body while repeating this Mantra is also described here.

Beginning :

अस्य श्रीषडक्षरनृसिंहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, नार-सिंहो देवता; श्लां बीजं, हीं शक्तिः, फट् कीलकं, श्लामित्यादिषडङ्ग-न्यासः ।

End:

मन्त्रः----

आं हीं कं क्षां हुं फट् स्वाहा ॥

षड्लक्षं पुरश्वरणम् । आज्यात्रं दशांशहोमः, षट्सहस्रं तर्पणम् ॥ इति ॥

No. 6531. नृसिंहषडक्षरमन्त्र:.

NRSIMHASADAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 253*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीषडक्षरनृसिंहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पक्किश्छन्दः, नारसिंहो देवता, क्षेां बीजं, ह्रीं शक्तिः, फट् कीलकं, आं हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, क्षों शिखाये वषट्, फट् अस्ताय फट्।

Bnd :

मनुः----

आं हीं क्षां क्षें हुं फट् ॥ षड्लक्षपुरश्चरणम् शुद्धान्नघृतेन पट्-सहस्रं होमयेत् । षट्सहस्रं तर्पणं कुर्यात् ॥

No. 6532. नृसिंहषडक्षरमन्त्रः. NRSIMHAŞADAKŞARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6583. नृसिंहषोडशाक्षरीमन्त्र:.

NŖSIMHAŞADAKŞARÎMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 23*a* of the MS. described under No. 6090. Complete.

This Mantra is addressed to Nrsimha, and is intended to counteract the effects of an adversary's Mantras and aims. It is

wrongly stated in the beginning that this Mantra consists of sixteen syllables.

Beginning:

अस्य श्रीपरास्तपरमन्त्रपरयन्त्रप्रध्वंसनषोडशाक्षरीमहामन्त्रस्य कपिळ-रूपश्रीविष्णु ऋषिः, जगती छन्दः, परमन्त्रयन्त्रतन्त्रास्तप्रध्वंसननृसिंहो देवता; क्षं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं, मम परमन्त्रपरयन्त्र-परतन्त्रपरास्तप्रध्वंसननृसिंहषोडशाक्षरीमन्त्रजपं करिष्ये ।

End:

मनुः---

ओं क्झां क्झीं क्झं परास्नपरमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रप्रध्वंसननृत्सिंहाव स्वाहा ॥

No. 6534. नृसिंहसहस्राक्षरीमन्त्र:.

NRSIMHASAHASRĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 234*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra also is addressed to Nrsimha, and is supposed to have the power to enable one to accomplish one's desires. It consists of 1,000 syllables.

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहसहस्राक्षरीमद्दामन्त्रस्य कपिल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनृसिंहः परमात्मा देवता; क्षां बीजं, श्रीस्वाहा शक्तिः, बस्नबीजमित्यादि श्रीनृसिंह सहस्राक्षरीमूर्तेः सर्वाभीष्टप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वान् ग्रहान् सर्वाणीन्द्रियाणि मम वशमानयानय महात्मन् स्वरूपं दर्शय दर्शय सानिध्यं कुरु कुरु क्षां श्रीं क्षं श्रैं श्रौं क्षः क्षपितकल्मषोतार्य न्छां न्छीं न्द्रं न्छैं न्छौं न्छः नृसिंहज्ञानात्मने स्वाद्या कों आं क्ली ही श्रौं ओं.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

रति नृसिंहसहस्राक्षरीस्वरूपम्.

सहस्राक्षरमन्त्रोऽयं नारसिंहाह्यं (यो) मनुः । चतुर्वर्गप्रदस्तेषां ददाति महतीं श्रियम् ॥

महामन्त्रमिदं पुण्यं महापातकनाशनम् । नारसिंहं परं गुह्यं सर्वलोकेषु दुर्लभम् ॥ न्यूनो वा वयसा वापि सर्वथा गुरुरेव हि । तस्मादपि च गृद्धीयात् नारसिंहं महामनुम् ॥ कल्पस्वाध्यायनैपुण्यं मनौ जप्ते तु किं पुनः ।

. वारं चिद्यथ गच्छति।।

Colophon:

इति मन्त्रदेवताप्रकाशायां श्रीनृसिंहसहस्राक्षरगिविधानं समाप्तम्.॥

No. 6535. नृसिंहानुषुभमन्त्रः.

NRSIMHĂNUȘŢUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 3056. Complete.

This Mantra is intended to win the grace of Nrsimha. It is in the form of an Anustup śloka

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहानुष्टुप्महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता; उग्रं बीजं, क्ष्म्रों शक्तिः, नृसिंहेति कीलकं, श्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

उम्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् । नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यमृत्युं नमाम्यहम् ॥ 408-A

No. 6586. नृसिंहानुष्ट्रभमन्त्रः.

NRSIMHĀNUSTUBHAMANTRAH.

Pages, 3 Lines, 7 on a page.

Bogins on fol. 2a of the MS. described under No. 6514. Complete

Similar to the above.

Beginning :

गुं गुरुभ्यो नमः । गं गणपतये नमः ।

श्रीमन्नसिंह जीत्यर्थे नारसिंहानुष्टुप्महामन्त्रानुष्ठानं करिष्ये----

जस्य श्रीनारसिंहानुष्टुभमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनृसिंहः परमात्मा देवता; हं बीजं, इं शक्तिः, ऊं कीलकं, मम नारसिंहप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ! End:

गुबातिगुअगोप्त(प्ता)त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।

सिद्धिभेवतु मे देव त्वत्रसादान्माये स्थिरा॥

अनेन यथाशक्ति जपेन भगवान् सर्वात्मकदश्रीमच्चृसिंहरसुप्रीतो वरदो भवतु ॥

No. 6537. न्सिंहानुष्ट्रभमन्त्र:.

NRSIMHĀNUSTUBHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीअनुष्टुप्नृसिंहमन्त्रस्य प्रजापतिः बद्धा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः नृसिंहमहाविष्णुर्देवता, श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे विनियोगः । End :

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् । नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

4897

द्वातिंशज्ञक्षपुनश्चरणं कुर्यात् । द्वातिंशत्सहरूं पायसेनाज्यान्वितेन होमः । द्वात्रिंशत्सहसं तर्पयेत् ॥

No. 6538. नृसिंहानुष्टुभमन्त्रः.

NRSIMHĀNUSTUBHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 21 on a page.
Begins on fol. 252b of the MS. described under No. 581.
Complete.

Same as the above.

No. 6539. नृसिंहानुष्ट्रभमन्त्र:.

NRSIMHĀNUSŢUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 299a of the MS. described under No. 5477. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीअनुष्टुप्मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, नृसिंहो देवता, नृसिंहप्रीत्यर्थे विनियोगः । उग्रं वीरं—हृदि, महाविष्णुं— शिरसि, ज्वलन्तं सर्वतोमुखं—शिखा, नृसिंहं भीषणं —कवचं, भद्रं मृत्युमृत्युं—नेत्रं, नमाम्यहं — अस्त्रम् ।

End:

मन्त्रः पूर्ववत् । द्वात्रिंशल्लक्षं पुरश्चरणम् । आज्यमिश्रपायसेन द्वात्रिंशत्सहसं होमः । द्वात्रिंशत्सहस्रं तर्पणम् । इति ॥

No. 6540. नृसिंहायुताक्षरीमालामन्त्रः.

NRSIMHĀYUTĀKSARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 27. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 152*a* of the MS. described under No. 2961. Complete. This Mantra consists of ten thousand syllables, and is intended to win the grace of Laksminrsimha. Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहायुताक्षरमन्त्रराजमन्त्रस्य कपिल्महाविष्णु ऋषिः, अ-तिजगती छन्दः, श्रीनृसिंहो महाविष्णुर्देवता; आद्या जगन्मूलप्रकृति-रशक्तिः, महापुरुष आद्यं बीजं, बुद्धिर्द्वितीया शक्तिः, प्रत्यगात्मा द्वितीयं बीजं, अमृतरूपिणी मध्यवर्तिनी मूलाषारादारभ्य बसरन्ध्र-पर्यन्तं सुषुम्ना सरस्वती कुल्देवी तत्सहचर उदानो वायुस्तृतीयं बीजं, स्वाहेत्यपरा चतुर्थी शक्तिः, क्षामित्यपरं चतुर्थं बीजं, विकीर्णनखदंष्ट्रायु-धेति शक्तिः, मम निरतिशयनिरन्तरश्रीमहोमश्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

4898

ओं क्षां हृदयादिन्यासं कत्वा, ऋष्यादिन्यासं विधाय, सत्यज्ञान-मित्यादिकां स्तुत्वा, मानसपूजां पुष्पाञ्चलिं कत्वा, उपसंहारमुद्रां प्रदर्श्य, भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिं पठित्वा, यस्य स्मृत्या च इति क्षमापणं कृत्वा, देवाय लक्ष्मीनृसिंहाय ओं वं समध्व(पे)ये ॥

No. 6541. नृसिंहैकाक्षरमन्त्रः. NRSIMHAIKĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 3056. Complete.

This Mantra is intended to please Laksminrsimha. It consists of one syllable only. The syllable Om is not to be considered as forming part of the Mantra.

Beginning:

ओं नृसिंहैकाक्षरीमहामन्त्रस्य अत्रि ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः रूक्ष्मी-नृसिंहो देवता; क्षं बीजं, सं शक्तिः, ओं कीलकं, लक्ष्मीनृसिंहमसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSCHIPTS.

End:

मन्त्रः---ओं क्झों ॥

No. 6542. नेसिंहैकाक्षरमन्त्रः.

NRSIMHAIKĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2936 of the MS. described under No. 5477 Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीएकाक्षरनरहरिमन्त्रस्य लक्ष्मीनृसिंह ऋषिः, देवताछन्दो-न्यासध्यानादिकं संवै पूर्ववत् ।

End:

मन्त्र:---ओं क्षां स्वाहा । इति ॥

No. 6543. नृसिंहैकाक्षरमन्त्र:.

NRSIMHAIKĀKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 252b of the MS. described under No. 581. Complete.

Slightly different from the above.

Beginning and End:

सस्य श्रीएकाक्षरनृसिंहमन्त्रस्य लक्ष्मीनृसिंहप्रकारेण न्यासध्यानं पूर्ववत् । मन्त्रः---क्षौं ॥

No. 6544. नृसिंहैकाक्षरमन्त्रः.

NRSIMHAIKĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6545. नृसिंहैकाक्षरमन्त्र:.

NRSIMHAIKAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 3546. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीनृसिंहैकाक्षरमहामन्त्रस्य प्रद्दाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनृसिंहो देवता; ओं कां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, कीं तर्जनीभ्यां नमः, कूं मध्यमाभ्यां नमः ।

End:

श्रीमत्रृसिंहविभवे गरुढध्वजाय तापत्रयोपशमनाय भवौषघाय । तृष्णादिवृश्चिकजलामिभुजङ्गरोगक्केशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ॥

No. 6546. पक्षिराजसाळवमन्त्रः.

PAKSIRĀJASĀLUVAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 145 × 13 inches. Pages, 17. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Incomplete.

Begins on fol. 29*b*. The other works herein are Hanumanmantrakalpa 1a, Dēvapūjāprayōga 27a, Local Records in Telugu 38a.

This Mantra is addressed to Siva, as he once assumed the form of a divine bird of supernatural powers, and is supposed to have the power to remove dangers and difficulties from one's way and to destroy one's enemies.

Beginning:

श्रीमहेश्वर उवाच---

भूण्वन्तु ऋषयस्सर्वे साछवस्य महात्मनः । अस्य दर्शनमात्रेण पळायन्ते ति (हि)शत्रवः ॥

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

गुरूपदेशमार्गेण दर्शनात्तस्य शत्रवः । पादौ प्रणम्य शिरसा दासोऽहमिति भाषितम्॥ पूजाप्रकारं मे ब्रूहि देवदेव उमापते ।

शरभसाछवमन्त्रस्य छन्दोऽतिजगती स्मृता । वामदेव ऋषिः प्रोक्तो देवता पक्षिसाछवः ॥ कालाग्निरुद्रो दैवत्यं खं बीजं स्वाहा शक्तितः ॥

End:

ओं नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय सर्वदुष्टान् मे निषूद[त्र]य अ-शनिं[नां] भज्जय भज्जय नाशय नाशय स्वाहा ॥ [तलः] अथ जलस्तम्भः ओं अग्नय इदं स्वाहा.

No. 6547. पञ्चकूटेश्वरीमन्त्रः.

PAÑCAKŪŢĒŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 23b of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Tripurasundarī.

Beginning:

अस्य श्रीपत्रकूटेश्वरीमहामन्त्रस्य परमानन्दभैरव ऋषिः, अति-जगती छन्दः, श्रीपत्रकूटेश्वर्यम्बा परा देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कील्डकं, मम श्रीपत्रकूटेश्वर्यम्बापरात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिच्चार्थे जपे विनियोगः ।

End:

इकलसहीं श्रीपश्चकृटेश्वर्यम्बाश्री ।

No. 6548. पश्चदशाक्षरीमन्त्र:. PAÑCADAŚĀKṢARÌMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $8\frac{1}{8} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Page, 1. Lines, 10 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 10*a*. The other works herein are Annapūrņadašaka 1*a*, Mahāgaņapatimantra 2*b*, Vidyādašaka 3*a*, Sarasvatāmantra, Bālādēvīmantra 3*b*, Tripurasundaryastottarašata 4*a*, Laksmyastottarašata 4*b*, Vanadargāmahāmantra 6*a*, Sarasvatīdvādašanāman 7*a*, Annapūrņāstotra 7*b*, Šaktipañcāksarāmantra 9*a*, Navaratnamālā 10*b*, Šyāmalādaņdaka 13*a*, Saundaryalaharī 17*a*.

Complete.

This Mantra is supposed to have the power to confer prosperity on one and to make one into a sweet poet. It is addressed to Tripurasundarī and consists of 15 syllables.

Beginning:

अस्य श्रीपत्रदशाक्षरीमहामन्वस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्वीं कीलकं, मम महदैश्वर्याभिवृद्धर्थे माधुर्यकवितासिद्धर्थे महात्रिपुर-सुन्दरीप्रसादसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

क्रीं हसकहलहीं सौः सकलहीम् ॥

No. 6549. पञ्चदशाक्षरीमन्त्रः. PAÑCADAŚĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 547. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीपञ्चदशाक्षरीमहात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरमुन्दरी देवता। मूलेन न्यासः। ध्यानम् !

End:

सकलहीं पुनर्न्यासः ॥

No. 6550. पश्वदशाक्षरीमन्त्रः.

PAÑCADAŚÁKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 2736 of the MS. described under No. 5477. Complete.

Intended to propitiate the goddess Tripurasundari.

Beginning:

अस्य श्रीपचदशाक्षरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति अधिः, पाक्किच्छन्दः, श्री-महात्रिपुरसुन्दरी परमेश्वरी देवता, कामराजात्मकं बीजं, तार्तीयं शक्तिः, प्रथमसंभवकीलकं, मम महात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः । End:

> चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुन्नुमरागशोणे। पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥

No. 6551. पत्रद्शीकवचः.

PAÑCADAŚĪKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 100*a* of the MS. described under No. 673. Complete as found in the Rudrayāmala.

This Kavacamantra is also addressed to the goddess Tripurasundarī, and is intended to secure protection.

महाविद्यामयं ब्रह्म कवचं मन्मुखोदितम् । गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् प्रपठेत ततः परम् ॥ त्रिः सक्तद्वा प्रतिदिनं सोऽपि पुण्यवतां वरः । देवि यः सर्वविद्यासु अधिकारी जपादिषु ॥ देवीमभ्यर्च्य विधिवत् पुरश्चर्या समाचरेत् । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनादिकम् ॥

End:

श्रीमत्रिपुरसुन्दर्याः कवचस्य ऋषिरिशवः । छन्दो विराट् देवता च श्रीमन्निपुरसुन्दरी ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः । शिरो मे वाग्भवं पातु क ए ई ल हीं स्वरूपकम् । इ स क ह ल हीं ललाटच्च पातु कामेश्वरी मम ॥

अपाय---श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवस्त्रमे ॥ त्रैलोक्यमोहनं नाम महामन्त्रौघविग्रहम् । यच्छ्त्वा दानवान् विष्णुः निजघान मुहुर्मुहुः ॥

ईश्वर उवाच---

श्रीपार्वत्युवाच—

श्रीमत्रिपुरसुन्दर्या या या विद्याः सुदुर्रुभाः । कृपया कथितास्सर्वाः श्रुताश्राधिगता मया ॥ प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मन्त्रविग्रहम् । त्रैलोक्यमोहनचेति नामतः कथितं पुरा ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि सर्वार्थं कवचस्य हि ।

Beginning:

4904

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

नवल्रक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिध्यति । स शस्त्रधातमामोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥

Colophon:

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः त्रैलेक्यमोहनकवचं नाम द्वात्रिंशः पटलः ॥

No. 6552. पश्वदशीमूलमन्त्रव्याख्या.

PAÑCADAŚĪMŪLAMANTRAVYĀKHYĀ.

Pages, 13. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 158*a* of the MS. described under No. 424. Complete.

A commentary on the Pancadaśimūlamantra which is the same as Pañcadaśākṣarīmantra ; by Agastya. It is also called Śrīvidyāțīkā.

Beginning:

ж

इह खद्ध भगवान् सकलाविद्यानिधिः बहुविधशाखामयऋग्यजु-स्सामवेदमूर्तिरपरिच्छित्रचिच्छक्तिकलासमावेशतरङ्गितहृदयो हयप्रीवरूपो महाविष्णुः सर्वज्ञानतपोनिधये परसच्चिदानन्दमयचिच्छक्तिस्वरूपं प्रष्टवते अगस्त्याय महामुनये अनेकविधशाखामयीनामृग्यजुस्सामशाखानामनेक-विधासूपनिषत्सु तत्र तत्र विद्यमानरहस्यार्थावबोधस्य दुरवगाहत्वात् ।

पश्चदशसु वर्णेष्वेव प्रतिवर्णे तत्तद्रहस्यार्थप्रकाशिनीं सकलपुरुषार्थ-साधनत्वेन अभिमतसकलपुरुषार्थप्रत्यक्षप्रकाशिनीं श्रीविद्यामुपादिशति क ए ईलेति । कन दीप्तावित्यस्माद्धातोः कन्यन्ते प्रकाश्यन्ते अनेन शब्दार्थजाला-नीति वा कनयतीति वा कनतेः किपि उणादयो बहुलमिति बहुलप्रहणा-द्राप्तस्वरादित्वादव्ययं नलोपः ।

End :

अत एव सकलपुरुषार्थावाप्तिपूर्वकात्मज्ञानजनकत्वेन जीवब्र**स**समरसी-भावरूपमोक्षसाधनी ॥

> हयग्रीवाल्लब्ध्वा सकलमिदमाद्यं मनुवरं कता टीका तस्य प्रथितमहिमागस्त्यमुनिना । कलातत्त्वोद्धासिन्यपरिमितभाग्योदयकरी

त्रयीसारादुद्धृत्य च सदुपकाराय सुधिया ॥

Colophon :

इति श्रीपरमशिवाचाररूपश्रीमदगस्त्यमहर्षिणा विरचिता श्रुतिसार-समुद्धता श्रीविद्याटीका समाप्ता ॥

> No. 6553. पञ्चद्शीमूलमन्त्रव्याख्या. PAÑCADAŚĪMŪLAMANTRAVYĀKHYĀ.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 846 of the MS. described under No. 673. Complete.

Same as the above.

No. 6554. पश्रपाणमन्त्र:.

PAÑCAPRĀNAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 236 of the MS. described under No. 5786. Complete.

A series of five Mantras one of which is addressed to each of the five vital airs.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । प्राणाय नम इति प्राणायामः १२ प्राणायेत्या-दिन्यासः ।

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

अस्य श्रीप्राणमन्त्रस्य भृगु ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, वायुविषये श्री-मुख्यप्राणो देवता ; हरिविषये प्राणात्मकश्रीनारायणो देवता ; मुख्य-प्राणाविषये मुख्यप्राणप्रेरणया मुख्यप्राणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

समाननामकश्रीअनिरुद्धप्रेरणया श्रीअनिरुद्धप्रीत्यर्थं समाननामकश्री-अनिरुद्धमहामन्त्रजपं करिष्ये ॥

ओं समानाय नमः । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6555. पश्चबाणमन्त्र:.

PAÑCABÀNAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 250a of the MS. described under No. 581.

Complete.

This Mantra is addressed to the five arrows mentioned in the Kinkinītantra, and is supposed to enable one to bring under one's control the demigods, devils and other evil-doing agencies.

Beginning:

भैरव उवाच किक्किणीतन्त्रे पश्चप्रकाराः त्रिपुरानन्तरं यक्षिणीसहिताः पञ्चबाणा वक्ष्यन्ते । पश्चबाणमन्त्रः, द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः । कुङ्कुम-गोरोचनयावकक्षौद्रपुष्पादिभिः त्रिवटे शिलातले नदीतीरे गृहे नृपद्वारे नगरप्रदेशे इमशाने वनेषु इत्यादिस्थानेषु भूर्जपष्टके पत्रे वा विलिख्य स्थापयेत् ।

End:

यक्षराक्षसबेतालपिशाचोरगकिन्नराः । सिध्यन्ति च वरारोहे बाणमालसुपीडिताः ॥

No. 6556. पश्चबाणमन्तः.

PAÑCABANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 296*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6557. पश्चबाणेश्वरीमन्त्रः.

PAÑCABÁNĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 236a of the MS. described under No. 581.

Complete.

This Mantra is addressed to a certain goddess by whose help it is considered to be possible to make the beings in the three worlds become favourably disposed towards one.

Beginning:

अस्य श्रीपश्वबाणेश्वरीमन्त्रस्य मदन ऋांषेः, गायत्री छन्दः, श्री-पश्वबाणेश्वरी देवता; द्रां बीजं, द्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम त्रैलोक्यसर्वजनवश्यार्थे विनियोगः ।

End:

द्रां द्रीं क्रीं ब्लू सः ॥

No. 6558. पश्चनाणेश्वरीमन्त्रः.

PAÑCABĂNĔŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 90*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRTT MANUSCRIPTS.

No. 6559. पञ्चबाणेश्वरीमन्त्र:.

PAÑCABÁNEŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 2786 of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6560. पत्रमुखशरमसालुवमन्त्रः.

PAÑCAMUKHAŚARABHASALUVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 831. Complete.

This Mantra is intended to win the favour of Śiva. It is stated in the Lingapurāņa that Śiva assumed a peculiar beastand-bird form to overpower the prowess of Nrsimha, the (man-lion) incarnation of Vișnu.

Beginning :

अस्य श्रीपत्राक्षरीपत्रमुखशरभसाल्वपाक्षिराजमालिकामहामन्त्रस्य सदा-शिवब्रह्म ऋषिः, महाविराट् पाक्किश्छन्दः, पत्राक्षरीपत्रमुखशरभसाल्व-पक्षिराजो देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हुं हुं हुं कीलकं, पत्र-मुखशरभसाल्वपक्षिराजप्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः । End:

अघोर सद्योजात मम देव ईशानाय काळकालकण्ठाय गरळसंहा-राय हुं हुं हुं ॥

No. 6561. पश्चमुखहनूमन्मत्र:.

PAÑCAMUKHAHANŬMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS, described under No. 2886 Complete.

404

This Mantra is supposed to please Hanumat who is here conceived as having five faces.

Beginning:

अस्य श्रीपश्चमुखहनूमन्महामन्त्रस्य रामचन्द्रो भगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पश्चमुखहनूमान्देवता ; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हा हा कीलकं, श्रीपश्चमुखहनूमत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ओं आं आं झूं झूं हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा ॥

No. 6562. पश्चमुखहनूमन्मन्त्र:.

PAÑCAMUKHAHANŪMANMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is also addressed to Hanumat, and is supposed to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीपश्चमुखहनूमन्मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीहनू-मान्देवता ; यं बीजं, स्वाहा शक्तिः, यईं कीलकं, सर्वाभीष्टासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं ही कों श्री हुं हनों नमः पत्रवक्राय हनूमते महाबलाय सर्व-दुष्टग्रहोचाटनाय हुं फट् स्वाहा ।।

No. 6563. पश्चवक्रहनूमन्मन्त्र:.

PAÑCAVAKTRAHANŪMANMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 136α of the MS. described under No. 29. Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is supposed to enable one to break the forces which restrain the free use of one's left hand.

Beginning:

श्रीमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पश्चवऋहनूमान् दे-वता, यं बीजं, हनूमान् शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम पश्चमुखहनूमत्र-सादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हं मर्कट मर्कटाय स्वाहा ॥

हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यत लिख्यत भूमित(र्जद)ले । यदि नश्यति(नह्यति नह्यति)वामकरं परिमुत्रति मुत्रति शुङ्खलिका ॥

No. 6564. पञ्चवक्रहनूमन्मन्त्र:.

PAÑCAVAKTRAHANŪMANMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 5864. Complete.

Slightly different from the above at the end as given below : -

ओं नमो भगवते आज्जनेयाय महाबलाय हनूमते स्वाहा॥

No. 6565. पश्चवक्रहनूमन्मन्त्र:.

PAÑCAVAKTRAHANŪMANMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 5864. Complete.

Different from the above at the end as given below.

ओं हौं क्षां क्ष्म्यौं ग्लौं हसौं महाबलाय नमः, पश्चवदनाय हनूमते खे खे हुं फट् स्वाहा ॥ 404-A

No. 6566. पञ्चवऋहनूमन्मालामन्त्र:.

PAÑCAVAKTRAHANŬMANMĀLÂMANTBAH.

Pages, 4. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 318b of the MS. described under No. 5477. Complete.

In praise of Hanūmat under various significant names for obtaining his favour.

Beginning:

पञ्चवऋहनूमन्मालामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अमृतविराट् छन्दः, पञ्चवऋहनूमान् देवता, हूं बीजं, ह्रौं शक्तिः, क्ष्मां कीलकं, हनु-मत्प्रसादसिच्द्यर्थे विनियोगः ।

End:

लङ्कापुरदहनाय दानवकुलगिरिवज्रदण्डाय अक्षयकुमारसंहारकार-णाय ओं रं यं घ्रौं ओं नमो भगवते श्रीरामदूताय हनूमते हुं फट् स्वाह¹ ॥

No. 6567 पथवक्रहनूमन्मालामन्त्रः.

PAÑCAVAKTRAHANŪMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 137*a* of the MS. described under No. 29. Complete.

Similar to the above

Beginning:

पञ्चवऋहनूमन्मालामन्त्रग्रहनिवर्तकः ।

ओं हौं क्म्रौं ग्लौं हुं हां ओं नमो भगवते पश्चवऋहनूमते प्रकट-पराक्रमाक्रान्तसकलदिङ्ण्डलाय निजकीर्तिस्फ़ूर्तिधावल्यवितानायमानजग-त्रितयाय अतुलैश्वर्यरुद्रावताराय।

End:

ओं नमो भगवते पश्चवक्रहनूमते ओं हौं क्ष्यां क्ष्मीं से हुं हौं कां त्रं स्त्रीं घ्रां कुं क्लीं हूां घूं हैं हौ़ें हूः हुं फट् खे खे हुं फट् स्वाहा हुं पश्चवक्रहनूमन्ताय (ते) नमः॥

No. 6568. पश्चवक्तहनूमन्मालामन्त्र:.

PAÑCAVAKTRAHANŪMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 18*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

कीशाधीशमृगेन्द्रतार्क्यकिटिराड्गन्धर्वदिव्यं मुखं ज्वालावालकपाणशूलविलसत्खट्वाङ्गपाशाङ्कराम् । रेरोलक्ष्मासुतशिष्टनिष्ठुरगदाशीर्षाणि हस्ते ध्रुवं

प्रत्यालीढपदाधरीधृ(क)तमहादैत्यं भजे पावनम् ॥

ओं नमो भगवते पञ्चवऋहनुमते प्रकटपराकमाकान्तसकछदिङ्मण्ड-लाय निजकीर्तिस्फूर्तिधावल्यविराजमानजगत्तितयाय।

End:

त्वद्भक्तमनोरथान् पूरय पूरय सकल्सञ्जीविनीममृताहारायं मे दापय दापय स्वाहा ॥

> षट्त्रिंशत्कोष्ठमालिख्य कमात्कोष्ठे हनूमतः । श्रीमदानुष्टुभं मन्त्रं लिखेन्मध्यचतुष्पथे ॥

पुनः प्रणववेष्टन्तु बाह्ये षट्टोणमण्डलम् । षट्रोणे प्रणवं स्थाप्य . . . मोहेषु सन्धिषु ॥ पुनः ह्रीङ्कारवेष्ठन्तु हीङ्कारं वेष्ठयेत्लगम् । वायुपुत्रच माहेन्द्रं वारुणच चतुर्विधम् ॥

PAÑCASIMHÁSANÉŚVARÍMANTRAH: WITH SÚKTA.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 63a of the MS. described under No. 29.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sakti who is supposed to be the presiding deity over all the five religious seats of authority representing the following five religious systems :---

- 1. The Bauddha system. 4. The Vaisnava system.
- 2. The Vaidika Śaiva system. 5. The Śākta system.
- 3. The Saura system.

Beginning:

बौद्धं वैदिकशैव सौरं विष्णु श्व शाक्तकम् ।

आं ऐं हीं श्रीं तारे तुत्तारे स्वाहा । तारादेव्यधिष्ठितबौद्धदर्शन-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ब्रह्मणे नमः । यद्वा गायत्री-मन्त्रमुचार्य बसदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शनश्री ओं हुं शिवाय नमः यद्वा। End:

महारत्नेश्वरीबधे (बौद्धे) त्यादिवाराहीरत्नाम्बायै नमः । इति पश्चप-चिका ॥

इति पञ्चसिंहासनेश्वरीसूक्तं प्रत्यहं जपानन्तरं पठेत् ॥

No 6570. पश्चसिंहासनेश्वरीमन्त्रः—ससूक्तः. PAÑCASIMHĀSANĒŚVARĪMANTRAH: WITH SŪKFA.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.
Begins on fol. 84a of the MS. described under No. 537.
Complete.
Same as the above.

No. 6571. पश्वाक्षरीमन्त्रः. PAÑCĀKŞARÎMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

This is the well-known pentasyllabic prayer-formula of the Saivas.

Beginning:

अस्य श्रीपद्माक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेवभगवानृषिः, पक्किश्छिन्दः, साम्बसदाशिवो देवता, हीं शक्तिः, साम्बशिवप्रसादासिद्धचर्थे भोग-मोक्षार्थे विनियोगः ।

End:

इति ध्यात्वा ओं हीं हं नं नमश्तित्रवाय ॥

No. 6572. पश्चाक्षरीमन्त्र:.

PAÑCĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 237*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

Same Mantra as the above with slight differences in the preliminary details.

Beginning:

अस्य श्रीपश्वाक्षरीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, मं बीजं, आय शक्तिः, शिव इति कीलकं, मम.

End:

मन्त्रः --- नमरिशवाय । छन्दु ऋषिदेवताषडङ्गन्यासं पूर्ववत् ॥

No. **6573. पञ्चाक्षरीमन्त्र:.** • PAÑCÂKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 90b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same Mantra as the above with a slight difference in the preliminary details.

Beginning:

अस्य श्रीपञ्चाक्षरीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीसदा-शिवो देवता, यं बीजं, आय शक्तिः, शिव इति कीलकं, मम चतुर्वि

End:

मन्त्रः---ओं हीं नमः शिवाय॥

No. 6574. पश्वाक्षरीमन्त्र:.

PAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 279*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6575. पश्चाक्षरीमालामन्त्र:.

PAÑCĀKṢARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 20*a*. of the MS. described under No. 547. Complete.

This Mantra is addressed to Siva; and its repetition is supposed to enable one to get out of all danger.

Beginning:

ओं नमो भगवते नीलकण्ठाय श्वेतशरीराय नागयज्ञोपवीताय प्रच-ण्डायानन्तकालनिर्दहनाय युगान्तकालप्रलयप्रचण्डभयद्वराय . . .

End:

अघोराय अघोररूपाय ज्वल ज्वल अमुकं ग्रस्तय महाबलं कृश कृश हुं फट् स्वाहा । अनेनाष्टोत्तरशतं यो जपति स मन्त्री निर्भयो भवति ॥

Colophon:

पश्वाक्षरमालामन्त्रः सम्पूर्णः ॥

No. 6576. पश्चाङ्गरुद्रन्यासः (महान्यासः).

PAÑCĀNGARUDRANYĀSAH (MAHĀNYĀSAH).

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{5}{8} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 18. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1*a*. The other works herein are Pañcāngarudranyāsa 10*a*. Parjanyahōmavidhi 19*a*. Pakṣatrayōdaśīvrata, 21*a*. Sōmavāravratōdyāpana 34*a*.

Complete.

On details connected with the worship of Rudra, including the Nyāsa or the ceremonial touching of certain parts of the body while religiously repeating certain Mantras in praise of Siva. The concluding stanza describes well the religious efficacy of this mode of Siva worship.

Beginning:

अथातः पञ्चाङ्गरुद्राणां न्यासपूर्वकं जपहोमार्चनाभिषेकविधिं व्या-ख्यास्यामः—

ओं नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।

नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

औं अं कं खं गं घं ङं ओं अं ओं नमो भगवते रुद्राय पूर्वाङ्गरुद्राय नमः ।

End:

दशकत्वोऽभिषित्रन् मधुना दन्ना पयसा सर्पिषाम्ररसेन इक्षुरसेन नालिकेरसलिलेन वा गन्धोदकपुष्पोदकफलोदकेन वा तदमावे शुद्धोदकेन वा आदौ शत्र म इत्येकमनुवाकं नमस्ते रुद्र मन्यव इत्येकादशानुवाकाना-ममाविष्णू सजोषसेत्येकैकमनुवाकं सर्वेषां वारे वारे पुनराराधयेत्प्रत्याराधनं कुर्यात् । पापक्षयार्थी व्याधिविमोचनार्थी

. . इत्याह भगवान् बोधायनः ॥
 एवं यः कुरुते नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
 सर्वान् कामानवामोति शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

No. 6577. पश्चाङ्गरुद्रन्यासः. PAÑCÀNGARUDRANYÁSAH.

Pages, 8. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 124. Incomplete.

Same as the above.

No. 6578. पत्राङ्गरुद्रन्यासः (लघुः).

PAÑCĂŃGARUDRANYĂSAӉ (LAGHUӉ).

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 6576. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अथातः पञ्चाङ्गरुद्राणां न्यासपूर्वकं जपहोमार्चनाभिषेकविधिं व्या-ख्यास्यामः । या तेरुद्रेति शिखायां, अस्मिन्महत्यर्णव इति शिरासि, सह-स्नाणीति ललाटे, हंसइशुचिषदिति अुवोर्मध्ये ।

End:

एवं दश गारसवत्साः स्वर्णरजतताम्रविभूषिताः ऋषभए(भाने)का-दश दद्यात्तदभाव एकां गान्दद्यात्सोऽश्वमेधशतसहस्रफलमामोतीत्याह भग-वान् बोधायनः ॥

> एवं यः कुरुते नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते । सर्वान् कामानवामोति शिवसायुज्यमामुयात् ॥

No. 6579. पद्युगमन्त्रः. PADAYUGAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS described under No. 2848. Complete.

This Mantra relates to the worship of the holy sandals of the Sakta-gurus.

Beginning:

अस्य श्रीपदयुगमन्त्रस्य दत्तात्रेयभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीपदयुगो देवता ; हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम श्री-पदयुगप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

ह स क ल हीं ह स क ह ल हीं प्रकाशपद श्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6580. पद्युगमन्त्र:,

PADAYUGAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 182 of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above with the difference in the end given below :---

ततः पञ्चद्शीमुचार्य ९८ विमर्शपादुकाश्रीपादुकां पूजगामि नमः।

No. 6581. पदयुगमन्त्रः. PADAYUGAMANTRAH

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 40 of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above with the difference in the end noted below :---

ह स क ल हीं ह स क ह ल हीं शुक्लपद श्री । प्रकाशपद श्री . .

No. 6582. परब्रह्मविद्यामन्त्र:.

PARABRAHMAVIDYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 547. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Tripurasundarī, and is supposed to enable one to obtain her favour.

Beginning:

अस्य श्रीपरब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य आनन्दभैरवऋषये नमः, अमृतवि-राट्छन्दसे नमः, श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीदेवतायै नमः, क ए ई ल हीं बीजाय नमः, ह स क ह ल हीं शक्तये नमः, स क ल हीं कीलकाय नमः, श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धद्वर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सौः स क ल हीं हुः करतल . नमः एवं हृद्यादिन्यासः ॥

No. 6583. परमगुरुमन्त्रः. PARAMAGURUMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 2848. Complete.

This Mantra is addressed to the holy sandals worn by the Paramaguru.

According to Brhannīlātantra the person who teaches a Mantra is termed Guru, the Mantra itself is considered Paramaguru, the goddess Šakti is held to be the Parāparaguru, and Īśvara, *i.e.*, Šiva, is considered to be the Paramēṣțhiguru.

Beginning:

अस्य श्रीपरमगुरुमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, श्रीपर-मगुरुर्देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, जपे विनियोगः । End :

ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सो हं हं सरिशवः श्रीपरमगुरुनाथश्रीपा-दुकां पूजयामि ॥

No. 6584. परमगुरुमन्त्र:.

PARAMAGURUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above with the difference in the end noted below.

सो हं हं सश्चित्रवः सो हं स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे परमगुरवे नमः । तन्नामान्ते नाथश्री।

No. 6585. परमगुरुमन्त्र:.

PARAMAGURUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 229b of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

No. 6586. परमेष्ठिगुरुमन्त्रः.

PARAMESTHIGURUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 2296 of the MS. described under No. 124.

This Mantra is addressed to Paramēsthiguru who is Īśvara or Siva himself.

Beginning:

अस्य श्रीपरमेष्ठिगुरुमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमेष्ठिगुरुर्देवता; हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं फीलकं, मम परमेष्ठि गुरु—गः ।

End:

हं सरिशवस्सो हं हं सः स्वात्मारामपरमानन्दपञ्जरविलीनतेजसे परमेष्ठि-गुरवे नमः परमोष्ठिगुरुदिव्य—नमः ॥

No. 6587. परमेष्ठिगुरुमन्त्रः.

PARAMESTHIGURUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 5673 Complete.

Slightly different from the above.

Beginning:

अस्य श्रीपरमेष्ठिगुरुमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीपर-मेष्ठिगुरुर्देवता; हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम श्रीपरमेष्ठि-गुरुप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे परमेष्ठिगुरवे नमः, तन्नामान्ते नाथश्री-परमेष्ठिगुरुनाथश्री ॥

No. 6588. परमेष्ठिगुरुमन्त्रः.

PARAMĚSTHIGURUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 17*a* of the MS. described under No. 2848. Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीपरमेष्ठिगुरुमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्नी छन्दः, परमेष्ठी गुरु-र्देवता ; हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम परमेष्ठिगुरुषसादसिख्यर्थे विनियोगः ।

End:

शिव हं सरिशवस्सो हं हं सः श्रीपरमेष्ठिगुरुनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ॥

No. 6589. परशुराममन्त्र:.

PARAŚURĀMAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Paraśurāma.

Beginning:

ओं रां रामाय नमः इति प्राणायामः. १२ अस्य श्रीपरशुराममन्वस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमात्मा श्रीपरशु-रामो देवता ; परशुरामप्रेरणया परशुरामप्रीत्यर्थं जपे विनियामः । End:

श्रीपरशुरामत्रेरणया परशुरामत्रीत्यर्थे परशुराममन्त्रजपं करिष्ये । ओं रां रामाय नमः ओं —इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6590. परात्रसाद्मन्तः.

PARĂPRASĂDAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 141b of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the goddess Parā or Parāmbā who is the same as Šakti. **Beginning**:

अस्य श्रीपराप्रसादमन्त्रस्य परशम्भु ऋषिः, अव्यक्तगायत्री छन्दः, परमपुरुषपराम्बा देवता ; हूसां बीजं, हूसीं शक्तिः, हूसूं कीलकं, परम-पुरुषपराम्बाप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं ऐं हीं हं सरिशवः हूसौं स्हौं सो हं स्वाहा ॥

No. 6591. पराप्रसादमन्त्र:.

PARÁPRASÃDAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Beigns on fol. 61b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीपरात्रसादमहामन्त्रस्य सदानन्दभैरव ऋषिः, जगती श्री-पराप्रसादरूपिणी देवता ; सं बीजं, ह ह शक्तिः, ओं, कीलकं, श्री परा—गः ।

End:

पुंरूपं वा स्मरेदेवि स्नीरूपं वा विचिन्तयेत् ।

अथवा निष्कलं ध्यायेत् साचिदानन्दलक्षणम् ॥ पत्रपूजा, स्हौः ॥

> No. 6592. परामन्त्र:. РАКА́МАНТКАН.

Pages, 2 Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 166a of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is also addressed to the goddess Para.

Beginning:

अस्य श्रीपरामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमात्मस्वरू-पिणी देवता, सकारो बीजं, औकारः शक्तिः, विसर्गः कीलकं, श्रीपराप्रसादासिद्धार्थे जपे विनियोगः.। End:

अकल्ङ्कशशाङ्काभा व्यक्षा चन्द्रकलावती ।

मुपु(सौम)स्तक(ल)सब्धावो (द्भावा) पातु मां परमा कला॥ मूलमन्त्रः—सौः ॥

 No. 6593.
 पराम्बामन्त्र:.

 PARÁMBĂMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 22*h* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above. Parāmbā is the same as Parā.

Beginning:

अस्य श्रीपराम्बामन्त्रस्य चिद्रूपानन्दर्भेरव ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीपराम्बा देवता, सं बीजं, सैं शक्तिः, सः कीलकं, मम श्री-पराम्बाप्रसादासिद्यर्थे विनियोगः ।

End:

सौः श्रीपराम्बाश्रीः ॥

No. 6594 पराम्बामन्त्र:.

PARÂMBÂMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol, 233b of the MS. described under No. 124.

Complete.

Same as the above.

No. 6595. पराशाम्भवीमन्त्र:. PARĂŚĀMBHAVĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 23*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is addressed to Parāšāmbhavī as a manifestation of Šiva's Šakti.

Beginning:

अस्य श्रीपराशाम्भवीमन्त्रस्य चिदानन्दभैरव ऋषिः, चिन्मयी छन्दः, श्रीपराशम्भवी देवता ; हीं बीजं, श्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, मम श्रीपराशाम्भवीप्रसादसिच्चर्थे विनियोगः ।

End:

एँ हीं श्रीं हरूस्फ्रें हीं सौः श्रीं हां पराशम्भवीश्री । अनुग्रहात्मिका ज्योतिर्मयी विद्यास्वरूपिणी । ऊर्ध्वान्नायेश्वरी ध्येया मूर्तिसूक्तस्वरूपिणी ॥

इत्यूर्ध्वाम्नायदेवताश्च विद्युद्धिवियचके च पूजयेत् ॥

 No. 6596. पराशाम्भवीमन्त्र:.

 PARĀŚĀMBHAVĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 2336 of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीपराशाम्भवीमन्त्रस्य चिद्रूपानन्दभैरव ऋषिः, जगती छन्दः, परा शाम्भवी देवता, ह्रीं श्रीं सौः बीजं, ऐं ह्रीं श्रीं शक्तिः, ह्स्-खें^{फ्र} है्साः कीलकं, परा शाम्भवी प्र—गः ।

End:

द्वितीयः हम्ग्व्रें वाचि सौः अपरा शाम्भव्यम्बादिव्यश्री--मः । ऊर्ध्वान्नायसमयविद्येश्वरीचण्डभैरवाम्बादिव्यश्री--मः ॥

No. 6597. परासम्पुटितमातृकान्यासः. PARĀSAMPUŢITAMĀTŖKĀNYĀSAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 1936 of the MS. described under No. 124. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating the series of Mantra-formulas formed by introducing the successive letters of the alphabet between the letters denoting the goddess Parāmbā, who is the same as Śakti.

Beginning:

अथ परासम्पुटितमातृकान्यासः----

अस्य श्रीपरासम्पुटितमातृकान्यासस्य शिवब्रह्मवसिष्ठा ऋषयः, गायत्रीसुल्ठा(व्युष्णिग)नुष्टुप् छन्दांसि, श्रीपराम्बा देवता ममेष्टदेवता । सौः अं कर, असौः इत्यादिषडङ्गं विधाय ध्यायेत् ।

End:

ओं हीं सौः अं नमः सौः हीं ओं इत्यादिक्षान्तं न्यसेत् ॥ Colophon :

इति परासम्पुटितमातृकान्यासः ॥

No. 6598. परासंपुार्टतमातृकामन्त्रः.

PARÁSAMPUŢITAMĀTŖKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 140a of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

405-A

4928

Beginning:

अस्य श्रीपरासंपुटितमातृकामन्त्रस्य . . . हल्रो बी जानि, स्वराइशक्तयः, पास्यमानश्रीवि द्याङ्कत्वेन मातृकासरस्वतीमन्त्रस्य मातृकान्यासे विनियोगः । End:

एं हीं श्रीं सौः अं सौः अन्नमः इति क्षकारपर्यन्तम् ॥

No. 6599. परो मात्रयेतिमन्त्रः. PAROMATRAYETIMANTRAII.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consists of 14 Vēdie Rks forming the 99th and 100th Sūktas of the 7th Mandala of the Rgvēda and is intended to propitate Vișnu.

Beginning:

गुरुनमस्कारः — आं विष्णवे नम इति प्राणायामः १२. पूर्ण-ज्ञानेत्यादिन्यासः । अस्य श्रीपरोमात्रयेति चतुर्दशर्चसूक्तमहामन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, परमात्मा श्रीविष्णुर्देवता ; श्रीविष्णुप्रेरणया विष्णुप्री त्यर्थे चतुर्दशर्चपरोमात्रयेतिसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः । End:

वर्द्धन्तु त्वा सुष्टुतयों गिरो में यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । इत्यन्तं जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6600. पाणिमन्त्र:. PĀNIMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{5}{8} \times 1\frac{3}{8}$ inches. Pages, 4. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 17*b*. The other works herein are Agastyāstaka 1*a*. Vīrabhadrāstaka 2*b* and 29*a*, Vasisthāstaka 4*a*, Nandikēšvarā-

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

staka 6a, Puspadhyaya 10a, Gautamāstaka 11a, Visuvastaka 13a, Ardhanārīšvarāstaka 15b, Nilakauthastötra 21a, Lingāstaka 25a, Krsnāstaka 26a, Bānāstaka 27a, Mahādēvāstaka 28a, Nyāsāstaka 30, Šivāstöttarašatanāmāvali 31a, Basavastötra 32a, Šivanāmāvali 34a, Vīrašaivapūjāsankalpa 38a, Šivastötra 40, Gurubhaktinidhi (in Telugu) 43a, Gurudhyāna 44a, Kālabhairavāstaka 45a, Rudrakavaca 53a, Anāmayastötra 57a, Rāmānusmiti 60a, Mārkaņdēyastuti 62b.

Complete.

This Mantra is addressed to Siva and is probably repeated, when the Linga, which is generally worn on the neck of the Lingāyats, is taken out and placed on the palm of the left hand for purposes of worship.

Beginning:

पीठं यस्या(त्सा) धरित्री जलधरक(म)ळकं(को) लिङ्गमाकाशमूर्तिम्(:) नक्षत्रं पुष्पमाल्यं यहगणकुसुमं नेत्रचन्द्रार्भवहिम् ।

कुक्षिः सप्तसमुद्रं भुजागरिशिखरं सप्तपाताळपादं

वेदं(दा)वक्त्रं षडङ्गं(ङ्गा) दशदिशवसनं दिव्यलिङ्गं नमामि ॥

निधनाय नमः । निधनपतये नमः । ऊर्ध्वाय नमः । ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः । हिरण्याय नमः ।

End:

ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥

No. 6601. पातालगरुडमन्त्र:. PATALAGARUDAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on tol. 166 of the MS. described under No. 6157. Complete.

This Mantra is addressed to Garuda, who, according to tradition, is said to have visited the subterranean world to destroy the scrpents residing therein.

4930

Beginning:

ओं नमो भगवते पातालगरुडाय पवनाशनाय । End:

क्षिप क्षिप हुं फट् स्वाहां ॥

No. 6602. पादुकाञ्जनम्. PĀDUKĀÑJANAM.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 305b of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra, if repeated after observing certain religious formalities, is believed to enable one to find out hidden treasures to go at once to intended places, etc.

Beginning and End:

अगस्त्यवृक्षजां कुर्यात् पादुकां निधिदेशिकः ।

पादुकाजनयोगेन सिद्धयोगा भवन्ति हि ॥

मन्त्रः—ओन्नमो भगवते रुद्राय नम उड्डामरेश्वराय हसलसेलय-मे ^सलासमेताळिनी स्वाहा ।

> No. 6603. पादुकामन्त्र:. PĀDUKĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 13*a* of the MS. described under No. 547. Complete.

This Mantra relates to the worship of the sandals of Śrividyānandanātha and Amṛtavallyambā who are considered to be Śākta-gurus.

Beginning:

पादुकामन्त्रः—ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लैं हसखफें हस-क्षमलवरयूं हसक्षमलवरयीं हसौं हसौः श्रीविद्यानन्दनाथामृतवल्लचम्बाश्री-पादुकां पूजयामि नमः ।

4931

End:

एँ क्रीं सौः क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं सर्वतत्त्वं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा ॥

Colophon:

तत्त्वत्रयशोधनं समाप्तम् ॥

No. 6604. पारिजातापहारकगोपालमन्त्रः.

PĀRIJĀTĀ PAHĀRAKAGÕ PĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

• Begins on fol. 51*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

J'his Mantra is addressed to Kṛṣṇa, conceived as the cowherd who forcibly brought from the Indralöka to the earth the celestial Pārijāta tree.

Beginning:

अस्य श्रीपारिजातापहारकगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीपारिजातापहारकगोपालो देवता; आं बीजं, हीं शक्तिः, हों कीलकं, पारिजातापहारकगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः--आं हीं कों कृष्णाय रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 6605. पार्थिवेश्वरसौभाग्यचिन्तामणिमहाविद्यामन्त्रः. PÄRTHIVESVARASAUBHÄGYACINTÄMAŅI-MAHĀVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 51*a* of the MS. described under No. 673. Complete.

This Mantra is addressed to Siva associated with Sakti and is intended to enable one to accomplish one's desires. The name of this Mantra means that'it is a magical gem capable of conferring the bliss of supreme sovereignty on kings.

Beginning:

4932

अस्य श्रीपार्थिवेश्वरसौभाग्यचिन्तामाणिविद्यामहामन्त्रस्य निम्रहानु-महकर्ता ब्रह्मानन्दमैरव ऋषिः शिरसि, ओं अव्यक्तगायत्री छन्दः मुखे-ओं पार्थिवेश्वरसौभाग्यविद्याचिन्तामणिकामदुघा देवता हृदये; क ए, ईलहीं बीजं गुल्फे, ओं हीं क्लीं हसकहलहीं शक्तिः पादयोः, सौः सक-लहीं कीलकं सर्वाङ्गे, सर्वाभीष्टसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

एंं ह्रीं श्रीं ओं ह्रां ह्रीं ज़ूं सः ऐं क ए ई ल ह्रीं क्रीं ह स क ह-ल ह्रीं स क ल हीं ओं नमइिशवाय प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा ॥

No. 6606. पार्वतीप शाक्षरमन्त्रः.

PĀRVATĪPAÑCĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 26b of the MS. described under No. 5786,

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Pārvatī, and consists of 5 syllables. The syllable Öm is not to be taken as forming part of the Mantra proper.

Beginning :

गुरुनमस्कारः । ओं शिवाये नम इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीपार्वतीपश्वाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, पार्वती देवता; पार्वतीप्रेरणया पार्वतीशीत्यर्थे पार्वतीपश्वाक्षरमहामन्त्रजपे विनिचोगः ।

End:

पार्वतीप्रेरणया पार्वतीपीत्यर्थं पार्वतीप बाक्षरमहामन्वजपङ्कारिष्ये — ओं शिवाये नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6607. पार्वतीमन्त्रः. PARVATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 135a of the MS: described under No. 537.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Parvati.

Beginning:

अस्य श्रीपार्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायली छन्दः, पार्वती देवता, ह्रां बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीगौरि इाति कीलकं, श्रीपार्वतीप्री-त्यर्थे जेपे विनियोगः ।

End:

बालार्कसाहस्रसमानकान्ति रक्ताम्बरामिक्षुधनुर्धरां ताम् । पाशाङ्कुशौ पुष्पशरान् दधानां नमामि देवीमभयेष्ठदात्रीम् ॥ हीं गौरि रुद्रदयिते योगीश्वरि हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6608. पाशुपतमन्त्र:. PĀŚUPATAMANTBAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1146 of the MS. described under No. 119. Complete.

This Mantra is addressed to the Päsupatästra ; and its repetition is believed to enable one to destroy one's enemies and evil spirits and to counteract the evil effects of hostile Mantras and Tantras. Beginning :

अस्य श्रीपाशुपतमन्तस्य अघोर ऋषिः, तिष्ठुप् छन्दः, श्रीसदा-शिवो देवता; हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम सर्व-शत्रुक्षयार्थे विनियोगः ।

End:

आं हीं हुं नमो महापाशुपतास्त्राय सर्वदुष्टान्तकाय सर्वशत्रुक्ष याय सर्वभूतप्रेतपिशाचोचाटनाय हन हन दह दह परमन्त्रयन्त्रतन्त्रान् छिन्धि छिन्धि हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6609. पाशुपतमन्त्र:. PĀŚUPATAMANTRAӉ.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 97b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

न्यासध्यानं पूर्ववत् । ओं नमो भगवते पाशुपतास्त्राय अतुलबल-वीर्यपराक्रमाय त्रिपचनस्त्रपाय नानाप्रहरणोद्योतकारणाय ।

End:

उन्मूलयोन्मूलय फट्, त्रासय त्रासय फट्, सजीवय सजीवय फट् द्रावय द्रावय फट्, सर्वदुरितं नाशाय नाशाय फट्॥ Colophon:

इति पाशुपतास्त्रं सम्पूर्णम् ॥

No: 6610. पाद्यपतास्त्रमन्त्रः. PĀŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 284*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीपाशुपतास्त्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, पशुपति-महारुद्रो देवता; क्लीं बीजं, हुं.शक्तिः, फट् कीलकम्, पाशुपतास्त्र-रुद्रप्रीत्यर्थे विनियोगः।

End:

मन्त्रः — ओं क्लीं पशु पशु हुं फट् फट्। लक्षं पुनश्चरणं, वृता-पूपपायसैर्दशांशहोमः, गुडोदकेन दशांशं तर्पणम् ।।

Colophon:

इति पाशुपतम्॥

No. 6611. पाशुपतास्त्रमन्त्रः.

PĀŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 2486 of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6612. पाद्युपतास्त्रमन्त्रः.

PĀŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 926 of the MS. described under No. 5566. Incomplete.

Same as the above.

No. 6613. पाशुपतास्त्रमन्त्रः. PĀŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 241*a* of the MS. described under No. 581. Incomplete.

Same as the above.

No. 6614. पाद्यपतास्त्रमन्त्रः. PÄŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 83a of the MS. described under No. 21. Complete.

The repetition of this Mantra is understood to enable one to accomplish one's desires, to ward off all kinds of calamities and to find out hidden treasures.

Beginning:

अस्य श्रीपाग्रुपतास्त्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, प्रमथो देवता, त्रिशूलिनी छन्दः, पार्वती देवता, मम सकलकार्यसिद्धचर्थे समस्तपीडापरिहारार्थे निधिनिक्षेपसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

सहस्रकोटिचकरूपाय अनेकशस्त्रप्रतिघट्टनाय क्रीं हीं फट् स्वाहा ॥

No. 6615. पाद्यपतास्त्रमन्त्रः.

PĀŚUPATĀSTRAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 235.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to be efficacious in removing all kinds of troubles and in the destruction of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीपाशुपतास्त्रमन्त्रस्य कालाग्निरुद्रभगवानृषिः, त्रिष्टुग (ब) नु-ष्टुप् छन्दः, सर्वसंहाररुद्रो देवता; ओं पशुं बीजं, ओं हुं शक्तिः, फणी कोल्ह्फं, मम श्रीपाशुपतदिव्यास्त्रप्रसादासिद्धचर्थे सर्वसंहरणार्थे सर्वारिष्ट-सर्वदुष्टप्रदुष्टकत्रिमोपद्रवविमोचनार्थे विनियोगः। End:

ओं श्रीं पशु हुं फट् ओं महापाशुपतास्त्राय हुं फट् नमः । ओं नमेा रुद्रेभ्यो ये प्राथव्यां . . . जम्भे दधामि । अब ब्रह्म द्विषो

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

जहि । मम शत्रुर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भूर्भुवस्सुवस्स्वाहा। ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । . . . स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

No. 6616. पारापतास्त्रमालामन्तः. PÄŚUPATĀSTRAMĀLAMANTRAH

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 18*a* of the MS. described under No. 17. Complete.

This Mantra is also addressed to the Pāśupatāstra, and its repetition is held to be conducive to the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीपाशुपतास्त्रपयोगमालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीपार्श्वनाथधरणीन्द्रपद्मावती देवता; ओं हीं बीजं, ओं रं शक्तिः, ओं हुं कीलकं, मम धर्मकाममोक्षार्थं सर्वकार्याणि(णाम्) असाध्यसाधनार्थं विनियोगः।

End:

श्री धरणीन्द्रपद्मावतीसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय नमः । इति म्ल-(माला)मन्द्रः ॥ (अथ मूलमन्त्रः) ओं आं ऊं मां हूां अस्त्रराजाय स्वाहा ॥

No. 6617. पिण्डगोपालमन्त्रः. PINDAGÓPÁLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 93b of the MS. described under No. 5566. Complete.

This Mantra is addressed to Krsna. It consists of the single syllable $\overline{\mathfrak{T}}_{\overline{\mathfrak{S}}}$. It is called Pindagōpālamantra because that syllable is supposed to contain in its brief campass the collected and concentrated essence of the various Mantras relating to Krsna.

Beginning:

अस्य पिण्डगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायती छन्दः, श्रीकृष्णः परमात्मा देवता; गं बीजं, औं शक्तिः, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे विनियोगः । End :

ध्यानम् ----

कद्म्बमूले कीडन्तं बृन्दावननिवासिनम्। पद्मोपरि स्थितं देवं वेणुगायं तमच्युतम्॥

मयूरपिञ्छसंयुक्तं सर्वाभरणभूषितम् । गोपीभिर्गोपगोवृन्दैस्सेवितं कृष्णमर्चयेत्॥

मन्त्रः----

ग्लौं। लक्षचतुष्ठ(य)जपपुरश्ररणम् । आज्येन दशांशहोमः ॥

No. 6618. पिण्डगोपालमन्त्रः.

PINDAGOPALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 242b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6619. पिण्डगोपालमन्त्रः. PINDAGÖPÄLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 285b of the MS. described under No. 5477. Complete

Same as the above.

No. 6620. पुण्डरीकाक्षमन्त्रः.

PUŅŅARĪKĀKṢAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 309b of the MS. described under No. 2373. Complete.

This Mantra is addressed to Vișnu and is believed to have the power to cure all sorts of diseases affecting the eye.

Beginning:

अस्य श्री पुण्डरीकाक्षमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीपुण्ड-रीकाक्षो देवता, क्लीं बीजं, श्रीं शक्तिः, श्रीपुण्डरीकाक्षप्रसादसिद्धचर्थे सकल्लेनेत्रबाधानिवृत्त्यर्थे विनियोगः । श्रामित्यादिन्यासः । End:

मन्त्रः---क्कीं श्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः । लक्षं जपः इति ॥

No. 6621. पुत्रकामेष्टिसौभरिमन्त्रः.

PUTRAKĀMĒSŢISAUBHARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92h of the MS. described under No. 5566. Complete.

The proper repetition of this Mantra is understood to enable one to obtain good children. It is stated in the Śrībhāgavata that a certain ascetic named Saubhavi begot many children by the repetition of this Mantra.

Beginning:

अस्य श्रीपुत्रकामेष्टिसौभरिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पुत्रकामेष्टिब्रह्मा देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम सुपुत्रावाप्त्यर्थे विनियोगः.

End :

मन्त्रः----

ओन्नमो अगवते बह्मणे वेधसे अष्टौ मे पुत्रा जायन्तामक्षीणरेतसे प्रजापतये स्वाहा॥ पुनश्रयी ४४०४। दशांशहोमतर्पणानि॥

No. 6622. पुत्रकामेष्टिसौभरिमन्त्रः.

PUTRAKAMESTISAUBHARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 2406 of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6623. पुत्रकामेष्टिसौभरिमन्त्रः.

PUTRAKĀMĒSTISAUBHARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 283b of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6624. पुत्रप्रसादगौरीमन्त्रः.

PUTRAPRASĀDAGAURĪMANTRAH..

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 426 of the MS. described under No. 235. Complete.

This Mantra is held to be efficacious in enabling one to obtain children, and is addressed to the goddess Pārvatī.

Beginning:

अस्य श्रीपुत्र प्रसादगौरीमन्त्रस्य कैलासयात्राप्रतिनिवृत्तश्रीकृष्ण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, कुमारहस्तपुत्रगौरी देवता; हीं बीजं, हीं शाक्तेः, श्रीं कीलकं, मम पुत्रलामार्थे जपे विनियोगः।

End:

ओं ऌं. ॡं. ब्रह्म हीं श्रीं कीं श्रीं गौर्ये स्वाहा। लक्षजपः । क्षी-रान्नहोमः । बाह्मणभोजनम् ॥

No. 6625. पुरन्दरपञ्चमुखहनुमन्मन्त्रः.

PURANDARAPAÑCAMUKHAHANUMANMANTRAH. Pages, 5. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 316b of the MS. described under No. 5477. Complete, This Mantra is addressed to Hanumat who is conceived here as the destroyer of Lankā and as having a big face; and its repetition is believed to secure protection to one by driving off thieves, oruel animals and evil spirits and by preventing the dangers that may possibly come from the various quarters.

Beginning:

अस्य श्रीपुरन्दरपश्चमुखहनुमन्मन्त्रस्य शौनक ऋषिः, अतिजगती छन्दः, मारुतिर्देवता, मारुतात्मज इति बीजं, अज्जनास् नुरिति शक्तिः, वायुपुत्र इति कील्ठकं, मम इष्टार्थे विनियोगः. End:

चोरव्याघ्रपिशाचोरगश्रक्षराक्षसशाकिनीडाकिनीवेतालानुचाटयः उचा-टय मां रक्ष रक्ष अन्तरिक्षदिशं बन्धय बन्धय स्वाहा ॥

> तारं हरिपदचैव मर्कटी मर्कटाय च । स्वाहान्तको मनुरयं द्वादशार्णस्सुसिद्धिदः ॥ वर्णस्य दशसाहम्रं जपेन्मन्त्रं यथाकमम् ॥

> > No. 6626. पुरश्चर्यासङ्कल्पः. PURAŚCARYĀSANKALPAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 40b of the MS. described under No. 5864. Complete.

On certain essential preliminary details of ceremonial to be observed before the commencement of the repetition of Mantras in general.

Beginning:

एवं . . तिथो . . अस्माकं सहकुदुम्बानां . . पुरुषार्भ-फलासिद्धचर्थ.

End:

तन्मन्त्रोपासनाङ्गद्वारा पुरश्चरणमहङ्करिष्ये — इति सड्डरप्य नित्य-विधिं यथाशक्तिजपं तन्मत्रोपासनाडुद्दोमं करिष्ये ॥

जपतद्दशांशं होमः। होमदशांशं तर्पणम् । तर्पणतद्दशांशं मार्जनम् । तद्दशांशं बाह्मणभोजनम् ॥

> No. 6627. पुरुषसूक्तमन्त्रः. PURUSASÜKTAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 76 of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is a well-known Vedic hymn in praise of Purusa understood to be Nārāyaņa.

Beginning:

अथ पुरुषसूक्तमन्त्रः—

ओमिति प्राणायामः १२

अस्य श्रीपुरुषसूक्तमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अन्त्या त्रिष्टुप् छन्दः, पुरुषनामकश्रीनारायणो देवता ; श्रीनारायणत्रेरणया श्री-नारायणप्रीत्यर्थे पुरुषसूक्तमन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

पुरुषनामकश्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया श्रीलक्ष्मीनारायणप्रत्यिर्थं पुरुष-सूक्तमन्त्रजपङ्करिष्ये ।

सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यारभ्य यत्र पूर्वे साध्यास्सन्ति देवाः इत्यन्तं -जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6628. पुळिन्दिनीमन्त्रः.

PULINDINĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 2886. Complete.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

This Mantra is addressed to Pārvatī; and it is believed that, if a person goes to sleep after having duly repeated this Mantra 108 times, the goddess Pārvatī will reveal to him in his dreams all that he desires to know. The Puranic story involved in the name Pulindinī is that Šiva and Pārvatī assumed the disguise of mountaineers to test the faith of Arjuna when he was undergoing penance for obtaining the Päšupatāstra.

Beginning:

पुळिन्दिन्याः शङ्करः, जगती, पुळिन्दिनी, रं बीजं, स्वाहा शक्तिः, पु---गः।

End:

संव पूर्ववत् ।

कार्याकार्यविवेकार्थं रात्रावष्टोत्तरं शतम् । जन्ना शयीत तत्तस्य स्वमे वद्ति साम्बिका ॥

No. 6629. पूतनास्तनपातृगोपालमन्त्रः.

PŪTANĀSTANAPĀTŖĢOPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 44*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa, conceived as a young child suckling Pūtanā. Kamsa sent Pūtanā to give poisoned milk to Kṛṣṇa; and the divine child, Kṛṣṇa, knowing this evil design, sucked her life out of her.

Beginning:

अस्य श्रीपूतनास्तनपातृगेापालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, पूतनास्तनपातृगोपालो देवता, ह्वां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं, श्रीपूतनास्तनपातृगोपालग्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हीं कृष्णाय हुं फट् स्वाहा । इति मनुः ।। 406-A

No. 6630. पूर्णगिरिपीठमन्त्रः.

PURNAGIRIPITHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 18*a* of the MS. described under No. 2848. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Nārāyaņī who is the presiding goddess of the Pūrņagiripīțha and is conceived to be a manifestation of Śakti.

Beginning:

अस्य श्रीपूर्णगिरिपीठमहामन्त्रस्य विष्णुः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीपूर्णगिरिपीठशक्तिनारायणी देवता; पें बीजं, श्रीं शक्तिः, हीं कीळकं, मम श्रीपूर्णगिरिपीठशक्तिनारायणीत्रसादसिच्चार्थे विनियोगः । End:

एँ हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीपूर्णगिरिपीठशक्तिनारायणीश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6631. पूर्णगिरिपीठमन्त्रः.

LÚRNAGIRIPĪTHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above.

No. 6632. पूर्णगिरिपीठमन्त्रः.

PURNAGIRIPITHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 29b of the MS. described under No. 124. Complete.

Same as the above.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 673,

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering at the same time the names of the several divine seats of the goddess Sakti along with the appropriate letters of the alphabet denoting those seats.

Beginning:

अथ पीठन्यासः---

धरापीठानि पश्चाशत्रिपुराधिष्ठितानि वै । स्वामी तीर्थान्यसंसिद्धौ पूजा न फलहेतवे(?) ॥ सितासितारुणश्यामहरिपीतान्यनुकमात् । पुनः पुनः क्रमादेवि पश्चाशत्पीठसश्चयः ॥ पीठानि संस्मरेद्विद्वान् सर्वमातृकया सह ।

इति ध्यात्वा न्यसेत् । ओं अं काम रूपपीठाय नमः । ओं भौ वाराणसीपीठाय नमः ।

End:

सं महालक्ष्मीपीठाय नमः । हं महोड्याणपीठाय नमः । क्षं छत्र-पीठाय नमः । इति बहिर्मातृकास्थानेषु न्यसेत् । ऐं क्ली सौः, सौः क्ली ऐं । गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीदेवता[यै]श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

Colophon:

इति पूर्वषोढान्यासः ॥

No. 6634. प्रचण्डभेरवदिग्बन्धनम्.

PRACANDABHAIRAVADIGBANDHANAM.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 214*a* of the MS. described under No. 5661. Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava, and is intended to secure protection to the supplicant from dangers arising from kings, thieves, fire, serpents, wild animals and evil spirits, and also from dangers proceeding from the various quarters.

Beginning:

अस्य श्रीप्रचण्डभैरवादिग्वन्धनमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, महाभैरवो देवता; क्षां बीजं, प्रचण्डभैरवेति शक्तिः, क्रों की लकं, मम शरीररक्षणार्थे विनियोगः ।

End :

महावज्रकवचास्त्राय राजचोरामिसपीसिंहव्याघ्रभल्द्धकभूतपेतपिशाच बह्मराक्षसादिसर्वोपद्रवान् नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा ॥ Colophon:

(प्रचण्ड)भैरवदिग्बन्धनं सम्पूर्णम् ॥

No. 6635. प्रणवपश्वाक्षरोमंन्त्र:.

PRANAVAPAÑCÁKSARÍMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 14*a* of the MS. described under No. 3862. Complete.

This Mantra is intended to please Šiva and Šakti, and consists of 5 syllables. It is called Pranavapaňcākṣarī, because the syllable Om (Pranava) which occurs twice here forms part of the Mantra, while in the ordinary Pañcākṣarī-mantra Ôm is not to be taken as forming part of the Mantra.

Beginning:

अस्य श्रीप्रणवपश्वाक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, साम्बसदाशिवो देवता ; ओं बीजं, नं शक्तिः, साम्बसदाशिवायेति कीलकं, गुरुसाम्बसदाशिषप्रीत्यर्थे जेपे विनियोगः । End :

ओं क्रों क्ष्मीं क्लीं ओं नमरिशवाय । रूं प्रश्विवीतत्त्वात्मने गन्धं स । वं वायुतत्त्वात्मने पुष्पं स । अं अमृततत्त्वात्मने अमृतनैवेद्यं स मर्पयामि । सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि । यस्य स्मृत्या च ॥ साम्बशिवस्मुप्रीतो बरदो भवतु ॥

No. 6636. प्रणवपश्वाक्षरीमन्त्रः.

PRANAVAPAÑCĂKȘA BÎMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 217. Complete.

Similar to the above.

The Mantra proper is not given in this manuscript.

Beginning:

अस्य श्रीप्रणवपश्वाक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीकालाग्निरुद्रो देवता, प्रणवपश्वाक्षरीजपे विनियोगः ।

End:

भक्तित्र मुक्तिमपि भक्तजनाय दातुं शक्तं विविक्तमघसङ्घविघातदक्षम् । पञ्चवक्त्रस्य यः श्लोकपञ्चकं नियतः पठेत् । प्रभाते पठते भक्त्या स भक्तः प्रमथो भवेत् ॥

> No. 6637. সणवमन्त्रः. PBAŅAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consists of the syllable eff, and is intended to propitiate Laksminārāyaņa.

Beginning:

अथ प्रणवमन्त्रः----

ओमिति प्राणायानः १२. .

अंस्य श्रीत्रणवमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता; श्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया लक्ष्मी-नारायणप्रीत्यर्थे प्रणवमन्त्रजप विनियोगः । End:

श्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया लक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे यथाशक्ति नियमेन प्रणवमन्त्रजपद्करिष्ये । ओं इति जपः, पुनः प्राणायामः, उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6638. प्रतापसुन्द्रीमन्त्रः.

PRATĀPASUNDARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 302b of the MS. described under No. 5477. Complete.

The administration of a certain drug accompanied by the due repetition of this Mantra is believed to have the power to make persons become favourably disposed towards one.

Beginning:

अन्दिसन्दिमोहिनि प्रतापसुन्दरि त्रैरूपिणि हीं स्वाहा । दश्रलक्षं पुनश्चरणम् ।

End:

एतेन मन्त्रेण अष्टादशवारं मन्त्रयित्वा, क्षीरेण मिश्रं कृत्वा, पाय-यित्वा, मरणान्तिकं वश्यं भवति । अनपायिन्यास्म्नियाः न देयम् । इति ॥

No. 6639. प्रतापहनूमन्मन्त्रः.

PRATÁPAHANŪMANMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 62*a* of the MS. described under No. 5660. Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat, and is intended to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीप्रतापहनूमन्महामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः; अनुष्टुप् छन्दः, श्री-प्रतापहनूमान् देवता ; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं ह्रीं ह्रीं कीलकं, मम मानसाभीष्टसिद्धचर्थे प्रतापहनूमत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मूलमन्त्रः । सों रामदूताय स्वाहा ॥

No. 6640. त्रतापहूनूसन्मालामन्त्र:. PRATĀPAHANŪMAŇMALĀMANTRAH.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 58*a* of the MS. described under No. 5660. Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat, and its proper repetition is believed to enable one to destroy one's enemies, to remove fears arising from kings and thieves, and to counteract the evil effects of hostile Mantras, Tantras, etc.

Beginning:

भस्य श्रीप्रतापहनुमदष्टाक्षरीमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीआझनेयो देवता ; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं श्री आज्ज-नेयप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

मूलमन्त्रः —

End:

राजचोरभयं प्रशमय प्रशमय परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्राञ्च्छेदय च्छे-दय भेदय भेदय स्वमन्त्रस्वयन्त्रस्वतन्त्रसर्वविद्याः प्रकटय प्रकटय स्वा-रिष्टशमनाय सर्वशनुसंहरणाय परयन्त्रपरमन्त्रपरतन्त्राणि नाशय नाशय असाध्यसाधकाय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति प्रतापहनुमन्मालामन्त्रः समाप्तः ॥

No. 6641. त्रतिकियाशूलिनीदिग्बन्धनमालामन्त्रः. PRATIKRIYÄŚŪLINĪDIGBANDHANAMÄLA-MANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 96 of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is addressed to Durgā and is believed to have the power to safeguard the supplicant from the dangers coming from the various quarters. She is called Pratikriyāšūlinī because she has the Šūla in her hand and counteracts therewith the evil effects of the enemies' hostility.

Beginning:

अस्य श्रीाप्रतिक्रियाशूलिनीदिग्बन्धनमालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गाय. त्री छन्दः, दुर्गाम्बा देवता; दुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम दिग्बन्धनार्थे जपे विनियोगः।

End:

ओं नमो भगवति उन्मत्तभैरवसहिते वाराहीश्वरि वरुणदिशं बन्ध बन्ध मां रक्ष रक्ष सर्वग्रहोच्चाटनं कुरु कुरु ओं लं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

No. 6642 प्रतिकियाशूलिनीदुर्गाविद्यामन्तः.

PRATIKRIYÁŚŪLINĪDURGĂVIDYĂMANTRAH. Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Durgā, and it is believed to have the power to counteract the harm caused by evil spirits.

Beginning:

अस्य श्रीत्रतिकियाशूलिनीदुर्गाविद्यामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः; गायत्री छन्दः, प्रतिक्रियाशूलिनीदुर्गाम्बा देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कोलकं, मम प्रतिक्रियाशूलिनीदुर्गाम्बाप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

End:

पत्रपूजां कुर्यात् । अथ मनुः---

स्वाहा ज्वल ज्वल दुष्टग्रहरालिनि हुं फट् ॥

No. 6643. प्रतिकियाशूलिनीमन्त्रः. PRATIKRIYASÜLINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

प्रतिकियाशूलिनीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, प्रति-क्रियाशूलिनी देवता ; हुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रतिक्रियाशूलिनीप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

हैं सें हैं अरिदुरितमाचनरूपेण ज्वल ज्वल प्रतिक्रिया ॥

No. 6644. प्रतिकियाश्र्लिनीमन्त्रः. PRATIKRIYÁŚŪLINIMANTRAH.

Page, 1 Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17*a* of the M.S. described under No. 5832. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीप्रतिकियामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीप्रति-कियाश्चलिनी देवता ; द्वां बीजं हीं, शक्तिः, द्वं कीलकं, मम प्रतिकिया-श्चलिनीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

4951-

End:

मनुः—

ओं दुं हीं नमो ज्वल ज्वल शूलिंनि दुष्टमह हुं फट् स्वाहा । इति यथाशक्ति जपं कुर्यात् । ततः पुनर्न्यासादिकं कुर्यात् ।।

No. 6645. प्रत्यङ्गिराकवचः. PRATYANGIRĀKAVACAH.

Pages, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 132*a* of the MS described under No. 1039. Complete as found in the Śrīmahālakṣmītantra.

This Mantra is addressed to the goddess Pratyangirā, and is intended to secure protection from all dangers.

Beginning:

देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणानिधे । प्रत्यङ्गिरायाः कवचमृङ्मन्त्रस्य स्वरूपिणी ॥

श्रीशिव उवाच----

श्रृणु कल्याणि वक्ष्यामि कवचं शक्षुनिम्रहम् । परप्रेषितकर्मादितन्त्रशल्यादिभक्षणम् ॥

याक्करूपयन्ती प्रदिशं रक्षेत्काली त्वथर्वणी । रक्षेत्कण्ठवत्य(मथ)ग्नेयी सदा मां सिंहवाहिनी ॥

End:

शिष्याय भक्तियुक्ताय वक्तव्या नान्यमे(थै) हि ।

निकुम्भिला(त्वि)न्द्रजिता कृतं(ता) जयविवृद्धये ॥ Colophon:

इति श्रीमहालक्ष्मीतन्त्रे आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षासिद्धिप्रदे उमाम-हेश्वरसंवादे प्रत्याङ्गराकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6646. प्रत्यङ्गिराकवचः. PRATYANGIRAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 5858. Complete as found in the Atharvanamula. Similar to the above.

Beginning:

देव्युवाच—-पूर्वतः पातु रूष्णाङ्गी आग्नेग्यामग्निलोचना । याम्ये तु कृष्ण(व)स्नाढचा नैर्ऋत्यां सिंहवाहनी ॥

End:

सर्वशक्तिसमन्विते प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रद्दी भयेभ्यो हुं फट् स्वाहा ॥

एतैर्मन्त्रविधेर्युक्तं कवचं सर्वकामदम्।

कवचन्देवतापूज्यं कवचं भयनाशनम् ॥

अष्टकष्टमहारागान् कवचश्वारु नइयति (नाशयेत्) ।

कवचभै(स्यै)व योगेन नाना रोगं (गो)विनइयति ॥

Colophon :

इत्यथर्वणमूले प्रत्यङ्गिराकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6647. प्रत्यङ्गिरादिग्बन्धनम्. PRATYANGIRADIGBANDHANAM.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5852.

Complete.

This Mantra is also addressed to the goddess Pratyangira, and is supposed to have the power to enable one to drive off evil spirits and to secure protection from dangers coming from the various quarters.

Beginning:

एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ . . (ए)तस्या[या]ः शरीरे वर्तमानवर्तिष्यमाणसमस्तभूतत्रेतपिशाचाचोटनार्थं . . . तत्यङ्गिरापरमेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थं दिग्बन्धंनपूर्वे अष्टोत्तरप बदशमूरुमन्त्रजपं करिष्ये ; तच्छंयोरावृणीमहे शान्तिः ।

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरादिग्बन्धनमहामन्त्रस्य मरीचिपुत्रकरयप ऋषिः, प्रत्यङ्गिराम्य(द्या)इन्द्रादयो लोकपाला देवना ; श्रां बीजं, श्रीं शक्तिः, श्रूं कीलकं, मम शरीरप्रहप्रहोचाटनार्थे प्रत्यङ्गिराप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनि-योगः ।

End:

यां कल्पयन्ति . . मृच्छतु। अव ब्रह्मद्विषो जहि। खट्. फट् जहि . . षो(शो)णितम्। एवं शोषय मारय स्वाहा॥

> उग्रं वीरं नहाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

हक(न) हक(न) हुम्फर् स्वाहा ॥

No. 6648. प्रत्यङ्गिरादिग्बन्धनम्.

PRATYANGIRĀDIGBANDHANAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 5552. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

कुबेराय नमः—कुबेरदिग्भागं बन्धयामि। ईशानदिग्भागस्य ईशानो देवता। ईशानाय नमः—तमीशानं—-व्याप्तये स्वाहा॥

No. 6649. प्रत्यङ्गिरादिग्बन्धनम्.

PRATYANGIRADIGBANDHANAM.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5858.

Complete

Similar to the above.

Beginning:

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम सर्वाभीष्टफलासच्चर्थे प्र-त्याङ्गरामन्त्रजपङ्कारण्ये। तच्छंयोरित्यस्य मन्त्रस्य बाईस्पत्यशंयु ऋषिः, विश्वे देवा देवता, शकरी छन्दः, शान्त्यर्थे जपे विनियोगः। तच्छंयोरा-. . करोमि। भद्रं कर्णे . . दधातु। सद्समिद्युवसे . . भर।

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरादिन्बन्धनमहामन्त्रस्य अतिच्छन्द्रछन्दा-स्त्रिष्टुभ्यां (जगतीत्रिष्टुभौ) छन्दः, इन्द्रादयो लोकपाला देवता। अत्र स्थले पूर्वदिग्भागे इन्द्रं बन्धयामि। इन्द्रं वो विश्वतः . . . केवलुः। लं इन्द्राय नमः। इन्द्रस्सुप्रीतो वरदो भवतु।

End:

आं हीं कों हुं फट् ई ईशानाय नमः । ईशानदिशं बन्धयामि । ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्ति ः ॥

No. 6650. प्रत्यङ्गिरापरमेश्वरीमूलविद्यामहामन्त्रः. PRATYANGIRĀPARAMĒŠVABĪMŪLAVIDYĀ-MAHĀMATRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the M8. described under No. 5858. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Pratyangirāparamēśvarī, and is intended to nullify the efforts of enemies who covet another's property, etc.

Beginning:

अस्य श्रीप्रत्याङ्गिरापरमेश्वरीम् लविद्यामहामन्त्रस्य आङ्गिरस ऋषिः, प्रत्याङ्गिरा परमेश्वरी देवता ; आं बीजं, ह्वां शाक्तिः, क्रों, कीलकं, मम ये ये प्रतिकूलकारिणस्त्रैलोक्यवर्तिनस्तेषां स्वक्षेत्र[मम]कळत्रपुत्रमित्र-पशुकाषिगृहदेहधनाभिमानिनां प्राणैकप्रतिकूलकारिणां शत्रूणां तत्तद्वाङ्मनः-कायचेष्टाहतिविशु(सि)द्दचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हीं कों शीर्षण्वतीं . , शुभिः। तत्सवि . . . योत्। दाहय दाहय स्वाहा। क्षिप्रारोग्यं कुरु कुरु। पुनस्सम्पुटीकरण-पश्चकं कुर्यात्। रूमिति पञ्चपूजां कुर्यात्। अङ्गन्यासकरन्यासं कुर्यात्। प्रत्यङ्किरापरदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

No. 6651 प्रत्याङ्गिराभद्रकालीमन्त्रः.

PRATYANGIRĀBHADRAKĀLĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 169b of the MS. described under No. 5673 Complete.

This Mantra is intended to propitiate Bhadrakālī as described in the Atharva-vēda.

Beginning:

अस्य श्रीपत्यङ्गिराभद्रकालीमहामन्त्रस्य अङ्गिरा ऋषिः, अथर्वण भद्रकाली पत्याङ्गिरा परकृत्या देवता, क्षां बीजं, ह्रीं कीलकं, स्वाहा शक्तिः, मम अथर्वणभद्रकालीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End :

> सिंहां सिंहमुखीं सखीं भगवतः श्रीभैरवस्योछस-च्छूलस्थूलकपालपाशडमरुव्याघाप्रदस्ताम्बुजाम् । दंध्राकोटिविशङ्कटास्वकुहरामारक्तनेत्रत्रयीं बालेन्दुचुर्तिमौलिकां भगवतीं प्रत्यक्रिरां भावये ॥

No. 6652. मत्यङ्गिरामन्त्रः. PRATYANGIRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 45*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Pratyangirā; and its proper repetition is believed to have the power of bewildering one's enemies, to make them stand still and motionless, and also to destroy them.

Beginning:

ओं हां नमः, ऋष्णवाससे शतसहस्रकोटिसिंहवाहने सहस्रभुजे महा बाहे महावलपराकमपूजिते अजिते अपराजिते देवि महाप्रत्यङ्गिरे । End:

मम शत्रून् भक्षय भक्षय ओं हां हां हीं जम्भय जम्भय मोहय मोहय साम्भय साम्भय आं हां हुं फट् प्रत्यक्निरे स्वाहा ॥

No. 6653. प्रत्यङ्गिरामन्त्र:.

PRATYANGIRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 3 on a page.

Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 5660. Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

4958

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, गायत्री त्रिष्टुब्बृहती-पङ्किर्जगती छन्दांसि, परापरदेवी देवता; ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, द्र् कीलकं, प्रत्याङ्गिरामहाप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः। End:

> नमस्ते शतुरुधिरपानोन्मत्तां परां शिवाम् । एवं ध्यात्वा महादेवीं जपेन्मन्त्रं यथाविधि॥

> > No. 6654. प्रत्यङ्गिरामन्त्रः. PRATYANGIRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13*a* of the MS. described under No. 6173. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीत्रत्यङ्गिरापरदेवतामूरूमहामन्त्रस्य त्रत्याङ्गरा ऋषिः, गायत्री छन्दः, उम्रकृत्या देवता; कमिति बीजं, अमिति शाक्तिः, ममिति कीलकं, मम प्रत्यङ्गिरामूलमहामन्त्रजपे विनियोगः।

End:

सह नाववतु शान्तिः प्रत्यक्रिरापरदेवताप्रसादसिद्धिरस्तु ।

ज्वालात्मकाय विद्महे महाप्रत्यङ्गिराय धीमहि । तन्नः प्रत्यङ्गिरा प्रचो. दयात् ॥

No. 6655. प्रत्याङ्गरामन्त्रः.

PRATYANGIRÂMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 3862. Incomplete.

Same as the above.

No. 6656. प्रत्यङ्गिरामन्त्रः. PRATYANGIRAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 3862. Incomplete.

The due repetition of this Mantra, which is also addressed to the goddess Pratyangirā, is considered to be helpful to one in the accomplishment of the four Puraṣārthas or aims of life, viz., Dharma, Artha, Kāma and Mōkṣa.

Beginning:

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां ग्रुभतिथौ धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषा-र्थसिद्धार्थं प्रत्यङ्गिरापरमेश्वरीदेवतामुद्दिश्य देवताप्रीत्यर्थं यथासम्भव-मन्त्रजपं करिष्ये । अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य प्रत्यङ्गिरा ऋषय(षि)ः, अनुष्टुप् छन्दः, उम्रकृत्या देवता, अं बीजं, द्वीं शक्तिः, कों कीलकं, मम प्रत्यङ्गिरापरमेश्वरीप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः । End:

सिंहां सिंहमुखे(खीं) सखीं भगवतः प्रोत्फुल्लेनेतोज्ज्वलं शूलस्थूलकपालपाशडमरुव्याघ्राग्रहस्ताम्बुजाम् । दंष्ट्राकोटिविशङ्कटास्यकुहरामारक्तनेत्रत्रयीं बालेन्दुद्युतिमौलिकां भगवतीं प्रत्यङ्गिरां भावये ॥ आं हीं कों ओं.

No. 6657. प्रत्यङ्गिरामन्त्रपारायणम्. PRATYANGIRAMANTRAPARAYANAM.

Pages, 27. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 46*a* of the MS. described under No. 5737. Incomplete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to counteract the evil effects of black magic and to defeat and destroy one's enemies.

407-A

Beginning:

 देशकालादि सङ्कीर्त्य शुभतिथौ मम परकृतक्रियमाणकरिष्यमाण-आभिचारिकसर्वोपद्रवनिवृत्त्यर्थ
 पत्यङ्गिरास्क्तपारायणङ्कारिष्ये । तदादौ दशदिग्बन्धनध्यानशापविमोचन शान्तिपठनङ्कारिष्ये । दिग्बन्धनप्रकारः—

यामिति सर्वमन्त्राणां प्रत्यङ्गिरा ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, कचिन्नाना छन्दांसि, इन्द्रादयो लोकपाला देवताः, दशदिग्बन्धने विनियोगः । End :

ओं क्षोभिणि क्षें क्षें मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय, ओं द्राविणि क्षें क्षें मम शत्रून् द्रावय द्रावय, ओं निकन्तनि क्षें क्षें मम शत्रून्निक्वन्तय निक्वन्तय, ओं आमिणि क्षें क्षें मम शत्रून् आमय आमय, .

> सम्मोहिनि क्षें क्षें रात्रून् सम्मोहय सम्मोहय । य इदं धारयेहिद्यां त्रिसन्ध्यं यः पठेदपि । सोऽपि दुःखान्तरादीनि हन्याच्छत्रून्न संशयः ॥ कूटस्थः कुरुते यस्माद्दिरिदुं बीजपश्वकम् ।

फट्कारेण समानीतं रक्षयेत्साधकोत्तमः ॥ Colophon :

इति प्रत्यङ्गिरामेलनमन्त्रः सम्पूर्णः ॥

No. 6658. त्रत्यङ्गिरामालामन्त्रः. PRATYANGIBAMALAMANTBAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 21. Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Pratyangirā under various significant names.

Beginning:

अस्य श्रीमालामन्त्रस्य आङ्गीरसप्रत्यङ्गिरा ऋषिः, कृत्या देवता, मालामन्त्रजपे विनियोगः । ह्रामिति न्यासः ।

End:

ह स ख फें महायोगिनीमुद्रां प्रदर्श्य उपसंहारमुद्रां निर्याणमुद्रां प्रदर्श्य । यस्य स्मृत्या च—ततो जपपूजातर्पणहोमकियादिषु न्यूनं श्रीप्रत्यङ्गिरापरनेश्वरीयजपन्तु मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे । अनेन यथासं(भव)जपेन च भगवती सर्वात्मिका श्री—–माषमदीयां(?) मत्स्वामिनः । (सह)म्न जपेन मनसा वाचा हस्ताभ्यां यत्कृतं तत्सर्वे ब्रह्मार्पणं भवति स्वाहा ॥

No. 6659. प्रत्यक्तिरामालामन्त्र:.

PRATYANGIRĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 30*a* of the MS. described under No. 21 Complete.

Similar to the above.

Believed to be efficacious in counteracting the evil effects of black magic and of hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

ओं ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रकोटिसिंहवाहने सहस्रभुजे महाबाहे.

ह्रां ह्रीं हूं जम्भय जम्भय ह्रीं हुं फट् प्रत्यक्निरे स्वाहा ।

ओन्नमः क्रुष्णवस्त्रशोभिते सकलसेवकजनोपकारकनिजघट्टनसंघट्टन-संहारके अनेककोटिसिंहवाहने सहस्रवदने द्विसहस्रभुजलताविभूषिते। End:

मन्त्रकट्टु मर्दय मर्दय, तन्त्रकट्टु त्रासय त्रासय, नरकट्टु नाशय नाशय, बन्धय बन्धय, अमय अमय, हीं हीं हीं हीं हीं हीं ठां ठां ठां ठां ठां ठां धां फट् स्वाहा ॥

No. 6660. प्रत्याङ्गिरासूक्तमन्त्रः.

PRATYANGIRĀSUKTAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 101b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

This contains a Mantra forming part of a certain hymn in praise of the goddess Pratyangirā, and its repetition is held to be conducive to the attainment of spiritual wisdom.

Beginning:

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरससूक्तस्य कश्यप ऋषिः, अव ब्रह्म द्विषो जही-त्येकपदा गायत्री छन्दः, प्रतिकृत्याकालाग्निरुद्रश्रीमहादेवो देवता; कं बीजं, अमति शक्तिः, तदिति कीलकं, मम दिव्यज्ञानसिच्चर्थे विनि-योगः ।

End:

अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥

No. 6661. प्रत्यङ्गिरासूक्तम्.

PRATYANGIRĀSŪKTAM.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 254b of the MS. described under No. 581 wherein this Mantra is found to form one of the collection of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

Same as the above.

No. 6662. प्रत्यङ्गिरासूक्तम्. PRATYANGIRĀSŪKTAM.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 302a of the MS. described under No. 5477. Complete.

Same as the above.

No. 6663. प्रत्यङ्गिरासूक्तम्. PRATYANGIRASÜKTAM.

Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 181*a* of the MS. described under No. 5417. Complete.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

This Mantra is a hymn in praise of the goddess Pratyangirā. It consists of thirty Rks. Its proper repetition is believed to enable one to destroy one's enemies and to counteract the evil effects of hostile Mantras.

Beginning:

तच्छंयोरित्यस्य मन्त्रस्य बाईस्पत्यश्शंयुर्न्नाम ऋषिः, विश्वे देवा देवता, शकरी छन्दः, शान्त्यर्थे विनियोगः ।

ओं भद्रन्नो अपिपातयाम नः । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः । अस्य श्रीत्रत्यङ्गिरासूक्तस्य त्रत्यङ्गिरा ऋषय(षि)ः, अनुष्टुबादिनानाछ्न्दांसि, उम्रकृत्या देवता, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

> ओं याङ्कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां रुत्यां वधूमिव । तां ब्रह्मणापनिर्णुदः(द्मः) प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ॥

End:

रुष्णवर्णे महदूपे खट् फट् जहि महाक्वत्ये । कुबेरन्ते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिमावह ॥ ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषं नाशय मे ज्वर । ओं शान्तिरुशान्तिरुशान्तिः ॥

No. 6664. प्रत्यङ्गिरासूक्तम्. PRATYANGIRĀSŪKTAM.

Pages, 7. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 5852. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

यां कल्पयन्ति नोऽरयः कूरां कृत्यां वधूमिव । तां ब्रह्मणा विनिर्णुद्मः प्रत्यकर्तारमृच्छतु ॥

End:

त्रियम्बकं—तात् , रुणुषु—द्यात् । ओं शान्तिरुशान्तिरुशान्तिः । सिंहां—भावये, लमिति पञ्चपूजां कुर्यात् । गच्छ गच्छ पुनर्गच्छ स्वस्थानं परमेश्वरि । यत्र यत्र सुखे तिष्ठ तत्र तत्र सुखं कुरु ॥

> No. 6665. प्रत्यङ्गिरासूक्तम्. PRATYANGIRĀSŪKTAM.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 74*a* of the MS. described under No. 235. Complete.

This contains also thirty Vēdic Rks in praise of the goddess Pratyangirā as a manifestation of Śakti.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्रस्य तिंशदचाम् अनुष्टुप् छन्दः, अव-ब्रह्मेत्येकपदा गायली, यो न इति लिष्टुप्, प्रत्यृचं कृत्या देवता, कालाग्नि-रुद्रः श्रीमहादेवः कृत्या वा, कमिति बीजं, अमिति शक्तिः, मम ये प्रतिकूलकारिणस्त्रैलोक्यवर्तिनः तेषां स्वक्षेलपशुरुषिदेह कायचेष्टाव्याहतिविशु(सि)द्धर्थे जपे विनियोगः । End:

> क्षिप्रं कृत्ये निवर्तस्व शत्रोरेव गृहं प्रति । षष्ठमं संप्रवक्ष्यामि मन्त्रराजं यथाकमम् ॥

मूलमन्त्रस्य वर्णानां चतुष्कं प्रतिपत्रके । तद्यन्त्रं धारयेद्धीमान् सर्वकर्मसुसाधनम् ॥ ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

No. 6666. प्रत्यङ्गिरासूक्तव्याख्या.

PRATYANGIRÁSŪKTAVYĀKHYĀ.

Pages, 15. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 124 of the MS. described under No. 2961. Complete.

A commentary on the Pratyangirāsūkta, which is a hymn in praise of the goddess Pratyangirā.

Beginning:

ओं यां कल्पयन्ति नोऽरयः यां देवतां प्रसारप्रेरितां परिकल्प-यन्ति अस्मदीयव्यापारसमर्थी कुर्वन्तीति होमजपव्यापारैरुत्पादयन्ति । इत्थं नः अरयः शत्रवः, नः अस्माकम्, क्रूरां निर्दयाम् । End:

अव ब्रह्म द्विषो जहि, अवेति पदं अवतेः मध्यमपुरुषैकवचनम् , ब्रह्मेति नपुंसकसंबुद्धिः, अम्मान्त्सर्वदों अव रक्ष, द्विषः अस्मद्देष्टृन् सर्वदा जहि, इत्यस्य मन्त्रस्याशयः । ब्रह्मा आदिकाले.

Colophon:

प्रत्यङ्गिराव्याख्यानं सम्पूर्णम् ॥

No. 6667. प्रत्यङ्गिरासूक्तव्याख्या.

PRATYANGIRÁSŪKTAVYĀKHYĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 14. Lines, 9 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 136*a*. The other works herein are Prapañcasāravivaraņa 1*a*, Mantrasāra 107*a*, Yantrasāra 143*a*.

Incomplete.

Same as the above.

No. 6668. प्रदोषपञ्चाक्षरीमन्त्र:.

PRADŌṢAPAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 81*a* of the MS. described under No. 5660. Complete. The Mantra proper is omitted in this manuscript.

This Mantra consists of the well-known five-syllabled religious prayer-formula of the Saivas, especially to be used during the **ACI** time.

Beginning:

अस्य श्रीप्रदोषपञ्चाक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, श्रीसाम्बसदाशिवो देवता; ओं बीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, मम श्रीसाम्बसदाशिवप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

चैतन्यं परिपूर्णमेकममलं ज्योतिर्मयं व्यापकं तत्पश्वाक्षरमन्त्रमाद्यममलं सूक्ष्मातिसूक्ष्माप(त्प)रम् । लिङ्गं ब्रह्म सनातनं सुमनसां ध्यातव्यरूपं सदा बाह्याभ्यन्तरसंस्थितं परशिवं प्राणेश्वरं भावये ॥ मनुः ॥

> No. 6669. प्रपञ्चन्यासः. PRAPAÑCANYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, repeating at the same time the appropriate letters denoting the goddess Sakti who is conceived to manifest herself in the universe in various ways.

Beginning:

प्रपश्चन्यास उच्यते तत्र मूलविद्याया वक्ष्यामि ऋष्यादिकर-षडङ्गन्यासेन प्राणायामान् विधाय न्यसेत् । ओं ऐं हीं श्रीं हसौ सहैं। अं प्रपश्चरूपाये नमः, श्रिये नमः शिरसि । End:

ओं ऐं हीं श्रीं हसौं सहौं मूलं अं सकलप्रपश्चरूपाये आर्याम्बाये नम इति सर्वाङ्गानि व्यापयेत् ॥ Colophon:

इति प्रपश्चन्यासः ॥

No. 6670. प्रलयकालमेरवमालामन्त्रः.

PRALAYAKĀLABHAIRAVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 27*a* of the MS. described under No. 5836. Complete.

This Mantra is addressed to Siva conceived as Bhairava engaged in bringing about universal dissolution.

Beginning:

आन्नमो भगवते प्रलयकालमैरवाय ताण्डवाडम्बराय शशाङकत-शेखराय नागयज्ञोपवीताय अनेककालनिर्नाशनाय ।

End:

पातालं बन्ध बन्ध आं हूं बडबानलमैरवाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6671. प्रलयकालवीरभद्रबडबानलमन्त्रः.

PRALAYAKĀLAVĪRABHADRABADABĀNALA-MANTRAH.

Pages, 3. Lines, 14 ou a page.

Begins on fol. 77*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is supposed to propitiate Siva conceived as Virabhadra at the time of the universal dissolution and is believed to have the power to enable one to overcome all dangers and difficulties.

Beginning:

अस्य श्रीवीरभद्रबडबानलस्तोत्रमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीप्रलयकालवीरभद्रो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम सर्वोपद्रवप्रहर(हा)णार्थसिद्धचर्थं श्रीप्रलयकालवीरमैरवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओन्नमो भगवते प्रलयकालवीरभद्रावताराय हां ही हूं हैं हौं हूः फटू स्वाहा ॥

No. 6672. प्रलयकालवीरभद्रबडवानलमन्त्र:.

PRALAYAKĀLAVĪRABHADRABAŅABĀNALA-MANTRAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 111*a* of the MS. described under No. 119. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीवीरभद्रबडबानलमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, प्रलयकालवीरभद्रो देवता; द्दां बीजं, हीं शक्तिः, हों कीलकं, श्रीप्रलयकालवीरभद्रप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

For the end, see under the previous number.

No. 6673. प्रलयकालवीरभद्रबडबानलमन्त्रः.

PRALAYAKĀLAVĪRABHADRABAŅABĀNALA-MANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $5\frac{5}{8} \times 1\frac{1}{8}$ inches. Pages, 7. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 5a. The other works herein are Indrāksīstötramantra 1a, Šarabhasāluvamantra 4a.

Complete.

Similar to the above. Considered to be efficacious in safeguarding one's Mantras and Tantras and in nullifying the effects of hostile Mantras and Tantras.

For the beginning, see under the previous number.

End:

दक्षयज्ञविनाशनाय आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्ररक्षणाय परमन्त्रपरयन्त्र. परतन्त्नप्रच्छेदनाय आगच्छ कह कह अनेकमुद्राय ह्रां हीं हूं हैं हौं इ: फट् स्वाहा ॥

No. 6674. प्रलयकालहनूमन्मन्त्र:.

PRALAYAKĀLAHANŪMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 288b of the MS. described under No. 5477 wherein this Mantra is found to be in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanūmat conceived as living at the time of universal dissolution.

Beginning and End:

ऋषिदेवताछन्दोबीजशक्तिकीलककरषडङ्गन्यासध्यानादिकं सर्वं पूर्व-वत् ।

मन्त्रः-ओं हं रं रं हं रामदूताय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6675. प्रलयकालानलभेरवमालामन्त्र:. PRALAYAKĀLĀNALABHAIRAVAMĀLĀ-MANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 42*a* of the MS. described under No. 5836. Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava conceived as terrible as the god of fire engaged in bringing about universal dissolution; and its repetition is supposed to enable one to drive off evil spirits and to secure protection.

Beginning:

ओं प्रळयकालानलमैरवाय मूतप्रेतपिशाचोचाटनाय स्वमन्त्र-यन्त्रतन्त्रसंरक्षणाय ।

End:

परदाट् छिन्धि छिन्धि नटनाथमैरवाय ओं ह्यां फट् स्वाहा ॥

No. 6676. प्रस्तिमन्त्र:. PRASŪTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 58*a* of the MS. described under No. 5987. Incomplete.

The repetition of this Mantra is held to be efficacious in enabling a pregnant woman to deliver safely and with ease. Beginning and End:

ओं सिद्धचामुण्डेश्वरि सिद्धयोगिनि खट् खट् स्वाहा । ओन्नमो भगवति सिद्धचामुण्डेश्वरि चामुण्डि योगिनि गिट गिट स्वाहा ॥

No. 6677. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः.

PRĂNAPRATIȘTHĂMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 806 of the MS. described under No. 5673. Complete.

The repetition of this Mantra is in ended to consecrate and pour life into images and metallic plates with mystic diagrams, etc. Beginning:

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजु स्सामाथर्वाणि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकं, प्राणप्रतिष्ठासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । • End:

ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नः स्वस्ति । एवं त्रि-वारं जपेत् ॥

No. 6678. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः.

PRĂŅAPRATIȘŢHĂMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 102 of the MS. described under No. 2549. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

No. 6679. प्राणप्रातिष्ठामन्त्रः. PRĀŅAPRATISŢHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 68*a* of the MS. described under No. 446. Complete.

Same as the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

वाङ्मनश्वक्षःश्रोत्राजिह्वाघाणा मय्येवागत्य सुखं चिरान्तिष्ठन्तु स्वाहा। हीं ओं इति हृदये हस्तं निधाय त्रिवारं जपेत् ॥

No. 6680. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः.

PRÁNAPRATISTHÁMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 3 on a page.

Begins on fol. 76a of the MS. described under No. 29. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

असुनीते पुनरस्मासु=स्वस्ति मम प्राणा [नि]इहैवागच्छन्ति तिष्ठन्ति तिष्ठन्ति । शुद्धप्रणवं द्वात्रिंशद्वारं जप्त्वा ॥

Colophon:

इति प्राणप्रातिष्ठा सम्पूर्णा ।।

No. 6681. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः.

PRANAPRATISTHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 187*a* of the MS. described under No. 119. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

सुखाधिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ।

वाय्वग्निशकव(रु)णश्वरराक्षसेन्दुप्रेतेशपत्नलिखितेष्वथ यादि हान्तम्। बिन्द्वन्तिकं क्षगतहंसयुतं स्वराणां प्राणेशयन्त्रमथ वर्णवृतं पुरस्थम् ॥

No. 6682. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः. PRĀŅAPRATIṢŢHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 160*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

सर्वेन्द्रियाणि मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्तजिह्वाघ्राणप्राणा इहागच्छ(त्य) स्थिरं तिष्ठतु(न्तु) स्वाहा ॥

इमं मन्त्रं हस्तेन हृदयमालभ्य त्रिवारं जपेत् ॥

No. 6683. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः. PRĀŅAPRATIŞŢHĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 12*a* of the MS. described under No. 6157. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

सुख़िरन्तिष्ठन्तु स्वाहा। पश्चपूजा। लं पृथ्वीतत्त्वात्मने नारायणाय गन्धं समर्पयामि।

ओं अमृततत्त्वात्मने अनिरुद्धाय नैवेद्यं समर्पयामि ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6684. प्राणप्रातिष्ठामन्त्रः. PRÄNAPRATIŞTHÄMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 224*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

समस्तयन्त्रचैतन्यार्थे जपे विनियोगः ।

End:

अमुष्य प्राण अमुष्य जीव इह स्थितः । इति हादशवारं पठेत् । अनन्तरम् अस्य यन्त्रस्य । पृथिव्यप्तेजोवायव्या(य्वा)काशात्मने(क)शब्द-रपर्शगन्धन्नाणादिकमन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयसर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । इति त्रिवारं जपेत् ॥

No. 6685. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः. PRĀNAPRATISTHĀMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $9\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 2. Lines, 16 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 114*a*. The other works herein are Saptasatī 1*a*, Āñjanēyayantra 109*a*, Hanūmatkalpa 115*a*, Saundaryalaharī 129*a*, Caņdīyantra 144*a*, Yantrakacchapuṭa, 145*a*, commentary in Telugu on Yantrakacchapuṭa 167*a*, Śrīsūkta 176*a*.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अन्तर्मुखं सुसत्त्वाख्यं वनजाग्रं बहिर्मुखम् । सर्वतोमुखवद्यन्त्रं स्वरूपं परिकीर्तितम् । विद्वेषकरणोच्चाटनस्वप्तवक्ष्यन्त्रे जाग्रति । स्तम्भने मारणे चैव सर्वयन्त्रे समुद्धरेत् ॥ 408

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठापनमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्य-जुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, सकलजगत्स्राष्टिप्राणप्रातिष्ठार्थे विनियोगः । End :

अमुष्य सर्वेन्द्रियाणि वाड्यनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघाणा इहैवागत्यागत्य सुखश्चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ओं हीं कों मम सोमेति वेदमन्त्रम् ॥

No. 6686. प्राणप्रातिष्ठाविधिः.

PRĀŅAPRATIŞŢHĀVIDHIӉ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 140. Complete.

On details connected with the religious ceremonial of consecrating and pouring life into images by the repetition of certain Mantras.

Beginning:

अथ प्राणप्रतिष्ठाविधिः — प्राणप्रतिष्ठां यथोक्तगुणसम्पन्नेनाचार्येण का-रयेत् । अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य

अमुष्य देवस्य प्राणप्रतिष्ठासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । मन्त्रवीर्घस-म्पादनार्थं मातृकावर्णसहितमङ्गुलिन्यासं करिष्य इति सङ्कल्प्य ओं आ-काशवायुवाग्निसलिलप्रथिव्यात्मने अं कं खं गं घं डं आं अड्गुष्ठाभ्यान्नमः । End:

इति तृतीयखण्डेन हृदयादिमस्तकपर्यन्तं पूर्वेक्तिखण्डतृतीयेन आं ह्रीं कों यं रं रुं वं शं षं सं हं इत्येकादशाक्षराणि प्रतिवर्णमादौ जप्त्वा ध्रुवा द्यौरिति मन्त्रेण पुष्पाक्षतान् विक्षिप्य नमस्कुर्यात् ॥

Colophon:

इति माणप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥

No. 6687. प्राणेश्वरीमन्त्रः. PRÁNEŚVARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 24*a* of the MS. described under No. 5524. Complete.

This Mantra is addressed to Sakti who is herein described as Praņēśvarī; and its proper repetition is supposed to have the power to enable one to destroy one's enemies, to drive off evil spirits, and to protect one's self from all dangers.

Beginning :

अस्य श्रीप्राणेश्वरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्य-जुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, सर्वापमृत्युकालमृत्युनाशिनी प्राणेश्वरी देवता ; हीं बीजं, नमः शक्तिः, मम सर्वप्रतिकूलनिवारणस्थानेषु तेषां शत्रुसंहरणार्थं भूतप्रेतपिशाचोच्चाटनार्थं प्राणेश्वरीप्रकाशमन्त्रजपे विनि-योगः ।

9191-

End:

मम शत्रून् शीघ्रं भक्षय भक्षय; मां सर्वोपद्रवेभ्यो रक्ष रक्ष ह्यां हीं हूं हूँ हूँ हूँ हूँ हू: हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6688. प्रासाद्पश्वाक्षरीमन्त्रः.

PRASADAPAÑCAKȘARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol 83a of the MS. described under No. 132. Complete.

This is the well-known prayer formula of the Saivas consisting of five syllables; and its repetition is intended to please Siva associated with Parvatī.

Beginning:

अस्य श्रीमत्पासादपश्वाक्षरीमहामन्त्रस्य नारद ऋषिः, पाङ्किश्छन्दः, साम्बसदाशिवो देवता ; ओं बीजं, द्रीं शक्तिः, ह्रौं कीलकं, साम्बसदा-शिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

408-A

4976

End:

वामाक्कन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त न्यस्तारक्तोत्पलायास्स्तनपरिविलसद्वामबाहुः प्रियायाः । सर्वाकल्पाभिरामो धृतपरशुमृगाभीष्टदः काश्वनामो ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुस्सम्पदे पार्वतीशः ॥

No. 6689. प्रासादपश्चाक्षरीमन्त्रः. PRĀSĀDAPAÑCĀKṢARĪMANTRAĻ

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 5673 wherein the name \overline{A} mnāyamantramālikā is given to a collection of Mantras the first of which begins on fol. 1a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीप्रासादपञ्चाक्षरीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पाक्किश्छन्दः, श्री-साम्बाशिवो देवता ; ओं बीजं, नमः शक्तिः, आयेति कीलकं, मम श्री-साम्बप्रसादसिच्चर्थे विनियोगः ।

End:

मनुः---ओं ह्रीं ह्रौं नमश्रिशवाय । श्रीशैवसमयविद्याश्री ।

No. 6690. प्रासाद्पश्चाक्षरीमन्त्रः.

PRĀSĀDAPAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीप्रासादपश्वाक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, श्री उमामहेश्वरो देवता ; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रौं कीलकं, मम उमामहेश्वरप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

ओं यं त्रिजगत्पतिपाताळदिशि मां रक्ष रक्ष भूर्भुवस्सुवरोमिति दि-ग्वन्भः।

> मूले कल्पद्रुमस्य. गुहगजवदनाभ्यां समाहिलष्टपाइवर्म् । वामङ्कहिलष्टवामेति ध्यात्वा ॥

No. 6691. प्रासादपश्वाक्षरीमन्त्रः.

PRĀSĀDAPAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 54*a* of the MS. described under No. 5422, Complete.

Same as the above.

No. 6692. प्रासादपश्वाक्षरीमन्त्रः. PRÁSADAPAÑCAKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 5422. Complete.

Same as the above.

No. 6693. प्रासादपश्वाक्षरीमन्त्र:.

PRASADAPAÑCAKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 149*a* of the MS. described under No. 781. Complete.

Same as the above.

No. 6694. प्रासादपरापराप्रसादमन्त्र:.

PRĀSĀDAPARĀPABĀPRASĀDAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 115*a* of the MS. described under No. 587. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Parādēvatā and thus to enable one to obtain salvation through the favour of that goddess. Beginning:

भस्य श्रीमन्महामोक्षसायुज्यकैवल्यप्रासादपराश्रासादतारप्रासादपर-तत्त्वप्रासादकेवलपराप्रासादषोडशीयुक्तलक्ष्मीमहामन्त्रस्य आस्थिचर्मनाडरिोम-मांसात्मकस्थूलशररिाधिष्ठानविश्वात्मकाकारब्रह्माण्डमयऋग्वेदकोशव्याषी ऋ-षिः,

क्षुत्तृष्णानिद्रालस्यमैथुनाधिष्ठानकारणसामवेदशरीरात्मतत्त्ववादिप्राज्ञरू पमकारात्मकमनोमयकोशव्यापी नीलपीतरत्त्कश्वेतमिश्रात्मकसर्वतेजात्मको[प्रा-सादसिद्धचर्थं जपो विनियोगात्मक] देवता ।

सुधासहस्रारकुण्डल्यन्तर्गतसर्वानन्दमयसमरसमहामोक्षप्रसादासिद्धचर्थं नालगर्भान्तीस्थतपीतकलाबिन्दुत्रिरूपातीतद्वादशान्तनिर्वाणकलापश्वबिन्दुयो -गे विनियोगः ।

End:

पूर्णाभिषेका सह सर्वतन्त्रे आम्नायदीक्षा न ह मूतले सदा। प्रकाशरक्तामदनुत्तराख्या पराप्रसादा मनुयोगमुक्तिदा ॥ ओं तत्सर्व श्रीासच्चिदानन्दगुरुब्रह्मापणमस्तु ॥

No. 6695. त्रासाद्परापराप्रासाद्मन्त्र:.

PRĂSĂDA PARĂPARĂPRĂSĂDAMANTRAH. Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 233a of the MS. described under No. 124. Complete

Similar to the above.

A. 4

Beginning:

अस्य श्रीप्रासादपरापराप्रासादमहामन्त्रस्य चिद्रूपानन्दभैरव ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीप्रासादपरापराप्रासादरूपिण्यर्धनारीर्श्वत्रम्बा देवता; इं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, प्रासादपरापराप्रासादासिद्धचर्थे—गः। End:

ओं ऐं हीं श्री हं सशिवस्सो हं हं सः ह्सौः स्हौः सो हं हं सः श्रीं हीं ऐं ओं श्रीपा—मः । मूर्श्वि सचिन्तयेद्देवं श्रीगुरुं भक्तवत्सलम् ॥ ह्रसौः स्हौः किं प्रासादपरापराप्रासादाम्बादिव्यश्री—मः ॥

No. 6696. प्रासादपरापराप्रासादमन्त्र:.

PRÀSĂ DAPARĂ PARĂ PRĂSĂ DAMANTRAH. Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 24% of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above.

No. 6697. प्रासादपरामन्त्र:.

PRASADAFARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 62*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Parā who is the same as Pārvatī, and its repetition is held to have the power of securing for one the favour of that goddess.

Beginning:

अस्य श्रीप्रासादपरामहामन्त्रस्य घोरानन्दमैरव ऋषिः, अतिजगती, श्रीष्रासादपरा देवता ; हं बीजं, सः शक्तिः, औः कीलकं, प्रासादपरा-प्रसाद—गः ॥

End:

ध्यानम् । पश्चपूजा ॥ ह्याः ॥

No. 6698. बगलानुष्ठानाविधिः.

BAGALĀNUSTHĀNAVIDHIH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 79a of the MS. described under No. 235. Complete.

This Mantra is addressed to Bagalāparamēśvarī who is a manifestation of Śakti; and is believed to have the power to enable one to drive away and destroy one's enemies or to annoy them in several ways.

Beginning:

एवं गुण—तिथौ मम सर्वाभीष्ठसिद्धचर्थं श्रीब्रह्मास्त्रवगलापरमेश्वर्यम्बा देवतामुद्दिश्य श्रीबगलापरमेश्वरीदेवताप्रीत्यर्थं बगलापरमेश्वर्यम्बामन्त्रानुष्ठान-महङ्कारिष्ये ।

अस्य श्रीब्रह्मास्तवगलापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अनु-ष्टुप् छन्दः, श्रीवगलापरमेश्वरी देवता ; ओं बीजं, ह्वीं शक्तिः, बगला-मुखीति कीलकं, मम वगलापरमेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End :

दह दह पच्छ पच्छ स्तम्भन स्तम्भन मोहन मोहन आकर्षण आक-र्षण विद्वेषण विद्वेषण सकलरिपून् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6699. बगलाबसास्त्रमन्त्रः.

BAGALABRAHMASTRAMANTRAH.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 5686.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bagalāmukhī who is a manifestation of Śakti; and its repetition is held to have the power to enable one to make bad people become tongue-tied and confounded, and also to make them stand still and motionless.

Beginning:

अस्य श्रीबगलाब्रह्मास्त्रमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता ; ह्रां बीजं, ओं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम श्री-बगलामुखीमन्त्रदेवताप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

ओं ह़ीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं ह्लां बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लां ओं स्वाहा ॥

बसास्त्रप्रसादासीदिरस्तु ॥

No. 6700. वगलाबहास्त्रमालामन्तः.

BAGALABRAHMASTRAMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 99b of the MS. described under No. 524. Complete.

Similar to the above.

Understood to be efficacious in driving away enemies and in removing various evils.

Beginning:

श्रीब्रह्मास्त्रमालामनुः----

ओन्नमो वीरप्रतापविजयभगवति ज्ञगलामुखि मम सर्वानेन्दकानां सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ज्ञाह्मीमुद्रया दुद्धिं नाशय।

End:

सर्वारिपूणामुच्चाटनोच्चाटन हुं फट् । मम हृदयशत्रुनिवाराणि मम इष्टं रक्ष रक्ष अनिष्टं भञ्ज(य) भज्ज(य) स्वाहा ॥

No. 6701. बगलामुखी-एकाक्षरीमन्त्रः.

BAGALÂMUKHĪ-ĒKĀKṢARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 235*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bagalāmukhī conceived as a manifestation of Śakti. It consists of one syllable only.

Beginning:

अस्य श्रीवगलामुखी एकाक्षरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, चिन्मयशाक्तिरूपिणी श्रीवगला देवताः; आं बीजं, ह्रीं शाक्तिः, ई कीलकं, मम बगळामुखीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

4982

ओं हीं श्रीं । लमिति पश्चपूजा ॥

No. 6702. बगलामुखीकवचः.

BAGALÂMUKHĪKAVACAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 766 of the MS. described under No. 235. Complete as found in the Jayadrathayāmala.

Addressed to the goddess Bagalāmukhī for securing her favour and protection.

Beginning:

अस्य श्रीपीताम्बरीबगलामुखीकवचस्य महादेव ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, [नास्त्रं वाचं छन्दः] बगलामुखी देवता ; ह्लीं बीजं, ओं कील कं, स्वाहा शक्तिः, मम बगलामुखीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

> सर्वसिद्धिप्रदा प्राच्यां पातु मां बगलामुखी । पीताम्बरी तिर(दिइया)मेय्यां याम्यां महिषवाहनी ॥

End:

रुद्राणी वामपार्श्वन्तु पातु मां सर्वदा(था) सदा। स्तुता सर्वेषु देवेषु रक्तबीजविनाशनी।। इत्येतत्कवचन्देवि धर्मकामार्थसाधनम्।

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

सकृद्यस्तु पठेद्देवीकवचं भेरवोदितम् ।

तस्याशुभन्रदा यन्ति यमस्य भव सुस्तिते ॥ (?)

Colophon:

इति जयद्रथयामळतन्त्रे बगळाकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6703. बगलामुखीकवचः. BAGALAMUKHIKAVACAH.

Pages, 7. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 1006 of the MS. described under No. 524.

Complete as found in the Bhairvakalpa.

Similar to the above.

This Mantra is believed to confer on a person the magical power of arresting the movements of the various limbs of bad people, to counteract the evil effects of hostile Mantras, Tantras and medicines and to bring persons under one's control and influence.

Beginning:

श्रीभैरव उवाच ---

राज्ञां मण्डलिकादीनामवलोक्यादि(ति)सर्व(पे)ताम । गन्धर्वाणां महादेव धनाधिकृतचेतसाम् ॥ गजसपीदिजन्तूनां स्तम्भनं वद् शङ्कर ।

श्रीईश्वर उवाच----

पुरा कृतयुगे देवि वातक्षाभे (उ)पास्थिते। सप्तार्णवानामेकत्वं गतं क्षोभंमहद्भयम् ॥

अस्य श्रीबगलाब्रह्मास्नकवचमहामन्त्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छ-न्दः, उद्वतिरूपिणी महास्तम्भनकारिणी पीताम्बरी देवता ; ह्वीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ठठकीलकं, मम दूरस्थानां समीपस्थानां सर्वदुष्टानां वाक्-पादगतिमतिमुखस्तम्भनार्थे परसैन्यपरकृतमन्त्रयन्त्रतन्त्रौषधस्तम्भनार्थे स-र्वराजस्त्रीपुरुषवइयार्थे बगलामुखीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । षट्त्रिंशदक्षरा विद्या बगला परमार्थतः । सहस्रोरे गुरोः पातु शक्तचा यतमहोज्ज्वला ॥ चिद्रूपा परमा शक्तिर्छलाटे शिवगेहिनी । अ्रूयुग्मं मे महाकाळी नेत्रयुग्मं परेश्वरी ॥

End:

विशुद्धाय महामन्त्रं जपे(दिशे)देनमनुत्तमम् । कृत्वा पुरा नु कवंच जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ नानार्थस्तम्भिनी विद्यासिद्धिः स्यादिति निश्चयः । इदन्तु कवचन्दिव्यं महाप्राणास्पदं महत् ॥

Colophon:

इति श्रीमहोमताभैरवकल्पे एकवीरातन्त्रे श्रीउमामहेश्वरसंवादं बग-लामुखीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6704. बगलामुखीचतुरक्षरीमन्त्रः.

BAGALĀMUKHĪCATURAKṢARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 235*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is also addressed to the goddess Bagalāmukhī, and it consists of 4 syllables.

Beginning:

अस्य श्रीवगलामुखीचतुरक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीवगला देवता; ओं बीजं, हीं शक्तिः, कों कीलकं, मम श्रीब—गः। End:

ओं आं ही कों.

No. 6705. बगलामुखीमन्त्र:. BAGALĀMUKHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 230*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

The Mantra is intended to propitiate the goddess Bagalāmukhī and thus to enable one to deprive one's enemy of his sense.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, गायती छन्दः, बगलामुखी देवता; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं, मम बगलामुखी-म—गः।

End:

बुद्धि विनाशय हीं ओं स्वाहा । बगलामुख्यम्बादिव्यश्री--मः ॥

No. 6706. बगलामुखीमन्त्रः.

BAGALÂMUKHĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 234*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

The repetition of this Mantra is held to have the power to onable one to make one's enemies become tongue-tied and mute and powerless, and also to deprive them of their sense.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुर्खामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, ओं बीजं, ह्लीं शक्तिः, फट् कीलकं, मम शत्रुक्षयार्थे विनियेागः ।

End:

ओं बगलामुखि मम शत्रूणां वाङ्मुखं स्तम्भय स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धि नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6707. वगलामुखीमन्त्रः. BAGALAMUKHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 89*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6708. बगलामुखीमन्त्रः.

BAGALĀMUKHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामन्तस्य नारदभगवान् ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता; ओं बीजं, ह्वीं शाक्तिः, स्वाहेति कीलकं, मम श्रीबगलामुखीप्रसादसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

For the end, see under the previous number.

No. 6709. बगलामुखीमन्त्रः.

BAGALAMUKHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 186 of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामन्त्रस्य श्रीनारायण ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, बगलामुखी कीलकं, मम बगलामुखीप्रसादसिच्चार्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पादं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय हीं ओं स्वाहा ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6710. बगलामुखीमन्तः. BAGALÂMUKHĪMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 16 on a page.
Begins on fol. 42b of the MS. described under No. 5673.
Complete.
Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामम्त्रस्य नारदभगवान् ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, बगलामुखी कीलकं, मम बगला-मुखी पीताम्बरीप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

पीयूषोदधिमध्यरत्नविलससिंहासने संस्थितां श्रीसिंहासनमौलिपातितरिपुप्रेतासनाध्यासिनीम् । स्वर्णाभाङ्गदपीडितादि(हि)रसनां आम्बद्गदां बिभ्रतीं यस्त्वां पश्यति तस्य यान्ति नि(बि)लयं सद्योऽम्ब सर्वापदः ॥

जिह्वाग्रमादाय . गम्भीराञ्च मदोन्मत्तां वादी मूकति कम्पति क्षितिपतिः । पत्रपूजा । मनुः ॥

> No. 6711. बगलामुखीमन्तः. BAGALÂMUKHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 5661. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामन्त्रस्य नारदभगवान् ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमद्वगलामुखी देवता; ह्यं बीजं, हीं शक्तिः, हूं कीलकं, श्रीमद्वगलामुखीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

4988

मनुः ओं ह्वीं बगळामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्वीं ओं स्वाहा बगळामुखीश्रीपादुकां पूजयामि । पश्चपूजां कुर्यात् ॥

No. 6712. बगलामुखीमन्त्रः. BAGALAMUKHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं, मम बगलामुखीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ओं स्वाहा । बगलामुखीश्रीअम्बाश्रीपा— नमः ॥

No. 6713. बगलामुखीमन्त्रः.

BAGALĀMUKHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 21. Complete.

Similar to the above

Understood to be efficacious in counteracting the effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

चाटनार्थे सकलरात्रुवाग्वन्धनार्थे श्रीबगलामहालक्ष्मीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं हीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिहां कीलय बुद्धिं विनाशय ओं हीं स्वाहा ॥

> वादी मूकति कम्पति क्षितिपतिर्वेश्वानरस्सीदति कोधी शान्तति दुर्जनस्युजनति क्षिप्रानुगः खञ्चाति । गर्वी खर्वति सर्वविश्वजिदति त्यज्यांत्रि(त्रिर्मन्त्रि)णा मन्त्रितं श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥

> > No. 6714. बगलामुखीमन्त्र:. BAGALAMUKHIMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 98*a* of the MS. described under No. 524. Complete. Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्नदेवतामन्त्रराजमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अद्वैतरूपिणी महास्तम्भिनी पीताम्बरी बगलामुखी अम्बा देवता; ओं हीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ठ ठ कीलकं, मम दूरस्थानां समीपस्थानां वा सर्वदुष्टानां वाक्पदगतिमतिमुखस्तम्भनार्थं बगलामुखीदेवीसाक्षात्कारासिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

वाचं नामौ, दुष्टानां जठरे, सर्वा हृदि, बगलामुखी मुखे, ह्वां ललाट-तटे, आं शिरसि, आं स्वाहा सर्वाङ्गव्यापकम् ॥

No. 6715. बगलामुखीमालामन्त्र:.

BAGALĀMUKHĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 80*a* of the MS. described under No. 235. Complete.

Similar to the above.

409

Beginning:

4990

अस्य श्रीबगलामुखीमालामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, पङ्किश्छन्दः, बगलामुखी देवता ; ह्वीं बीजं, ग्लौं शक्तिः, श्रीं कीलकं, बगलामुखी-श्रीत्यर्थे विनियोगः ।

ओं आं हीं ई ऐं क्लीं श्रीं हीं ग्लौं हुं कों नमो बडवामुखि बड-बानलबगळे एहि स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर अघोरवीरबडबानलबगळे। End:

अतः पुनर्न्यासं कृत्वा आवाहनादिषण्मुद्रा दर्शनीयाः । पूर्वोक्तं पूजयेत् । ततः षोडशोपचारपूजां कृत्वोद्वासयेत् ॥

No. 6716. बगलामुखीस्तोत्रमन्त्रः.

BAGALÂMUKHĪSTÖTRAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 83a of the MS. described under No. 3472. Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Bagalāmukhī and is intended to propitiate the presiding deity of the Brahmāstra.

Beginning:

अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता; ओं बीजं, ह्वीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, ब्रह्मास्न-देवताप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिना(ने) क्लेदिनी(नि) महामदद्रवे कुलेशि कुलेशि दक्षिणाम्नायसमयविद्याम्बादि(व्य)श्री हैं पूर्वाम्नायसमयाविद्या-म्वादेवी(वि) श्रीं ह्रीं क्लीं १५ सौः ऐं हीं श्रीं वाडशाक्षर्यम्बादेव्यम्बापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

No. 6717. बगलाष्टाक्षरीमन्त्रः. BAGALÁŞŢĂKŞARÎMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 235*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bagalā who is the same as Bagalāmukhī; and consists of eight syllables.

Beginning:

अस्य श्रीबगलाष्टाक्षरीमहामन्तस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-बगला देवता ; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कों कीलकं, श्रीवगला—गः।

End:

ओं आं हीं कों हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6718. बगलास्तम्भिनीमालामन्त्रः.

BAGALÁSTAMBHINÎMÁLÁMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 176 of the MS. described under No. 5864. Complete.

This Mantra is also addressed to the goddess Bagālāmukhī and its repetition is believed to have the power to enable one to make one's enemy powerless.

Beginning and End:

ब्लुं ग्लौं ऐं द्रां हीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भनास्त-शमानि हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6719. बडबानलभेरवमन्त्र:.

BADABANAL \BHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30b of the MS described under No. 2424 Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava who is conceived to be as terrible and awe-inspiring as the Badabāgni; and its repetition 409-A

is considered to be efficacious in depriving one's enemies of the power of using their bodily organs and to make them subject to one's control.

Beginning:

कटुकणड्डमरुकभीमदर्शनं करस्फुरत्ताळविपीतन्1पुरम् । अमद्भमद्भमराविलोलकुन्तलं हरद्भवं हर . . . स्युभैरवम् ॥ ओन्नमो भगवते सिं ह्रीं क्लीं वटुकाय सर्वदुष्टानित्रहाय संहाररुद्रभरे-वाय ।

End:

सर्वेषां वाब्मनश्च क्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणगतिमतिस्तभ्मनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ठ ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6720. बडबानलमेरवमालामन्त्रः.

BADABÁNALABHAIRAVAMÁLÁMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 6157.

Complete.

This Mantra is also addressed to Bhairava and its repetition is believed to be efficacious in securing protection.

Beginning:

अस्य श्रीबडबानलमैरवमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, श्रीबडबानलमैरेवरौद्र-मुखी देवता, अघेाररूपिणि ज्वालामालकरालि धूम्रलोचनरूपाय दहनतज्ज्व-लकुम्भिनि।

End:

अतिमैरव रक्ष रक्ष अनादिमैरव रक्ष रक्ष प्रळयकालताण्डवमैरवाय स्वाहा ॥

No. 6721. बडबानलमेरवमालामन्त्रः.

BADABĀNALABHAIRAVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 5836. Complete.

This Mantra is considered to be helpful in driving away evil spirits and in counteracting the effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

ओं हीं रं रौद्ररूपाय हां हां रों रुद्ररूपाय रूं क्षां रात्रुक्षयाय । End:

परमन्त्रपरयन्त्रप्रभेदनाय सर्वभूतनिवारणाय हीं फट् स्वाहा ॥

No. 6722. बडबानलभेरवमालामन्त्र:.

BADABĀNALABHAIRAVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 5828. Complete.

This Mantra is considered to be helpful in bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीबडबानल्भैरवमहामन्त्रस्य दुर्वास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बडबानल्भैरवो देवता, मम इष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ओं ष्ट्रां ह्रीं ह्रूं भैरवाडम्बराय खड़ुकपालमालाधराय शशाङ्ककतशेखराय। End:

ओं सैरवबडबानल ओं आं कों हूं। हूँ। हूँ। हूँ। फट् स्वाहा ॥

No. 6723. बडबानलमन्त्र:.

BADABĀNALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 44*a* of the MS. described under No. 2886. Incomplete.

This Mantra is addressed to Badabānala or the sub-marine fire and its proper repetition is understood to be helpful in causing the destruction of one's enemies.

Beginning:

बडबानलमन्त्रस्य भास्करः, पार्क्कः, बडबानलः, रं बीजं, आहुतिः शक्तिः, विनियोगस्त्वभीष्टके । End :

> एतद्यन्त्रं समालिख्य लोहे ताम्रेऽथ सीसके । आवाह्य पूजयद्वद्विमाग्नेय्यभिमुखोऽम्बिके ॥ र संतर अपने ज्या

शत्रून् संहर अग्ने त्वम्.

No. 6724. बडबानलमन्त्र:.

BADABANALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

बडबानलस्य भरमातः, गायत्री, बडबानलभैरवः, प्रं बी, स्वाहा श, दाहने । प्रामित्यादिन्यासः ।

End:

तत्परं वैरिं लोकच दहद्विबहिधार्माणे । त्रिश्चतुस्निंशदंशन्तु पुरश्चर्या यथा पुरा ॥

No. 6725. बडबानलरौद्रवीरहनुमन्मन्त्र:.

RADABANALARAUDRAVIRAHANUMANMANTRAH. Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat conceived to be as terrible and as awe-inspiring as the sub-marine fire, and is believed to be helpful in driving off evil spirits.

Beginning:

अस्य श्रीबडबानलरौद्रवीरहनुमन्महामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबडबानलरौद्रवीरहनुमान् देवता ; ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं की-लकं, मम बडबानलरौद्रवीरहनुमत्त्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End :

उं डं सकल्प्रहानुचाटयोचाटय हुं फट् स्वाहा॥

No. 6726. बडवानलसुद्रीनमन्त्र:.

BADABĀNALASUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2316 of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Vișnu's 'discus' conceived as a deity, and is believed to be of help in bringing about the accomplishment of one's desires and in the destruction of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासुदर्शनो देवता; स बीजं, रं शक्तिः, फट् कीलकं, मम स्वक्षेत्रकलत्रपुत्रपशुधनाभिमानिनः, (ये) प्राणैः प्रतिकूलकारिणस्तद्वाड्यनस-कायचेष्टापहतिविनाशनार्थे सुदर्शनमहामान्त्रसिद्धचर्थे जपे विनियोगः .

ओं नमेा भगवते सुदर्शनाय बाहुबलपराक्रमाय अनन्तदिव्यास्ना-खिलशस्त्रोत्पाटनाय अरिमकुटदैत्यमर्दनाय महासुदर्शनाय कल्पान्ताग्नि-स्तम्भोद्भवत्रीविक्रमाकारप्रदीप्ताय बडबानलग्शिखिशिखोत्तुङ्गज्वालासमन्वि-ताय। End:

सुदर्शन श्रियं देहि देहि आयुर्देहि अष्टकष्ठान् विदारय विदारय सर्वे स्नीपुरुषराजवद्यं कुरु कुरु सर्वाभीष्ठसिद्धि कुरु कुरु क्रां क्रीं फं

फं आं प्रों छीं स्नां क्षें इन हन हुं रं यं खे सहसार हुं फट् स्वादा॥

No. 6727. बडवानलाजनेयमालामन्त्र:.

BADABĀNALĀNJANĒYAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 28*a* of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra praises under various significant names Hanumat conceived as an incarnation of Rudra who is held to be as terrible and awe-inspiring as the sub-marine fire.

Beginning:

ओं नमो भगवते बडबानलरौद्ररुद्रावतार ऊर्ध्वकेश उग्रमयङ्कर उग्रचटुलस्फूर्तिदैत्यभञ्जन ।

End:

महामर्कटेशाय बडवानलाअनेयाय हुं फट् स्वाहा ॥

· No. 6728. बन्धविमोचनीमन्त्रः.

BANDHAVIMŌCANĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 302*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra'is believed to have the power to enable one to break through one's fetters and thus free one's self from enchained bondage.

Beginning:

अस्य श्रीबन्धविमोचनीमन्त्रस्य वेदव्यासभगवानृषिः, विराट् छन्दः, बन्धमोचनी देवता; कृं बीजं, क्षें शक्तिः, बन्धमोक्षार्थे विनियोगः । End:

ओन्नमो भगवति बन्धविमोचन्यै काळराव्यै बन्धान्मोचय महा-राष्ट्रि नमस्ते स्वाहा । क्ष्म्य्रां निगळप्रान्थिभञ्जानि श्वङ्कलामोचनं कुरु कुरु स्वाहा । इति ॥

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

No. 6729. बन्धविमोचनीमन्त्रः.

BANDHAVIMOCANIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 101b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबन्धमोचनीमन्त्रस्य वेदघ्यासभगवानृषिः, विराट् छन्दः, बन्धविमोचनी देवता, यं बीजं, ईं शक्तिः बन्धमोचनार्थे विनियोगः End:

क्ष्म्यां निगलप्रन्थिभझनि श्रङ्खलामोचनं कुरु हुं फट् ॥

No. 6730. बन्धीएकाक्षरीमन्त्रः.

BANDHIEKĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 200*a* of the MS. described under No. 424., Complete.

This Mantra is believed to have the magical effect of removing the restraint which prevents the free use of one's left hand.

Beginning:

अस्य श्रीबन्धीएकाक्षरीमहामन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, बन्धी एकाक्षरी देवता, अं बीजं, ईकारश्शक्तिः, बिन्दवः कीलकं, बन्धी—गः । आमित्यादिन्यासः । End:

आं हः—

इरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं प्रविलिख्यति लिख्यति भूमित(र्जद) छे। यदि नश्य(द्य)ति नश्य(द्य)ति वामकरे यदि(प्रबि)मुश्वति मुश्वति श्रङ्खलिकाम्॥

ओं काळि महाकाळि मर्कटमर्कटाय हुं स्वाहा ॥

No. 6731. बहिर्मातृकान्यासः. BAHIRMĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 183b of the MS. described under No. 124. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body uttering at the same time the letters of the alphabet, it being held that each of them denotes a deity.

Beginning:

अभ बहिर्मातृकान्यासः ।

पूर्ववदृष्यादिन्यासः----

ध्यात्वैवं मनसाभ्यर्च्य मातृकास्थानके न्यसेत् । मूर्घा च मुखवृत्तच नेत्रकर्णेषु पार्वति ॥ नासागण्डोष्ठदन्तेषु मूर्घन्येषु च विन्यसेत् । पाणिपादयुगस्यान्ते सन्ध्यप्रेषु कमालिये ॥

End:

सं नमः दक्षहृदादिपाणिपादान्तम् । हं नमः वामहृदादिपाणि-पादान्तम् । ळं नमः जठरे । क्षं नमः मुखे ॥

Colophon:

इति बहिर्मातृकान्यासः ॥

No. 6732. वहिर्मातृकान्यासः.

BAHIRMĀTŖKĀNYĀSAH.

Pages, 3. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 69*a* of the MS. described under No. 446. Complete.

Same as the above.

THE SANSKEIT MANUSCRIPTS.

No. 6733. बहिर्मातृकासरस्वतीमन्त्रः.

BAHIRMÄTRKÄSARASVATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 161*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body uttering at the same time the words of the Mātrkāsarasvatīmantra as a preliminary religious rite relating to the repetition of the Tripurasundarīmantra.

Beginning:

अस्य श्रीबहिर्मातृकासरस्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, बहिर्मातृकासरस्वती देवता; हल्रो बीजानि, अचरशक्तयः, बिन्दबः कीलकानि, श्रीत्रिपुरसुन्दरीजपाङ्गत्वेन बहिर्मातृकान्यासे विनियोगः ।

End:

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोःपन्मध्यवक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामासी(पी)नतुङ्गस्तनीम् । मुद्रामक्षगुणं सुधाव्यकलशं विद्यात्र हस्ताम्बुजैः बिआणां विशदप्रभां तिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥ अन्नम इत्यादि क्षन्नमःपर्यन्तम् ॥

No. 6734. बहिर्मातृकासरस्वतीमन्त्र:.

BAHIRMĀTŖKĀSARASVATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 89a of the MS described under No. 2902. Complete.

This Mantra is the same as the above, and is believed to have the power to secure the favour of the goddess Sarasvatī.

Beginning:

5000

अस्य श्रीबहिर्मातृकासरस्वतीमन्त्रस्य बद्या ऋषिः, गायत्री छन्दः, बहिर्मातृका सरस्वती देवता; हलो बीजानि, खराः शक्तयः, बिन्दवः कीलकं, बहिर्मातृकासरखतीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

छं नमः शक्त्यात्मने नमः इति नाभ्यादिमूर्भि(र्भ)पर्यन्तम् । क्षं नमः बीजात्मने नमः इति मूर्धादिनाभिपर्यन्तम् । सहस्रकमछे परमात्मने नम इति न्यसेत् ॥

No. 6735. बालगोपालमन्त्रः.

BĀLAGŌPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 44*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is addressed to Krsna conceived as a young cowherd.

Beginning:

अस्य श्रीबालगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-बालगोपालो देवता, क्लाँ बीजं, नमरुशक्तिः, बालगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं क्रीं कृष्णाय नमः ॥

Colophon:

बालगोपालमनुः समाप्तः ॥

No. **6736.** बालाकवचम्. BĀLĀKAVACAM.

Pages, 7. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 264b of the MS. described under No. 424. Complete as found in Rudrayāmala.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS. 5001

This Mantra is addressed to the goddess Tripurasundari conceived as a young girl, and is believed to be efficacious in securing protection.

Beginning:

भैरव उवाच--

अधुना उ(सम्प्र)वक्ष्यामि कवचं मन्त्रविग्रहम् । त्रैलेक्यविजयं नाम रहस्यं देवदुर्लभम् ॥ देवदेव महादेव बालाकवचमुत्तमम् । मन्त्रगर्भे परातत्त्वं लक्ष्मीसन्दर्शिनं वरम् । सर्वस्वं मे रहस्यं मे गुद्धं तिदशगोपितम् ॥

एँ बीजं मे शिरः पातु क्षीं बीजं हृदयं मम । सौं फालं पातु बाला (हि)ऐं क्लीं सौः नयने मम॥

End:

इदं रहस्यं परमं सर्वतत्त्वोत्तमोत्तमम् ॥ गुबादुबं महेशानि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥

Colophon:

इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे श्रीबालातिपुरसुन्दरीत्रैलोक्य-विजयं नाम बालाकवचं सम्पूर्णम् ॥

श्रीबालापरमेश्वरार्पणमस्तु बालाकवचम् ॥

No. 6737. **वालाकवचम्.** BĀLĀKAVACAM.

Pages, 4. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 267b of the MS. described under No. 424. Complete as found in the Vāmakēsvaratantra.

Similar to the above.

Beginning:

5002

श्रीदेव्युवाच----

देवदेव महादेव भक्तानां शीतिवर्धनम् ।

सचिताय(न्त्य च) महादेव्याः कवचं कथयस्व मे ॥ श्रीमहादेव उवाच---

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्रुभम्। अप्रकाशं परं गुद्धं साधकाभीष्टसिद्धये॥

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी(कवच)स्तोत्रमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता, ओं बीजं, क्रीं शाक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबाला—गंदः(गः)।

> ओं वाग्भवं पातु शिरसि कामराजस्तथा रुधिः (हृदि)। शक्तिबीजं तथा पातु नाभौ गुह्ये तु पाशक्त(धृ)त् ॥

End:

चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका॥

न च मारिभयं तस्य मुक्तिनाशास्ति यं सिरः (रस्ति न संशयः)॥ गच्छेच्छिवपुरन्देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

Colophon:

इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे बालाकवचकथनं नाम त्रयोदश[स्य]पठनः (टलः)॥

> No. **6738. बालाकवचम्.** BĂLĂ**KAV**ACAM.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.
Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 6192, Complete.
Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6739. बालाकवचम्.

BALAKAVACAM.

Substance, palm-leaf. Size, $5\frac{1}{4} \times 1$ inches. Pages, 9. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, new.

Begins on fol. 1*a*. The other work herein is Rāmadaņdaka 7*a*. Complete.

Same as the above.

No. 6740. वालाकवचम्. BĀLĀKA VACAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 246a of the MS. described under No. 537.

Complete.

Different from the above only in the cololophon given below :---

इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे बालाकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6741. बालाकवचम्.

BÁLĀKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 5888. Complete.

Different from the above only in the colophon given below :--

इति श्रीरुद्रयामले बालात्रिपुरसुन्दरीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6742. बालाकवचम्.

BALAKAVACAM.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{3}{8} \times 1\frac{5}{8}$ inches. Pages, 3. Lines, 11 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 236. The other works herein are Tājakasāra 1a, Bālānyāsa 23a, Bālāparamēśvarīmantra 23a, Bālānyāsa 25a, Bālāstottaraśatanāmāvalī 26a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबालाकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता, पें बीजं, जीं शक्तिः, सौः कीलकं, बालापरमेश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

> ऐंकारिणी शिरः पातु क़ींकारी हृदयं मम सौः पातु पदयुग्मं मे सर्वाङ्गं सकलावतु॥

End:

क्षेत्रं क्षेत्रेशवनिता गृहं गम्भीरनादिनी । धातून् धाममयी पातु सर्वे सेर्वेश्वरी मम॥ इत्येतत्कवचं पुण्यं सर्वपापप्रणाशनम्। सर्वसौभाग्यजनकं सर्वरोगनिबर्हणम् ॥

चत्रत्यत्रशिवोत्र(च)मत्रनिकटे चक्रासनाध्यासिनीं सौन्दर्यार्णनिधि नवाब्दवयसं गौरीं कलालापिनीम् । मालापुस्तकसद्वराभयकरां पूगप्रमाणस्तनीं बालां श्रीललिताम्बिकादुहितरं लीलारसाद्रौ भजे ॥

> No. 6743. बालाकवचम्. BĀLĀKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 244*a* of the MS. described under No. 124. Complete as found in the Kulārņavasamhitā. Similar to the above.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

The portion relating to Rsi (sage), Chandas (metre) and Dēvatā (presiding diety) is the same as in No. 6742.

Beginning:

पूर्वे मां भैरवी पातु ब़ाला मां पातु दक्षिणे। शूलिनी पश्चिमे पातु पाशिनी चोत्तरेऽवतु॥ ऊर्ध्वे पातु महादेवी श्रीबाला परमेश्वरी। अधस्तात्पातु देवेशी पातालतलवासिनी॥

End:

ज्वालामालिनिका नित्यं भेरुण्डा पातु मां शिवा। सर्वाङ्गं सर्वतः पातु श्रीवाला परमेश्वरी॥ इत्येतत्कवचं देवि देवानामपि दुर्लभम्। तव शीत्यै मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः॥

Colophon :

इति कुलार्णवसंहितायां बालासुन्द्रीकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 6744. बालाकवचम्.

BĂLĀKAVACAM.

Pages, 4. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 269*a* of the MS. described under No. 424 Complete as found in the Rudrayāmala. Similar to the above.

Beginning:

मन्दिरे सुखमापेतं(सीनं)भैरवं चन्द्रशेखरम्। बद्धाञ्चलिर्नमस्कृत्य परिष्रच्छति पार्वती ॥

ईश्वर उवाच----

साधु साधु महेशानि सम्यक् त्वं संस्मरिष्यसि । यत्रसादान्महादेवि [लब्धं] त्रिलोवयैश्वर्यमुत्तमम्॥ 410 शिरो रक्षतु मे बाला ललाटं पातु सुन्दरी। कर्णौ श्रीस्सर्वदा पातु नेत्रे कमलवासिनी॥

End:

गृहे रुक्ष्मीर्भये काळी शिवा वाग्वादिनी सदा। मातरोऽष्टौ सर्वकार्ये सर्वदा पातु सुन्दरी॥ इत्येतत्कवचं प्रोक्तं यः पठेत्सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्नौ शान्तिस्तस्य न संशयः॥

गुरुं सन्तोष्य यत्नेन यतनतरतोषयेत् स्त्रियम् । सर्वा भवति देवोशि ममैव वचनं यथा॥

Colophon:

इति श्रीरुद्रयामळे बालाकवचं सम्पूर्णमु॥

No. **6745**. वालाकवचम्. BĀLĀKAVACAM

Pages, 4. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 260*a* of the MS. described under No. 424. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

बालापरमेश्वरीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, बाला परमेश्वरी देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, बालापरमेश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

See under No. 6742 for the end.

No. 6746. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्र:.

BALATRIPURASUNDARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 124,

Complete.

This Mantra is addressed to Tripurasundarī conceived as a young girl; and its repetition is intended to secure the favour of that goddess.

Beginning:

अस्य श्रीवालात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः; विराट् छन्दः, बाला तिपुरसुन्दरी देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम बाला—विनियोगः।

End:

अरुणकिरणजालैरझिताशावकाशा विधृतजपपटीका पुस्तकामीतिहस्ता। इतरकरवराढचा फुल्लकल्हारसंस्था निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला॥ पश्चपूजा॥

No. 6747. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

BĀLĀTRIPURASUNDARĪMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 6514. Complete.

Slightly different from the above at the end, which is given below :--

तदङ्गगायत्रीमन्त्रानुष्ठानं कारिष्ये---

एँ त्रिपुरादेव्ये च विद्महे क्लीं कामेश्वर्ये च धीमहि । तं नो बाला प्रचोद्यात् ॥

No. 6748. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

BÁLÁTRIPURASUNDARÍMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 23b of the MS. described under No. 5660. Complete.

410-A

Slightly different from the work described under No. 6746 at the end as given below :---

मन्त्रः--- ऐं क्रीं सौः ॥

No. 6749. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्र:.

BÂLÂTRIPURASUNDARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 10*a* of the MS. described under No. 5673. Complete.

Same as the above.

No. 6750. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

BÂLÂTRIPURASUNDARÎMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 42*a* of the MS. described under No. 3862. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबाला परमेश्वरी देवता ; ऐं बीजं, सौः शाक्तिः, क्रीं कीलकं, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः। End:

स्तम्भनं चतुरश्रं च मत्स्यं गोमुखमेव च। योनिमुद्रेति विख्याता बालामुद्रास्तदा द्विजैः॥

यन्त्रोद्धारणम्—

बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलयुग्मकम् । चतुरश्रं चतुर्द्वारं बालाचकं विधीयते ॥

No. 6751. बालात्रिपुरसुन्द्रीमन्त्रः.

BALATRIPURASUNDARIMANTRAH.

Page, I. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 70b of the MS. described under No. 235,

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to the goddess Bālātripurasundarī, is believed to be conducive to the securing of prosperity.

Beginning:

पूर्वोक्तैवङ्गुण . . ऐश्वर्थाभिवृद्धर्थमस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीम-न्त्रजपं करिष्ये।

End:

ऐं त्रिपुरसुन्दर्ये च विद्महे क्रीं कामेश्वर्ये च धीमहि । सौः तन्नो बाला प्रचोदयात्।।

तद्दशांशतर्पणम् । अरुणकिरण.

गुद्धातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिभेवतु मे देवि त्वत्रसादान्मायी स्थिरम् ॥

अनेन यथाशक्तिजपेन भगवती सर्वात्मिका श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी सुप्रीता वरदा भवेत्॥

No. 6752. बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

BÄLÄTBIPURASUNDARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 673. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the goddess Tripurasundarī conceived as a young girl.

Beginning:

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता ; ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्रीं कीलकं, मम बालत्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ऐं क्लीं सौः बालातिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

5009

.

No. 6753. बालात्रिपुरसुन्द्रीमन्त्रः. BALATRIPURASUNDARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 3862. Complete.

The repetition of this Mantra is believed to enable one to see a vision of the goddess Bālātripurasundarī and also to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता ; ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरीस्वरूपसाक्षात्कारार्थे ममेष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः। End :

मनुः--

ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं इति यथाशक्ति जपित्वा पुनईदयादिन्या-सध्यानं कुर्यात् ॥

No. 6754. बालातिपुरसुन्दरीमन्तः. BÁLÁTRIPURASUNDARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 5683. Complete.

Same as the above.

No. 6755. बालात्रिपुरसुन्द्रीमन्त्रः. BALATRIPURASUNDARIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 537. Complete.

Same as the above.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

5011

No. 6756. बालात्रिपुरासरस्वतीमन्त्रः. BALATRIPURASARASVATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 273*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sarasvatī conceived as young Tripurā, and is believed to enable one to accomplish one's desires. Tripurā is a manifestation of Sakti, and her very name is held to indicate that she bestows at once Dharma, Artha and Kāma on the supplicant.

Beginning:

अस्य श्रीबालात्रिपुरासरस्वतीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किइछन्दः, श्रीबाला त्रिपुरा सरस्वती देवता; ऐं वीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कोलक, मम समस्तकाम्यार्थे विनियोगः।

End:

ऐङ्कारासनगर्भितानलशिखां सौाः क्रीं करौ विश्रतीं सौवर्णाम्बरधारिणीं वरसुधाधौतान्तरङ्गानुगाम् । वन्दे पुस्तकपाशमङ्कराजपास्त्रैर्बाहुमत्य(मुद्य)त्करां

तां बालां त्रिपुरां परापरमयीं षट्चकसञ्चारिणीम् ॥ Colophon:

इति शुद्धबालामन्त्रः॥

बालामेदाः—मेरवबाला, त्रिपुरबाला, सुन्दरबाला, ललितबाला॥

No. 6757. बालात्रिपुरासरस्वतीमन्त्रः.

BÄLÄTRIPURÄSARASVAIIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 229b of the MS. described under No. 581. Complete.

Same as the above.

No. 6758. बालात्रिपुरासरस्वतीमन्त्रः.

BĀLĀTRIPURĀSARASVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 86b of the MS. described under No. 5566. Incomplete.

Same as the above.

No. 6759. बालात्रैलोक्यमोहनकवचः.

BÂLĀTRAILÕKYAMŎHANAKAVACAH

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 72*a* of the MS. described under No. 4384. Complete.

This Mantra is addressed to Dēvī conceived as a young girl; and its repetition is understood to enable one to secure her protection, and bring about confusion and bewilderment in all the three worlds.

Beginning:

बालाया हृदि देवेन्द्र श्रींविद्या . . . । कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥ * * * * * लैलेकेक्यमोहनं नाम कवचं श्रूयतां वरम् ।

ऐं क्लीं सौमें शिरः पातु ऐं पायान्मे ललाटकम्। क्लीं मे नेत्रद्व्यं पातु सौः पातु मम नासिकाम्॥

End:

तस्व गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्रे वसेद्भुवम् ॥ Colophon:

इति बालापरमेश्वरीत्रैलोक्यमोहनकवचं सम्पूर्णम् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

5013

No. 6760. बालादेवीमन्त्रः.

BÂLÂDĒVĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 6548.

Incomplete.

This Mantra is also addressed to Dēvī conceived as a young girl.

Beginning:

अस्य श्रीबालादेवीमन्त्रस्य बह्या ऋषिः, गायत्री छन्दः, बाला सरस्वती देवता ; सौः बीजं, हीं शक्तिः, क्वीं कीलकं.

The leaves containing the remaining portion of the Mantra are missing.

No. **6761. बालान्यासमन्त्र:.** BĀLĀN**Y**ĀSAMANTRAĦ..

Pages, 5. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 6742.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, repeating at the same time the appropriate letters of the Mantra relating to the goddess Bālātripurasundarī.

Beginning:

अस्य श्रीबालान्यासमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

अरुणकिरण=शीला । ऐं पादयोः शैलपुत्र्ये नमः । क्लीं जान्वो-ब्रेह्माण्ये नमः । सौः कट्यां चामुण्डाये नमः । सौः नाभौ कूरुमाण्डाये नमः ॥ End:

5014

ऐं वामपार्श्वे सरस्वत्ये नमः ।

जपेद्य एवं न्यासं (तु) वसत्येव न संशयः ।

तस्यै तु सकलां देवी ददौ बाला महेश्वरी ॥

Colophon:

न्यासः समाप्तः ॥

No. 6762. बालापरमेश्वरीत्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

BALAPARAMEŚVARITRIPURASUNDARIMANTRAH. Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 228*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the goddess Bālātripurasundarī.

Beginning:

अस्य श्रीबालापरभेश्वरीत्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी—योगः ।

End:

मनुः----षें क्वीं सौः सौः क्वीं ऐं ॥

No. 6763. बालापरमेश्वरीन्यासः.

BALAPARAMĒŚVARĪNYĀSAH.

Pages, 6. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 2021 of the MS. described under No. 424. Complete.

On details connected with the ceremonial, touching of certain parts of the body, uttering at the same time the appropriate letters of the Bālāparamēśvarī-mantra.

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

Beginning:

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपातें पीठत्रयं भैरवं सिद्धौधं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् । वीराद्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपश्चकं श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसाहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, श्रीबाला परमेश्वरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्रीं कीलकं, श्रीबाला-परमेश्वरीप्रसादसिच्द्वर्थे जपे विनियोगः । ऐं नमः नाभ्यादिपादएर्यन्तम् । क्रीं नमः गळादिपादपर्यन्तम् । सौः नमः मूर्धादिकण्ठान्तम् ।

End:

उत्तरन्यासं कुर्यात् । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्विमोकः । ध्यानम् । अरुण=शीला । पत्रपूजा । मुद्रा । देहबुद्धिप्राणाधिकारजाय्रत्स्वमसुषु-प्ति(षु)मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भचामुदरेण शिश्रा यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वमात्मस्वरूपिश्रीगुरुदेवतार्पणमस्तु ।

> शङ्खं चक्रव यो।निव वरदाभयपाशकम् । अङ्कशं सुरभिं पद्मं नव मुद्राः प्रकीर्तिताः ॥

No. 6764. बालापरमेश्वरीमन्त्र:. BALAPARAMÉŚVARIMANTRAH.

Fage, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 228b of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra also is addressed to the goddess Bālā, who is a manifestation of Dēvī, and it is believed to have the power to secure the favour of that goddess.

Beginning:

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, बाला परमेश्वरी देवता, ओं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम बाला— गः।

End:

5016

मनुः—

ओं क्रीं सौः सौः क्लीं इं बालापरमेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6765. बालापरमेश्वरीमन्त्रः.

BALAPARAMEŚVARIMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5683. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-त्रिपुरा बाला परमेश्वरी देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबालापरमेश्वरीप्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः । End:

मनः--

ऐं कीं सौः, सौः कीं ऐं ॥

इति मन्त्रं यथावकाशं जपेत्, पुनर्न्यासादिकं, योनिमुद्रया श्री-गुरुनाथार्पणं कुर्यात् ॥

No. 6766. बालापरमेश्वरीमन्त्रः.

BĀLĀPARAMĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 23*a* of the MS. described under No. 6742. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीवालापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः; अनुष्टुप् छन्दः, बाला तिपुरसुन्दरी देवता; ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीबालापरमेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जुपे विनियोगः ।

End:

मूलमन्त्रः--

ओं ऐं डीं सौः, सौः कीं ऐं ॥

No. 6767. बालापरमेश्वरीमालामन्त्रः.

BĀLĀPARAMĒŚVARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 248*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Bālāparamēśvarī who is a manifestation of Śakti.

Beginning:

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्कि-रछन्दः बाला परमेश्वरी देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम बालापरमेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

जगद्रक्षिणि जगदानन्दे ओन्नमो भगवति बालापरमेश्वरि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ॥

No. 6768. बालापरमेश्वरीमालामन्त्रः.

BĀLĀ PARAMĒŚVA RĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 19*a* of the MS. described under No. 2040. Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to place one out of danger and secure protection from all kinds of evils.

Beginning:

5018

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, बाला परमेश्वरी देवता, बीजत्रयेण बीजादिन्यासः ।

आं पराशक्तिपरमाक्षरीचण्डकपालिनि भोगस्प्रशे परिम्रमणि अष्टहा-सिनि ओड्याणपीठनिवासिनि एब्रेहि पीठे. End :

निर्भयं कुरु कुरु मां रक्ष रक्ष मम दुरितान् हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6769. बालापरमेश्वरीमालामन्त्र:.

BĀLĀPARAMĒŚVARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15*a* of the MS. described under No. 6192. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबालापरमेश्वरीमालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पाक्किश्छ-न्दः, बाला परमेश्वरी देवता; ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्रीं कीलकं, मम बालापरमेश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जर्पे विनियोग: ।

ओं नमो भगवते दिग्बन्धनाय कङ्कालि कालरात्रि ऐंकारि क्लीं-कारि सौःकारि ।

End:

जगद्रक्षिणि जगदानन्दे ओं नमो भगवति श्रीमह्रालापरमेश्वरि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ॥

No. 6770. बालापरमेश्वरीमालामन्त्रः.

BĀLĀPARAMĒŚVARĪMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page. Begins on fol. 18b of the MS. described under No. 5864.

Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to bring under one's control the army of a hostile king.

Beginning:

ओन्नमो भगवति श्रीमद्बालापरमेश्वरि अयुतसहस्रकोटिरुद्रगणसेविते लक्षकोटिविष्णुगणसेविते अनेककोटिब्रह्मगणसेविते प्रतापिनि ज्वल ज्वल. End:

सकलराजसेनां मम वशं कुरु कुरु हां ही हू हैं हों हः हुं फट् रवाहा ॥

No. 6771. वालामनत्र:. BĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 17*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is also intended to propitiate the goddess Dēvī conceived as Bālā.

Beginning:

अस्य श्रीबालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, बाला-म्बा देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, बालाप्रीत्यर्थे विनि-योगः ।

End:

एं क्ली सौः सौः क्ली एं ।)

No. 6772. वालामालामन्त्र:. BALAMALAMANTRAH

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5683. Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Bala under various significant names. Its repetition is believed to have the power to enable one to bring people under one's control. 5020

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

Beginning:

ओं नमो भगवति मुखकमलवासिनि सर्वराजवशङ्करि सर्वलोकवश-ङ्करि ।

End :

अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥

त्वं कालि सर्वजगतां पीति सर्वमन्त्रार्थसिद्धचर्थं शीघ्रमेव प्रसीद मे ॥

No. 6773. बालासम्पुटितमातृकान्यासमन्त्रः.

BĀLĀSAMPUŢITAMĀTŖKĀNYĀSAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 193b of the MS. described under No. 124. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating the series of Mantra formulas containing the various letters of the alphabet introduced between the Bālā-Mantra formula in the natural order and the same formula in the inverse order.

Beginning:

अस्य श्रीबालासम्पुटितमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पाक्कि-इछन्दः, श्रीबाला वागीश्वरी देवता; ऐं व्यज्जनानि बीजानि, सौः स्वरा-इशक्तयः, क्लीं व्यक्तयः कीलकं, ममेष्टदेवताप्रीत्यर्थे बालासम्पुटितमातृ-कान्यासे विनियोगः ।

End:

ऐं क्लीं सौः अं नमः सौः क्लीं ऐं इति क्षान्तं न्यसेत् ॥ Colophon:

इति बालासम्पुटितमातृकान्यासः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6774. बालासम्पुटितमातृकान्यासमन्त्रः.

BĀLĀSAMPUŢITAMĀTŖKĀNYĀSAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 139b of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

This Nyāsamantra is stated to be an auxiliary to the Śrīvidyāmantra.

Beginning:

अस्य श्रीबालासम्पुटितमातृकासरस्वतीमन्नस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, बालासम्पुटितमातृका देवता; ऐं बीजं, क्वीं शक्तिः, सौः कीलकं, ममोपास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन बालासम्पुटितमातृकान्यासे विनि-योगः ।

End:

ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं सौः क्लीं ऐं नम इति क्षं नमः-पर्यन्तम् ॥

No. 6775. बालाहद्यम्.

BALAHRDAYAM.

Pages, 5. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 258*a* of the MS. described under No. 424. Complete as found in the Jñānārņava.

This is considered to be the most secret Mantra relating to the goddess Bālā. Its repetition is intended to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

महादेव नमस्तुभ्यं विरूपाक्षाय ते नमः । बालाया हृदयं मन्त्रं गुप्ताद्गुप्ततरन्तथा ॥ 411

End :

आं हीं कों मम हृदये चिरन्तिष्ठ हुं फट् स्वाहा ॥ वन्ध्याया मार्जयेद्गङ्गा(दङ्गं)वालाया हृदयेन च । वन्ध्या पुत्रवती चैव षण्मासं भ(साद्भ)वाते ध्रुवम् ॥ नित्यमष्ठोत्तरशतं वालाया हृदयं मनुः(नेत्) । चिन्तितञ्च भवेदेवि नात्र कार्या विचारणा ॥

Colophon:

इति ज्ञानाणवे बालाहदयं सम्पूर्णम् ॥

No. **6776. वालाहद्यम्.** BĀLĀ田県DA**YAM**.

Pages, 9. Lines, 5 on a page. Begins on fol. 68*a* of the MS. described under No. 4384.

Complete. Same as the above.

> No. **6777. वालाहदयम्.** BÀLĀHŖDA**Y**AM.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 247*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

Same as the above.

No. 6778. बिन्दुमातृकान्यासमन्त्रः. BINDUMĀTŖKĀNYĀSAMANTBAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 192b of the MS. described under No. 124. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering at the same time the letters of the alphabet combined with the Anusvāra, such a combination itself constituting a Mantra formula,

Beginning:

अथ बिन्दुमातृकान्यासः--

अस्य श्रीबिन्दुमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, संहारशारदा देवता; व्यअनानि बीजानि, खराश्शक्तयः, बिन्दवः कीलकं, बिन्दुमातृकान्यासे विनियोगः ।

End:

ओं अ (अं) नमः इति क्षान्तं न्यसेत् ॥

Colophon:

इति बिन्दुमातृकान्यासरसमाप्तः ॥

No. 6779. बिन्द्रमात्रकासरस्वतीमन्त्रः.

BINDUMĀTRKĀSARASVATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 138b of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

This Mantra is considered to be auxiliary to the Srīvidyāmantra.

Beginning:

अस्य श्रीबिन्दुम तृकासरस्वतीमन्तस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, बिन्दुमातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराश्शक्तयः, बिन्द्वः कीलकं,ेममोपास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन बिन्दुमातृकान्यासे विनियोगः । End:

एँ हीं श्रीं क्षं नम इति विलोमेन अःपर्यन्तम् ॥

No. 6780. जुधकवच:. BUDHAKAVACAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 2886, Complete as found in the Skanda-purana.

411-A

This Mantra is addressed to Budha, i.e., the planet Mercury, who, according to the Purāņas, is the son of Candra and Tārā; and its repetition is understood to have the power to enable one to accomplish one's desires and to live long.

Beginning:

अस्य बुधकवचस्तोलमहामन्त्रस्य (ऋषिच्छन्द (आ)दिकं पूर्ववत्)। बुधः पातु शिरोदेशं सौम्यः पातु च फालकम् । नेले ज्ञानमयः पातु श्रुती पातु विधोः सुतः ॥

End:

5024

यः पठेत्कवचं दिव्यं श्रृणुयाद्वा समाहितः । सर्वान् कामानवामोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥

Colophon:

इति स्कान्दुपुराणे बुधकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6781. बुधमन्त्र:. BUDHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 310b of the MS. described under No 5477. Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Budha. Beginning:

अस्य श्रीसोमसुतबुधमन्त्रस्य प्रस्कण्व ऋषिः, बुधो देवता ; त्रिष्टुप् छन्दः, मम बुधप्रसादसिच्द्यर्थे जपे विनियोगः । End :

मन्त्रः---ओं ब्रां बुधाय सोमसुताय नमः । लक्षं जपः, दशांशहोमः । इति ॥

No. 6782. बहद्वाराहीमन्त्रः. BRHADVĀRĀHĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 673. Complete.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS. 5025

This Mantra is addressed to the goddess Brhadvārāhī, i.e., Vārāhī the great; and its repetition is believed to secure the favour of that goddess, and thus enable one to bring persons under one's control.

Beginning:

अस्य श्रीब्रहहाराहीमहामन्त्रस्य भूवराह ऋषिः, अतिजगती छन्दः, वाराही देवता, ग्लौं बीजं, ऐं शक्तिः, सौः कीलकं, मम वाराहीप्र-सादसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु क्लीं सौः ग्लौं ऐं ठठठठ हुम्फट् स्वाहा । वार्ताल्यम्बाश्री—नमः ॥

No. 6783. बृहद्वाराहीमन्त्र:.

BRHADVÂRĀHĪMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 581. Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबृहद्वाराहीमन्त्रस्य त्रिलोचन ऋषिः, अति(जगति) छन्दः, श्रीबृहद्वाराही परमेश्वरी देवता, ऐं बीजं, फट् शक्तिः, ग्लां कीलकं, ठकारं प्राणं, मम इष्ठकाम्यार्थसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End :

पादुकाभ्यां नमः भक्तजनकामधेनो सकलजनमोहिनि छं म.

No. 6784. बृहद्वाराहीमन्त्रः.

BRHADVÄRÄHIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 87b of the MS. described under No. 5556. Incomplete.

Same as the above.

No. 6785. बृहद्वाराहीमन्त्र:. BRHADVĀRĀHĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 230*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

It is believed to be possible to make people become tonguetied and also powerless to move, by the repetition of this Mantra.

Beginning:

अस्य श्रीबृहद्वाराहीमहामन्त्रस्य भूवराह ऋषिः, अतिजगती छन्दः, बृहद्वाराही देवता, ग्लौं बीजं, ऐं शक्तिः, सौः कीलकं, बृहद्वाराही-प्र—गः ।

End:

गतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रवश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठ ठठठ हुं फट् स्वाहा । वाराह्यम्बादि—मः ॥

No. 6786. बृहस्पातिकवचः. BRHASPATIKAVACAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the Brahmavaivartapurāna.

This Mantra is addressed to Brhaspati, who, according to the Purāņas, is the priest and preceptor of the Dēvas; and its repetition is held to have the power to enable one to accomplish one's desires and to make one become venerable and victorious.

Beginning:

(ऋषिच्छन्दआदिकं पूर्ववत्) ध्यानम् । अभीष्ठफलढदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम् । सर्वकार्यार्थसिद्धचर्थं प्रणमामि गुरुं सदा ॥ बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः । कणौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्ठदायकः ॥

End:

सर्वान् कामानवामोति सर्वत्र विजयी भवेत् । सर्वत्र पूज्यो भवति वाक्पतेर्हि प्रसादतः ॥

Colophon:

इति बस्नवैवर्ते बृहस्पातिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6787. बृहस्पतिमन्त्रः. BRHASPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 311*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

The repetition of this Mantra is supposed to have the power to secure the favour of Brhaspati.

Beginning:

अस्य श्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य रू (गृ) त्समति(द) ऋषिः, बृहस्पतिर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः, मम बृहस्पतित्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

No. 6788. बेतालकवचः. BĒTĀLAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 39*a* of the MS. described under No. 5987, wherein this Mantra has been omitted to be included among the other works contained therein

Complete.

Addressed to a Bētāla (vampire) and held to be efficacious in destroying and driving away evil spirits and in conferring victory on kings, and in making one's enemies become tongue-tied, etc. **Beginning**:

बेतालकवचं वक्ष्ये राज्ञां विजयकारणम् । शत्रूणां भयदं प्रोक्तं शृणुष्वैकमनारिस्थतः ॥ बेतालकवचस्यास्य ऋषिरीश्वर ईरितः । अथर्वणइछन्द इति देवो बेताल ईरितः ॥

बेतालस्तु शिरः पातु फालं फालेक्षणस्ततः । श्रवणे पातु विश्वात्मा नेत्रे पातु महेश्वरः ॥

End:

पिशाचाद्याः प्रणश्यन्तिं सर्वत्र विजयी भवेत् । शत्रुस्तम्भनमुख्यानि वेतालस्य प्रसादतः । युद्धे तु पठचमानस्य कवचस्य प्रसादतः । सर्वकार्याणि सिध्यन्ति नात्न कार्या विचारणा ॥

Colophon:

इत्याथर्वणे बेतालकवचं संपूर्णम् ॥

No. 6789. बेतालमैरवमन्त्रः.

BETÁLABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 5445. Complete.

An invocation to a Bētāla conceived as Bhairava with a view to counteract the evil effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमैरवमन्त्रस्य बह्या ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-बेतालमैरवो देवता ; क्लीं बीजं, हीं शक्तिः, परप्रयोगविध्वंसनार्थे जपे बिनियोगः ।

End :

परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्तपरहन्ता परकट्टु भिन्न छिन्न हीं फट् स्वाहा ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6790. बेतालमेरवमहामन्त्रः.

BETALABHAIRAVAMAHAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 5828. Complete.

This Mantra is believed to be efficacious in removing the fears arising from evil spirits and in accomplishing one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमैरवमहामन्त्रस्य बह्या ऋषिः, तिष्टुप् छन्दः, श्री-मद्वेताळमैरवो देवता, क्षं बीजं, स्वाहा शक्तिः, इति कीलकं मम समस्त-भूतप्रेतपिशाचसर्वभयनाशनार्थे इष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

सर्वशत्रुक्षयकरं सदा विजयवर्धनम् ।

एवं ध्यात्वा तु तद्रूपं मानसे।परि विन्यसेत् ॥

No. 6791. बेतालमन्त्र:.

BETALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 37*a* of the MS. described under No. 5987. Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to a Bētāla, is believed to be efficacious in counteracting the evil effects of black magic, in destroying one's enemies, in depriving people of the power of speech and in promoting one's prosperity and also in bringing kings under the control of one's magic spell.

Beginning:

एवष्टुणविशेषणविशिष्टायां गुभतिथौं महादुष्टारिष्टपरिहारार्थं सर्वश-त्रुक्षयार्थं मत्क्र(ते कृताक्र)यमाणकरिष्यमाणसर्वाभिचारानिवारणार्थं सर्वमहा-कालकात्निमदोषनिवारणार्थं सर्वतन्त्रनिवारणार्थम्

सर्ववाक्स्तम्भनार्थं संवैश्वर्यप्राप्त्यर्थे (र्थ) [जपे विनियोगः] बेतालमन्त्र-जपं (कारष्ये)।

अस्य श्रीबेतालमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, विराट् छन्दः, बेतालो देवता ; राजवशीकरणार्थे विनियोगः ।

End:

मनुः—

कुरु कुरु बेतालाय स्वाहा ॥

No. 6792, वेतालमन्त्र:. BĒTĀLAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 6192. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमहामन्त्रस्य सकल ऋषिः, गायत्री छन्दः, बेताले देवता ; सर्वाभीष्ठफलसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः---ओं हीं कुरु कुरु बेतालाय स्वाहा ॥

No. 6793. बेतालमन्त्र:.

BETÄLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 175*a* of the MS. described under No. 5661. Complete.

Same as the above.

No. 6794. बेतालमन्त्र:. BĒTĂLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page

Begins on fol. 48*a* of the MS. described under No. 21, wherein this Mantra has been omitted to be given among the other works contained therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, प्रलयबेतालो देवता; द्रां बीजं, द्रीं शक्तिः, ब्द्धं कीलकं, मम बेतालवरप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

मूलम्-

द्रां द्वीं ब्लं महाबेतालाय ममाभिमुखं नमः स्वाहा ॥

No. 6795. वेतालमालामन्त्रः.

BĒTĀLAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 48*a* of the MS. described under No. 21, wherein this Mantra has been omitted to be given among the other works contained therein.

Complete.

Similar to the above. Believed to be efficacious in driving away evil spirits.

Beginning:

अस्य श्रीब्रह्मराक्षसादिभूतोचाटनमन्त्रस्य बेतालब्रह्मा ऋषिः, वीर-भद्रबेतालो देवता, हुं हुं हुं बीजं, बं बं बं शाक्तिः, झां झां झां कीलकं, मम ब्रह्मराक्षसोचाटनवेतालवरपसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः। End:

विदारय विदारय नवयोजनान्तरपर्यन्तमुचाटनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 6796, बेतालमालामन्त्र:.

BETALAMALAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 178*a* of the MS. described under No. 5661. Complete.

This Mantra is believed to be efficacious in counteracting the evil effects of black magic.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमहा (माला) मन्त्रस्य सकळ ऋषिः, बेतालो देवता ; ऌत्रिमादिसकलप्रयोगोचाटनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

सकलदेवता बन्ध बन्ध ओं हां हीं हूं हैं हौं हः हुं फट् स्वाहा॥

No. 6797. बेतालमालामन्त्रः.

BĒTĀLAMĀLĀMANT RAH.

Pages, 15. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 26b of the MS. described under No. 6192. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमहा(माला)मन्त्रस्य सकल ऋषिः, गायत्री छन्दः, कृत्रिमादिसकलप्रयोगोच्चाटनार्थे जपे विनियोगः ।

ओं नमो भगवते प्रलयान्तकमहाबेतालाय नागयज्ञोपवीताय जटा-मकुटधारणाय.

End:

ओं हां हीं हूं हैं हों हुः हुं फर् खाहा ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6798. बेतालमालामन्त्र:. BÉTÁLAMÁLÁMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1750 of the MS. described under No. 5661. Complete. Same as the above.

No. 6799. वेतालमालामन्त्र:. BETĀLAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 5864.

Complete.

This Mantra invokes the aid of a Bētāla to counteract the evil effects of black magic.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, बेतालो देवता, ओं बीजं, खाहा शक्तिः, खयंप्रकाश इति कीलकं, मम बेताल-प्रसादासिच्चर्थे कृत्रिमादिसकलब्रह्मराक्षसादिपरिहारार्थे जपे विनियोगः ।

ओं नमो भगवते प्रलयान्तकमहाबेतालाय नागयज्ञोपवीताय जटा-मकुटध्राय ।

End:

ओं श्रीं श्रीं इमशानबेतालाय खाहा । खडुबेतालाय खाहा ॥

No. 6800. बेतालमालामन्त्र:.

BETALAMALAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 5987. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालमालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाबेतालो देवता, कृत्रिमादिसकलदोषपरिहारार्थे जपे विनियोगः ।

ओं नमो भगवते प्रलयान्तकमहाबेतालाय नागयज्ञोपवीताय जटा-मकुटधराय महाभयङ्कराय गदात्रिशूलादिद्वात्रिंशदायुधधराय. End:

वेतालदेवतां मम इष्टसिद्धिवेतालदेवतां मम कार्यसिद्धिवेतालदेवतां हीं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6801. बेतालरूपदक्षिणामूर्तिमन्त्र:.

BĒTĀLARŪPADAKṢIŅĀMŪRTIMANTRAH. Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 5864. Complete.

The repetition of this Mantra is held to have the power to secure the favour of Siva conceived as a Bētāla.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालरूपदक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबेतालरूपदक्षिणामूर्तिरुद्रो देवता ; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम बेतालरूपदक्षिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनि-योगः ।

End:

दक्षिणानूर्तिरूपं च बेतालं वटमूलके।

सुखासीनं सदा वन्दे मुनिभ्यस्तत्त्वदर्शनः (म्) ॥

No. 6802. बेतालेश्वरमन्त्रः.

BETĀLĒŚVARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20*a* of the MS. described under No. 5864. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the lord of the Betalas,

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

Beginning:

अस्य श्रीबेतालेश्वरमहामन्त्रस्य सकल ऋषिः, गायत्री छन्दः, बेता-लेश्वरो देवता; ओं बीजं, कुरु कुरु शक्तिः, स्वाहा कीलकं, बेताले-श्वरप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

मनः—

ओं कुरु कुरु बेतालाय स्वाहा ॥ पुनः पश्चपूजा ॥

No. 6803. ज्रह्मगायत्री. BRAHMAGAYATRĪ.

Pages, 2: Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 6b of the MS. described under No. 5786. Complete.

This is the ordinary Gāyatrī-mantra. Its repetition is supposed to please Nārāyaņa. The word Gāyatrī means that it protects the person who repeats it.

The preliminary details mentioned here are those observed by Māthva Brahmins.

Beginning:

अथ ब्रह्मगायत्रीमन्त्रः----

ओं मूः, ओं भुवः, ओं सुवः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः, ओं सत्यं . भूर्भुवस्सुवरोम् — इति प्राणायामः १२ ।

अस्य श्रीब्रह्मगायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सवि-तृनामकश्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, नारायणप्रेरणया नारायणीप्रीत्यर्थे ब्रह्म-गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

श्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे ब्रह्मगायत्रीमन्त्र-जपं करिष्ये । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्—इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6804. ब्रह्मपश्चाक्षरमन्त्र:.

BRAHMAPAÑCĀKṢARAMANTRAH. -

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 22*b* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is addressed to Brahmā and consists of 5 syllables. The preliminary details are those observed by Mādhva Brahmins.

Beginning:

ओं ब्रह्मणे नमः इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीपश्वाक्षरब्रह्ममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीब्रह्मा देवता, ब्रह्मप्रेरणया ब्रह्मप्रीत्यर्थे पश्वाक्षरब्रह्ममन्त्रजपे विनियोगः । End:

श्रीब्रह्मप्रीत्यर्थं पश्वाक्षरब्रह्ममहामन्त्रजपं करिष्ये ।

ओं ब्रह्मणे नमः ओं । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत ॥

No. 6805. बह्मसुदर्शनमन्त्र:.

BRAHMASUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 226*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Vișnu's 'Discus '; and its repetition is supposed to be efficacious in destroying bad people and evil spirits, and in bestowing long life. The Mantra is called Brahmasudarśanamantra, because Brahmā is declared to have discovered and revealed it.

Beginning:

अस्य श्रीब्रह्मसुदर्शनमन्त्रराजस्य बह्या ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मसुदर्शनमन्त्रसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । कों हैं नमो भगवते ब्रह्म- सुदर्शनाय महाप्रसादचकराजाधिराजाय ज्वालाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल र र ल ल प्रस्फुर डम डम डिमि डिमि डुम. End :

ओं नमो भगवते ब्रह्मसुदर्शनाय. रुष्(ष्य)म-दारय दारय मम आयुः कुरु कुरु अह हुं सहस्रार हुं फट् खाहा ॥

No. 6806. ब्रह्माणीऋड्मन्त्र:.

BRAHMÁNÍRNMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 25h of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consists of the 49th Rk occurring in the 164th Sūkta of the 1st Mandala of the Rgvēda. It is in praise of the goddess Brahmānī who is Brahma's Śakti conceived as a deity.

Beginning:

यस्ते स्तनस्य रा(शश)यो यो मयोभूः . . तवेकः, इति प्राणा-यामः १२.

अस्य श्रीब्रह्माणीऋड्मन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री-ब्रह्माणी देवता; ब्रह्माणीप्रेरणया ब्रह्माणीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

यस्ते स्तनस्य रा(शश)यो यो मयोभूः येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि। . . . इह धातवे कः-इतिः जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6807. ब्रह्माणीपञ्चाक्षरीमन्त्र:.

BRAHMĀNĪPAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consisting of 5 syllables is also intended to win the favour of the goddess Brahmāņī.

Beginning :

व्यों त्रक्षाण्ये नमः इति प्राणायामः १२. . . .

अस्य श्रीब्रह्माणी(पश्वाक्षरी)मन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, पश्किरछन्दः, बह्माणी देवता; ब्रह्माणीप्रेरणया ब्रह्माणीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ब्रह्माणीत्रीत्यंभे ब्रह्माणीपञ्चाक्षरमहामन्त्रजपङ्कारिष्ये । ओं ब्रह्माण्ये नमः-इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6808. ब्रह्माणीमन्त्रः.

BRAHMANIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । परमे व्योमन् इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीब्रह्माणीमन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, जगती छन्दः, ब्रह्माणी देवता, ब्रह्माणीप्रेरणया ब्रह्माणीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ब्रह्माणी त्रेरणया ब्रह्माणी शील्यर्थं ब्रह्माणी महामन्त्रजपङ्कारिष्ये । गौरी मिमाय . . . परमे व्योमन्तित्यन्तं जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6809. ब्रह्मास्त्रमन्त्र:.

BRAHMÁSTRAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 2496 of the MS. described under No. 581.

Complete.

This Mantra is addressed to the Brahmästra and is considered to secure protection to one from dangers. It is really the Gayatrimantra written in the reverse order.

Beginning:

यादचोत्र नो यो योधि । हिमधी स्यवदे गोंभ । यांणरेर्वतुवित्सत । इति ब्रह्मास्त्रः ।

End:

ब्रह्मणे शिरर (से)मां रक्ष रक्ष ठठठठ इति ब्रह्मशिरोनामकम् हों शिवास्त्राय हुं फट् ओं चि चि क्ष(छ)रिकास्त्राय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6810. ब्रह्मास्त्रमन्त्र:.

BRAHMASTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 102*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6811. ब्रह्मास्त्रमन्त्रः. BRAHMĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 2956 of the MS. described under No. 5377 Complete.

412-A

This Mantra is also addressed to Brahmāstra, but is different from the previous one. Its repetition is also held to have the power to secure protection to one from dangers.

Beginning:

ओं हीं हीं ओं नमो बहाणें कं कं मां रक्ष रक्ष। End:

छुरिकास्त्राय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon:

इति ब्रह्मारलम् ॥

No. 6812. ब्रह्मार्लमन्त्र:.

BRAHMASTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 6157. Incomplete.

The repetition of this Brahmästramantra is believed to enable one to make one's enemies stand still and become powerless.

Beginning:

अस्य श्रीब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य नारद ऋषिः, विराट् छन्दः, बगलामुखी देवता, ओं ह्वां बीजं, ओं स्वाहा शक्तिः, मम सकलशत्रुस्तम्भनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

जिह्वां कीलय कवचाय हुं बुद्धि विना.

No. 6813. जासीमन्त्र:. BRAHMIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886. Complete. This Mantra is addressed to Brahmā's Śakti conceived as Gāyatrī.

Beginning:

बाह्रम्याः ब्रह्मा, गायत्री, गायत्री देवता, भूः बी, गायत्री शाक्तिः, प्रसाद की, मूलेन न्यासः । End:

> तारच बीजमुद्धृत्य गायत्रन्तदनन्तरम् । जपेदक्षरसाहसं तदर्धं वा सहस्रकम् ॥

No. 6814. भागेनीमन्त्रः.

BHAGINĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 303*a* of the MS. described under No. 5477. Complete. •

This Mantra is addressed to the goddess Bhaginī who is a manifestation of Śakti.

Beginning and End:

ओं नमो भगवति भगिनीश्वरि भगाय गुद्धं नमः क क्ष ल ज ग रुद्राणि स्वाहा।

इति लक्षं जपः दशांशहोमः ॥

No. 6815. भद्रकाळीमन्त्रः. BHADRAKALIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess. Bhadrakālī, and its repetition is held to have the power to enable one to become a good poet.

Beginning:

भद्रकाळचाः सद्योजातः, जगती, भद्रकाळी, हीं बी, स्वाहा श, मो-क्षे विविधकार्ये, हीमित्यदिन्यासः ।

End:

5042

मन्त्रः---

मायां मोचय तारकारिपु(र)तः कङ्काळि मद्यं सदा त्वं कल्याणि मनोहरीह कवितासौभाग्यमव्याहतम् । देबास्मिन् परमन्त्रहारिणि शुभे तद्यन्त्रहारिण्यहो विद्याच्छेदिनि पूर्ववद्धुतभुजं व्यन्तेजगत्क्षोभिणि ॥

> No. 6816. भवानीकवचम्. BHAVĀNĪKAVACAM.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 2886. Complete as found in the Rudrayāmala.

Addressed to the goddess Bhavāni, for securing her favour and protection. Its repetition is considered to be a necessary preliminary in the praising of Bhavānī.

Beginning:

अस्य श्रीभवानीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य भगवान् महादेव ऋषिः, अनुष्ट्रप्, आद्या शक्तिः, भवानी देवता, प्री गः, ह्यामित्यादिन्यासः ।

भवानी मे शिरः पातु ललाटश्व महेश्वरी।

नेत्रे कामप्रदा पातु मुखं मुवनसुन्दरी॥

End:

इदं कवचमज्ञात्वा भवान्याः स्तोत्रमुत्तमम् । कल्पकोटिशतेनापि न भवेत् सिद्धिदायिनी ॥

Colophon:

इति रुद्धयामळे महागुप्तसारोद्धारे ईश्वरपार्वतीसंवादे भवानिकवचं सम्पूर्णम् ॥

THE SAN SKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6817. भरमधारणमन्त्र:.

BHASMADHĀRAŅAMANI'RAH.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{5} \times 1\frac{1}{5}$ inches. Pages, 6. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 10*a*. The other works herein are Śivalinga stotra 1*a*, Śivapañcāmṛtastōtra 5*a*, Basavēśvarastōtra 9*a*.

Complete.

This Mantra is intended to be repeated by Saivas at the time of putting on the holy ashes.

Beginning:

ञीग्नरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म ।

End:

हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यपतये अम्बिकापतय उमापतये पद्यपतये नमों नमः ॥

> ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेद्विरिजाधीशं स बाह्याभ्यन्तरश्छाचिः ॥

> > No. 6818. भरमधारणमन्त्र:.

BHASMADHARANAMANTRAH.

Fages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 5122. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभस्मविद्ल(न)महामन्त्रस्य पिप्पलानन्द ऋषिः,शिव गायत्री

छन्दः, कल्याणरुद्रो देवता ; अग्निरिति बीजं, भस्म इति शक्तिः, काला-ग्निरुद्रो देवता, मम पशुपाशाविमोचनार्थे भस्मधारणे जपे विनियोगः । End :

ईशोऽहम्, ईशितभावितोऽहम्, शिवोऽहम्, स्वस्वरूपोऽहम् मुदहम्, साक्षिनी(नि)वेध(द)नम् । व्याप्तं स्वमकर्मेन्द्रियन्तु उपस्थपायुपाणिपादान्ते शिवोऽहम्, ब्रह्मेव सत्यम् ॥

No. 6819. भरमन्यासः.

BHASMANYASAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 272*a* of the MS. described under No. 537. Incomplete.

On the ceremonial smearing of certain parts of the body with the holy ashes, repeating at the same time the appropriate Mantras.

Beginning:

अस्य श्रीभरमन्यासमन्त्रस्य अग्निर्देवता, अथर्व ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमृत्युझयत्र्यम्बकरुद्रो देवता, मम समस्तपापक्षयद्वारा सर्वाङ्ग-सिच्चर्थे विनियोगः ।

भस्मनः पिष्पलाद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरुद्रो देवता; भस्म-ज्ञा(स्ना)नशु(ासि)च्चर्थे विनियोगः ।

End:

पार्श्वे तु परमात्मा च शिरः श्रीरुद्र एव च। बाहुप्रान्ते पशुपतिमे(रे)वं न्यासविधिः कमात्॥

No. 6820. भारतीपश्वाक्षरीमन्त्र:

BHÁRATĪPAÑCĀKṢARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bhāratī who is the same as Sarasvatī; and it consists of five syllables.

Beginning:

ओं भारत्ये नम इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीभारतीपश्वाक्षरमन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, पङ्किञ्छन्दः, भारती देवता ; भारतीप्रेरणया भारतीप्रीत्यर्थे भारतीपश्वाक्षरमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

ओं भारत्ये नमः ओं-इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6821, भारतीमन्त्रः. BHĀRATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 25*b* of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

This Mantra consists of the 49th Rk occurring in the 164th Sūkta of the 1st Mandala of the Rgvēda.

Beginning:

यस्ते स्तनस्येत्यृचा प्राणायामः १२. यस्ते स्तनस्येत्यादिना न्यासः. अस्य श्रीभारतीमन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, त्रिष्ठुप् छन्दः, श्रीभारती देवता ; भारतीप्रेरणया भारतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

यस्ते स्तनस्येत्यचा जपः, उपसंहारः। पूर्ववत् ॥

No. 6822. भारतीमन्त्र:.

BHĀRATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to the goddess Sarasvatī, is believed to have the power to endow one with learning.

Beginning:

भारत्याः ब्रह्मा, गायत्री, . . वाणी बी, स्वा श, सर्व-शब्दार्थविज्ञानसिच्द्यर्थे सारताप्तये। सामित्यादि न्यासः । End :

ओं सं प्रथममुद्धृत्य ततः पश्चात् सरस्वती । वहिजायायुतं मन्त्रं सर्वासिद्धिप्रदायकम् ॥ सप्तसहस्रं जपः, यथाक्रमतर्पणादि ॥

No. 6823. भारतीमन्त्र:. BHĀRATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 25*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra also is a Vēdie Ŗk in praise of the goddens Sarasvatī.

Beginning:

गौरी मियायेत्यादिन्यासः प्राणायामश्च।

अस्य भारतीमन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, जगती छन्दः, भारती दे-वता; भारतीन्नेरणया भारतीन्नीत्यर्थे जुपे विनियोगः।

End:

सहस्राक्षरा परमे व्योमन्--इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6824. भार्गवाष्टाक्षरमन्त्र:.

BHĀRGAVĀSŢĀKŞARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12*b* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is intended to propitiate Bhārgava or Paraśurāma; and it consists of eight syllables

Beginning:

ओं भां भागेवाय नमः इति प्रणायामः १२.

पूर्णज्ञानात्मन इत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीभार्गवाष्टाक्षरमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, भार्गवो देवता; भार्गवन्नेरणया भार्गवन्नीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं भां भार्गवाय नमः ओं-इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6825. भार्गवैकाक्षरमन्त्रः.

BHĀRGAVAIKĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 13*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

Similar to the above.

The Mantra consists of the single syllable HI (bhām).

Beginning:

ओं---भां ओं इति प्राणायामः, पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीभार्गवैकाक्षरमन्तस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, पर-मात्मा श्रीमार्गवो देवता; भार्गवन्नेरणया भार्गवन्नीत्यर्थे जपे विनियोगः। End:

ओं भां ओं इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6826. भुवनन्यासः.

BHUVANANYÁSAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 46b of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while uttering the names of the several manifestations of the goddess Sakti conceived as the presiding deity over each of the fourteen worlds.

Beginning:

अथ भुवनन्सासः । ओं ऐं हीं श्रीं हसौं सहौं अं आं ई अतललोकनिलयशतकोटिगुह्याख्ययोगिर्नामूलदेवतायुताधारशक्तचम्बादेव्यै नमः—पादयोः ।

End:

चतुर्दशभुवनाधिदेवताये श्रीवराम्बादेव्ये नमः — सर्वाङ्गं व्यापयेत्।। Colophon :

इति सुवनन्यासः ॥

No. 6827. भुवनेश्वरीत्रैलोक्यमोहनकवचः.

BHUVANĒŚVARĪTRAILÕKYAMOHANAKAVACAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 2886. Complete as found in Rudrayāmaļa.

This Mantra is addressed to Bhuvanēśvarī; and its repetition is held to have the power to secure the favour and protection of that goddess.

Beginning:

श्रीदेव्युवाच —

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वागमविशारद् । कवचं भुवनेश्वर्याः कृपया कथय प्रभो ॥

शिव उवाच----

श्टणु देवि वरारोहे कवचं परमाद्धतम् । यच्छूत्वा पठनाद्वद्मा सृष्टिकर्ताभवद्विभुः ॥

कवचस्य सुभगो मन्त्रो योगी रुद्रो मुनिः स्वयम् । विराट् छन्दो निगदितो देवता भुवनेश्वरी ॥ हीं विद्या मे शिरः पातु फालं नेत्रयुगं तथा । हीं श्री ऐं कण्ठदेशे (तु) ऐं श्रीं हीं हृदये मम ॥

End:

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्धवनेश्वरीम् ।

वथा श्रमो भवेत्तस्य न मन्त्रः सिद्धिदायकः ॥

Colophon :

इति रुद्रयामळे महातन्त्रे भुवनेश्वर्याः त्रैलोक्यमोहनं नाम कवच समाप्तः ॥

No. 6828. सुवनेश्वरीमन्त्रः.

BHUVAN EŚVARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 232*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

This Mantra is also addressed to Bhuvanēśvarī, who is a manifestation of Śakti, and its repetition is held to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीमुवनेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभुव-नेश्वरी देवता, हां बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, मम इष्टकाम्यार्थ-सिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

No. 6829. मुवनेश्वरीमन्त्रः.

BHUVANĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 87b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6830, भुवनेश्वरीमन्त्रः. BHUVANĒŠVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 36 on a page.

Begins on fol. 80*a* of the MS. described under No. 1493, wherein this Mantra has been omitted to be given among the other works contained therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभुवनेश्वरीब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य वेदव्यासभगवानृषिः, अनु-ष्टुप् छन्दः, श्रीभुवनेश्वरी ब्रह्मविद्या देवता; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्रां कीलकं, मम श्रीभुवनेश्वरीआदिशक्तिप्रसादसिद्धचर्थे जपमहं करिष्ये । End:

ओं हीं श्रीं भुवनेश्वर्यम्बा ओं ॥

No. 6831. अवनेश्वरीमन्त्र:.

BHUVANĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 231*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, भुवनेश्वरी देवता ; हं बीजं, ईं शक्तिः, रेफः कीलकं, भुवनेश्वरीप्र—गः । End :

. ह्रीं भुवनेश्वर्यम्बादिव्य--मः । द्वितीयमनुः--श्रीं ह्रीं श्रीं ॥

No. 6832. भुवनेश्वरीमन्त्र:.

BHUVANĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमहामन्त्रस्य वेदव्यासभगवानृषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, भुवनेश्वरी देवता; हं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, मम भुवनेश्वरी-प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

पश्रपूजा । मनुः---

ह्रीं भुवनेश्वर्यम्बाश्रीपा -- नमः ॥

No. 6833. भुवनेश्वरीमन्त्रः.

BHUVANEŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 5673. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, भुब-नेश्वरी देवता; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हं कीलकं, मम श्रीभुवने-श्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः---

ओं हीं श्रीभुवनेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6834. सुवनेश्वरीमन्त्रः.

BHUVANĚŠVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 276*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, भुवनेश्वरी देवता; हं बीजं, ईं शक्तिः, वं(रं) कीलकं, ध्यानादिकं पूर्ववत् ॥

No. 6835. अुवनेश्वरीमन्त्रकवचः.

BHUVANĒŚVARĪMANTRAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 2549. Complete.

Addressed to the goddess Bhuvanēśvarī for securing her help and protection. It is stated in the concluding stanza that the repetition of this Mantra has the power to enable one to counteract the movements of one's enemies.

Beginning:

या माणिक्तमनोज्ञकान्तिरमला सिन्दूरभासान्निभा तारानायकशेखरा तिनयना पीनस्तनोद्धासिता। बन्धूकप्रसवारुणाम्बरधरा मार्ताण्डकोट्युज्ज्वला सा दद्याद्भुवनेश्वरी भगवती श्रेयांसि भूयांसि नः ॥ हीङ्कारी मे शिरः पातु फालं मे परमेश्वरी। आस्यं श्रीङ्कारिणी पातु क्रींकारी पातु मे भूवौ ॥

End:

एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वाङ्गं भुवनेश्वरी ॥ इदं रहस्यं कवचं पापन्नं भुक्तिमुक्तिदम् ।

कवचं मनसा जप्तमात्रेण स्तम्भनं भवेत् । त्रिकालमेककालं वा जपेत्कवचमुत्तमम् ॥

Colophon:

भुवनेश्वरीमन्त्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 6836. सुवनेश्वरीमातृकामन्त्रः.

BHUVANËŚVARĪMĀTŖKĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 95*a* of the MS. described under No. 2549. Incomplete.

Here Bhuvanēśvarī is conceived to be the same as the letters of the alphabet personified into a goddess.

Beginning:

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमातृकारूपिणीमहामन्त्रस्य संहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभुवनेश्वरी मातृकारूपिणी देवता, हां बीजं, हीं शक्तिः, हूं कील्ठकं, श्रीभुवनेश्वरीमातृकारूपिणीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

No. 6837. सुवनेश्वरीसंमोहनकवचः.

BHUVANĒŚVARĪSAMMÕHANAKAVACAĻ.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 2549. Complete as found in the Rudrayāmala.

Similar to the work described under No. 6827.

Beginning:

श्रीदेव्युवाच--

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वागमविशारद् ।

कवचं भुवनेश्वर्याः रूपया कथय प्रभो ॥

श्रीशिवः---

श्रणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्धुतम् । लिखित्वा[तु] पठनाद्वसा सृष्टिकर्ता भवेच्छिवे ॥

कवचस्यास्य सुभगे योगी रुद्रो मुनिः खयम् । विराट् छन्दो निगदितो देवता भुवनेश्वरी ॥ ओं ह्रीं मम शिरः पातु फालं नेत्रयुगन्तथा । ह्रीं श्रीं ऐं कण्ठदेशे तु ऐं ह्रीं श्रीं हृदयं मम ॥

End:

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपद्धुवनेश्वरीम् ।

वृथा श्रमो भवेत्तंस्यं न मन्त्रस्साधितो भवेत् ॥ Colophon:

इति श्रीरुद्रयामले महातन्त्रे श्रीभुवनेश्वरीसंमोहनकवचं सम्पूर्णम् ॥ 413

No. 6838. भूतशुद्धिमन्त्रः.

BHŪTAŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 547. Complete.

The repetition of this Mantra is held to have the power to enable one to purify one's self from sin.

Beginning:

मम उपात्त . त्यर्थम् इह जन्मनि पूर्वजन्मसु मम ज्ञाना-ज्ञानाभ्यां मनोवाकायकर्मकृतपापपुरुषशरीरशुद्धचर्थं शोषणदाहनम्रावनैः सह मूतशुद्धि करिष्ये ।

शरीरस्य अन्तर्यामी भगवान् नारायण ऋषिः, जगती छन्दः, सत्यो देवता, पादादिजानुपर्यन्तं पृथिवीस्थानं चतुरश्रम् । रुं इति बीजं पीतवर्णं । ब्रह्मदैवत्यं । वज्रलाञ्छितं द्वादशाङ्गुलमप्सु प्रवि-लापयामि ।

End:

कों हीं आं स्वाहा--इति षोडरावारं जपेत् ।

नाडीमण्डलदूषणेषणगुणावस्थेशतापत्रिकाः कोशं पञ्चतनूश्च षण्णवतिका तत्त्वञ्च जीवात्मनः ॥

No. 6839. भूतशुद्धिमन्त्रः. BHŪTAŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 74*a* of the MS. described under No. 29 Complete.

Similar to the above-

Beginning:

अस्य श्रीभूतशुद्धिमहामन्त्रस्य पुरुष ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, बह्या विष्णू रुद्र ईश्वरः सदाशिवो देवता; हं यं रं लं वं इति बीजं, पृथि-

व्यापस्तेजो वायुराकाशाश्शक्तयः, तद्विलेपनमिति कीलकं, मम पात्रभौतिक-शरीरशुद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

यमिति षोडशवारं पठेत् । सोऽहमिति षोडशवारं पठेत् । वमिति हादशवारं पठेत् ॥

Colophon :

भूतशुद्धिः समाप्ता ॥

No. 6840. भूपश्वाक्षरमन्त्रः.

BHŪPAÑCĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 20*b* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Laksmī under the name of Bhūh. It consists of five syllables.

Beginning:

गुरुनमस्कारः ।

ओं मुं मुवे नम इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीभूपश्वाक्षरमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, ब्रह्मा च ऋषिः, भूर्नामिका लक्ष्मीर्देवता, पङ्किश्छिन्दः, लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं मुं मुवे नमः ओं---इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6841. भूबीजेकाक्षरमन्त्रः.

BHŪBĪJAIKĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 20*a* of the MS. described under No. 5786, Complete.

418-A

This Mantra is also addressed to the goddess Laksmi, and it consists of the single syllable $\dot{\mathcal{H}}$ (Bhūm).

Beginning:

ओं मूं ओं इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीएकाक्षरभूबीजमन्तस्य कश्यप ऋषिः, गायत्री छन्दः, भूर्नामिका लक्ष्मीर्देवता; लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे एकाक्षरभूबीजमन्त्र-जपे विनियोगः ।

End:

ओं मूं ओं--इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6842. भूशुद्धिमन्त्र:.

BHŪŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30b of the MS. described under No. 29.

Complete.

The 33rd leaf is half lost.

The repetition of this Mantra is intended to purify the ground on which one has to sit for the performance of religious rites and ceremonies so that they may produce the desired effect.

Beginning:

अस्य श्रीभूशुद्धिमहामन्त्रस्य वराह ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-भूदेवी देवता, ठां बीजं, ठीं शक्तिः, ऌं कीलकं, मम सकलानुष्ठान-योग्यतासिद्धचर्थे भूशुद्धिमन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

इत्यासनं परिकल्प्य ओं ऐं हीं श्रीं आधारशक्तिकूर्मपीठकमळा-सनेभ्यो नमः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6843. भूशुद्धिमन्त्रः. BHŪSUDDHIMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 181*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

देशकालविरोधेन विस्तरात्कर्त्तमक्षमः ।

गणेशं क्षेत्रपं य(चे)ष्ट्रवा पुरुषं वास्तुसंज्ञकम् ॥

पूजयेदुद्वारपूजेयं श्रीविद्यार्चनकर्मणि ।

एँ हीं श्रीं गं गणपतये नमः द्वारदाक्षिणे । एँ हीं श्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः वामे ।

End:

एवं रक्षां स्वात्मनि विधाय गुरूपदेशरतिया स्वपुरतो यन्त्रोद्धारं विभाव्य भूतशोधनमारभेत् ॥

No. 6844. मूर्युद्धिमन्त्र:.

BHŪŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on .fol. 48*a* of the MS. described under No. 235, wherein it is given as Bhūśuddhidigbandana.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

भूशुद्धिः—तत्र प्रथममन्त्रः । जपाङ्गत्वेन भूशुद्धचादिकं कुर्यात् । अस्य भूशुद्धिमहामन्त्रस्य भूवराह ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभूदेवी देवता, लां बीजं, लीं शक्तिः, ऌं कीलकं, मम सकलजपानुष्ठानसि-द्धचर्थं भूशुद्धिमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

अपकामन्तु भूताद्याः सर्वे ते भूमिभारकाः ।

सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारमे ॥ अज्ञान श्रीगुरवे नमः ॥

No. 6845. मेरेवबडबानलमन्त्रः.

BHAIRAVABADABĀNALAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 78b of the MS. described under No. 5673. Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava who is conceived to be as awe-inspiring as the sub-marine fire called Badabānala; and its repetition is believed to be efficacious in driving away evil spirits and in the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीभैरवबडबानऌस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, क्षेत्रपालको देवता; ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं, मम सर्वका-र्यार्थसिद्धार्थ सर्वप्रहोच्चाटनसिद्धचर्थं श्रीभैरवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ओन्नमो भैरवाय क्षेत्रपालकाय हां हीं हूं हैं हौं ह़: क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षः क्वां क्वीं क्वूं क्वैं क्वीं क्वः ओं फट् स्वाहा ॥

No. 6846. भैरवमन्त्र:.

BHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 44*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is also addressed to Bhairava, and is intended to be used for bringing about the destruction of one's enemies merely by an act of volition.

Beginning:

भैरवमन्त्रस्य अघोरः, विराट्, भैरवो देवता; भं बीजं, फट् शाक्तिः, स्वेच्छासंहारसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

End:

ह्रां हीं त्रिपुरताण्डवाय अष्टमैरवाय भाषय स्वाहा । ळान्तं त्रिमुखमालिख्य तेन संवेष्टच सर्वतः । अघो(धः) शूलद्विपार्श्वे च यन्त्रं विजयमद्भुतम् ॥ एतद्यन्त्रं विलिख्यात्तद्यन्त्रेणानेन मन्त्रवित् । भरमदर्शनमात्रेण क्षणादावेशमामुयात् ॥

No. **6847. भैरवमन्त्रः.** ВНАІВАУАМАNTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 5673, wherein this Mantra is found included in the group of Mantras denoted by the general name of \overline{Amna} yamantramālikā.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate the Bhairavas.

Beginning:

अस्य श्रीभैरवाणां मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री-भैरवो देवता, हं बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, मम भैरवाणां प्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

चण्डमैरवश्री ६ कपालमैरवश्री ६ नमोनिर्मलमैरवश्री ६ डमरु मैरवश्री ॥

No. 6848. भैरवमन्त्र:.

BHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 230b of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Ṣadāmnāyamantra

Complete.

Similar to the above.

The names of the eight different varieties of Bhairavas are given in the end,

Beginning:

अस्य श्रीमैरवाणां मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, तिष्ठुप् छन्दः, श्रीमैरवो देवता; हं बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, भैरवाणां प्र— गः।

End:

दारणभैरवदिव्यश्री—-मः, चक्रभैरवदिव्यश्री--मः, फट्कारभैरव दि--मः, रविभक्षभैरव, एकात्मभैरव, चण्डभैरव, नभोनिर्मलभैरव, डम-रुभास्करभैरव-एते अष्ट भैरवाः ॥

No. 6849. भैरवमन्त्र:.

BHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 5828. Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Bhairava, is considered to be efficacious in releasing one from enchained bondage.

Beginning:

गुरुदेविश्व मन्त्रात्ममेकरुद्रतियाहिकम् । . . . भैरवाय नमो नमः ॥

ई ईशानमैरवाय नमः——अङ्गुष्ठां, ओं महामैरवाय नमः——तर्ज. नीं, सौं कपालमैरवाय नमः——मध्यमां, बडबानलमैरवाय नमः——अना-मिकाम् ।

End:

देवपराक्रमाय एहि एहि मम बन्धमोचनाय।

पुरश्चरणम् १०.

No. 6850. भैरवमालामन्त्रः. BHAIRAVAMĀLĀMANTBAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 83b of the MS. described under No. 21. Complete.

This Mantra is in praise of Bhairava under different significant names; and its repetition is held to have the power to enable one to seal the enemy's mouth and also counteract the effects of hostile Mantras.

Beginning:

ओन्नमः कालाग्निभैरवाय सकलविद्यासंहरणाय भैरवाय शक्तिसंहार-णाय रां रां श्रीं बडबानलभैरवाय । मन्तरे

End:

सर्वशत्रुवाग्वन्धनाय घें घें महाबडबानलमेरवाय क्लां झां दिगम्ब-राय गदामुसलत्रिशूलहस्ताय सर्वशत्रुमन्त्रसंहरणाय ओं फटू स्वाहा॥

No. 6851. मण्डलत्रयमन्त्रः.

MANDALATRAYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 231b of the MS. described under No. 124. Complete.

This Mantra is intended to propitiate the Sun, the Moon and the Fire, conceived as the presiding dieties in their respective spheres.

Beginning:

अस्य श्रीमण्लत्रयमन्त्रस्य सोमसूर्याग्नय ऋषयः, गायत्री त्रिष्टुब-नुष्टुप् छन्दांसि, सोमसूर्याग्नयो देवता(ः), सं घीं रं बीजानि, अमृतात-पिनी धूञ्रार्चि(रिति)शक्तयः, आं ई ऊं कीलकानि, सोमसूर्याग्निम—गः। End:

हीं श्रीं ऐं सोममण्डल (श्री) पा-मः ; हीं श्रीं झीं सूर्यमण्डल-दिव्य-मः हीं श्रीं सौंः अग्निमण्डलदिव्य-मः॥

No. 6852. मण्डलत्रथमन्तः.

MANDALATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS described under No. 5673, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of $\bar{A}mn\bar{a}yamantram\bar{a}lik\bar{a}$

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अथ स्वााधिष्ठाने--

अस्य श्रीमण्डलत्रयमन्त्रस्य सोमसूर्याग्निः ऋषयः, गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप् छन्दांसि, सोमसूर्याग्निर्देवता, सं घ्रीं रं इति बीजानि, अमृतातपिनी धूम्रार्चिरिति शक्तयः, आमीमूमिति कीलकं, मम मण्डलत्रयप्रसादसिज्द्वर्थे विनियोगः ।

End:

मनुः—

हीं श्रीं ऐं हीं अग्निमण्डलश्री, हीं श्रीं क्रीं हीं सूयमण्डलश्री हीं श्रीं सौः हीं सोममण्डलश्री॥

No. 6853. मण्डलत्रयमन्त्र:.

MANDALATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 2848. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमण्डलत्रयमन्त्रस्य सोमसुर्याग्निः ऋषयः, गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप् छन्दांसि, श्रीसोमसूर्याग्निर्देवता; सं घें रं इति बीजं, अमृतातपिनी धूम्रार्चिरिति शक्तयः, आमीमूमिति कलिकं, मम श्रीमण्डलत्रयप्रसादसि-द्वचर्थे विनियोयः।

End:

मनुः—

हीं श्रीं ऐं हीं हीं श्रीं कीं हीं मण्डलत्रयश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6854. मदनगोपालद्वादशाक्षरन्यास:.

MADANAGÕPĀLADVĀDAŠĀKṢARANYĀSAH. Pages, 3. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 424. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering at the same time the letters of the eighteen-syllabled Mantra relating to Kṛṣṇa conceived as a charming cow-herd. It is wrongly stated both in the heading and in the beginning that the Mantra consists of 12 syllables.

Beginning:

अस्य श्रीमदनगोपाल्दादशाक्षरमन्त्रस्य शिरसि नारदाय ऋषये नमः, मुखे गायत्रीछन्दसे नमः, हृदि श्रीकृष्णाय देवतायै नमः, दुर्गायै अधिष्ठात्रे देवतायै नमः, श्रीकृष्णाय प्रकृतये नमः, पुरुषार्थ-चतुष्टये विनियोग इति हृदये ।

क्रीं नमः मूर्झि, क्ठं नमः फाले, ष्णां नमः झुवोर्मध्ये। End:

इति मन्त्रेण जपं समाप्य ततः बाह्यपूजां कुर्यात् । तदनन्तरं पूर्वोक्तन्यासान् कृत्वा त्रिसन्ध्यमष्टोत्तरसहस्रजपं कुर्यात् ॥

No. 6855. मदनगोपालमन्त्र:.

MADANAGOPĂLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 13b of the M.S. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is in praise of Kṛṣṇa conceived as a charming cow-herd.

Beginning:

ओं क्रीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवछभाय स्वाहा इति प्राणा-यामः १२

अस्य श्रीमदनगोपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, धृतिः छन्दः, श्री-कृष्णो देवता, श्रीकृष्णप्रेरणया श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ओं क्रीं रूष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा--इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6856. मद्नगोपालमन्त्रः.

MADANAGOPALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 47*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमदनगोपालमहामन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमदनगोपालो देवता, क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, गोविन्दायेति कीलकं, श्रीमदनगेापालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

nu .

मनुः---

क्रीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 6857. मदनयक्षिणीघुटिकामन्त्रः.

MADANAYAKŞIŅĪGHUŢIKĀMANTRAH. Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 251*a* of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

This Mantra is understood to have the power to enable one to bring under one's control Madanayakşiņī.

Beginning:

एं मदने मदनाविडम्बिनि आत्मीयसङ्गमं देहि देहि स्वाहा। End:

> तया मुखस्थया दृश्यकल्पस्था(या)हितया सह । सुखान्यनुभवन्नेयं(वं)पर्यटेन्मेदिनीमिमाम् ॥

No. 6858. मदनयक्षिणीघुटिकामन्त्रः.

MADANAYAKŞINİGHUTIKÂMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5566, wherein this Mantra has been omitted to be included among the other works given therein.

Complete. Same as the above.

No. 6859. मदनयक्षिणीघुटिकामन्तः.

MADANAYAKŞIŅĪGHUŢIKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 296b of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

Same as the above.

No. 6860. मधुमतीमन्त्रः. MADHUMATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS described under No. 5868. Complete.

This Mantra is addressed to a certain goddess named Madhumatī who is the chief attendant of the goddess Dēvī; and its repetition is believed to have the powe rto enable one to bring everything under one's control.

Beginning:

अस्य श्रीमधुमतीमहामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मधु-मती देवता; ऐं बीजं, हीं शक्तिः, क्रीं कील्ठकं, मम मधुमतीप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

5066

ओं हीं श्रीं हीं ओं नमो भगवति मधुमति मतङ्गकुमारिके सर्वमुखरज्जनि सर्वेषां महामाये सर्वं मे वशमानय स्वाद्या ॥

No. 6861. मध्याह्वाराहीमन्त्रः.

MADHYÄHNAVÄRÄHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 234*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Vārāhī, who is Viṣṇu's Śakti conceived as a goddess; and its repetition is intended to cause the destruction of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीमध्याह्रवाराहीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, मध्याह्रवाराही देवता, मम सर्वशत्रुक्षयार्थे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः----

हीं हीं ओं ठठठंठंठठठंठं हां हीं महामायाये मध्याह्ववा-राहि हुं फट् स्वाहा॥

THE SANSKRIT MANUSORIPTS.

No. 6862. मध्याह्वाराहीमन्त्रः.

MADHYÄHNAVÄRÄHÍMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 89*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6863. मन्त्रन्यासः. MANTRANYĀSAH

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49*a* of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, uttering at the same time the appropriate letters of the Dēvīmantra.

Beginning:

ँओं ऐं ह्रीं श्रीं हसौं सहौं अं आं इं एकलक्षकोटिप्रणवाद्ये-काक्षराखिल्लमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः— आघारे ।

End:

अं सर्वमन्त्रात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः---सर्वाङ्गे व्यापयेत् ॥ Colophon :

इति मन्त्रन्यासः॥

No. 6864. मन्त्रराजमन्त्र:.

MANTRARAJAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 58*a* of the MS. described under No. 5819. Incomplete.

The Mantas in

This Mantra is addressed to Nrsimha; and it is considered to be the most important Mantra being called the King of Mantras; and its repetition is considered to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीमन्त्रराजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मन्त्रराज-श्रीनारसिंहो देवता, मम सर्वाभीष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

जान्वोरासकतीक्ष्णस्वन(ख)रुचिलसद्बाहुसंश्ठिष्टकेशः.

No. 6865. मन्त्रराजमन्त्र:.

MANTRARĀJAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 9*a* of the MS. described under No. 673. Complete.

This Mantra is supposed to be the most important of the Sāktamantras. According to the Sāktas, the Mantra itself is considered to be the Paramaguru; and this conception is embodied here.

Beginning:

अस्य श्रीमन्त्रराजमहामन्त्रस्य शरभ ऋषिः, गायत्री छन्दः, मन्त्र-राजो देवता, हां बीजं,हीं शक्तिः,हूं कीलकं, मम मन्त्रराजप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

मनुः--हां हीं हूं हैं हों हः हुम्फर् मन्त्रराजश्रीपा---नमः॥

No. 6866. मन्त्रराजमन्त्र:.

MANTRARAJAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 234*a* of the MS. described under No. 124. Complete.

Similar to the above.

THE SANSKEIT MANUSCRIPTS.

Beginning:

अस्य श्रीमन्त्रराजमहामन्त्रस्य शबर ऋषिः, गायत्री छन्दः, मन्त्र-राजो देवता, हां बीजं, हीं शक्तिः, हुं कीलकं, ममः मन्त्रराजप्र— गः।

End:

हां हीं हूँ हैं हौं हः हुं फट् स्वाहा । श्रीमन्त्रराजदिव्यश्री—मः॥

No. 6867. मन्त्रराजमन्त्र:.

MANTRARAJAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 5673, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of \bar{A} mnāyamantramālikā.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमन्त्रराजमन्त्रस्य भगवानृषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमन्त्र-राजो देवता ; हं बीजं, हिं शक्तिः, हुं कीलकं, मम मन्त्रराजप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

हं हिं हुं हैं हैं। हः हुम्फर् मन्त्रराजश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

No. 6868. मन्त्रराजमन्त्र:.

MANTRARĀJAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 26*b* of the MS. described under No. 2848. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमन्त्रराजमन्त्रस्य शरभ ऋषिः, गायत्री छन्दः, मन्त्रराजो देवता, हां बीजं, हीं शक्तिः, हूं कीलकं, मन्त्रराजप्रसन्नार्थे जपे विनि-योगः ।

End:

हामित्यादिन्यासः । मन्त्रराजश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 6869. मन्नसन्ध्यावन्दनप्रयोगः.

MANTRASANDHYĀVANDANAPRAYOGAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 24b of the MS. described under No. 673.

Complete.

On details connected with the performance of the morning and evening prayers by using the Dēvīmantra.

Beginning:

एँ क ए ई ल हीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा, झीं ह स क ह ल हीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा, सौः स क ल हीं शिवतत्त्वाय स्वाहा, एँ क ए ई ल हीं झीं ह स क ह ल हीं सौः स क ल हीं सर्वतत्त्वाय स्वाहा । वामहस्ते जलं गृहीत्वा मुलमन्न्रेण पश्चवारमभिमन्त्र्य मूर्भि हादि पादेषु मार्जयित्वा ।

End:

अथाधरात्रिसमये ब्रह्मरन्धे जपारुणे ।

मूले देवीं त्रिधा स्मृत्वा सन्ध्यानुष्ठानमाश्रितः ॥

Colophon:

इति सन्ध्यासंक्षेपः ॥

No. 6870. मन्त्रावलिः. MANTRÁVALIH.

Pages, 68. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 50*a* of the MS. described under No. 675, Complete.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

The series of Mantras to be repeated in connection with the religious worship beginning with the worship of the Sākta-gurus and ending with the worship of Sakti,

Beginning:

मन्नावलीप्रकारो लिख्यते— ओं ऐं हीं श्री हं सरिशवरसो हं खगुरुलोकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः, सो हं हं सरिशवः परमगुरुपूर्णविचैश्वर्यानन्दनाथसंविदम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः, हं सरिशवस्सो हं हं सः परमेष्ठिगुरुश्रीलोकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

End:

ओं कुरुकुछे हीं मम सर्वजनं वशमानय खाहा । इति पश्च-विंशार्णविद्या, ओं कुरुकुछे खाहा इति सप्तदशार्णविद्या, ओं कुरुकुछे हीं खाहा इति त्रयोदशार्णविद्या ॥

Colophon:

इति मन्नावलिगुरुत्रयादिकुरुकुछान्तं समाप्तम् ॥

No. 6871. मन्मथमन्त्र:. MANMATHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 308*a* of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā (Ākāśabhairavakalpa).

Complete.

The due repetition of this Mantra, which is addressed to Manmatha, the god of love, with the required ceremonials is held to have the power to enable the supplicant to win the love and affection of whomsoever he or she desires at heart.

Beginning:

अस्य श्रीमन्मथमन्त्रस्य संमोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, रति-नायको देवता, इं बीजं, ईं शक्तिः, वश्याकर्षणार्थे विनियोगः । 414-A 5072 End :

ओं क्लीं इं रतिदेवीसमेताय कामराजाय सर्वाकर्षणाय स्वाहा---इति लक्षं जपः । दशांशहोमः ॥

> No. 6872. मन्मथमन्त्र:. MANMATHAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 2424. Complete

The repetition of this Mantra which is also addressed to Manmatha is considered to have the power to enable one to bring people under one's magic control and influence.

Beginning:

मन्मथमन्त्रः—

ओं अस्य श्रीमन्मथमन्नस्य मचच(त्स्ये)न्द्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मन्मथो देवता; ओं क्लीं बीजं, क्लीं शक्तिः, क्लीं स्वाहा, मम विश्वा-कर्षणार्थे विनियोगः ।

End:

ओं क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनहृदयं मम वशङ्करु कुरु खाहा ॥

यन्त्रश्लोकः----

मान्तन्नामयुतं द्विरेफसहितं बाह्ये कलावेष्टितं तद्वाह्येऽग्निमरुत्पुरश्व सहितं तत् ताम्रपत्रोदरे । लेखित्वा परवृक्षकण्टकयुतं श्वेतार्कदुग्धान्वयं तप्तं दीपशिखाग्निना त्रिदिवसात् रम्भासमाकर्षणम् ॥

No. 6873. मलयाळभगवतीमन्नः.

MALAYĀĻABHAGAVATĪMANTRAH. Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 5832, wherein this Mantra has been omitted to be included among the other works contained therein.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bhagavatī popularly known as Maļayāļa-bhagavatī, probably because Malabar is considered by magicians to be her favourite abode; and the repetition of the Mantra is believed to have the power to enable one to destroy and drive away evil spirits.

Beginning:

ओं नमो मलयालमगवति शाम्भवि रणाकारशक्ति ट ट ट ट ट ट ट ह्रीं ह्रीं ७ ह्रीं त्राहि ७ ह्रीं क्रन्त ७ किणि ७ झं ७ मं ७ आवेश ७ उत्तरग्रहावेशदक्षिणग्रहावेशपूर्वग्रहावेश.

End:

ओन्नमो मलयाळभगवति गौरि गान्धारि मालिनि खकर्मचाण्डालि सर्वग्रहोचाटनि खाहा ॥

No. 6874. मछमदनगोपालमन्त्र:.

MALLAMARDANAGÓPÁLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 48b of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is in praise of Kṛṣṇa conceived as the cowherd who killed in single combat certain wrestlers employed by Kamsa to kill Kṛṣṇa.

Beginning:

अस्य श्रीमछमर्दनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीमछमर्दनगोपालो देवता, हीं बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, मछ-मर्दनगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः— ह्रीं रूष्णाय हुं फट् खाहा ॥

No. 6875. महाकालीदुर्गामन्त्रः. MAHĀKĀLĪDURGĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 48b of the MS. described under No. 5445, wherein this Mantra has been omitted to be given among the other works contained therein.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Durgā conceived as Mahākālī, and its repetition is believed to be capable of sowing the seeds of dissension and discord between two persons even though strongly attached to each other.

Beginning:

ओं पश्चचाण्डालिनि मातङ्गे कण्ठे कपालधारिणि त्रिशूलधारिणि हन हन प्रण प्रण प्रण.

क्लीं ओं तापिता आलन्तापि स्वाहा कालि कालि. End:

> शाबराख्यो महाकालिमन्त्रोऽयं सर्वसिद्धिदः । भानुवारे निशाकाले सहस्रं जपमाचरेत् ॥ साक्षात्कारं सहस्रेण सत्यं सत्यं न संशयः ।

विद्वेषणम्---

धर्मटि धर्मटि धर्मटि मर्कटि धोरे घोरतरे उभयोः विद्वेषय विद्वे-षय विद्वेषकारिणि काकोऌकयोरिव सह कलहकारिणि हुं हुम् . . .

इत्यष्टोत्तरमन्नाणां चेति रामलक्ष्मणयोरपि कलहं भवेत् ।

ओं हीं उवलें ज्वलाभिन्नभैरावि अमुकामुकयोः काकोऌकयोरिव परस्परविद्वेषणं कुरु कुरु खाहा ॥

No. 6876. महागणपतिमन्त्रः.

MAHAGANAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 168*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS. 5075

This Mantra is addressed to the god Ganapati or Vināyaka; and its repetition is intended to enable one to accomplish one's desires and to bring all persons under one's control.

Beginning:

अस्य श्रीमहागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः शिरासि, निचृद्रायत्री छन्दः मुखे, श्रीमहागणपतिर्देवता, गं बीजं, खाहा शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं ऐं हीं श्रीं झीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वश-मानय खाहा ॥

No. 6877. महागणपतिमन्त्रः.

MAHĀGAŅAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 163 of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

मूलमन्त्रः----

आं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लैं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमा-नय वशमानय खाहा ॥

No. 6878. महागणपतिमन्त्र:.

MAHÂGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 6548. Incomplete.

Same as the above.

No. **6879. महागणपातिमन्त्र:.** МАНА̄GAŅAPATIMANT**RA**Ӊ.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 5673, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Āmnāyamantramālikā.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्रायत्री छन्दः, श्री· महागणपतिर्देवता, गं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकं, मम श्रीग-णपातिप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमा-नय स्वाहा॥

No. 6880. महागणपतिमन्त्रः.

MAHAGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 289*a* of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

Same as the above.

No. 6881. महागणपतिमन्त्रः.

MAHAGANAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 245*a* of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the group of Mantras denoted by the general name of Mantramālikā.

Complete.

Same as the above.

No. 6882. महागणपतिमन्त्रः.

MAHÂGAŅAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6883 महागणपातिमन्त्रः.

MAHĀGANAPATIMANTRAH

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 75a of the MS. described under No. 5417. Complete.

Same as the above.

No. 6884. महागणपातिमन्त्र:.

MAHAGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 40*a* of the MS. described under No. 6414. Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीगणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, महागणपतिर्देवता, ग्लां बीजं, ग्लीं शक्तिः, ग्लां कीलकं, मम सर्वाभीष्ट· फलसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

लम्बोदरं दशभुजमेकदंष्ट्रं गजाननम्.

No. 6885. महागणपतिमन्त्रः.

MAHAGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 15*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहागणपातिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहा-गणपतिर्देवता ; गं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीमहागणपतिसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । '

End:

ओं श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये सर्वजनं मम वशमानय स्वाहा । पुनर्ध्यानं पत्रोपचारश्च ॥

No. 6886. महाचिन्तामणिमन्त्रः.

MAHĀCINTĀMAŅIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 320b of the MS described under No. 5477, wherein this is included in Mantramālikā mentioned in the list of other works given therein.

Complete.

This Mantra is addressed to Vișnu's discus; and its repetition is believed to have the power to enable one to drive away all kinds of evil spirits.

Beginning:

ओं नमो भगवते महाचिन्तामणये महावीर्यपराकमदिनकरसहस्र-वरभूषाय राक्षसग्रहस्कन्दग्रहविनायकग्रहलोकग्रहदुष्टग्रहआवेशग्रहापस्मा-रग्रहतीत्रग्रहसूतीग्रहादीन् हन हन।

End :

सर्वभूतानि त्रासय त्रासय मां रक्ष मां रक्ष मां रक्ष हुं फट् स्वाहा ॥

इदं सुदर्शनमहाचिन्तामणिद्रयं मन्त्रशिखामणिः इदं परमरहस्यमिति

No. 6887. महात्रिपुरसुन्दरीपश्चद्शाक्षरीमन्त्रः. MAHĀTRIPURASUNDARĪPAÑCADAŚĀKṢARĪ-MANTRAḤ.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 230a of the MS. described under No. 581, where this is included in the Mantramālikā mentioned in the list of the other works.

Complete.

This Mantra consisting 15 syllables is addressed to Tripurasundarī, the great, and is intended to secure her favour.

Beginning:

अस्य श्रीमहात्निपुरसुन्दरीपश्चा(श्वदशा)क्षरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋ-षिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी परमेश्वरी देवता, कामराजात्मकं बीजं, तार्तीयं शक्तिः, प्रथमसम्भवं कीलकं, मम महात्रिपुरसुन्दरीत्रसाद-सिच्चर्थे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः पश्चदशाक्षरी । नवलक्षप्रमाणं तु जप्त्वा त्रिपुरसुन्द्रीम् । विधिबज्जायते मन्त्री रुद्रमूर्तिरिवापरः ॥

No. 6888. महात्रिपुरसुन्दरीपश्चदशाक्षरीमन्त्रः.

MAHĀTRIPURASUNDARĪPAÑCADAŚĀKṢARĪ-MANTRAӉ.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 86b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6889. महात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः. MAHĀTRIPURASUNDARĪMANTRAH.

Pages, 13. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 59*a* of the MS. described under No. 424, wherein this is called Dēvīmantranyāsa in the list of the other works given therein; Dēvyaksaranyāsa and Puspāňjali mentioned there are included in the work here described.

Complete.

Similar to the above. This Mantra forms part of the ritual relating to the worship of Tripurasundarī. At the end there are two pages of matter describing in Telugu the means to enable one to bring another under one's own control.

Beginning:

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य आनन्दमैरव ऋषिः, पाङ्कि-रछन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ह स क ल र डैं, ह स क ल र डीं, ह स क ल र डों श्रीमहात्रिपुरमैरवीश्रीपादुकाये नमः।

योनिं देव ताबुद्धचा संपूज्य संतर्प्य भोगपात्रं कारणपूर्णं करेणादाय।

No. 6890. महात्रिपुरसुन्द्रीमन्त्रराजमन्त्र:.

MAHĀTRIPURASUNDARĪMANTRARĀJAMANTRAH. Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 234*a* of the MS. described under No. 124, where this is included in the Ṣaḍāmnāyamantra 228*b* mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantra is considered to be the most important of the Mantras addressed to the goddess Tripurasundarī conceived as Šakti.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

Beginning:

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रराजमहामन्त्रस्य आनन्दभेरेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी महाशक्तिर्देवता, ऐं क ए ई ल हीं बीजं, सौः स क ल हीं शक्तिः, झीं ह स क ह ल हीं कींलकं, मम श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमहाशक्तिप्र—गः।

End:

क एई लहीं, हस कह लहीं, सकलहीं ॥

No. 6891. महात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रशेषः.

MAHĀT RIPURASUNDARĪMANTRAŚĒSAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 876 of the MS. described under No. 537. Incomplete.

This Mantra also is addressed to the goddess Tripurasundarī, the great.

Beginning:

एँ क्लीं हीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा इति द्वादशाक्षरं कुरुकुछामन्त्रं त्रिजप्य मूर्धिन, ओं ३ इत्येकाक्षरसेतुमन्त्रं तिर्जपेत् कण्ठे ।

ओं हीं ३ इति महासेतुमन्त्रं त्रिः कण्ठे। ओं अं क. २४। End:

धं चापाय नमः, आं आं पाशाय नमः, कों कों अङ्कराय नमः.

No. 6892. महापश्चकन्यासः.

MAHĀPAÑCAKANYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 28b of the MS. described under No. 2886. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while uttering at the same time the letters of the Gāyatrīmantra. This is considered to be efficacious in removing the five kinds of deadly sins known collectively as Pañcamahāpātakas.

Beginning:

5082

अथ महापश्चकन्यासः---

तत्कारस्य केशवनामधेयं, प्रह्लाद ऋषिः, गायत्री छन्दः, अग्नि-देवता; आं बीजं, प्रह्लादिनी शक्तिः, पृथ्वीतत्त्व, चम्पकवर्णः, उदात्त स्वरः, सुमुखमुद्रा, सर्वपापविनाशनं, अं कीलकं, पादाङ्कष्ठयोर्न्यसेत् ।

तत्कारं चम्पकापीतं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।

शान्तं पद्मासनारूढं ध्यात्वा दहति पातकम् ॥ तत्काराय नमः ।

End:

एवं न्यासं प्रकुर्वाणः यत्र देशे स तिष्ठति । तत्र क्षेत्रे परं ब्रह्म दशयोजनमायतम् ॥

No. 6893. महापादुकामन्त्र:

MAHĀPĀDUKĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 135*a* of the MS. described under No. 537.^{*} Complete.

This Mantra is in praise of the holy sandals of the Śāktagurus. This is considered to be equivalent to praising the Gurus themselves.

Beginning:

अस्य श्रीमहापादुकामन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः, पङ्किः छन्दः, श्रीमहापादुका देवता ; ऐं हीं श्रीं इति बीजं, ऐं क्लीं सौः इति शक्तिः, ऐं ग्लौमिति कीलकं, श्रीमहापादुकाप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End:

वदेति जगदीशानीं श्रीगुर्वङ्घियुगत्रयम् । सर्वसिद्धिप्रदां देवीं श्रीमहापादुकां भजे ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

एं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हरूस्फं हस क्ष म ल वर यूं शेषं पूर्ववत् ॥

No. 6894. महापाशुपतास्त्रमन्त्रः. MAHĀPĀŠUPATĀSTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 294*a* of the MS. described under No. 5477, where this is included in the Mantramālikā mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantrais addressed to the Pāśupītāstra; and its repetition is believed to be efficacious in removing all kinds of evils and calamities.

Beginning:

न्यासध्यानं पूर्ववत्। मन्त्रः---

ओं नमो भगवते अतुरुबरुपराक्रमाय त्रिपश्चनय़नरूपाय नाना-प्रहरणोद्यो(द्य)तकर[ण]ाय सर्वाङ्गवक्त्राय भिन्नाञ्जनप्रख्याय । End :

द्रावय द्रावय सर्वदुरितान् नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा ॥ Colophon:

इति पाशुपतास्त्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 6895. महाबाणन्यासः. MAHĀBĀŅANYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 51b of the MS. described under No. 424. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of one's body, after conceiving oneself to be Manmatha (the god of love), while repeating at the same time the appropriate letters denoting the names of his five arrows.

Beginning:

आत्मानं मन्मथं भावयित्वा झौं चापाय नमः—इति अुवोश्चापं न्यस्य, ज्यां ज्यायै नमः——इति नेत्रयोः ज्यां विन्यस्य, द्रां द्रावण बाणाय नमः द्राविण्यै नमः ।

End:

कोदण्डमिक्षुवरमेकशरं च पौष्पं चकाब्जहस्तस्रणिकाश्चनवंशनालम् । बिभ्राणमष्टविधबाहुभिरर्कवर्णं ध्यायेद्धारें मदनगोपविलासवेषन् ॥

No. 6896. महाभैरवीमन्त्रः. MAHABHAIRAVIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100b of the MS. described under No. 5566, wherein this has been omitted to be mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Bhairavī, i.e., Bhairava's Śakti, conceived as a diety; and its repetition is intended to enable one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीमहाभैरवीमन्त्रस्य कहोलक ऋषिः, ककुत् छन्दः, श्री-महाभैरवी देवता, ओं बीजं, हुं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, ममाभीष्टासि-द्धच्चर्थे विनियोगः ॥

See under the next number for the end.

No. 6897. महामैरवीमन्त्र:.

MAHĀBHAIRAVĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 253b of the MS. described under No. 581, where this is included in the Mantramālikā 229a mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

ओं नमो भगवति महाभैरवि, घम घम रह रह डम डम हुं स्वाहा ॥

No. 6898. महाभेरवीमन्त्र:.

MAHĀBHAIRAVĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 300b of the MS. described under No. 5477, where this has been included in the Mantramālitā 273a mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

ओं नमो भगवति महाभैरवि - घम घम घम ठः ठः ठः दम दम दम हुं फट् स्वाहा ॥

चत्वारिंशत्सहसं पुनश्नरणं दशांशहोमतर्पणमिति ॥

 No.
 6899.
 महावायागन्त्र:.

 МАНАМАХАМАНТВАН.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 456 of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sakti, conceived as casting the veil of illusion on all things, so that what is real appears unreal and what is really unreal appears to be real.

Beginning:

महामायायाः परब्रह्म, त्रिष्ठुप्, परा शक्तिर्देवता।

End:

5086

ओं हीं मूं हीं सुवः हीं सुवः हीं स्वाहा ॥ त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वे तद्बहिर्वृत्तमालिखेत् ।

मूपुरे विलिखेत्साध्यं मध्यं दृष्ठादिशाप्राते ॥ कृष्णपुष्पैः पूजा ॥

No. 6900. महामारीस्तोत्रमन्त्रः. MAHAMARISTOTRAMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Mahāmārī who is probably the same as the Tamil Māriyamman, the presiding deity of small-pox and such other epidemic diseases

Beginning:

अस्य श्रीमहामारीस्तोत्रमन्त्रस्य कनकरुद्र ऋषिः, पाक्किश्छन्दः, महा-मारी देवता ; मं बीजं, क्ली शक्तिः, ह्रौं कीलकं, मम महामारी-प्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं ज्वल ज्वल ज्वालामुखि ज्वालामालिनि ओं महामारि अत्रागच्छ अत्र तिष्ठ शं शक्तिः शाम्भवि शान्तं कुरु कुरु जटाना(गन्ना)यिके हीं ह स क ह ल हीं मदशोणिने महामारि ग्रामं रक्ष रक्ष श्रीं श्रेयग्रि तुष्टिं करोमि स्वाहा ॥

No. 6901. महार्धाम्बामन्त्रः.

MAHĀRDHĀMBĀMANTRAH.

Pages, S. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 20*b* of the MS. described under No. 5673, where this has been included in the $\bar{A}mn\bar{a}yamantra-m\bar{a}lik\bar{a}$ 1*a* mentioned in the list of other works. THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

5087

- Complete.

This Mantra is intended to propitiate Ambā or Šakti conceived as forming one-half of the body of Šiva.

Beginning:

अस्य श्रीमहार्धाम्बामन्त्रस्य चिदानन्दभैरव ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीमहार्धाम्बा देवता; ऐं बीजं, ईं शक्तिः, सौः कीलकं, मम श्रीमहा-र्धाम्बाप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End:

एँ ई सौः क ए ई ल हीं, ह स क ह ल हीं स क ल हीं सं साधिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, ई महासंहारिणे ठरो चण्डकाली फट्, [ह्रीं ह्रूरूस्फ्रें महाघोरे अनन्गभास्करे महाचण्डकाली फट्] ह्ररूस्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरी ऐं ह्रीं श्रीं ह्र्ल्स्फ्रे ह्रेसे स्हौं ह्र्र्स्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीमहार्घाम्बा श्री ॥

No. 6902. महाधाम्बामनत्र:.

MAHĀRDHĀMBĀMANTRAĻ

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232a of the MS. described under No. 134, where this has been included in the Sadāmnāvamantra 2286 mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहार्धामन्त्रस्य चिदाकाशानन्दमैरव ऋषिः, अतिजगती छन्दः, महार्धा देवता, ऐं बीजं, ईं शक्तिः, सौः कीलकं, महार्धाप्र---गः। End:

चण्डकाली फट्र, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं स्टीष्टीनत्ये स्वाहा, ह स क (ह) ल ही रूप्रें घाम ह्र्फ्स्फ्रें महाधीम्बा दिव्यश्री—मि नमः ॥ 415-A

No. 6903. महार्घामन्त्र:.

MAHĀRDHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 673, wherein this has been included in the Sadāmnāya mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Ardhā is the same as Ardhāmbā.

Beginning:

अस्य श्रीमहाधीमहामन्त्रस्य चिदानन्दभैरव ऋषिः, जगती छन्दः, महाधी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम महाधांप्रसाद-ासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सं सृष्टिनित्ये स्वाहा स क ल ही, सौः ई ऐं महार्धाश्रीपा---नमः ॥

No. 6904. महालक्ष्मीकवचम्.

MAHĀLAKȘMĪKAVACAM.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Addressed to Mahālaksmī, and believed to have the power to enable one to accomplish one's objects and to removes in and misery.

Beginning:

राकं ब्रह्मोवाच-

महालक्ष्म्याः प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् । सर्वपापप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥

THE SANSKRII' MANUSCRIPTS.

महालक्ष्मीदिशरः पातु ललाटं मम पङ्कजा । कर्णौ रक्षेद्रमा पातु नयने नलिनालया ॥

End:

एवं देवीप्रभावेन शुकः कवचमाप्तवान् । कवचानुप्रहेणैव सर्वान् कामानवामुयात् ॥ * कान्त्या कात्रनसन्निमां हिमगिरिप्रख्यैश्वतुर्भिर्भुजैः हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् । बिम्रन्ती(आणां)श्रियमब्जयुग्ममभयां हस्तैः किरीटोज्ज्वलां क्षोमाबद्धनित्तम्बबिम्बऌलितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

No. 6905. महावाक्यमन्त्रः. МАНĀVĀКҮАМАNTŖAӉ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5854 Complete.

This Mantra consists of four well-known Upanisadic sentences known as Mahāvākyas, the object to be attained by their repetition being the realization of the unity of the finite soul with the absolute Brahman.

Beginning:

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिश्व तत्पुत्रपराशरश्व ।

व्यासं शुकं गौडेपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥

तं शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपाद्व हस्तामलकव शिष्यम् ।

तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानसादुरून् सन्ततमानतोऽसि ॥

शं नो मित्रश्शं वरुणः अवतु वक्तारम् । ओं शान्तिश्शान्ति-श्शान्तिः । महावाक्यमन्त्रन्यासः । अस्य श्रीमहावाक्यमन्त्रस्य हंस ऋषिः, सत्यो देवता, अव्यक्तगायत्री छन्दः, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं जीवब्बब्बैक्यार्थे जपे विनियोगः ।

End:

ंदृश्यमानस्य सर्वस्य जगतस्तत्त्वमीर्थते ।

बह्यशब्देन तद्वह्य स्वप्रकाशात्मरूपकम् ॥

ओं तत्सत् । ओं शं नो मित्रशं वरुणः । आवीद्वक्तारम् । ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

No. **6906. महावाक्यमन्त्र:.** МАНА́VÁЌYAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 2423. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहावाक्यमहामन्त्रस्य परमहंसपरब्रद्म ऋषिः; अव्यक्ता गायत्री छन्दः, परमहंसपरमात्मा देवता; हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम परमहंसप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

तत्त्वमसि । अयमात्मा वह्य । प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्मा । ब्रह्मज्यो-तिरहम् ॥

No. 6907. महाविद्यानवविद्यानवदुर्गाप्रत्यङ्गिरामन्त्रः. MAHĀVIDYĀNAVAVIDYĀNAVADURGĀPRAT-YANGIRĀMANTRAH.

Pages, 35. Lincs, 5 on a page.

Begins on fol 90a of the MS. described under No. 235, wherein this is called Mahāvidyā in the list of other works.

Complete.

This Mantra is chiefly addressed to Navadurgā, and is intended to secure the favour of that deity. It contains also a number of Mantras relating to various deities. All these Mantras are probably collectively called Mahāvidyāmantras.

Beginning:

अस्य श्रीमहाविद्यानवविद्यानवदुर्गाप्रत्याङ्गरामहामन्त्रस्य अरण्यश्वर ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणी किरातधरवनदुर्गा ईश्वरी देवता, दुं बीजं, ह्वीं शक्तिः, श्रीं क़ीलकं, महाविद्यानवविद्यावनदुर्गा-प्रत्याङ्गराप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

तामग्निवर्णी तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।

दुर्गो देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरासि तरसे नमः । , दुर्गायै नमः---

ओं कालदण्डकृतां विद्यां रक्तलोचनमूर्धजाम् ।

मातमें मधुकैटमन्नि महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि । निश्रोषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निशुम्भापहे शुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥

No. 6908. महाविद्यावनदुर्गापन्त्रः. MAHĀVIDYĀVANADURGĀMANTBAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 52*a* of the MS. described under No. 5572, wherein this is called Mahāvidyāmantra.

Complete.

This Mantra is addressed to Vanadurgā who is a manifestation of Pārvatī. The name Vanadurgā indicates that the goddess is to be conceived as generally residing in a forest.

Beginning:

अस्य श्रीमहाविद्यामन्त्रस्य शिरसि मृत्युअय ऋषिः, मुखे गायत्री त्रिष्टुप् अनुष्टुप् बृहती पङ्किश्छन्दांसि, इदये बाह्मीत्यादिनवशक्तयो

देवताः, महादेवो देवता; दुं बीजं, हीं शक्तिः, कों कीलकं, महा-विद्याप्रीत्यर्थे जेपे विनियोगः । ह्रामित्यादिषडङ्गन्यासः । ध्यानम्----

• उद्यद्भास्वत्समाभां नमामि ॥

अस्य श्रीमहाविद्यामन्त्रस्य शिरसि अन्तर्यामी ऋषिः, मुखे देवी गायत्री छन्दः, हृदये श्रीवनदुर्गा देवता; ऐं बीजं, हीं शक्तिः, कों कीलकं, महाविद्यार्थे विनियोगः । End:

पश्वयोजनविस्तीर्णे मृत्योश्च मुजमण्डले ।

तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ जानवेदसे सुनुवाम सोम

श्रुणुयाम देवाः --- दधातु ॥

मातमें मधुकैंटभान्न महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि । निश्रोषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निसुम्भापहे सुम्भध्वंसिनि संहराग्रु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥

No. 6909. महाविद्यावनदुर्गामन्त्र:. MAHĀVIDYĀVANADURGĀMANTRAH Pages, 41. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 65*b* of the MS. described under No. 5586. Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमहाविद्यानवविद्यानवंदुर्गाप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रस्य अरण्येश्वर ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणी किरातघरवनदुर्गा ईश्वरो देवता ; दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, महाविद्यानवविद्यावनदुर्गा-प्रत्याङ्गिराप्रसादासिद्धचर्थे जेप विनियोगः ॥

See under the previous number for the end.

No. 6910. महाविद्यावनदुर्गास्तोत्रमन्त्रः.

MAHĀVIDYĀVANADURGĀSTŌTRAMANTRAH.

Pages, 68. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5987. Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Vanadurgā, is believed to be efficacious in removing all sorts of diseases, in driving off evil spirits and in the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीमहाविद्यावनदुर्गास्तोत्रमन्त्रराजमहामन्त्रस्य अरण्येश्वर ऋषिः, अत्य[न्ता]नुष्टुप् छन्दः, . . . किरातरूपधर ईश्वरो देवता; ओं दुं बीजं, हीं शक्तिः, कों कीलकं, मम श्रीवनदुर्गा-प्रसादासिद्धचर्थे सर्वाभीष्टसिद्धचर्थे रोगकत्रिमस्फोटकज्वरपरमन्त्रपरयन्त्रपर-तन्त्रपरप्रयोगादिसर्वप्रहोचाटनार्थे मम इष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

महादेव्ये च विद्महे विष्णुपत्न्ये च धीमहि ।

तन्नो लक्ष्मीः प्रचोद्यात् ॥

ओं ही श्री व्दं ब्रह्मकोशिनि मां रक्ष रक्ष हुं फट् खाहा ।

ओं वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अम्रस्य विद्युतः ।

रोहन्तु सर्वबीजान्यव बह्मदिषो जहि ॥

शन्नो मित्रदशं वरुणः । . . . आवीदक्तारम् । ओं शान्तिदशान्तिदशान्तिः । पुनश्चरणविधानात् एकविंशतिवारं पारायणानि कुर्यात् ॥

Colophon:

इति पुनश्चरणविधिः ॥

No. 6911. महावीरप्रतापहनूमन्मालामन्त्रः.

MAHĀVĪRAPRATĀPAHANŪMANMĀLĀMANTRAH Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 18*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Hanūmat is believed to be efficacious in counteracting the harm caused by evil spirits and the evils coming from various quarters.

Beginning:

ओन्नमो भगवते महावीरप्रतापहनूमते कोटिसूर्यप्रकाशाय वेदशास्त-प्रमोदाय ऋग्यजुस्सामाथर्वणस्वरूपाय बालब्बसचारिणे सुवर्णयज्ञोपवी-ताय ।

End:

सर्वग्रहबन्धनाय सर्वदिग्बन्धनाय ओन्नमो भगवते हुं फट् स्वाहा । वीरहनूमते हुं फट् स्वाहा ॥

No 6912 महाशरभमन्तः. MAHĀŚARABHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 238b of the MS. described under No. 581, where this is included in the Mantramālikā mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Śiva in his peculiar beast-and-bird form. Its repetition is intended to enable one to accomplish the four Puruşārthas or principal aims of life, viz., Dharma, Artha, Kāma and Mōkṣa.

Beginning:

अस्य श्रीमहाशरभमन्त्रस्य त्रिपुरान्तक ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, त्रिपुरसंहारमहारुद्रो देवता, मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः---

र्जो नमोऽछपादाय द्विशिरसाय द्विनेत्रत्रयाय द्विपक्षाय सपु-च्छाय अग्निवर्णीय मृगविहगरूपाय श्रीवीरशरमाय नमः ॥

> No. 6913. महाशरभमन्त्रः. MAHĀŚARABHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92b of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above-

No. 6914. महाशास्तामन्त्रः. MAHĀŚĀSTĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 300*a* of the MS. described under No 5477, where this is included in Mantramālikā mentioned in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Śāstā, a village deity popularly known in Southern India as Ayyanār in Tamil, is believed to be efficacious in securing the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीमहाशास्तामन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहा-शास्ता रुद्रो देवता, ओं हं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम सर्वाभष्टि-सिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

ओं ऐं क्लें हीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं महाशास्ता रुद्रायार्थलामाय पुत्रलामाय शत्रुनाशाय.

महाशास्ताय नमः । यन्त्रम्---

No. 6915. महाशास्तामन्त्रः. MAHĀŚĀSTĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 253*a* of the MS. described under No. 581, wherein this is included in the Mantramālikā 229*a* mentioned in the list of other works.

Complete

Similar to the above

Beginning:

अस्य श्रीमहाशास्तामन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्ठुप् छन्दः, . . . शक्तिः, मम सर्वाभीष्टासिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

ओं ऐं हीं सौं क्वीं श्रीं हीं हीं क्वीं हारिहरपुत्राय अर्थलामाय पुत्रलामाय शतुनाशाय सर्वस्त्रीमोहनाय मदगजतुरङ्गवाहनाय महाशा-स्ताय नमः ॥

No. 6916. महाशास्तामन्त्रः. MAHĀŚĀSTĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 104b of the MS. desoribed under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6917. महाशास्तामन्त्र:. MAHĀŚĀSTĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 2424.

Complete.

Similar to the above.

Believed to be efficacious also in bringing people under one's magic control and in driving out evil spirits, etc.

Beginning:

अस्य श्रीमहाशास्तामम्त्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महा-शास्ता देवता, श्री बीजं, खाद्दा शक्तिः, मम वश्याकर्षणार्थे जपे विनियोगः ॥

End:

ओं श्रीं हरिहरपुत्राय पुत्रलामाय रात्रुनाशाय मदगजवाहनाय महा-शास्ताय हीन्नमः ॥

No. 6918. महाशूलिनीमन्त्रः.

MAHĀŚŪLINIMANTRAH.

Pages, S. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 6025. Complete.

This Mantra is addressed to Sakti conceived as holding a spear in her hand; and its repetition is believed to be efficacious in counteracting the harm caused by evil spirits and by hostile Mantras and Tantras.

Beginning:

अस्य श्रीमहाशूलिनीमहामन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, ककुप्(त्) छन्दः, मतिक्रियाशूलिनी देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं, सकल्महरूत्रिमपरमन्त्रयन्त्रतन्त्रविच्छेदनार्थे जपे विनियोगः ।

End:

बिम्राणा शूलबाणास्यभयवरगदाचापपाशान् कराग्रैः मेघरयामा किरीटोछसितशशिकला भीषणा भूषणाव्या । सिंहस्कन्धाधिरूढा चतस्तमिरसिखेटान्विताभिः परीता कन्याभिर्भिन्नदैत्या भवतु भवभयध्वंसिनी शूलिनी सा ॥ पश्चपूजां कुर्यात् ॥

No. 6919. महाषोढाद्वयीन्यासः. MAHÁŞÖDHÁDVAYĪNYÁSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 45h of the MS. described under No. 673, where this has been included in the Sadamnāya 1*a*, mentioned in the list of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body twice six times, while repeating the Mantra formulas herein given. This kind of Nyāsa is held to be able to confer prosperity on one.

Beginning:

जातियुक्तेन बीजेन षडङ्गन्यासमाचरेत् ।

ओं ऐं हीं श्रीं हसौं सहौं हं सो हृदयाय नमः । End:

महाषोढाद्वयीन्यासो यत्करोति दिनेदिने ।

देवारसर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः ॥

तत्रस्रो विजयो लाभः सम्मानं पुरुधा प्रिये।

तन्मां मृत्युमवामोति यदि त्राता शिवस्त्वयम् (?) ॥

Colophon:

इति महाषोढान्यासः सम्पूर्णः ॥

No. 6920. महासुदर्शनमन्त्रः.

MAHĀSUDARŚANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 226b of the MS. described under No. 537. Complete. This Mantra is addressed to Vișnu's discus; and its repetition is believed to secure protection to one from evil spirits, etc Beginning:

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय चकरूपाय सर्वत्र मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

End:

सर्वदुष्टमहान् छिन्धि छिन्धि ह ह ह ह हि हि हि ॥

No. 6921. महासौराष्टाक्षरीमन्त्रः.

MAHĀSAURĀSTĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 179a of the MS. described under No. 446. Complete

This Mantra consisting of eight syllables is intended to propitiate the sun-god.

Beginning:

अस्य श्रीमहासौराष्टाक्षरीमहामन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता; ओं घृणिरिति बीजं, सूर्येति शक्तिः-आदित्य इति कीलकं, मम श्रीसूर्यनारायणप्रसादासिच्चार्थे जपे विनियोगः। End:

ओं घृणिस्सूरिय आदित्योम्, अष्टलक्षजपासिद्धिः । पायसतिलार्क, समिधा(दा)ज्यहोमेन सर्वकार्यसिद्धिः । रक्तगन्धरक्तपुष्पगुडोदकक्षीर-गुद्धोदकतर्पणेन जपदशांशतर्पणहोमबाह्मणसमाराधनेन सर्वाारिष्टशान्तिर्भ-वति ॥

No. 6922. मातज्ञीकवचः. MĀTANGĪKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 1226 of the MS. described under No. 5643, Complete.

This Mantra is addressed to Mātangī, who is probably a manifestation of Śakti; and its repetition is believed to secure her help and protection and thus enable a person to accomplish his desires. The concluding stauzas describe well the religious officacy of this Mantra.

• Beginning :

अस्य श्रीमातङ्गीकवचमन्नस्य महायोगीश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीराजमातङ्गी देवता, विनियोगः ।

शिखां मे श्यामला पातु मातङ्गी मे शिरोऽवत् ।

* ललाटं पातु चण्डाली अुवौ मे मदशालिनी ॥

End:

महालक्ष्मीर्मम धनं विश्वमाता सुताम(न्म)म । श्रीमातङ्गीश्वरी नित्यं मां पातु जगदीश्वरी ॥ मातङ्गीकवचं नित्यं य एतस्रपठेन्नरः । स खित्वं(जित्वा)सकलान् लोकान् दासीभूतान् करोत्यसौ ॥

सर्वान् कामानवामोति महाभोगांश्च दुर्रुभान् । मुक्तिमन्ते समामोति साक्षात्परशिवो भवेत् ॥

> No. 6923. मातङ्गीकवचः, MĀTANGĪKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 168a of the MS. described under No. 124, wherein it is omitted to be included among the other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमातर्ङ्गीकवचमन्नस्य महायोगीश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीराजमातङ्गी देवता, विनियोगः ।

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

शिखां में क्यामला पातु मातङ्गी में शिरोऽवतु । ललाटं पातु चण्डाली अुवौ में मदशालिनी ॥

End:

श्रीमातङ्गीश्वरी नित्यं मां पातु जगदीश्वरी । मातङ्गीकवचं नित्यं य एतत्रपठेन्नरः ॥

सर्वान् कामानवामोति महाभोगांश्च दुर्रुमान् । मुक्तिमन्ते समाप्नोति साक्षात्परशिवो भवेत् ॥

No. 6924. मातङ्गीश्वरीमन्त्र:.

MĀTAŅĢĪŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fo!. 230b of the MS. described under No. 581, where it is included in the Mantramālikā 229a mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantra is also addressed to the goddess Mātangī and is understood to be efficacious in securing the accomplishment of the four Puruşārthas.

Beginning:

अस्य श्रीमातङ्गीश्वरीमन्नस्य मतङ्ग ऋषिः, अमितछन्दः, श्री-मातङ्गीश्वरी देवता, ऐं बीजं, ह्वीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, महा(म)चतुर्विध-पुरुषार्थ(सिच्चर्थे) विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—

हीं श्रीं क्लीं ऐं उच्छिष्टचण्डालि माताङ्गी सर्वजनवश्चीकरि क्लीं सौः स्वाहा ॥

No. 6925. मातङ्गीश्वरीमन्त्रः. MĀTAŅĢĪŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 87*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6926. मातङ्गीश्वरीमन्त्रः. MĀTANGĪŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 274b of the MS. described under No. 5477, where this is included in the Mantramālikā 273a, mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमातङ्गीश्वरीमन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, आमितच्छन्दः, श्रीमा-तङ्गीश्वरी देवता; ऐं बीजं, ह्वीं शक्तिः, श्रीं कील्कं, मम चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ऐं श्रीं मों नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्वजनमनोहारे.

सर्वलोकममुकं मे वरामानय स्वाहा ।

लघुश्यामरू(ाया)मतान्तरे मन्त्रः----

ऐं क्लीं हीं श्रीं उच्छिष्टचण्डालि माताङ्गि सर्वजनवशंकरि स्वाहा ॥

Colophon:

इति मातज्जी ॥

THE SANSKBIT MANUSORIPTS.

No. **6927.** मातृकान्यास:. MĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating each of the letters of the alphabet along with a name denoting Vișnu.

Beginning:

एषामेकपश्वाशन्मातृकामन्नाणामन्तर्यामी ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, अनादिरूपी श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता ; मातृकान्यासे विनियोगः ।

अं अजाय नमः शिरसि, आं आनन्दाय नमः मुखे ।

End:

इत्येते एकपञ्चाशद्वर्णदेवताः ।

ऋषिर्गुरुत्वाच्छिरसैव धार्यः छन्दोऽक्षरत्वात् व(द)नागतं स्यात् । धियावगन्तव्यतया सदैव हृदि प्रदिष्टा मनुदेवता या ॥

No. 6928. मातृकान्यास:.

MĀTŖKĀNYĀSAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 673.

Complete.

Different from the two previous Nyāsamantras. Here the touching of certain parts of the body is accompanied by the repetition of some of the letters of the alphabet along with a name denoting the goddess Śakti.

416-A

Beginning :

अथ मातुकान्यासः----

ओं ऐं हीं श्रीं हसौं सहौं अं कं खं गं घं डं अनन्तकोटि भूचरकुलसेवितायै, आं कां मङ्गलाम्बादेव्यै । End :

यं रं रुं वं रां षं सं हं ळं क्षं इति मातृकाभैरवाधिरूपायै श्री-पराम्बादेव्यै नमः—सर्वाङ्गं व्यापयेत् ॥

Colophon:

इति मातृकान्यासः ॥

No. **6929. मातृकान्यास:.** MĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 61*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This method of Nyāsa which is different from the one described under the previous number is particularly intended to please Sarasvatī.

Beginning :

अस्य श्रीमातृकान्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मऋषये नमः, गायत्रीछन्दसे नमः, मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः, हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः, बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः, मातृकासरस्वतीप्रसाद-सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

हं नमः हृदादिवामपादान्तं तद्वत् । ळं नमः हृदयादिगुह्यान्तं करतलेन । क्षं नमः हृदयादिमूर्घान्तं करतलेनेति शिवम् ॥ Colophon:

इति मातृकान्यासः ॥

No. **6930.** मातृकामन्न:. MÄTRKÄMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consists in the repetition of the letters of the alphabet combined with a name denoting Vișnu.

Beginning:

अथ मातृकामन्त्रः । ओं--इति प्राणायामः १२.

ओं मू: हृदयाय नमः, ओं भुवः शिरसे स्वाहा ।

एषां मातृकामन्त्राणामन्तर्यामी ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, अजा-दिरुपी श्रील्रक्ष्मीनारायणो देवता, नारायणप्रेरणया नारायणप्रीत्यर्थे मातृकामन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

ओं अं अजाय नम इत्यादि क्षं श्रीलक्ष्मीनरसिंहाय नम इत्यन्तं जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6931. मातृकामन्त्र:.

MATRKAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 229*a* of the MS. described under No. 581. Complete.

This Mantra consists in the repetition of the letters of the alphabet combined with the Anusvāra, and this repetition, if accompanied by certain ceremonial acts, is believed to enable even a dumb person to become a poet and to win a good reputation.

Beginning:

अस्य श्रीमातृकामन्नस्य बह्या ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृका-सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, सकलमन्नानुष्ठानसि-द्वचर्थे विनियोगः ।

End:

यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं एतया विद्यया त्रिवारमुदकम-भिमन्त्र्य पिबेत् । मूकस्यापि कवित्वमष्ठमासादर्वाक्, कीर्तिं लभते ॥

No. 6932. मातृकामन्त्र:. MĀTRKĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 86*a* of the MS. described under No. 5566. Complete.

Same as the above.

No. 6933. मातृकासरस्वतीमन्त्रः.

MÄTRKÁSARASVATĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 2886.

This Mantra relates to the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the letters of the alphabet. The mental touching, so to say, of the Satcakras through contemplation is also indicated herein.

Beginning:

अस्य श्रीमातृकासरखतीमन्नस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मा-तृकासरखती देवता; हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः, खरा(रे)भ्यक्शक्तिभ्यो नमः, बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः, ना(न्या)से विनियोगः । End:

आधारे वं नमः शं नमः षं नमः सं नम इत्यन्तर्मातृकान्यासं कत्वा ततो गायत्रीजपं कुर्यात् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

5107

No. 6934. मायादेवीकवचम्. MĀYĀDĒVĪKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 156 of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the 32nd Adhyāya in Prayōgavijayasārāvalī.

Addressed to Māyādēvī for securing her favour and protection. Beginning :

श्रीशिव उवाच---

अथ वक्ष्ये महागुह्यं कवचं सर्वसिद्धिदम् । समाहितेन मनसा श्रृणु कल्याणि तादृशीम् ॥

ऋषिर्देव(व्या)स्तु कवचं(चे) मृत्युझय उदाहृतः । उष्णिक् छन्दस्तथा देवि देवता जगदम्बिका ॥ ह्रीङ्कारं बीजमित्युक्तमोङ्कारं शक्तितत्परम् । आशु तादात्म्यसिद्धचर्थे विनियोगो वरानने ॥

अथेश्वर्य(म्र)तः पातु पृष्ठतो विजयेश्वरी । अजिता वामतः पातु दक्षिणं मेऽपराजिता ॥

End:

कवचेनावृतं विद्यात्संपूज्यं सकलैरपि । अनेनैव शरीरेण जीवन्मूक्तो भवेच्छिवे ॥

Colophon:

इति प्रयोगविजयसारावल्यां मायाकवचाविधानं नाम द्वालिंज्ञः पटलः ॥

No. 6935. मायामन्त्र:. MÄYÄMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 45*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Māyā who is the Sakti of the Brahman and possesses the power of creation. She is called Māyā because she casts an illusion over all things so that what is real is seen to be unreal and what is unreal is seen to be real.

Beginning:

मायायाः मङ्कणः, उष्णिक्, महामाया तु, माया बी, माया शक्तिः, मायाकरणसिद्धचर्थे, माययैव षडङ्गम् । End:

स्वेच्छाकुतुहुलं शीघ्रं दुर्शयेति द्वयं यथा।

हीक्कारस्वाहया युक्तं मन्त्रं पश्चदशार्णकम् ॥ पश्चाशत्सहस्रं जपः । सर्वे पूर्ववत् ॥

No. 6936. मायामोहिनीमन्त्रः. MÁYAMOHINIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 313*a* of the MS. described under No. 5477. Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Möhinī is understood to have the power to enable one to bring under one's influence any woman with whom one may fall in love.

Beginning:

अस्य श्रीमायामेहिनीयक्षिणीमन्त्रस्य मन्मथ ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मायामोहिनी देवता, क्लां बीजं, क्लीं शक्तिः, क्लं कीलकं, मम वाञ्छि-तकामिन्याकर्षणार्थे विनियोगः ।

End:

ओं क्वीं हीं ओं नमो भगवति मोहिनि यक्षिणि सर्वस्त्रीवश-इति मायायक्षिणि सर्वस्त्रीः आकर्षयाकर्षय स्वाहा । लक्षजपः ॥

No. 6937. मालवीदुर्गामन्त्रः. MALAVIDURGAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49*a* of the MS. described under No. 5445, wherein this Mantra is omitted to be given among the other works mentioned therein.

Complete.

This Mantra is addressed to the Durgā named Mālavīdurgā. It is stated in the end that if this Mantra is repeated during seven successive nights after observing certain ceremonials, one obtains a pot full of precious jewels.

Beginning:

ओं नमो हृदयाय नमः, भगवति शिरसे(स्वाहा), मालवि मालवि शिखायै वषट्, कुरु कुरु कवचाय हुं, कुमुदाञ्जानि नेत्रत्रयाय वौषट्, स्वाहा अस्नाय फट्। ध्यानम्—

> स्वर्णे हारमिष्ठुं प्रसूनमभयं पाशं च संख्याक्रिया-माहानं करपछवेषु दघतीमुद्यद्दिनेशप्रभाम् । सिन्दूराङ्कितरक्तदेहलतिकां देवीं सदाहं भजे नानारत्नपरिष्क्रतां त्रिणयनां रक्ताम्बरां मालवीम् ॥

ओं नमो भगवति मालवि मालवि कुरु कुरु कुमुदाञ्जनि स्वाहा ।

End:

तदन्तस्तन्मन्त्रवर्णान् विलिख्य, षोडशोपचारैरभ्यर्च्य, तत्कलशं तदु-परि निधाय, तत्समीपे सप्तरात्रं जपं कुर्यात् । अष्टमे दिने कांचित् स्त्रियं मालवीतोषणाय यथासुखमनुगच्छेत् । तत्कलशः मालवीपसाद-दिव्याभरणैः पूरितो भवति ॥

No. **6938. मालिनीयन्त्र:.** MĀLINĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page,

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 5673.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Mālinī who is a manifestation of Śakti. She is called Mālinī probably because she is conceived as wearing a necklace made up of skulls.

Beginning:

अस्य श्रीमालिनीमन्नस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमालिनी देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम मालिनीप्रसादासि-द्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

यं रं रुं वं शं षं सं हं ळं क्षं मालिन्यम्बाश्री ॥

 No.
 6939.
 माल्रिनीयन्त्र:.

 MĀLINĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 2848. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

मालिनीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मालिनी देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कील्ठकं, विनियोगः, आं ईं ऊं ऐं औं अः—-इति न्यासः।

ILOUTER TROTE I DURANGE

End:

पत्राशहर्णमन्त्रमालिन्यम्बाश्री ॥

No. 6940. मालिनीमनत्र:. MĀLINĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 673, wherein this Mantra is found in the Ṣaḍāmnāyamantras given as other work therein

Complete.

· Similar to the above.

Beginning:

अस्य मालिनीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,,मालिनी देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मालिनीप्रसादासिच्चर्थे जपे विनि-योगः ।

End:

मनुः---

अं- क्षं ५० मालिन्यम्बाश्रीापादुकां पूजयामि ॥

No. 6941. मालिनीमन्त्र:. MALINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 284*a* of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra is found to be in the group of Mantras denoted by the general name of Ṣaḍāmnāyamantra given as other work therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमालिनीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मालिनी देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मालिनीप—गः। अं इत्यादिन्यासः।

End:

पश्वाशद्वर्णा एव मन्त्रः मालिनीमन्त्रदिव्यश्री --- मः ॥

No. 6942. मालिनीमातृकान्यासमन्त्रः.

MĀLINĪMĀTŖKĀNYĀSAMANTRA.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 194a of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra has been omitted to be included among the other works contained therein.

Complete.

This Mantra consists of the letters of the alphabet (combined with Anusvāra) which are to be repeated with the formula क्वीं हीं ऐ while touching certain parts of the body.

Beginning:

अस्य श्रीमालिनीमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमालिनीमातृका देवता, ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हीं कीलकं, ममेष्ट-देवताप्रीतये मालिनीमातृकान्यासे विनियोगः ! End :

अं नमः श्रीं हीं ऐं इत्यादि क्षान्तं मातृकास्थानेषु न्यसेत् ॥ Colophon:

इति मालिनीमातृकान्यासस्समाप्तः ॥ इति साधारणदशविधमातृका-न्यासः समाप्तः ॥

No. 6943. मिश्राम्बामन्त्रः. MIŚRĀMBĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 124. wherein it is found to be among the Sadāmnāyamantra 228b.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Miśrāmbā who is evidently the same as Śakti.

Beginning :

अस्य श्रीमिश्राम्बामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः; गायत्री छन्दः, मि. श्राम्बा देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं, मिश्राम्बाप्र—गः। End:

षें मिश्राम्बादिव्यश्री---मः॥

No. 6944. मिश्राम्बामन्तः.

MIŚRĀMBĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8*a* of the MS. described under No. 673, wherein this Mantra is found in the Sadāmnyāyamantra given as other work therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमिश्राम्बामहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, मिश्राम्बा देवता, ऐं बीजं, हीं शक्तिः, क्वीं कीलकं, मम मिश्राम्बा-प्रसादासिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End:

पञ्चपूजा। मनुः---आं ई ऊं ऐं ओं अः---मिश्राम्बाश्रीपा---नमः ॥

No. **6945**. मिश्राम्बामन्त्रः. MIŚRĀMBĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Amnāyamantramālikā group.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमिश्राम्बामहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमिश्राम्बा देवता, ऐं बीजं, हीं शक्तिः, क्रीं कीलकं, मम श्रीमिश्रा-म्बाप्रसादासिद्धर्थे विनियोगः ।

End:

मनुः---

ऐं मिश्राम्बाश्री॥

No. 6946. मुख्यप्राणमन्त्र:.

MUKHYAPRĀŅAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra is addressed to the chief vital air. It is a Vēdic hymn consisting of 5 Rks in the 141st Sūkta of the first Maņdala, 7 Rks in the 36th Sūkta, and one Rk in the 137th Sūkta of the tenth Maņdala in the Rgvēda.

Beginning :

गुरुनमस्कारः । ओं प्राणाय नमः ओं इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीमुख्यप्राणत्रयोदशर्चसूक्तमहामन्त्रस्य भृगुः ऋषिः, जगती छन्दः, मुख्यप्राणो देवता ; मुख्यप्राणप्रेरणया मुख्यप्राणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

उत ते (दे)वा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः उतागश्चकृषं देवा देवा जीवयथा पुनः इत्यन्तं जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

No. 6947 मुद्रानवकमन्त्र:.

MUDRĀNAVAKAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā group.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess presiding over the nine Mudras which are—

- 1. Sarvasanksöbhinī.
- 2. Sarvavidrāviņī.

- 6. Sarvamahānkusā.
- 7. Sarvakhēcarī.
 8. Sarvabīja.

- 3. Sarvākarsiņī.
- 4. Sarvonmadini.
- 5. Sarvavaśankarī.

9. Sarvayõni.

By Mudras are meant certain ways of intertwining the fingers used in the conduct of religious worship. Beginning:

अस्य श्रीमुद्रानवकमन्त्रस्य अष्टभैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-परमानन्दभैरवो देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्वीं कीलकं, मम श्रीमुद्रा-नवकप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

एं सर्वयोनिमुदा श्री, सौः सर्वत्रिखण्डमुद्राशकत्रचम्बाश्री ॥

No. 6948. मुद्रानवकमन्त्र:.

MUDRÁNAVAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 25b of the MS. described under No. 2848. wherein it is found in the Pūrvāmnāyamantramālikā group.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

सर्वाकर्षिणि, सर्ववशङ्कराणि, सर्वोन्मादिनि, सर्वमहाङ्कुशे, सर्वखेचरि, सर्वात्रेखण्डमुद्रादेव्यम्बा श्री ॥

No. **6949. मुद्रामन्त्र:.** MUDRĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Şadāmņāyamantra group.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रींमुद्राणां मन्त्रस्य भैरव ऋषिः गायत्री छन्दः, आनन्द-भैरवो देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्ली कीलकं, नवमुद्राप्र—गः। End:

हररेकं—सर्वखेचरीमुद्रादेवीदि—, ह्सौः—सर्वबीजमुद्रादेवीदि—, एं—सर्वयोनिमुद्रादेवीदिव्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

No. **6950, मूर्तिन्यास:.** MŪRTINYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 673.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the letters of the alphabet and also the s-veral names of Viṣṇu, Śiva and Brahmā with their respective Śaktis The Trimūrtis are conceived here as being merely manifestations of Dēvī.

Beginning:

अथ मूर्तिन्यासः ----

अं केशवदयाभ्यां नमः -शिरसि, आं नारायणदिव्याभ्यां नमः--दक्षमुखे, इं माधवेष्टदाभ्यां नमः---दक्षस्कन्धे, । ईं गोविन्देशानीभ्यां नमः-----दक्षकुक्षौ ।

End:

Colophon:

इति मूर्तिन्यासः ॥

No. 6951. मूर्तिपज्जरन्यासः. MÜRTIPAÑJARANYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 424. Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the Mantra-formulas containing the twelve well-known names of Vișnu.

Beginning:

अथ मूर्तिपज्जरन्यासः---

ओं अं ऋष्णवर्णाय केशवाय धात्रे नमः – शिरसि, ओं नं आं कनकवर्णाय नारायणायार्यम्णे नमः – कुक्षौ ।

End:

ओं यं आं हां अझनवर्णाय दामोदराय नमः---ककुदि, ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः----शिरसि ॥

No. 6952. मृतसञ्जीविनीमन्त्रः. MRTASANJİVINİMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 254b of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the Mantramālikā group.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Rudra is believed to be efficacious in saving one from the immediate danger of death.

Beginning:

अस्य श्रीमृतसञ्जीविनीमन्त्रस्य उज्ञना ऋषिः, अस्या(त्य)नुष्टुप् छन्दः, मृतसञ्जीविनी (देवता) मृत्युञ्जयरुद्रप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः । End :

त्रियम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ सुवः भुवः भूः ओं सो हं सः जूं ओं हां ॥

No. 6953. मृत्यु अयन्यम्बकमन्त्र:.

MRTYUÑJAYATRYAMBAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 98*a* of the MS. described under No. 446. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमृत्युझयब्यम्बकस्तोत्रमन्त्रस्य मै(मि)त्रावरुणपुत्रो वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मृत्युझयब्यम्बकरुद्रो देवता; देवदेव्यौ प्रणवौ बीजशक्ती, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रः कीलकम् । अत्र मूलमन्त्रेण करशुद्धिं कृत्वा ।

End:

इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं त्रियम्बकम् । हुवेन्मन्त्रं त्रियम्बकम् ॥ च्यम्बंकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ अयुतञ्च प्रजपेत् ॥

> No. 6954. मृत्युप्रयोगमन्त्रः. MRTYUPBAYÖGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Ākāśabhairavakalpa which is given as other work therein.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Yama, the god of death. is believed to be efficacious in causing the destruction of one's enemies.

Beginning:

मत्योः नारायणः, उष्णिक्, मृत्युर्जीवान्तको यमः ; दं(बी,) हैं(श,) योग च(गश्च)जीवसंहारे । दामित्यादिन्यासः । End:

ओन्नमो भगवते मृत्यवे यमाय दण्डहस्ताय दं हैं देवदत्तं गृह-(हाण) सर्वलोकभयङ्कराय नाशय नाशय हैं हुं फट् स्वाहा ॥

> य इदं(मं)कालमन्त्रं तु निशामध्येऽयुतं पुनः । जप्त्वा ततो जपेन्मन्त्रं सहस्रं नामपूर्वकम् ॥ तज्जपस्यावसाने तु स रिपुर्मरणं व्रजेत् ॥ कृते पञ्चायुते मन्त्रे नॄणां पञ्चाशतो मृतिः । लक्षे तु शतधा देव तद्वयस्मरणाद्भवेत् ॥

Colophon:

इत्याकाशमेरवकल्पे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥

No. 6955. मृत्युलाङ्गलमन्त्र:.

MRTYULĀNGŪLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 33*a* of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to Rudra who is conceived to be as terrible as the fire causing the dissolution of the world, and is intended to propitiate Yama, the god of death.

Beginning:

अस्य श्रीमृत्युलाङ्कलमन्त्रस्य उत्कर्ख(क)लाङ्कल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, कालामिरुद्रो देवता; झीं बीजं, झौं शक्तिः, झूं कीलकं, मृत्यू-पस्थाने विनियोगः ।

417-A

End:

मन्त्रो नश्यति मन्त्रो नश्यति मन्त्रः इत्याह भगवान् बोधायनः । वसिष्ठः ऋतं सत्यं परं ब्रह्म • • • विश्वरूपाय वै नमो नमः । ओन्नमो भगवते मृत्युः प्रीयताम् ॥

No. 6956. मृत्युलाङ्गलमन्तः. MRTYULĀNGŪLAMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 81*a* of the MS. described under No. 5819. Complete.

Similar to the above.

The person who duly repeats this Mantra is believed to become free from further birth, or, if reborn, to take his birth as a man of genius in a family of sages.

Beginning:

उत्तरसन्ध्याया उत्कलाङ्गल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, कालामिरुद्रो देवता, मृत्यूपस्थाने विनियोगः । ऋतं सत्यमित्यस्य मन्त्रस्य यम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, कालामिरुद्रो देवता, मृत्यूपस्थाने विनियोगः । End:

ब्रह्मणस्सायुज्यं गच्छति । न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तते । यदि पुनरावर्तेत, ऋषीणां कुले महामेधावी भवति । मत्योर्नमः ॥

No. 6957. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः. MEDHADAKSINAMÜRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 547. Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Daksināmūrti or Śiva is believed to be helpful to one in acquiring learning and high intelligence.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

Beginning:

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमेधादक्षिणामूर्तिर्देवता; ओं बीजं, हीं शक्तिः, समस्तविद्याप्राप्त्यर्थे मेधादक्षिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

पंञ्चपूजा ।

ओन्नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा । पुनर्न्यासः ॥

No. 6958. मेधाद्क्षिणामूर्तिमन्त्रः.

MÉDHĀDAKSIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92*a* of the MS. described under No. 5566, wherein it was wrongly stated to begin on fol. 94.

Complete.

Same as the above.

No. 6959. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्र:.

MÉDHÁDAKŞIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 20*a* of the MS. described under No. 6090.

Complete.

Same as the above with the difference in the end as noted below :---

लमित्यादिपचपूजां कुर्यात् । स्तम्भनादिपचमुद्रां प्रदर्श्य । अनन्तरं मन्त्रः पूर्ववत् । श्रीदक्षिणामूर्तेदश्रीपादार्पणमस्तु । पुनर्न्यासमुद्रादिकं कुर्यात् । भूभुवस्सुवरोमिति दिग्विसर्गः ॥

No. 6960. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः. MEDHADAKSINAMÜRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 158*a* of the MS. described under No. 537. Complete,

Same as the Mantra described under No. 6957 with the difference in the beginning as given underneath :---

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रौ छन्दः, मेधा[दि]दक्षिणामूर्तिर्देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नं कीलकं, मेधादक्षिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

> ٥٥. 6961. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः MEDHADAKŞIŅAMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 167*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

Same as the above.

No. 6962. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः. MEDHADAKŞINAMÜRTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 2396 of the MS. described under No. 581, wherein this is included in the Mantramālikā fol. 229a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, दक्षिणामूर्तिरुद्रो देवता, ओं बीजं, स्वाहा शाक्तिः, मम ज्ञानार्थे विनि-योगः ।

End:

ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ रवाहा ॥

No. 6963. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः. MEDHADAKSIŅAMŪRTIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 ch a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 5928, wherein this has been omitted to be mentioned in the list of the other works given therein.

Complete.

Similar of the above.

Beginning:

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-मेधादक्षिणामूर्तिः परमात्मा देवता ; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कील-कं, श्रीमेधादक्षिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End :

ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्तिये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ रवाहा । पश्चपूजां कुर्यात् ॥

No. 6964. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

MĒOHĀDAKȘIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 14*a* of the MS. described under No. 2854, wherein this has been wrongly stated to begin on fol. 14*b*.

Complete.

Similar to the above

Beginning:

ब्रह्माद्यशेषगुरुपारम्पर्यक्रमेण यावत् स्वगुरुपादाब्जं तावत् प्रण∙ मामि—गुं गुरुभ्यो नमः, पं परमगुरुभ्यो नमः, पं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः, पं परापरगुरुम्यो नमः, शिरसि गुरुं प्रणमेत् ।

अस्य श्रीमधादक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिर्देवता; ओं बीजं; स्वाहा शक्तिः, मम दक्षिणामूर्तिप्रसाद-सिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

अथ मूलमन्त्र :---

ओं नमो भगवते दाक्षणामूर्त्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहां । लक्षं पुनश्चरणम् ॥

No. 6965. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

MEDHĀDAKSIŅĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 39*a* of the MS. described under No. 6414. Complete.

Same as the above except in the beginning which is given below. The Dhyānaślōka also is somewhat different from the one found in the Mantra described above :— Beginning :

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, मेधादक्षिणामूर्तिर्देवता; ह्वां बीजं, द्रीं शक्तिः, मम मेधादक्षिणामूर्तिप्रसाद-सिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

No. 6966. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रराजमहामन्त्रः. MĒDHĀDAKṢIŅĀMŪRTIMANTRARĀJA-MAHĀMANTRAӉ.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 80b of the MS. described under No. 5568, wherein this is included in the Daksināmūrtima atrastotra given in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Daksināmūrti, is held to bestow on one prosperity, children, happiness, learning and intelligence.

Beginning:

अस्य मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रराजमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रौ छन्देः, श्रीदक्षिणामूर्तिदेवता, ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कीलंकं, मम सम्प-त्स(ा) रस्वतसन्तानसौभाग्यवाक्पटुत्वसिच्चार्थे श्रीदक्षिणामूर्तिमन्त्रजपे विनि योगः ।

End:

मनुः----

ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्य मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा-इति ं चतुर्विंशत्यक्षरो मनुः ॥

No. 6967. मेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रराजमहामन्त्रः. MEDHADAKŞIŅAMŪRTIMANTRARAJA-MAHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fel 73a of the MS. described under No. 5568, wherein this is included in the Daksināmūrtimantrastotra given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Believed to be efficacious in bringing about the accomplishment of anything which one may desire.

Beginning :

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमन्त्रराजमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिर्देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कीलकं, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धचर्थं जपे विनियोगः । End:

पश्वपूजां कत्वा, भूर्भुवरसुवरोम्--इति दिग्विमोकः । निर्याणमुद्रां प्रदश्य(र्शयत्) ॥

No. 6968. मेधादाक्षणामूर्तिमहामन्त्रः. MEDHĀDAKŞIŅĀMŪRTI-MAHĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 54*a* of the MS. described under No. 5673, wherein this is included in the $\bar{A}mn\bar{a}yamantram\bar{a}lik\bar{a} \mid a$.

Complete.

Similar to the Mantra described under No. 6957.

Beginning:

अस्य श्रीमेधाप्रज्ञादक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य बह्यविष्णुमहेश्वर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमेधाप्रज्ञादक्षिणामूर्तिर्देवता, ऐं बीजं, ह्वीं शक्तिः, क्वीं कीलकं, मम श्रीदक्षिणामूर्तिप्रसादसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ऐं हीं सौः ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मद्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा ॥

No. 6969. मेधादक्षिणामार्तिमहामन्त्रः.

MĒDHĀDAKȘIŅĀMŪRTIMAHĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 73b of the MS. described under No. 5568, wherein this is included in Daksināmūrtimantrastōtra given in the list of other works contained therein

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीमेधादक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणामूर्तिर्देवता, ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कीलकं, ममेछका-म्यार्थसिच्चर्थे जपे विनियोगः ।

End:

श्रीमच्छड्वं त्रिणेत्रं शशिधरमकुटं . . . करांग्रे निन्ध्रा(बिभ्रा)णं चाक्षमालाममृतकल्श(कं)ज्ञानमुदां च विद्याम् । [मंस्मं]नानाभूषायुताङ्गं स्फटिकमणिनिमं दक्षिणामूर्तिदेवं वन्दे वागर्थसिद्धचै[:]श्रुतिचरमपदैर्वेद्यमाराध्यमाद्यम् ॥

No. 6970. मैलार्देवमन्त्र:. MAILARDEVAMANTRAH

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 5566, wherein this has been omitted to be mentioned among the other works contained therein.

Complete.

This Mantra is addressed to a certain deity known as Mailar generaly worshipped by Sūdras soon after the Pongal feast. Beginning:

Beginning:

अस्य श्रीमैलार्देवमन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, पुलस्तिच्छन्दः, श्रीमै लारो देवता, मम सकलसम्मोहने विनियोगः । End:

ओं हीं हैं। श्रीं मैलाराय माळभिभवत्यों भोगमूर्तये नमः । ओं हीं श्रीं धनपतये स्वाहा २००० पुरश्चरणम् ॥

No. 6971. मैलार्देवमन्त्रः.

MAILĀRDĒVAMANTRAH.

Pages, 2. Line, 28 on a page.

Begins on fol. 254*a* of the MS. described under No. 581, wherein this is included in the Mantramālikā 229*a* mentioned in the list of other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 6972. मैलार्देवमन्त्रः. MAILARDEVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 301*a* of the MS. described under No. 5477, wherein this is found in the Maptramālikā 273*a* mentioned in the list of other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 6973. यइमाविश्वेतिसूक्तमन्तः.

YA-IMĀ-VIŚVĒTI-SŪKTAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is a hymn of the Rgvēda consisting of 14 Rks in praise of Vișņu. It forms the 81st and 82ud Sūktas of the 10th Mandala of the Rgvēda.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । ओं विष्णवे नमः ओं इति प्राणायामः १२. पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीय इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदिति चतुर्दशर्चसूक्तमहामन्त्रस्य विश्वकर्मा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, परमात्मा श्रीविष्णुर्देवता; श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थे य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदिति चतुर्दशर्चसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

नीहारेण प्रावता जप्या चासुतृप उक्थशासश्चरान्ते । वर्गः २ ऋक् १४ - उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6974. यन्त्रप्रतिष्ठामन्त्रः.

YANT "PRATIȘȚHĂMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page. Begins on fol. 40a of the MS. described under No. 3056 Complete.

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS. 5129

This Mantra is repeated in connection with the consecration of metallic plates with mystic diagrams thereon; and it is believed that, if they are worn by a person after such consecration, they are efficacious in driving off evil spirits and in removing sickness.

Beginning:

अस्य श्रीयन्त्रप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, यन्त्र-भ्रतिष्ठा देवता; यं रं ठं वं शं षं सं हौं यन्त्रप्रतिष्ठा इह प्रतिष्ठाः, यं रं ठं वं शं षं सं हौं यन्त्रप्राणा इह प्राणाः, यं रं ठं वं शं षं सं हौं यन्त्रजीवा इह जीवाः इति प्रतिष्ठां कृत्वा अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं वा जपेत् । जपमन्त्रः — उग्रं वीरं . . नमाम्यहम् । End:

भगवदाराधनेन सह तस्याप्याराधनमभिषेकं दधि पानकं वा निवे-दयेत् । तद्यन्त्रं धृत्वा पिशाचादयः पङ्रायन्त इति यन्त्रविधिः । रोगा-दयोऽपि नश्यन्ति ॥

No. 6975. यमलार्जुनभज्जनगोपालमन्त्रः.

YAMALĀRJUNABHAÑJANAGOPĀLAMANTRAH. Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 5885 Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa, and is intended to propitiate him. The Purāṇic account of यमलार्जुनभञ्जन is that the child Kṛṣṇa made two Arjuna trees fall down to the ground as he passed along between them dragging a big stone mortar to which he had been fastened by his mother Yaśōdā to prevent him from running away.

Beginning:

अस्य श्रीयमलार्जुनभञ्जनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, विराट्

5130 A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

छन्दः, यमलार्जुनभञ्जनगोपालो देवता; रं बीजं, क्वीं शक्तिः, स्वाहा कोलकं, श्रीयमलार्जुनभञ्जनगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

ओं रं क्लीं रूष्णाय हुं फेर् स्वाहा ॥

No. 6976. यमुनाजलाविहारगोपालमन्त्रः. YAMUNĀJALAVIHĀRAGÕPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 46*a* of the MS. described under No. 5885. Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa conceived as a cow-herd sporting in the waters of the river Yamunā.

Beginning:

अस्य श्रीयमुनाजलविहारगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, जगती छन्दः, यमुनातीरजलविहारकगोपालो देवता, ओं बीजं, नमः शक्तिः, यमुनातीर-जलविहारकगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओन्नमो भगवते गोपालाय स्वाहा ॥

No. 6977. युक्तमातृकासरस्वतीमन्त्रः.

YUKTAMĀTŖKĀSARASVATĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1396 of the MS. described under No. 537. Complete.

This Mantra is addressed to Sarasvatī who is conceived here as mad up of the letters of the alphabet; and it is intended to be used in the ceremonial touching of certain parts of the body as an auxiliary ceremony relating to the repetition of the Śrīvidyāmantra. It is formed by taking each of the letters of the alphabet along with SAT which is the Bījākṣara.

Beginning:

अस्य श्रीबीजयुक्तमातृकासरस्वतीमन्नस्य भृगुः ऋाषेः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबीजयुक्तमातृकासरस्वती देवता; शं बीजं, रं शक्तिः, ई कीलकं, ममोपास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन बीजयुक्तमातृकान्यासे विनियोगः । End:

ऐं हीं श्रीं श्रीं अं नम इति क्षं नमः पर्यन्तम् ॥

No. 6978. योगिनीन्यासः. YÖGINÍNYÁSAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 673. Complete.

On the ceremonial touching of certain internal parts of the body by means of mental contemplation, while repeating at the same time the Mantras relating to the goddess Yogini who is an attendant of Śakti.

Beginning:

End:

अथ योगिनीन्यासः —

मूलाधारचकचतुर्दलकमलकर्णिकायां श्रीं सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं साकिनि मां रक्ष रक्ष ममास्थिधातून् रक्ष रक्ष सर्वसत्त्ववशं-करि आगच्छ आगच्छ इमां पूजां गृहाण गृहाण ऐं घोरे हूं सः परम-घोरे हं घोररूपे एहि एहि नमश्रामुण्डे.

ह्रां ह्रीं ह्रूं हैं, ह्रौं ह्र हमलवरयूं हाकिनि मां रक्ष रक्ष हरिं हं क्षं मम मज्जाधातून् रक्ष रक्ष मज्जात्मने नमः आज्ञायाम् । यां यीं यूं यैं यौं यः यमलवरयूं याकिनि मां रक्ष रक्ष याकिन्यै नमः अं रं मम शुक्रुधातून् रक्ष रक्ष शुक्ठात्मने नमः सहस्रारे ॥ Colophon:

इति योगिनीन्यासः समाप्तः ॥

No. 6979. योजातइतिसूक्तमन्त्रः. YÖ-JÄTA-ITI-SÜKTAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 16*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra is a hymn containing 15 Vēdic Ŗks in praise of Viṣṇu and forming the 12th Sūkta of the II Maṇḍala of the Ŗgvēda.

Beginning:

ओं इति प्राणायामः १२. पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीयो जात इति सूक्तमहामन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रनामकविष्णुर्देवता; श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थे यो जात-इति पञ्चदशर्चसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End:

यस्सुन्वते पचते दुध्र आचित् वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः । वयन्त इन्द्र विश्वह प्रियासरसुवीरासो विदथमा वदेम ॥ वर्गः ७ ऋकू १५ उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 6980. रक्तचामुण्डीमन्त्रः. RAKTACAMUNDIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 56 of the MS. described under No. 2886. Complete.

This Mantra is addressed to Cāmuṇḍī, i.e., Durgā, who is conceived here as feasting on the blood of human beings; and its repetition is believed to be of help in causing the destruction of one's enemies.

Beginning:

विकराल ऋषिः, गायत्री छन्दः, रक्तचामुण्डी देवता, झामिति षडङ्गम् ।

End :

हीं ओन्नमो भगवति रक्तचामुण्डि नररुधिरगोमांसभक्षिणि मम शतु हन हुं फट् स्वाहा ॥

एतद्यन्त्रमष्टपिष्टेर्विलिख्य, पश्चसाहस्रं जप्य, शतुगृहे निखनेत् । रुधिरस्रावकं भवति । ४४ - वलं ेइति कोष्ठेषु । हीं लं ब्राह्मि ठ ठ ठ ठ इति परितः ॥

No. 6981. रणरङ्गमेरवमन्त्रः. RANARANGABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 5828. Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava and is held to have the power to destroy one's enemies. According to the Purāņas, eight Bhairavas are said to have sprung from the blood of Śiva which gushed forth from the wound caused by an Asura on Śiva's breast.

Beginning:

रणरङ्गभैरवम्---

ओं आं हीं हीं कां कों कों कां ण्यों श्वानवाहनप्रियाय उद्दण्ड-दोर्दण्डोच्चण्डरणरङ्गमैरवाय उग्रकालप्रचण्डमैरवाय कपालमैरवाय अका-लकालमैरवाय मम शत्रून् लिन्धि लिन्धि.

End:

उन्मत्तभैरव बन्धय उच्चाटय परमेश्वर कों क्ष्यों महाभैरब बन्धय . . . हुं फट् स्वाहा ॥

No. 6982. रतिप्रियामन्त्रः. RATIPRIYĀMANTBAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 296b of the MS. described under No. 5477, wherein this is included in the Mantramālikā 273a mentioned in the list of other works contained therein.

· Complete.

418

5134 A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

This Mantra is addressed to a minor spirit which is held to be able to bring about the fulfilment of one's desires Beginning:

अस्य श्रीरतिप्रियामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरति-प्रिया देवता; मम मनोरथसिद्धचर्थे विनियोगः । End:

ओं ह्रीं रतिप्रियायै स्वाहा । पर्वताम्रे नदी तीरे वृषशूत्ये शिवालये । पुनश्चरणं लक्षमक्षरलक्षं वा । दशांशहोम तर्पणम् ॥

No. 6983. रतिप्रियामन्त्र:. RATIPRIYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 250b of the MS. described under No. 581, wherein this is found in the Mantramālikā 229a mentioned in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 6984, रतित्रियामन्त्रः. RATIPRIYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 986 of the MS. described under No. 5566, wherein this has been omitted to be mentioned in the list of other works.

Incomplete.

Same as the above.

No. 6985. रत्नवर्षगोपालमन्त्रः.

RATNAVARŞAGÖPÂLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 51b of the MS. described under No. 5885. Complete. The repetition of this Mantra which is addressed to Krana is believed to bless one with a shower of precious stones.

Beginning:

अस्य श्रीरत्नवर्षगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायती छन्दः, रत्न-वर्षप्रदगोपालो देवता ; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, रत्नवर्ष-प्रदगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

No. 6986. रलगोपालमन्त्रः.

RATNAGOPALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 7*a* of the MS. described under No. 424. Complete.

This Mantra is addressed to Krana conceived as a resplendent young cow-herd.

Beginning:

अस्य श्रीरत्नगोपालमन्त्रस्य शिरासि नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः मुखे, क्लीं बीजं, क्लीं शक्तिः, श्रीबालगोपालरूष्णो देवता, श्रीबालरूष्ण-प्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End:

मन्त्रस्तु---क्रीं कृष्ण क्वीं कृष्ण क्वीं गोपालाय नमः ॥

No. 6987. राघवमन्त्र:.

RĀGHAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13*a* of the MS. described under No. 5786. Complete.

418-A

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

This Mantra is addressed to Rāma; and it consists of eight syllables. The syllable Öm at the end is not to be taken as forming part of the Mantra.

Beginning:

ओं रां राघवाय नमः इति प्राणायामः १२. पूर्णज्ञानात्मन इत्यादि-न्यासः ।

O OTTO PLA PERSONNEL PERSON AND

अस्य श्रीराघवमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, राघवो देवता; राघवप्रेरणया राघवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

राघवाष्टाक्षरमहामन्त्रजपङ्कारिष्ये ।

औं रां राघवाय नमः ओं --- इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत ॥

No. 6988. राघवैकाक्षरमन्त्रः.

RÁGHAVAIKÁKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 5786. Complete.

This Mantra consists of one syllable, viz., *t* (Rām). The *A* (Ōm) both in the beginning and in the end should not be taken as forming part of the Mantra proper.

Beginning:

ओं रां ओं इति प्राणायामः १२. पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीराघवैकाक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीराघवो देवता; श्रीराघवप्रेरणया राघवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

राघवप्रीत्यर्थे राघवैकाक्षरमन्त्रजपङ्कारेष्ये -- ओं रां ओं---इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

5136

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS

No. 6989. राजमातङ्गीमन्त्रः. RĀJAMĀTANGĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 5673, wherein this is found in the $\overline{\text{Amnāyamantramālikā }}$ |a, mentioned in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Rājamātangīśvarī who is a manifestation of Pārvatī; and its repetition is believed to have the power to enable one to bring under one's magic control and influence all human and divine beings, cruel animals, etc.

Beginning:

अस्य श्रीराजमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य मतङ्गानन्दमेरव ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीराजमातङ्गीश्वरी देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम श्रीराजमातङ्गीश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

कीं हीं श्रीं सर्वराजवशक्करि सर्वस्नीपुरुषवशक्करि सर्वदुष्टम्गवश-क्वरि सर्वसत्त्ववशक्करि सर्वलोकवशक्करि सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥ सौः कीं ऐं श्रीं हीं ऐं श्रीराजमातङ्गीश्वरीश्री ॥

No. 6990. राजमातङ्गीमन्त्रः.

RĀJAMĀTANGĪMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 13[§] × 1[§] inches. Pages, 2. Lines, 5 on a page. Character, Kanarese. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1*a*. The other works herein are Vīrabhadramantra 2a, Kanarese works 5a.

Complete.

Similar to the above.

5)38 A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

Beginning:

अस्य श्रीराजमातङ्गीपरमेश्वरीमन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, जगती त्रिष्टु-बनुष्टुप् छन्दांसि, राजमातङ्गी परमेश्वरी देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, सर्वजनवशीकरणार्थे जपे विनियोगः ।

End:

ऐं नमः अभीष्ठजालधारि मातङ्गेश्वरि सर्ववशङ्करि क्वीं स्वाहा ॥

No. 6991. राजमातङ्गीमन्त्रः. RAJAMATANGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 27b of the MS. described under No. 2848, wherein this is found in the Pūrvāmnāyamantramālikā mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजमातङ्गेश्वरीमहामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, पङ्किश्छिन्दः, राजमातङ्गेश्वरी देवता; ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, झीं कीलकं, विनियोगः। ओं नमो भगवति राजमातङ्गेश्वरि ।

End:

सौः क्वीं ऐं हीं श्रीं ऐं राजमातक्नेश्वर्यम्बाश्री ॥

No. 6992. राजमातङ्गीमन्त्रः. RAJAMATANGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 3*a* of the MS. described under No. 673, wherein this is found in the Ṣaḍāmnāya 1*a* mentioned in the list of other works.

Complete. Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजमातङ्गेश्वरीमहामन्त्रस्य मतङ्गभगवानृषिः, दैवी गायत्री छन्दः, राजमातङ्गेश्वरी देवता; क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीराजमातङ्गेश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सौः क्लीं ए श्रीं हीं ऐं राजमातक्नेश्वरीश्रीपा-नमः ॥

No. 6993. राजमातङ्गीमन्त्रः. RĀJAMĀTANGĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 229*a* of the MS. described under No. 124, wherein this is found in the Ṣaḍāmnāyamantra 228*b* mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य राजमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य महामतङ्गभगवानृषिः, पङ्किश्छिन्दः, श्रीराजमातङ्गेश्वरी देवता; क्लीं बीजं, हीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्री-राज---गः ।

End:

सौः क्लीं ऐं श्रीं हीं ऐं ओं राजमातङ्गेश्वर्यम्बादिव्यश्रीपादुको पूजयामि ॥

No. 6994. राजमातङ्गीमालामन्त्रः. RAJAMATANGIMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 21*a* of the MS. described under No. 5524. Complete.

Similar to the above.

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

Beginning:

ओं नमो भगवति राजमातङ्गेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वजनमुख-रज्जनि क्ली ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि। End:

सर्वलोकवशङ्करि सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

No. 6995. राजराजेश्वरीकवचः. RÄJARÄJESVARIKAVACAH.

Pages, 3. 'Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the Brhadvāmakēśvaratantra.

Addressed to the goddess Tripurasundarī for securing protection through her favour. She is called here Rājarājēśvarī because she is conceived as the illuminator of all that illumines.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, चिन्मयी छन्दः, श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी देवता ; ऐं बीजं, क्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीराजराजेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनि-योगः।

> हैं ह स क ह ल हीं हैं पातु शीर्ष मे सदा त्निपुरभैरवी। ऐं क्ठीं सौः वदने पातु फालं सर्वार्थसिद्धिदा॥

End:

उपभोगोपयुक्तोऽपि जीवन्मुक्तश्र जायते ।

मम स्वरूपतामेत्य पश्चाद्वीपुरं त्रजेत् ॥

Colophon :

इति बृहद्वामकेश्वरतन्त्रे अतिरहस्ये राजराजेश्वरीकवचस्तोत्रं सम्पू-र्णम् ॥

5140

No. 6996. राजराजेश्वरीकवचः. RAJAKAJESVARIKAVACAH

Pages, 13. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 181*a* of the MS. described under No. 424, wherein the commencing folio of this Mantra has been wrongly given as 186*a*.

There is a break in the middle part. Complete as found in the Vāmēśvaratantra.

Similar to the above.

Beginning:

भगवन् देवदेवेश भक्तानां प्रीतिवर्धन । यत् सूचितं पुरा नाथ किमर्थे न प्रकाश्यते ॥ राजराजेश्वरीदेव्यास्त्रिपुरायाश्शुभावहम् । कवचं यदि मे प्रीतिः कथयस्व वृषध्वज ॥

अस्य श्रीराजराजेश्वरीत्रिपुरसुन्दरीकवचमहामन्त्रस्य दक्षिणा-मूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीराजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी देवता;

ऐं बीजं, हीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम सकलामीष्टासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

> मैरवी पातु शीर्षे तु देवी निपुरसुन्दरी । अक्षरा वदने वाला पातु सर्वत्र सिद्धिदा ॥ ऐं श्रीं करे सदा पातु त्रिपुराख्या सरस्वती । अष्टारदेवता पातु सिद्धेश्वरि ललाटके ॥

End:

बहूनि कवचान्येव सन्ति मन्ताण्यनेकधा । राजराजेश्वरदिव्याः कवचं भुवि दुर्रुभम् ॥ * * * देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्तिरताय च ॥ सर्वल्रक्षणयुक्ताय मन्त्रयन्त्ररताय च ॥

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

Colophon:

इति श्रीवामेश्वरतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे राजराजेश्वरीकवचं संपू-र्णम् ॥

> No. 6997. 'राजराजेश्वरकिवचः. RĀJARĀJĒŠVARĪKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 547. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, चिदादित्यश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी चिच्छक्तिर्देवता ; त्रिपुरसुन्दरी-प्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

> ह स क ह ल हीं श्रौं पातु शीर्षे मे सदा त्रिपुरमैरवी । क्रीं सौर्वदने पातु बाला सर्वार्थसिद्धये ॥

End:

ओष्ठे शम्भुप्रिया पातु रदनं(नाः) प्राणिरक्षिणी ॥ जीवजिह्वाप्रदेशेऽव्यात् ब्रह्माव्यात् कूर्परं मम । सोऽहं प्रष्ठे पातु नित्यं पृथ्वी सवीङ्गकेऽवतु ॥ श्रीमन्त्रिपुरसुन्दर्थें नमः । पश्चपूजा ॥

No. 6998. राजराजेश्वरीत्रिपुरसुन्दरीमन्त्रः.

RĀJARĀJĒŚVARĪ I RIPURASUNDARĪMANTRAH. Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 116 of the MS. described under No. 5639, wherein this is given as Rājarājēśvarībrahmavidyā in the list of other works.

Complete.

This Mantra is intented to propitiate Tripurasundari.

5142

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीब्रह्मविद्याश्रीत्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य परमा-नन्दभैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीराजराजेश्वरी ब्रह्मविद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता ; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीराजराजेश्वरीब्रह्म विद्यात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End:

अक्षरलक्षणम्---

पश्चाशद्वर्णगं वर्गे द्वादशस्वरमध्यमम् ।

हं सो देवो ह सरसो हं समुचार्थ मेरुमूर्ति नमः ॥.

No 6999. राजराजेश्वरीत्रिपुरसुन्द्रीमन्त्रः.

RĀJARĀJĒŠVARĪ L'RIPURASUNDARĪMANTRAH Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 137*a* of the MS. described under No. 537. Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीमहात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पाक्किश्छन्दः, श्रीराजराजेश्वरीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता; ऐं क ए बीजं, क्रीं इ स क शक्तिः, सौः स क ल कीलकं, राजराजेश्वरीमहात्रिपुर-सुन्दरप्रिसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

श्री हीं की ऐंसी: ओं हीं श्रींक एई ठहीं हस क इ. लहीं स क लहीं सी: ऐंकीं हीं श्री:॥

No. 7000. राजराजेश्वरीमन्त्रः.

RĀJARĀJĒŚVARĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No. 673, wherein this is found in the Sadāmnāya 1a mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीमहामन्त्रस्य दाक्षिणामूर्तिः भगवान् ऋषिः, वरा गायत्री छन्दः, राजराजेश्वरी देवता ; ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कील्ठकं, मम राजराजेश्वरीप्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः । End:

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ओं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं राजराजेश्वरी श्रीपा — नमः ॥

No. 7001. राजराजेश्वरीषोडशाक्षरीमन्तः.

RĀJARĀJĒŚVARĪṢŌŅAŚĀKṢARĪMANTRAĻ.

Pages, 3. Lines, 18 ou a page.

Begins on fol. 43*b* of the MS. described under No. 6673, wherein this is found in the $\bar{A}mn\bar{a}yamantram\bar{a}lik\bar{a}$ 1*a* mentioned... in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. It is not clear how this Mantra contains 16 syllables as mentioned below.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीषे।डशाक्षरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य द-क्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, श्रीराजराजेश्वरी षोडशाक्षरी ब्रह्मविद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता; ऐं क बीजं, सौः स शक्तिः, क्रीं ह कीलकं, मम श्रीराजराजेश्वरीषे।डशाक्षरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीपसादसिच्चर्थे जेप विनियोगः ।

End:

शत्रूणामुद्योगविन्नकरि वीरचामुण्डिनि हाटकनागपरिपदणास्थानसम्मो-हिनि असाध्यसाधाने ओं हूलीं श्रीं हन हन हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7002. राजराजेक्वरीषोडकाक्षरीमन्त्र:. RAJARAJEŚVARISODAŚAKSARIMANTRAH.

Page, 4. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 26*a* of the MS. described under No. 5673, wherein this is found in the Amnayamantramalika mentioned in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीराजराजेश्वरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य परमानन्द-भैरव ऋषिः, गायत्री छन्द , श्रीराजराजेश्वरी षाडशाक्षरी ब्रह्मविद्या त्रिपुरसुन्दरी परमात्मा देवता ; ऐं बीजं, कीं शक्तिः, सौः कील्ठकं, मम श्रीराजराजेश्वरीषोडशाक्षरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीत्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

स कल हीं हस कल हस कहल सकल हीं श्रीं श्रीं हीं ओं सौः ऐं क्रीं हीं श्रीं॥

No. 7003. राजराजेश्वरीषोडशीबह्यविद्या.

RĀJARĀJĒŚVARĪŅODAŚĪBRAHMAVIDYĀ

Pages, 36. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 73b of the MS. described under No. 446, wherein it is wrongly stated as beginning on 73a.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning:

शुद्धविद्या च बाला च द्वादशार्धा मतङ्गिनी । एताः कामगिरीन्द्रस्थाः पूर्वाझायस्य देवताः ॥

DESCRIPTIVE OATALOGUE OF

गुरुत्रयादिपीठान्तं चतुर्विंशसहस्रकम् । एतदावरणोपेतं पूर्वाझायं भजाम्यहम् ॥ सौभाग्यविद्या बगला वाराही वटुकस्तथा । श्रीतिरस्करिणी प्रोक्ता दक्षिणाझायदेवताः ॥ त्रिंशत्सहस्रदैवत्यं पूर्णपीठस्थिता(तं) सदा । भैरवादिपदद्वन्द्वं भजे दक्षिणमुत्तमम् ॥

End:

एँ ह्रीं श्रीं एँ क्वीं सौः ह स क ल ह ल हीं श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीपरार्धकलाङ्कितबिन्दुद्वयाङ्कितस्तनयुगलश्रीपादुकां पूजयामि नमः, एें ह्रीं श्रीं एें क्वीं सौः स क ल हीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसपरार्धक-लाङ्कितबिन्द्वचितरेखायोनिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । अकारस्सर्व-वर्णास्यः प्रकाशः परमहिशवः.

No. 7004. राजलक्ष्मीनारायणहृदयम्.

RĀJALAKȘMĪNĀRĀYAŅAHŖDAYAM.

Pages, 3. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 28*a* of the MS. described under No. 3209. Incomplete.

This Mantra is in praise of Nārāyaņa as associated with Rājalakşmī.

Beginning:

ओं श्रीं गं गणेशाय नमः ।

ओं विघ्नध्वंसनपटुं पुरुषार्थसमर्थकम् । लक्ष्मीगणपतिं वन्दे राजप्रीतिकरं परम् ॥ नारायणस्य हृदयं सध्यानं सरहस्यकम् । संकीर्तयामि प्रथमं विष्णुप्राणमयो मनुः ॥ श्रीराजलक्ष्मीमन्त्रस्य जीवभूतस्य पुत्रक । प्राणोऽयं प्रथमं कीर्त्यस्तमृते न हि सिद्धयः ॥

THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

नारायणहृदयस्य श्रीमान्मुनिरिन्द्रनामको देवः । उपदेष्टा गीष्पतिरपि तत्त्वं वायव्यमुच्यते किं च ॥ श्रीं बीजं सप्रणवं सङ्कर्षणसंज्ञिका शक्तिः । श्रींविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवः ॥

End:

रत्नराजरमणीयविग्रहं राजसप्रकृतिमच्युताह्र्यम् । श्रीनिधानमनिशं विभावये सर्वलक्षणसमन्वितं हृदि ॥ अतसीसूनसमानविकासं कमनीयाकृतिमनिशं मनसा । कमलानायकममलं कल्ये हारिमहमात्तरथाङ्गमनन्तम् ॥ कालकादम्बिनीनीलकान्तिस्फुरत्कायमाराधये कञ्जपत्रेक्षणम् । कामितार्थप्रदं कामतातं सुधासिन्धुसत्कन्यकानायकं कच्चन ॥ मूमिः पादौ द्यौरपि दहरं प्राणः पवनो ज्ञानं कायः ।

No. 7005. राजलक्ष्मीहृदयम्.

RĀJALAKȘMĪHŖDAYAM.

Pages, 53. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 3209.

Complete, as found in the Rahasyamantraprakaraņa of the Mantrakalpārņava.

This Mantra is in praise of Rājalakṣmī. It is attributed to Mahēndra.

Beginning:

जीवे प्रज्ञात्मिकां ब्रह्मण्यखण्डानन्दरूपिणीम् ।

राजलक्ष्मीमहं वन्दे विष्णुवक्षरस्थलालयाम् ॥

अस्य श्रीराजलक्ष्मीहृदयमहामन्त्रस्य महेन्द्रहारिश्चन्द्रकार्तवीर्यार्जुना-दयो महर्षयः, नानाविधानि छन्दांसि; श्रीराजलक्ष्मीर्मुदा शक्तिः परा देवता

DESCRIPTIVE CATALOGUE OF

अथ हृदयम्—

ऐं श्रीं हीं हृदये देशे हीं हीं भ्रूमध्यचक्षुषी(षि) । प्रणवं च सहस्रारे भावयामि निरन्तरम् ॥

Colophon:

इति श्रीमन्त्रकल्पार्णवे रहस्यमन्त्राख्यानप्रकरणे महेन्द्रविरचितराज-लक्ष्मीहृदयकल्पतरुः पूर्णः ॥ End :

दुष्टानिग्रहमास्तिक्यं शिष्टैकपरिपालनम् ।

उपेक्षणमथान्यत्र करवाणि यथोचितम् ॥

अथ पूर्वोक्तबीजविद्यया राजलक्ष्मीं यथायोगमावाहयेत् । उक्तविद्यासु अर्थानुगुण्येन तात्पर्यानुरोधेन च तत्तदभिमन्त्रणयज्ञाश्चेति दिक् ॥ Colophon :

इत्युत्तरपीठिकासङ्ग्रहः समाप्तः ॥

No. 7006. राजस्यामलामन्तः.

RÁJAŚY A MALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 5639. Complete.

Similar to the Mantra described under No. 6988.

Rājaśyāmalā seems to be the same as the goddess Rājamātangī. Beginning :

अस्य श्रीराजश्यामलामहामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, राजश्यामला देवता; ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम राज-श्यामलाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । End:

मनः—

ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमो राजमातक्नेश्वरि सर्वजनमनो-हारिणि सर्वमुखरञ्जनि ॥

5149

[NOTE.-The names printed in *italics* are those of the works described.]

| | | 3 | | |
|----------------------------|---------|-------------|---------------------------|---------|
| | | PAGE | | PAGE |
| Agastyāstaka | ••• | 4928 | Eadabanalasudaréana- | |
| Agastya | - • • | 4905, 4906 | mantra | 4995 |
| Äkäsabhairava | | 4765 | Badabanalaraudravīra- | |
| Ākā śabhairavakalpa | | 4952, 2071, | hanumanmantra | 4994 |
| | | 5118, 5119 | Bagalābrahmāstramālā- | |
| Āmnāyamantramālik | ā · | 4976, 5069, | mantra | 4981 |
| | 5076, | 5086, 5113, | Bagalābrahmāstramantra. | 4980 |
| | 5114, 4 | 5126, 5137, | Bagala nukhī-Ēkāksarī- | |
| | | 5144, 5145 | mantra | 4981 |
| Āmnāyastötra | | 4753 | | 2, 4983 |
| Amrtavallyambā | | 4930 | Bagalānusthānavidhi | 4980 |
| Anāmayastötra | | 4929 | Bahirmätrkänyäsa | 4998 |
| Auantayya | | 4854 | Bahirmātrkāsarasvatī- | |
| Āñjanēyayantra | | 4973 | mantra | 4999 |
| Annapürnādaśaka | | 4902 | Bagalāmukhīcaturaksarī- | |
| Annapūrnāstotrā | | 4902 | mantra | 4984 |
| Ardhanārīšvarāstaka | | 4929 | Bagalāmukhīmālāmantra. | 4989 |
| Argalāstötra | | 4752 | Bagalāmukhīmontra 4985 t | 0 4989 |
| Ārüdhagrantha | | 4859 | Bagalāmukhīstötra- | |
| Aşţakavarga | 8.0 | 4859 | mantra | 4990 |
| Aşţāsyagaņdabhēruņd | a- | | Bagalästäksarimantra | 4991 |
| digbandhana | | 4885 | Bagalāstambhinīmālā- | |
| Ātharvaņa | | 5028 | mantra | 4091 |
| Atharvaņamūla | ••• | 4953 | | 2, 5013 |
| Atharvanarahasya | ••• | 4868, 4869 | Bālagōpālamantra | 5000 |
| | | | | 1, 5122 |
| | | | | o 5006 |
| | | | Bālāmālāmantra | 5019 |
| Badabanalabhairavam | alā- | | Bālāmantra | 5019 |
| mantra | | 4992, 4993 | Bālānyāsa | 5003 |
| Badabānalabhaīrava- | | | Balanyasamantra | 5013 |
| mantra | | 4991 | Bālāparamēsvarimālā. | |
| Badabánalamantra | | 4993, 4994 | mantra 501 | 7, 5018 |
| Badabānalānjanēyamā | īlā- | | Bālāparamēśvarītrailokya- | |
| mantra | | 4996 | mōhanakavaca | 5012 |
| | | | | |

Δ

| Bildi paramöśvarīmantra5003, 5015, 4016Bhitoccațanahanuman- mantra4016mantra4814Pilóparamöśvarīnyāsa5014Phitojaikākāgaramantra5055Bildi paramöśvarīnyāsa5014Phitojaikākāgaramantra5056sundarīmantra5020, 5021Phitošaikāgaramantra5056, 5057Bilāsaitanānāvala5020, 5021Phitositanatra5054, 5055nyāsamantra5020, 5021Phitositanita5047, 5048Balāsytottarašatanāmāvala5002Bhuvanapradīpika4859Bilātvijayrāsarasvatī-Bhuvanēšvarīmantra5049 to 5052mantra5011, 5012Bantra5052Bālātvijayrāsarasvatī-Bhuvanēšvarīsatamāhana5053mantra5011, 5012mantra5053Balātvijayrasundarī- mantra4982, 5000 to Bindumātrkāngāa-kavaca5053Balāsytaka4929mohanākavaca5023, 5054Banahavinčanimatra4964, 4997Bohāyana4018, 4019Badairāzamantra5029, 5023Brahmātri sagāa- mantra5022, 5023Bitdubhairanamatra5027, 5023Brahmātjuāta5023Bitdubhairanamatra5024 to 5032Brahmātjuātāksarī- mantra5036mantra5026 to 5031Brahmātjuātāksarī- mantra5037Bitdubhairanamatra5026, 5034Brahmātjuātāksarī- mantra5036Bitdubhairanamatra5026, 5035Brahmātjuātāksarī- mantra5036Bitdubhairanamatra5026, 5034Brahmātjuātāksarī- mantra <td< th=""><th>PAGE</th><th>PAGE</th></td<> | PAGE | PAGE |
|--|-------------------------------|--------------------------------|
| 5016mantra4814 $Paldigaramösvarörigisva5014Distöijaitäkgaramantra5055PaldigaramösvarörigisvaSoltaDistöijaitäkgaramantra5056Sundarimantra5020, 5021Bhäsauddhimantra5056, 5057BaldigangupitamätriörSoltaBhäsauddhimantra5054, 5055nydsamantra5020, 5021Bhuvanapradipita4859Baligiptitarastatamäntvali5003Bhuvanapväsa5047, 5048Baligiptitarastatamäntvali5012Bhuvanösvarimantra5049 to 5052kausa$ | | |
| Bidā paramēšvarīnyāsa 5014 $Butī jaikā karamantra 5055$ $Bidā paramēšvarīlrī pura-sundarīmantra 5014Butī sidā karamantra 5056Bidā samputī tamātrkā 5014Bhtī sidā karamantra 5056, 5057Bidā samputī tamātrkā 5020, 5021Bhuvanagā a 5047, 5048Bālā stottarašatanā unāvalī. 5003Bhuvanapradī pikā 6047, 5048Bālā stottarašatanā unāvalī. 5003Bhuvanāsī sarīmantra 5047, 5048Bālā stottarašatanā unāvalī. 5003Bhuvanāsī sarīmantra 5049 to 5052kavaca 5011, 5012mantra 4931Balā stottarašarascutī -mantra 4882, 5006 tosoltakavaca šīvarīmātīkā 4931Balā stotarīmantra 4986, 4997Bodhāyana 5063Balāstavasostītra 4986, 4997Bodhāyana 5022, 5023Bātā savasītīra 4996Bodhāyana 5022, 5023Bātā savasītīra 4997, 5029mantra 5029mantra 5029mantra 5022, 5023Bātālahairavamantā 5029mantra 5022, 5023Bātālahairavamantā 5029mantra 5023Bātālahairavamantā 5029mantra 5023Bātālahairavamantā 5029Brahmāknivarta$ | • | 1014 |
| Bidigorumöšvarilripura- sundarīmastraBhāgānčafkşaramantra5055sundarīmastra5014Bhāsūddhimantra5056, 5057Balāsampuļitamātrka5020, 5021Bhūvananyāsa5047, 5048Balāstotarsatanāmāvali5003Bhuvananyāsa5047, 5048Balāstotarsatanāmāvali5003Bhuvanapādpikā4859Bālātrijāvaršatarāstanā5012Bhuvanāšvaristotra5047, 5048Balātrijāvaršatasta5012Bhuvanāšvaristotra5049 to 5052kavaca5012Bhuvanāšvaristotra4931Bālātrijāvaršatasta5011, 5012mantra5052Bālātrijāvaršatasta4882, 5006 to kavacakavaca5053Bantra4986, 4997Bodhāyana4018, 4919Bandhi-škāksarāmantra4986, 4997Bodhāyana4018, 4919Bandhi-škāksarāmantra4987Bindumātrkānyāsa-Basavasībtra5021, 5028Brāhminantra5023Bētālabhairavamantra5029mantra5023Bētālabhairavamantra5029, 5031Brahmāknipaikākari5034Bādākavaa5034Brahmāknipaikākari-5035Bētālavājāmāntra5034Brahmākipaikākari-5035Bētālavājā4760, 4813Brahmākipaikākari-5035Bētālavājā5034Brahmākipaikākari-5035Bētālavājā5034Brahmākipaikākari-5035Bētālavājā5034Brahmākipaikākari-5036Bētālavājā5034Brahmākipaikākari-5036Bētālavājā< | Pālānaramēśvarīnuāsa 5014 | |
| sundarīmantra5014Bhāšuddhimantra5056, 5057Bālāsampuļitamātŗkā- nyāsamantra5020, 5021Bhūtaśuddhimantra5054, 5055Balāştottarašatanāmāvalī.5003Bhuvanapradīpika4859Bālātrijotrarašatanāmāvalī.5002Bhuvanāparatīpika4859Bālātripurāšarascatī- mantra5012Bhuvanöšvarīnaitra5049 to 5052Bālātripurāšarascatī- mantra50115012Bhuvanöšvarīnātrkā-mantra5052Bālātripurasundarī- mantra5052Babasanātīra5053Babasanātīra5052Babasanātīra5053Babasātīra5052Babasanātīra5052Babasanātīra5053Babasātīra5052Batālabhairavamantra5023Bētālabhairavamantra5023Bētālakavaca5023Bētālakavaca5035Bētālakavaca5035Bētālakavaca503 | | |
| Bálásampuţitamátykö- nyásamantra 5020, 5021 Bhuvananyása 5054, 5055 nyásamantra 5020, 5021 Bhuvananyása 5047, 5048 Balágtottarsántanämávali. 5003 Bhuvanapradipika 4859 Bálátreilőkyamöhana- kavaca 5012 Bhuvanöšvarimantra 5049 to 5052 kavaca 5011 Bhuvanöšvarimantra 5049 to 5052 kavaca 5011 Bhuvanöšvarimätöträ 4931 Bálátripurasundari- mantra 5011, 5012 mantra 5052 Baläštripurasundari- mantra 4982, 5006 to kavaca 5053 Balöstaka 4929 möhanakavaca 5048, 5053 Balöstaka 4929 möhanakavaca 5022, 5023 Bridluhairásavamahra 4997 Bindumátrkányása- mantra 5023, 5023 Bétálabhairavamahra 5027, 5028 Brihminnatra 5023 Bétálabhairavamantra 5029 to 5031 Brahmáñipañicáksari- mantra 5034 to 3033 Brahmakaivaria 4757 Bétálabhairavamatra 5034 to 3033 Brahmáñipañicáksari- mantra 5037 5037 Bétálabhairavamatra 5034 to 3033 Brahmáñipañicáksari- mantra< | | |
| nydšamantra5020, 5021Bhuvananydsa5047, 5048Balāştottarašatanāmāvali.5003Bhuvanapradīpika4859Bālātreijokyamöhana-Rhuvanššarīmantra5049 to 5052kavaca5012Bhuvanššvarīstotra5047Bālātrejurāsarasvatī-Bhuvanššvarīstotramantra5012Bālātripurāsundarī-mantra5052Baņāstaka50152Baņāstaka4982, 5000 tokavacamantra5053Baņāstaka4966, 4967BodhāyanaBandhāvinčanīmantra4967Bindumātrkānydša-mantra5022, 5023Bātālabhairavamantra5023Bātālabhairavamantra5023Bātālabhairavamantra5023BātālabhairavamantramantramantraBātālakavacamantramantraBātālakavacaBātālakavacaBātālabhairavamantramantraBātālabhairavamantraBātālabhai | | |
| Balāştottarašatanāmāvali.5003Bhuvanapradīpikā4859Bālātrailökyamöhana- kavucaShuvanāšvarīmantra5049 to 5052kavuca5012Bhuvanāšvarīmantra5049 to 5052Bālātripurāšarasudī- mantraBhuvanāšvarīmantra5052Bālātripurāšarasudā- mantra5011, 5012Bhuvanāšvarīmāhra- mantramantra5011, 5012Bhuvanāšvarīmahra5053Bālātripurāsundarī- mantra6053Bhuvanāšvarīsanamā- kovaca5053Banāştaka4929mohanakavaca5048Banāhavinācanīmantra4966, 4997Bodhayana6022, 5023Bātālabairasamahā- mantra4929matra5022, 5023Bātālabairasamahā- mantra5022, 5023Bātālabairasamahā- mantra5023Brāhmīmantramantra5027, 5028Brahmārīmantra5035Bātālabairasamantra5031 to 5033Brahmārīmantra5035Bātālavānāmāra5034Brahmārīmantra5037Bātālavānāmāra5034Brahmārīmantra5037Bātālavānāmāra5034Brahmārīmantra5037Bātālavānāmatra5034Brahmārīmantra5037Bātālavānāmatra5034Brahmārīmantra5037Bātālavānāmāra5043Brahmārīmantra5037Bātālavānāmāra5044Brahmārīmantra5037Bātālavānā | | |
| Bālātrailokyamõhana- kavaca 5012 Bhuvanöšvarimantra 5049 to 5052 kavaca 5012 Bhuvanöšvaristötra 4931 Bālātripurāsarasvatī- mantra 5011, 5012 Bhuvanöšvaristötra 4931 Bālātripurāsundarī- mantra 4882, 5006 to kavaca 5053 Bhuvanöšvaristanmõhana- kavaca 5052 Bālātripurāsundarī- mantra 4882, 5006 to kavaca 5053 Bhuvanöšvaristanmõhana- kavaca 5053 Baņāstaka 4929 mohanskavaca 5048 Banāhavimõcanīmantra 4966, 4997 Bödhāyana 4018, 4919 Banāhavimõcanīmantra 4997 Bindumātŗkānyāsa- mantra 5029 mantra 5022, 5023 Bētālabhairavamantra 5028 Brāhmīmantra 5023, 5031 Brāhāmānantra 5023 Bētālakavaca 5027, 5028 Brāhmīmantra 5035 Bētālakavaca 5027, 5028 Bētālakavaca 5029 to 5031 Brahmānīmantra 5035 Bētālakavanantra 5034 Brahmānīmantra 5037 Bāngavadgitā 4760, 4813 Brahmānīpānādksaramantra 5034 Brahmānīpānādksaramantra 5034 Brahmānīpānādksaramantra 5036 Brahmānīpānādksaramantra 5035 Brahmānīpānādksaramantra 5036 Brahmānīpānādksaramantra 5036 Brahmānīpānādksaramantra 5037 Brahmānānā Brahmānā | | |
| kavuca 5012 Bhuvanéšvaristötra 4831 Bálátripuräsarasvatī- Bhuvanéšvaristötra 4831 mantra 5011, 5012 mantra | | |
| Bālātripurāsarasvatī- Bhuva*šévarīmātrkā- mantra 5011, 5012 mantra 5052 Bālātripurasundarī- Bhuvanēšvarīsammõhana- mantra 4882, 5006 to kavaca 5063 Baņāstaka 4882, 5006 to kavaca 5063 Baņāstaka 4882, 5006 to kavaca 5063 Banāhavimčeanīmantra 4996, 4997 Bodhāyana 4018, 4019 Bandhā-škākşarīmantra 4996, 4997 Bindumātrkānyāsa- Basavasīčra 4929 mantra 5022, 5023 Bēdālabaira anmhā- mantra 5023 Bādālavāngāmantra 5029 mantra 5023 Bēdālavāngāmantra 5029 mantra 5023 Bēdālavānamantra 5029 mantra 5023 Bēdālavālānantra 5029 mantra 5023 Bēdālavālānantra 5024 Brāhmānīmantra 5035 Bēdālavālānantra 5031 Brahmānīpañīcākṣarī- mantra 5034 mantra 5037 Bēdālavājamāntri: Brahmānīpañīcākṣarī mantra 5058 Brahmānīpañīcākṣarī Baharakālīmantra 5058 Brahmānānānānantra 5037 Biāgavata 4865, 4816 Brahmānānāmantra 5035 | 501.9 | Bhuvanēšvarīstotra 4931 |
| mantra | | Bhuva zēśvarīmātrkā- |
| Bālātripurasundarī- mantra | | mantra 5052 |
| mantra | 6 | Bhuraneśvarisammohana- |
| 5010 Bhuvanéšvaritrailókya- Bapästaka 4929 móhanakavaca 5048 Bandhavimöcanīmantra 4966, 4997 Bödhāyana 4018, 4919 Bandhāvimöcanīmantra 4997 Bindumātŗkānyāsa- 4018, 4919 Basavastötra 4929 mantra 5022, 5023 Bētālabhairavamahā- mantra 5029 mantra 5023 Bētālabhairavamantra 6028 Brāhmīmantra 5023 Bētālakavaca 5027, 5028 Br ihmagāyatrī 5035 Bētālakavaca 5027, 5028 Br ihmagāyatrī 5035 Bētālavādaksināmātra 5029 to 5031 Brahmānīmantra 5038 Bētālarāpadaksināmūrti Brahmānīmantra 5037 mantra 5034 mantra 5037 Bātālēšvaramantra 5034 Brahmānīnāmatra 5037 Bātālāšvaramantra 5034 Brahmānīnāmatra 5037 Bātālāšvaramantra 5034 Brahmānīnāmatra 5037 Bihāgavatā 4865,4836 Brahmānīnīnāmatra 5037 | | kavaca 5053 |
| Baŋāstaka | | |
| Bandhavimöcanīmantra 4966, 4997 Bödhāyana 4918, 4919 Bandhīt-ēkākşarīmantra 4997 Bindumātrkānyāsa- Basavastotra 4929 mantra 5022, 5023 Bētālabhairavamahā- mantra 5029 mantra 5022, 5023 Bētālabhairavamahā- mantra 5029 mantra 5023 Bētālabhairavamantra 5027, 5028 Brāhmīmantra 5035 Bētālakavaca 5021 to 5031 Brahmakaivarta 5035 Bētālamantra 5029 to 5031 Brahmānīmantra 5037 Bētālarāpādaksiņāmūrti- mantra 5034 mantra 5037 Bētālarāpadaksiņāmutra 5034 mantra 5037 Bētālarāvagadaksiņāmantra 5034 mantra 5037 Biāgavata 4865, 4836 Brahmāņīrimantra 5036 Bhairavabadabānala- 5041 4814 Bhaginīmantra 5058 5058 5058 Bhairavamālāmantra 5058 5066 Brahmāgārāmantra 5039, 5040 mantra <td< td=""><td>Banastaka 4929</td><td>-1 1 2000</td></td<> | Banastaka 4929 | -1 1 2000 |
| Basavastötra 4929 mantra 5022, 5023 Bötälabhairavamahā- Bindümätrkäsarasvatī- mantra 5029 Bötälabhairavamahta- 5029 mantra 5023 Bötälabhairavamantra 5029 mantra 5023 Bötälabhairavamantra 5027, 5028 Brahmänimantra 5035 Bötälahavaca 5027, 5028 Brahmänimantra 5035 Bötälanänantra 5029 to 5031 Brahmänimantra 5037 Bötälaräpadaksinämärti- 5037 Brahmänipañicäksari- mantra 5034 Brahmänipänänätässä 5037 Bhagavadgita 5037 Bhägavata | | Bodhāyana 4918, 4919 |
| Basavastötra 4929 mantra 5022, 5023 Bötälabhairavamahā- Bindümätrkäsarasvatī- mantra 5029 Bötälabhairavamahta- 5029 mantra 5023 Bötälabhairavamantra 5029 mantra 5023 Bötälabhairavamantra 5027, 5028 Brahmänimantra 5035 Bötälahavaca 5027, 5028 Brahmänimantra 5035 Bötälanänantra 5029 to 5031 Brahmänimantra 5037 Bötälaräpadaksinämärti- 5037 Brahmänipañicäksari- mantra 5034 Brahmänipänänätässä 5037 Bhagavadgita 5037 Bhägavata | Bandhi-ēkāksarīmantra 4997 | Bindumātrkānyāsa- |
| mantra5029mantra5023Bētālabhairavamantra5028Brāhmīmantra5040Bētālabhairavamantra5027, 5028Brāhmīmantra5035Bētālakavaca5027, 5028Brāhmāgāyatrī5035Bētālan ālāmantra5031 to 5033Brahmakaivarta4757Bētālamantra5029 to 5031Brahmānīmantra5038Bētālarāpadaksiņāmārti-Brahmāņīmantra5038mantra5029 to 5031BrahmāņīmantraBētālarāpadaksiņāmārti-Brahmāņīpañcāksarī-mantra5034Bhadrakālīmantra5034Bhagavadgitā4780, 4813Bhagavadgitā4761Brahmāņīpāmantra5037Bhāgavata4865, 4836BrahmaņārimantraBhaginīmantra5041Bhairavabadabānala-5041Bhairavamālāmantra5058Brahmayā ala4791, 4792Bhairavamālāmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamatira5045, 5040Brahmavaivartapurāpa4840Bhārārāmantra5045, 5046Brahmavaivarta5026, 5027Bhāratīpañcāksarīmantra5044Brhadvārāhīmantra5024 to 5026Bhārajawanatra5047Brhannilātau tra5026, 5027Bhārajamantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhāratīpañcāksarāmantra5044Brhaspatikavaca5026, 5027Bhāratīpañcāksarāmantra <td>D (5) (5)</td> <td></td> | D (5) (5) | |
| Bētālabhairavamantra 5028 Brāhmīmantra 5040 Bētālakavaca 5027, 5028 Br ihmagāyatrī 5035 Bētālakavaca 5027, 5028 Br ihmagāyatrī 5035 Bētālava ālāmantra 5021 to 5033 Brahmaķāvarta 4757 Bētālamantra 5029 to 5031 Brahmāķāmantra 5038 Bētālarāpadaksināmārti Brahmāķāmantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 mantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 mantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 mantra 5037 Bitāgavata 5041 4814 4814 Bhagavadgītā 4761 Brahmāņārnimantra 5036 Bhaginīmantra 5041 Brahmāņārnimantra 5036 Bhaginīmantra 5058 Brahmapācāksaramantra 5036 Bhairavamālāmantra 5058 to 5060 Brahmavai | Bētālabhairavamahā- | Bindumātrkāsarasvatī- |
| Bētālakavaca 5027, 5028 Br ihmagāyatrī 5035 Bētālan ālāmantra 5031 to 5033 Brahmakaivarta 5035 Bētālan ālāmantra 5029 to 5031 Brahmakaivarta 5038 Bētālarāpadaksiņāmātri- 5034 Brahmāņīmantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 mantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 Brahmāņīpañcāksarī- 5037 Bētālēšvaramantra 5041 4314 4314 Bhagavadgītā 4761 Brahmāņīrimantra 5037 Bhāgavata 4865, 4836 Brahmapañcāksaramantra 5036 Bhaginīmantra 5041 Brahmayā + ala 4791, 4792 Bhairavabādabānala- 5058 Brahmasudaršanamantra 5036 Bhairavamantra 5058 to 5060 Brahmavaivarta 5026, 5027 Bhāratīpañcāksarīmantra 5041 Brhavaivarta 5024 to 5026 Bhāratīpañcāksarīmantra . | mantra 5029 | mantra 5023 |
| Bētāla n ālāmantra5031 to 5033Brahmakaivarta4757Bētālamantra5029 to 5031Brahmānīmantra5038Bētālarāpadaksināmārti-Brahmānīpañcāksarī-Brahmānīpañcāksarī-mantra5034Brahmānīpañcāksarī-mantra5034Brahmānīpañcāksarī-Beādālēšvaramantra5034Brahmānīpañcāksarī-Badrakālīmantra5034Brahmānīpañcāksarā-Bhagavadgītā4761BrahmānīpinmantraBhāgavata4865, 48 36Brahmapācāksaramantra5036Bhaginīmantra5041BrahmānīpinmantraBhairavabadabānala5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamatra5058 to 5060Brahmavaivartapurāpa4840Bhairavamantra5041Brahmavaivarta5026, 5027Bhāratīpañcāksarīmantra5045Brhauvaivarta5024 to 5026Bhārgavaikāksaramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhāranīpāncāksarīmantra5043Brhannilātan tra5026, 5027Bhāratīpañcāksarīmantra5044Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārasanantāsa5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārasanāntra5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārasanānāsa5043 <th< td=""><td>Bētālabhairavamantra 5028</td><td>Brähmimantra 5040</td></th<> | Bētālabhairavamantra 5028 | Brähmimantra 5040 |
| Bētālamantra5029 to 5031Brahmānīmantra5038Bētālarūpadaksināmūrti-Brahmānīpamārāksarī-Brahmānīpamārāksarī-mantra5034mantra5037Bētālēšvaramantra5034mantra5037Bētālēšvaramantra5034Brahmānīpamārāksarī-5037Betalēšvaramantra5041Brahmānīpāmantra5037Bhagavadgītā4761Brahmānīrimantra5037Bhāgavata4865, 48.36Brahmapañcāksaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcāksaramantra5036Bhairavabadabānala-Brahmayā : ala4791, 4792Bhairavamālāmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamālāmantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa4840Bhāratīpañcāksarīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5140Bhāratīpañcāksarāmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5026, 5027Bhāratīpañcāksarāmantra5044Brhadvārāhīmantra5026, 5027Bhārgavāstākasramantra5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārgavāstākasramantra5044Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārgavāstākasramantra5044Brhaspatikavaca5026, 5027Bhārgavāstākasramantra5043Brhaspatikavaca< | Bētālakavaca 5027, 5028 | Br hmagāyatrī 5035 |
| Bētālarūpadaksiņāmūrti- mantra | Bētālanālāmantra 5031 to 3033 | Brahmakaivarta 4757 |
| mantra 5034 mantra 5037 Bētālēšvaramantra 5034 Brahmāņdapurāņa 5037 Bhadrakālīmantra 5034 Brahmāņdapurāņa 4780, 4813 Bhadrakālīmantra 5041 4814 Bhagavadgītā 4761 Brahmāņīrimmantra 5037 Bhāgavata 4865, 4836 Brahmāņārimantra 5037 Bhaginīmantra 4865, 4836 Brahmapāñcāksaramantra 5036 Bhaginīmantra 5041 Brahmayā ala 4791, 4792 Bhairavabadabānala- 5058 Brahmāstramantra 5039, 5040 mantra 5058 Brahmāsudaršanamantra 5036 Bhairavamālāmantra 5058 Brahmāvaivartapurāņa 4840 Bhārātīmantra 5058 to 5060 Brahmavaivarta 5026, 5027 Bhāratīpañcākṣarīmantra 5045, 5046 Brhadvāmākēšvaratantra 5140 Bhāravaivārākākṣaramantra 5047 Brhannīlāt | Bētālamantra 5029 to 5031 | Brahmāņīmantra |
| Bētālēšvaramantra5034Brahmāņdapurāņa4780, 48:3,Bhadrakālīmantra50414814Bhagavadgītā4761Brahmāņīrimantra5037Bhāgavata4865, 48:36Brahmapañcākşaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcākşaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmayā : ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmāstramantra5036mantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamālāmantra5058Brahmavaivartapurāņa4840Bhaīravamantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa4840Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5026, 5027Bhāratīpañcākşarāmantra5044Brhadvāmakēšvaratantra5140Bhārgavaikākşaramantra5044Brhaspatikavaca4921Bhārgavaikākşaramantra5045Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmandhāranamantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmandhāranamantra5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhavārīškaraca5042Budhakavaca5023, 5024 | Betālarūpadaksiņāmūrti- | Brahmāņī pancāksarī- |
| Bhadrakālīmantra50414814Bhagavadgītā4761Brahmāņīrimantra5037Bhāgavata4865, 4836Brahmapañcākşaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcākşaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcākşaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmayā + ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmasudaršanamantra5039, 5040mantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamālāmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa4840Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5026, 5027Bhāratīpañcākşarīmantra5044Brhadvāmākēšvaratantra5026, 5027Bhārgavaikākşaramantra5047Brhannilātan traBhārgavākākşaramantra5046Brhannilātan traBhārgavākāksaramantra5046BrhaspatikavacaBhārgavākāksaramantra5046BrhaspatimantraBhārgavākākasa5043BrhaspatimantraBraspatimantra5044Budhakavaca5023, 5024Bhayārīkānaca5044Budhakavaca5023, 5024 | mantra 5034 | mantra 5037 |
| Bhadrakālīmantra50414814Bhagavadgītā4761Brahmāņīrimantra5037Bhāgavata4865, 4836Brahmapañcāksaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcāksaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcāksaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmapañcāksaramantra5036Bhaginīmantra5041Brahmayā : ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmasudaršanamantra5039, 5040mantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamalāmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa4840Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5026, 5027Bhāratīpañcāksarīmantra5044Brhadvārāhīmantra5026, 5026Bhārgavaikāksaramantra.5047Brhannilātap tra5026, 5027Bhasmadhāranamantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5048Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5048Brhaspatimantra5027 | Bētālēśvaramantra 5034 | Brahmāņdapurāņa 4780, 48:3 |
| Bhāgavatā4865, 4836Brahmapañcākşaramantra.5036Bhaginīmantra5041Brahmayā ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmayā ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmāstramantra5039, 5040mantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamā/āmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamā/āmantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa4840Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5026, 5027Bhāratīpañcākşarīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5140Bhāratīpañcākşarāmantra5047Brhannilātap tra4921Bhdrgavāstākasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5043Brhaspatimantra5026, 5027Bhasmanyāsa5043Brhaspatimantra5026, 5027 | Bhadrakālīmantra • 5041 | 4814 |
| Bhaginīmantra5041Brahmayā : ala4791, 4792Bhairavabadabānala-Brahmāstramantra5039, 5040mantra5058Brahmāstramantra5036Bhairavamālāmantra5058Brahmasudarśanamantra,5036Bhairavamālāmantra5061Brahmasudarśanamantra,5036Bhairavamantra5058 to 5060Brahmavaivartapurāņa.4840Bhāratīmantra5058 to 5060Brahmavaivarta5026, 5027Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra.5140Bhāratīpañcāksarīmantra.5044Brhadvāmakēšvaratantra5024 to 5026Bhārgavaikāksaramantra.5047Brhannilātan tra4921Bhdrgavāstākasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5043Brhaspatimantra5026, 5027Bhasmanyāsa5043Brhaspatimantra5026, 5027 | Bhagavadgitä 4761 | Brahmanīrinmantra 5037 |
| Bhairavabadabānala-Brahmāstramantra5039, 5040mantra5058Brahmasudaršanamantra5036Bhairavamālāmantra5061Brahmasudaršanamantra,5036Bhairavamālāmantra5061Brahmasudaršanamantra,5026, 5027Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra,5026, 5027Bhāratīpañcākşarīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra,5140Bhāratīpañcākşarāmantra5044Brhadvāmākēšvaratantra,5024 to 5026Bhārgavaikākşaramantra,5047Brhannilātap tra5026, 5027Bhasmadhāraņamantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5048Brhaspatimantra5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5028, 5024Bhayārākavaca5044Budhakavaca5023, 5024 | Bhāgavata 4865, 4836 | Brahmapañcākṣaramantra. 5036 |
| mantra5058Brahmasudaršanamantra,5036Bhairavamālāmantra5061Brahmasudaršanamantra,5036Bhairavamālāmantra5061Brahmavaivartapurāņa.4840Bhaīravamantra | Bhaginīmantra 5041 | Brahmayā : ala 1791, 4792 |
| Bhairavamālāmantra5061Brahmavaivartapurāņa.4840Bhaīravamantra | Bhairavabadabānala- | Brahmāstramantra 5039, 5040 |
| Bhaīravamantra5058 to 5060Brahmavaivarta5026, 5027Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra5140Bhāratīpañcākşarīmantra5044Brhadvāmakēšvaratantra5140Bhārgavaikākşarāmantra5044Brhadvārāhīmantra5024 to 5026Bhārgavaikākşaramantra5047Brhannilātan tra4921Bhārgavāstākaşramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmadhāraņamantra5043Brhaspatimantra5026, 5027Bhasmanyāsa5043Brhaspatimantra5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhavārākaraca5042Budhakavaca5024, 5027 | mantra 5058 | Brahmasudarśanamantra, 5036 |
| Bhāratīmantra5045, 5046Brhadvāmakēšvaratantra.5140Bhāratīpañcāksarīmantra.5044Brhadvārāhīmantra5024 to 5026Bhārgavaikāksaramantra.5047Brhannilātantra4921Bhārgavāstākasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmadhāranamantra5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5043BrhaspatimantraBhavārākapaca5042Budhakavaca5023, 5024 | Bhairavamālāmantra 5061 | Brahmavaivartapurāņa. 4840 |
| Bhāratīpañcāksarīmantra.5044Brhadvārāhīmantra5024 to 5026Bhārgavaikāksaramantra.5047Brhannilātau tra4921Bhārgavāstākasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmadhāraņamantra5043Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhavārākaraca5042Ku dhamantra5024 | Bhaīravamantra 5058 to 5060 | Brahwavaivarta 5026, 5027 |
| Bhārgavaikāksaramantra.5047Brhannilātan tra4921Bhārgavāstākasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmadhāraņamantra5043Brhaspatimantra5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhavārākapaca5042Ku dhamantra5024 | Bhāratīmantra 5045, 5046 | Brhadvamakēsvaratantra. 5140 |
| Bhårgavästäkasramantra5046Brhaspatikavaca5026, 5027Bhasmadhäranamantra5043Brhaspatimantra5027Bhasmanyäsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhayanaraa5042Ku dhamantra5024 | Bhāratīpañcākṣarīmantra. 5044 | Brhadvärähimantra 5024 to 5026 |
| Bhasmadhāraņamantra5043Brhaspatimantra5027Bhasmanyāsa5044Budhakavaca5023, 5024Bhayārākavaca5042Ku dhamantra5024 | Bhāryavaikāksaramantra. 5047 | Brhannilātautra 4921 |
| Bhasmanyāsa 5044 Budhakavaca 5023, 5024 Bhavārākavaca 5049 Rudhakavaca 5023, 5024 | Bhargavāstākasramantra 5046 | Brhaspatikavaca 5026, 5027 |
| Bhavanakana 5042 Ku dhawa matag | Bhasmadhāraņamantra 5043 | Brhaspatimantra 5027 |
| Bhavānīkavaca 5042 Budhamantra 5024 | | Budhakavaca 5023, 5024 |
| | Bhavānīkavaca 5042 | Budhamantra 5024 |

SELO A C

| | PAGE |
|-------------------------------|---------------------|
| Candagarudamantra | 4749 |
| Candamātāngīmantra | 4750 |
| Caņdikādēvīhrdaya | 4756 |
| Candikā dēvīkavaca 4 | 751 to 4753 |
| Candikāhrdaya | 4755 |
| Candikāmahāmantra | 4754 |
| Caņģikā navā ksarī mūla- | |
| mantra • | 4753 |
| Candiyantra | 4973 |
| Candrakavaca | 4757 |
| Candramartra | 4758 |
| Candrayaksinīmantra | 4759 |
| Candrikāmantra | 4759 |
| Caramaślōkamantra | 4760, 4761 |
| Catussastisiddhāmantra. | 4756, 4757 |
| Cidambaram | 4762 |
| Cidambaramēlanakavaca. | 4764, 4765 |
| Cidambaranațanamantra. | 4762, 4763 |
| Cidambaranatanatantra. | 4806 |
| Cidambarana tēśvara | 4763 |
| Cintāmaņimantra | 4765, 4766 |
| (lintāmaņisarasvatī- | |
| mantra | 4766 |
| Citivāsinībhāiravīmantra. | 4761 |
| Oitravidyādharīmartra | 4762 |
| | |
| | |
| | 1 |
| Dadhivāmanamantra | 4829 |
| Dāksāyaņīmantra | 4832 |
| Daksinakālikāmantra | 4799 |
| Daksiņakālīkavaca | 4799 |
| Dakșinā mūrtidvā da śā k șarī | |
| mantra | 4806 |
| Daksiņā mūrtikavaca 4 | 800 to 4804, |
| | 4806 |
| Daksiņāmūrtimālāmantra. 4 | 810 to 4812 |
| Daksiņāmūrtimantra | 4809, 4810, |
| , 8 | 5124 to 5126 |
| Dakșiņā mūrtinavāksarī- | |
| | |
| mantra | 4807 |
| | 4807 4807, 4808, |

| 1 | PAGE |
|-------------------------------|--------------|
| Daksiņā mūrtitrailokya- | |
| vijayakavaca | 4805 |
| Daksiņā mūrtyā nustubha- | |
| mahāmantra | 4813 |
| Daksiņā mūrtyastādašāk- | |
| sarīmantra | 4812 |
| Dasāphalanirūpaņa | 4859 |
| Daśaślokīmantra | 4880 |
| Daśavīrāvalīmantra | 483 0 |
| Dattātrēyadigbandhana | 4816 |
| Dattā trēyadvā dasā kṣara | |
| mantrarājamantra | 4816 |
| Dattātrēyagāyatrī | 4815 |
| Dattā trēyai kā kṣaramantra | 4828 |
| Dattā trēyakavaca 4813 to | 4815 |
| Dattātrēyamālāmantra 4814, | 4820, |
| | 4821 |
| Dattātrēyamantra 4817 to | 4819 |
| Dattātrēyanavākṣaraman• | |
| tra | 4817 |
| Dattātrēya ödašāksara- | |
| mantrarājamahāmantra | 4827 |
| Dattātrēyāşţākşarīmantra | 4814 |
| Dattātrēyāstottarasatanā- | |
| mastötra | 4814 |
| Dattatrēyāstöttarastötra | 4818 |
| Dattātrēyavajrakavaca 4822 to | 4825 |
| Dattātrēyavaśyamantra | 4825 |
| Dattātrēyasadaksarīmantra- | |
| rājamantra | 4825 |
| Dattātrēyasöda śāksara- | |
| mantra | 4826 |
| Dattātrēyāstākšarīmantra | 4828 |
| Dattātrēyastambhana- | |
| mantra | 4827 |
| Dattātrēyōccāțanamantra | 4829 |
| Dēvapūjāprayoga | 4900 |
| Dēvašābarahanuman- | |
| mantra | 4899 |
| Dēvatānyāsa 4838, | 4839 |
| Dēvikavaca | 4753, |
| 4839, | 4840 |
| Dēvīmālāmantra | 4840 |

iii

| | PAGE | | PAGE |
|----------------------------|------------|---------------------------|--------------|
| Dēvīstötra | 4753 | Jaganmõhanagõpālamantra | 4766 |
| Dēvīsūktumālāmantra | 4841 | Jaganmõhanahayagrīva | |
| Dēvyaksar a nyāsa | 5080 | mahāmantra | 4 767 |
| Dhanvantarimantra | 4845, 4846 | Jaladurgāmantra | 4768 |
| Dhātrikalpa | 4859 | Jaganmöhinīmantra | 4768 |
| Dhūmāvatīmālāmantra | 4849 | Jālandharapīthamantra | 4771 |
| Dhūmāvatīmantra | 4847, 4848 | Jātakasāra | 4859 |
| Dhū nāvatīmūlamantra | 4850 | Jātakasārāvali | 4859 |
| Dhūmravārāhīmantra | 4850, 4851 | Jātavēdasanyāsa | 4770 |
| Diyambaragöpälamantra. | 4833 | Jātavēdasadurgāmantra | 4769, 4772 |
| Dikpālāstakamantra | 4833 | Jayadrathayāmala | 4980, 4983 |
| Dīpinīmantra, | 4834 | Jñānārņava | 5021, 5022 |
| Divyarūpagōpālamantra. | 4834 | Jyantişa | 4859 |
| Drāviņīmantra | 4841 | Jyautișa — Yōgãdhyāya | 4859 |
| Durgābījaikāksaramantra. | 4835 | | |
| Durgaikārcamantra | 4837 | Kālabhairavāstaka | 4929 |
| Durgā rālāmantra | 4837 | Kalasapūjāprakāra | 4831 |
| Durgāsadaksaramantra | 4836 | Kīlakastōtra | 4753 |
| Dvādašāk arīm antra | 4842, 4843 | Krșņāșțaka | 4929 |
| Dvädasärdhämbämantra | 4844 | Krșņāșțōttaraśatanāmāvali | 4868 |
| Dvārakà | 4845 | Kulārņāvasamhitā | 5004, 5005 |
| Dvárakávásagöpálamantra. | 4845 | | |
| | | Laghusyāmalāmantra | 4882 |
| | | Laghumātangimantra | 4830 |
| Gantamāśtaka | 4929 | Laksmihrdaya | 4868 |
| Grahabandhanamantra | 4749 | Laksmyaştöttarasata | 4902 |
| Grahamaitryādinirņaya | 4859 | Lalitāsahasranāmastötra. | 4753 |
| Gurubhaktinidhi | 4929 | Lingapurāna | 4909 |
| Gurudhyāna | 4929 | Lingāstaka | 4929 |
| Gurupādukāmantra | 4882 | | |
| | | Madanagōpāladvādaśāk- | |
| | | śaranysa | 5063 |
| Hanumanmantra | 4818 | Madanagopälamantra | 5063, 5064 |
| Hanumanmantrakalpa | 4900 | Madanayakşīnghuţikā- | |
| Hannmatkalpa | 4978 | mantra | 5064, 5065 |
| Hannmatkavaca | 4813 | Mādhavastavarāja | 4863 |
| Haritālikāvrata | 4854 | Madhumatīmantra | 5065 |
| Höräśästra with commen- | • | Madhyāhnavārāhīmantra. | 5066, 5067 |
| tary | 4859 | Mahābāņanyāsa | 5083 |
| | | Mahābhairavīmantra | 5884, 5085 |
| | | Mahācintāmaņimantra | 5078 |
| Indrāl șistotramantra | 4968 | Mahādēvāstaka | 4929 |
| | | | |

iv

| | | | PAGE |
|-----------------------|-------|------------|--------------|
| Mahāgaņapatimāņtra | | 4831, | 4902, |
| | | 5074 to | 5077 |
| Mahäkälidurgamantra | · | | 5074 |
| Mahālakşmīkavaca. | | | 5088 |
| Mahālaksmītantra | | | 4952 , |
| Mahāmārīstötramantra | * 8 8 | | 5086 |
| Mahāmāyāmantra | ••• | | 5085 |
| Mahānyāsa | • • • | | 4830 |
| Mahāpādukāmantra | • • | | 5082 |
| Mahāpañcakanyāsa | | | 5081 |
| Mahāpāśupatāstramant | ra | | 5083 |
| Mahärdhämbämantra | • • • | 5086, | 5087 |
| Mahārdhāmantra | | | 5988 |
| Mahāśarabhamantra | | | , 5095 |
| Mahā śāstāmantra | | , | 5086 |
| Mahāsaurāstāk; arīman | tra | | 5 099 |
| Mahā ödhā dvayīnyāsa | | | 5098 |
| Mahāsudaršanamantra | *** | | 5098 |
| Mahāśūlinīmantra | 5.e.s | | 5097 |
| Mahātripurasundarīma | an. | | |
| tra | ••• | | 5080 |
| Mahātripurasundarīm | an- | | |
| trarājamantra | | | 5080 |
| Mahātripurasundarī | | | |
| pañcadasāksarīmants | ra. | | 5079 |
| Mahātripurasundarī- | | | |
| mantraśēsa | ••• | | 5081 |
| Mahāvākyamantra | | | , 5090 |
| Mahāvidyā | | | , 5091 |
| Mahāvidyānavavidyān | av | <i>a</i> - | |
| durgāpratyangirā- | | | |
| mantra | *** | • | 5090 |
| Mahāvidyāvanadurgā- | | | |
| | ••• | 5091 | , 5092 |
| Mahāvidyāvanadurgās | tō- | | |
| tramantra | ** | • | 5093 |
| Mahāvīrapratāpahanu | mar | 2- | |
| mālāmantra | | | 5094 |
| Mailārdēvamantra | •• | . 5127 | 7, 5128 |
| Malabar | •• | • | 5073 |
| Mālavīdurgāmantra | ** | • | 5109 |
| Malayālabhagavatī- | | | Koko |
| mantra | • | •• | 5072 |

| | | PAGE |
|----------------------------|--------|---------------|
| Mālinīmantra | | 5110, 5111 |
| Mälinīmātrkānyāsama | ··· | 0110,0111 |
| | | 5112 |
| tra Mallamardanagõpālam | *** | 0112 |
| | | 5073 |
| | | |
| Mandalatrayamantra | | 5061 5062 |
| Maņidarpaņa | | 4859 |
| Manmathamantra | *** | 5071, 5072 |
| Mantrakalpārņava | •• | 5147, 5118 |
| Mantramālikā | . • | 5071, 5085, |
| | ł | 5094 to 5096 |
| | э | 5101, 5102 |
| | | 5117, 5122 |
| | , 5128 | 8, 5133, 5134 |
| Mantranyāsa | • • • | 5067 |
| Mantraratnäkara | • • • | 4801 |
| Mantrarajamantra | | 5067 to 5669 |
| Mantrasandhyāvandur | ıa- | |
| prayōga | *** | 5070 |
| Mantrāvali | | • 5070 |
| Mārkāņdēyapurāņa | ••• | 4808, 4809 |
| Mārkaņdēyastuti | *** | 4929 |
| Mātangīkavaca | | 5099, 5100 |
| Mātangī śvarīmantra | | 5101, 5102 |
| Māţrkāmantra | | 5105, 5106 |
| Mātrkānyāsa | | 5103, 5104 |
| Matrka sarasvatīmante | ·a | 5106 |
| Māyādēvīkavaca | | 5107 |
| Māyākavacavidhāna | | 5107 |
| Māyāmantra | | 5107 |
| Māyāmöhinīmantra | | 5108 |
| Medhadakşiņāmurti- | | |
| mantra | | 4831, 5120 |
| | | to 5124 |
| Mēdhādaksiņāmūrtima | ihđ- | |
| mantra | | 5126 |
| Medhadak inamurtim | antra | |
| rājamahāmantra | | 5124, 5125 |
| Miśrāmbāmantra | | \$112, 5113 |
| Mrtasañjīvinīmantra | | 5117 |
| Mrtyulängülamantra | | 5119, 5120 |
| Mrtyuñjayatryambak | | |
| an an dua | | 5118 |
| manira | | 0.10 |

V

5

| NāksatranyāšaNīlakaņthapā rāvatamantraNāksatranyāša4851Nāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamatra4859Nāmatrayamatra4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamantragrahōc-4852cātana4852Nārasimhasainhita4859Nārāyaņadigbandhana-4863mantra4864Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamailāmantra4864Nārāyaņamailāmantra4864Nārāyaņamaitāmantra4864Nārāyaņamaitāmantra4861Nārāyaņamantra4861Nārāyaņamaitāmantra4864Nārāyaņāstottaraš ita4865Nārāyaņavarmamantra4864Nārāyaņavarmamantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāvarmamantra4864Nārāyaņāstitamantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāvarmamantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāvarmamantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāvarmamantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra4865Nārāyaņāstramantra </th <th>4879 4878 4978 4929 4872 4854 4885 4886 4883</th> | 4879 4878 4978 4929 4872 4854 4885 4886 4883 |
|---|--|
| Mudrāmantra5116Nīlakaņthabaļabānala- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- mālasnitāmantraNīlakaņthabaļabānalastō- milakaņthabaļabānalastō- milakaņthamālāmantra4878 MilakaņthamālāmantraNīlakaņthamālāmantra4874 to NīlakaņthamālāmantraNaksatranyāsa116Nīlakaņthamālāmantra4877 MilakaņthamālāmantraNīlakaņthamālāmantra4877 | 4874 4877 4879 4878 4873 4929 4872 4854 4885 4885 4886 4883 |
| Mudrinavakamantra5115Mukhyapranamantra5114Murtipañjaranyāsa5117Murtipañjaranyāsa5117Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Murtipratişthāmantra4874Masatranyāša4851Nāmatrayanyāša4859Namatrayanyāša4859Narasimhamatragrahöc7588Karasimhasaihita4852Nārāyanadigbandhana4864Mārāyanadigbandhana4864Mārāyanadigbandhana4864Mārāyanakitasarimantra4864Mārāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstotaras ita4864Marāyanāstamantra4870Marāyanāstamantra4871Marāyanāstamantra4870Marāyanāstamantra4871Marāyanāstamantra4872Marāyanāstamantra4873Marāyanāstamantra4874Marāyanāstasarīmantra4874Marāyanāstasarīmantra4874Marāyanāstasarīmantra4874 <t< td=""><td>4877 4879 4878 4878 4929 4872 4854 4885 4886 4886</td></t<> | 4877 4879 4878 4878 4929 4872 4854 4885 4886 4886 |
| MakhyaprāņamantraS114Nīlakaňthabudabānalastö- tramantra4874 toMūrtipaūjaranyāsa5117Nīlakaņthamālāmantra4878Mūrtipratisthāmantra4831Nīlakaņthamāntra4878Mūrtipratisthāmantra4831Nīlakaņthamāntra4877Mūrtipratisthāmantra4831Nīlakaņthamāntra4877Mūrtipratisthāmantra4831Nīlakaņthamāntra4877Nāksatranyāsa4831Nīlakaņthamāntra4877Nāmadvādašapañjara4861Nītyārcanādimantra111Nāmatrayanyāsa48591860Nrsimhadāgbandhana111Namatrayanyāsa48591860Nrsimhadāgbandhana118Narasimhamālāmantra4861Nrsimhakākāsaramantra4882Nārāyaņadigbandhana- mantra4863Nrsimhakādāmantra4864Nārāyaņadigbandhana- mantra4864Nrsimhakadagamālāmantra4864Nārāyaņāstotaraš ita486410111Nārāyaņāstotaraš ita486410111Nārāyaņāstotaraš ita486410111Nārāyaņāstotaraš ita486410111Nārāyaņāstotaraš ita4865486410Nārāyaņāstotaraš ita4865486410Nārāyaņāstotaraš ita4865486410Nārāyaņāstotaraš ita48654864Nārāyaņāstaramatra486510Nārāyaņāstaramatra486510Nārāyaņāstaramatra486510Nārāyaņāstaramatra486510< | 4877 4879 4878 4878 4929 4872 4854 4885 4886 4886 |
| Mürtinyösa1116, 5117tramantra4874 toMürtipaüjaranyäsa5117Nilakanthamälämantra4878Mürtipratişthümautra4831Nilakanthamäntra4877Mürtipratişthümautra4831Nilakanthamäntra4877Näksatranyäsa4831Nilakanthamäntra4877Näksatranyäsa4851Nilakanthamäntra4877Nämadvädäsapääjara4861Nityärcanädimantra4877Nämatrayanyäsa4859Nityärcanädimantra111Namatrayanyäsa4859Nityärcanädigbandhana111Narasimhamälämantra4851Nrsimhakkäsaramantra4882Narasimhasaihita4852Nrsimhakkäsaramantra4879 toNäräyanakayaca4861 to4863Nrsimhakalasranäma-4864Näräyanästöstarasita4864101111Näräyanästöstarasita4864101111Näräyanästöstarasita4864101111Näräyanästöstarasita4864101111Näräyanästästaramatra4864101111Näräyanästästaramatra4864101111Näräyanakavaca4865 to 4866111111111Näräyanästamatra4855111111111Näräyanästamatra4855111111111Näräyanästamatra4865111111111Näräyanästaramatra4865111111111Näräyanästaramatra4865111111111Näräyanästa | 4879 4878 4978 4929 4872 4854 4885 4886 4883 |
| Martipañjaranyāsa5117Nīlakanthamālāmantra4878Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamālīāmantra4878Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamāntra4877Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamāntra4877Nāksatranyāsa4851Nīlakanthamāntra4877Nāmatrayāmantra48591860Nītyākranādimantra111Nāmatrayānantra48591860Nīsiihadvātrimantra111Nāmatrayānasta48591860Nīsiihadvātrimantra4878Nāmatrayānasta48591861Nīsiihadvātrimantra4882Narasiinhamālāmantra4861Nīsiihakākākāramantra4889Nārašimhasainhita4852Nīsiihakavea4879Nārāyanadigbandhana18651011863Nārāyanamatra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra487048711882Nārāyanāstāksarīmantra48711886101Nārāyanāstāksarīmantra48711886101Nārāyanāstāksarīmantra48711882101Nārāyanāstākarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīma | 4879 4878 4978 4929 4872 4854 4885 4886 4883 |
| Martipañjaranyāsa5117Nīlakanthamālāmantra4878Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamālīāmantra4878Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamāntra4877Martipratisthāmautra4831Nīlakanthamāntra4877Nāksatranyāsa4851Nīlakanthamāntra4877Nāmatrayāmantra48591860Nītyākranādimantra111Nāmatrayānantra48591860Nīsiihadvātrimantra111Nāmatrayānasta48591860Nīsiihadvātrimantra4878Nāmatrayānasta48591861Nīsiihadvātrimantra4882Narasiinhamālāmantra4861Nīsiihakākākāramantra4889Nārašimhasainhita4852Nīsiihakavea4879Nārāyanadigbandhana18651011863Nārāyanamatra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra48611011882Nārāyanāstāksarīmantra487048711882Nārāyanāstāksarīmantra48711886101Nārāyanāstāksarīmantra48711886101Nārāyanāstāksarīmantra48711882101Nārāyanāstākarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīmantra4871101101Nārāyanāstāksarīma | 4879 4878 4978 4929 4872 4854 4885 4886 4883 |
| Mūrtipratisthāmautra4831Nīlakanthamantra4877Mūrtipratisthāmautra4831Nīlakanthamantra4877Nīlakanthamāntra171Nāksatranyāsa4851NilakanthamāntraNāmatrayamantra4859, 1860NīsmihadigbandhanaNīsimhadāgbandhanaNāmatrayanyāsa48591861Nīsimhadvātrīmantra4882Nāmatrayanyāsa48591861Nīsimhadvātrīmantra4882Narasimhamālāmantra4861Nīsimhakākāksaramantra4882Narasimhamālāmantra4861Nīsimhakatāksaramantra4889 toNārāyanadigbandhana- mantra4868Nīsimhamālāmantra4889 toNārāyanamatra4861 to4863Nīsimhamālāmantra4889 toNārāyanamatra4861 to4864Nīsimhamantra4882Nārāyanastramantra4861 to4864Nīsimhamantra4882Nārāyanāstramantra48704871toNārāyanāstramantra48704871toNārāyanāstramantra4871Nīsimhasahasranāma- stötratoNārāyanastramantra4871Nīsimhasahasrāksarimantra4822Nārāyanāstramantra4871Nīsimhasahasrāksarimantra4822Nārāyanāstramantra4871Nīsimhasahasrāksarimantra4822Nārāyanāstramantra48551010Nārāyanāstramantra48551010Nārāyanāstramantra48551010Nārāyanāstramantra48551010< | 4873 4929 4872 4854 4885 4886 4883 |
| Nīlakanthapārāvatamantra traNāksatranyāsa4851Nāmadvādašapañjara4851Nāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamatra4859Nāmatrayanyāsa4859Nāmatrayanyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamalāmantra4861Narasimhamantragrahõe- cātana4852nārāyaņadigbandhana- mantra4852Nārāyaņadigbandhana- mantra4863Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyaņamantra4861 to 4863Nārāyaņāstottaraš ita4861 to 4863Nārāyaņāstottaraš ita4865 to 4868Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstakavaca4861 to 4863Nārāyaņāstamantra4865 to 4868Nārāyaņāstramantra4865 to 4868Nārāyaņāstramantra4865 to 4868Nārāyaņāstramantra4851 to 4863Nārāyaņāstramantra4865 to 4868Nārāyaņāstramantra4851 to 4868Nārāyaņāstramantra4852Nārāyaņāstramantra4854Nārāyaņāstramantra4855 to 4868Nārāgaņāvarmamantra4852Nārāgaņāvarmamantra4854Nārāgaņāvarmamantra4852Nārāgaņāstākparī4854Nārāganājākstamantra4852Nārāgaņāstākparī4854Nārāganājākākparī1Natanagö | 4929 4872 4854 4885 4886 4886 |
| Nakşatranyāsa1851Nāmadvādašapāñjara4851Nāmadvādašapāñjara4850Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Nārasimhamaītāmantra4852Nārasimhasamhita4859Nārāyaņadigbandhana-4865mantra4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamatāmantra4864Nārāyaņamatāmantra4864Nārāyaņamatāmantra4864Nārāyaņamatāmantra4864Nārāyaņāstāksarīmantra4864Nārāyaņāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4867Nārāyanāstāksarīmantra4870Kārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4870Nārāyanāstāksarīmantra4871Nīrājanāstāksarīmantra4872Nīrājanāstāksarīmantra4871Nīrājanāstāksarīmantra4872Nārāyanāstāksarīmantra4871Nārāyanāstamantra4875Nārāyanāst | 4929 4872 4854 4885 4886 4886 |
| Nakşatranyāsa4851Nāmadvādašapañjara4850Nāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayanyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamalāmantra4861Nārasimhasainhita4852Nārāyaņadigbandhana-4852nārā4868Nārāyaņadigbandhana-1863Nārāyaņadigbandhana-1863Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņadigbandhana-1868Nārāyaņakavaca4868 to 4870Nīršimhasahastra4868Nārāyaņāstātamantra4864Nārāyaņāstātamantra4861 to 4863Nārāyaņāstātamantra4870, 4871Nārāyaņāstātamantra4870, 4871Nārāyaņāstātamantra4870, 4871Nārāyaņāstātamantra4861 to 4863Nīrsimhasahasrāksarīmantra.4892,Nīrsimhasahasrāksarīmantra.4892,Nīsimhasahasrāksarīmantra.4892,Nāragaņavarmamantra4855 to 4868Nīsimhasahasrāksarī-1852Navadūtīmantra4854, 4855Navadūtīmantra4854, 4855Nīsimhasāhasrāksarīmantra.1854, 4855Nīsimhasāhasrāksarīmantra.1854, 4855Nīsimhašādiāksarīmantra1854, 4855< | 4872 4854 4885 4886 4883 |
| Naksatranyāsa4851Nāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamantra4859Nāmatrayamyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4852Nārasimhasamhita4852Nārāyanadigbandhana- mantra4863Nārāyanadīgbandhana- mantra4863Nārāyanamālāmantra4863Nārāyanamālāmantra4864NārāyanāstākşarīmantraNārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4861Nārāyanāstākşarīmantra4862Nārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4868Nārāyanāstākşarīmantra4864Nārāyanāstākşarīmantra4868 | 4854 4885 4886 4883 |
| NāmadvādašapañjaraMaNāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamyāsa4859, 1860Nāmatrayamyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Nārāsimhasamhita4859Nārāyaņadigbandhana-4852mantra4863Nārāyaņadigbandhana-4863Nārāyaņadigbandhana-4863Nārāyaņadigbandhana-4863Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyanakavaca4861 to 4863Nārāyanāstottarašita4867Nārāyanāstramantra4867Nārāyanāstramantra4868Nārāyanāstramantra4867Nārāyanāstramantra4868Nārāyanāstramantra4867Nārāyanāstramantra4868Nārāyanāstramantra4867Nārāyanāstramantra4868Nārāyanāstramantra4865 to 4868Nasimhasahasrākşarīmantra4852Navadātīmantra4854, 4855Navadātīmantra4854, 4855Navadātīmantra4854, 4856Navadātīmantra4854, 4856Navadātīmantra4854, 4856Navadātīmantra4854, 4856Navākşarīmahālakşmī-7111mantra4854, 4856< | 4885 4886 4883 |
| Nāmadvādašapañjara4860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayanyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamantragrahōc- cātana4852cātana4859Nārāsimhasamhita4859Nārāyanadigbandhana- mantra4863Nārāyanadigbandhana- mantra4863Nārāyanadīdīmantra4863Nārāyanamālāmantra4864Nārāyanamalāmantra4864Nārāyanakavaca4861 to 4863Nārāyanāstākşarīmantra4861 to 4863Nārāyanāstāksarīmantra4870, 4871Nārāyanāstāksarīmantra4871Nārāyanāstāksarīmantra4864Nārāyanāstāksarīmantra4865 to 4868Nārāyanāstāksarīmantra4871Nārāyanāstāksarīmantra4854, 4855Navadūtīmantra4854, 4855Navadūtīmantra4854, 4855Navadūtīmantra4854, 4855Navāksarīmahālaksmī- mantra4854, 4856Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Navāksarīmahālāmantra4858 | 4886 4883 |
| Nāmatrayamantra4859, 1860Nāmatrayanyāsa4859Nandikēsvarāstaka4859Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra4861Narasimhamantragrahōc4852cātana4852Nārasimhasamhita4852Nārāyanadigbandhana4863mantra4863Nārāyanadigbandhana4863mantra4863Nārāyanahrdaya4868 to 4870Nārāyanamantra4864Nārāyanamantra4864Nārāyanakavaca4861 to 4863Nārāyanāstāksarīmantra4870, 4871Nārāyanāstāksarīmantra4870, 4871Nārāyanāstatamantra4865 to 4868Nai āyanāstramantra4865 to 4868NatanagōpālamantraNavadūtīmantraNavadūtīmantraMarāNarāyanastramantraKārāyanāstramantra4855 to 4868NatanagōpālamantraNavadūtīmantraNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmahālaksmīNavākşarīmālāmant | 4883 |
| Nāmatrayanyāsa4859Nandikēsvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4928Narasimhamālāmantra4928Narasimhamantragrahōc-785000000000000000000000000000000000000 | 4883 |
| Nandikesvarāstaka4928Narasimhamālāmantra4928Narasimhamālāmantra4861Narasimhamantragrahōc-75 mihaikāksaramantracātana4852Nārasimhasamhita4852Nārāsimhasamhita4852Nārāyaņadigbandhana-863mantra4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyaņamantra4861 to 4863Nārāyaņāstottarašita4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4865 to 4868Nārāyaņāstottarašita4865 to 4868Nārāyaņāstottarašita4865 to 4868Nārāyaņāstottarašita4865 to 4868Nārāyaņāstottarašita4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4868Nārāyaņāstottarašita4868Nārāyaņāstottarašita4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4868Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstottarašita4868Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4872Nārāyaņāstottarašita4868Natanagöpālamantra4854Natanagöpālamantra4854Navadātīmantra4854, 4855Navāksarīmahālaksmī- mantra75 mihatāpanīyamantraNasimhatāpanīyamantra75 mihatāpanīyamantra | |
| Narasimhamālāmantra4861Narasimhamālāmantra grahōc- cāṭana1852cāṭana4852Nārasimhasamhita4852Nārasimhasamhita4852Nārāyaṇadigbandhana- mantra1853mantraMārāyaṇahrdaya4868 to 4870Nārāyaṇamālāmantra4864Nārāyaṇamālāmantra4864Nārāyaṇamantra4861 to 4863Nārāyaṇāstākṣarīmantra4861 to 4863Nārāyaṇāstākṣarīmantra4870, 4871Nārāyaṇāstātaṣarīmantra4864Nārāyaṇāstākṣarīmantra4865 to 4868Nārāyaṇāstākṣarīmantra4865 to 4868Natānagōpālamantra4854, 4855Navadātīmantra4854, 4855Navadātīmantra4854, 4855Navakṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantraNrsimhaṣāpāsākṣarīmantraNavākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantraNrsimhaṣāpānīyamantraNavākṣarīmahālakṣmī- mantra4858Navākṣarīmahālakṣmī- mantraNrsimhaṣāpānīyamantra | |
| Narasi mhamantragrahōc- cātana | 4900 |
| cāţana4852Nārasimhasamhita4859Nārāyaṇadigbandhana-Nrsimhakavcamantra4863Nārāyaṇadigbandhana-NrsimhakhadgamālāmantramantramantraMārāyaṇahṛdaya4868NārāyaṇamālāmantraMārāyaṇamālāmantraMārāyaṇamaīlāmantraMārāyaṇamantraMārāyaṇakavacaNārāyaṇāstākṣarīmantra4864Nārāyaṇāstākṣarīmantra4870, 4871Nārāyaṇāstākṣarīmantra4870, 4871Nārāyaṇāstākṣarīmantra4868Nārāyaṇāstākṣarīmantra4868Nārāyaṇāstākṣarīmantra4868Nārāyaṇāstākṣarīmantra4871Nārāyaṇavarmamantra4852 to 4868NatanagōpālamantraNavadūtīmantraMavadūtīmantramantraMarāyaṇāstākṣarīmahālakṣmī-mantraMarāyaṇāstāimantraMārāyaṇāstāimantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantraMārāyaṇāstātamantra | |
| Nārasimhasamhita4859Nārāyaņadigbandhana- mantra4859Nārāyaņadigbandhana- mantra4863Nārāyaņahrdaya4863Nārāyaņahrdaya4864Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamalāmantra4864Nārāyaņamantra4864Nārāyaņakavaca4861 to 4863Nārāyaņāstāksarīmantra4870, 4871Nārāyaņāstātasarā4870, 4871Nārāyaņāstātasarāmantra4868Nārāyaņāstottarašita4868Nārāyaņāstramantra4867Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstātasarā4868Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4868Natanagōpālamantra4855 to 4868Natanagōpālamantra4854, 4855Navādūtīmantra4854, 4855Navāksarīmahālaksmī- mantra4854, 4858Navāksarīmahālaksmī- mantra4858NrsimhasōdasāksarīmantraNrsimhatāpanīyamantra | 4814 |
| Nārāyaņadigbandhana- mantra | 4882 |
| mantra4863Nārāyaņahr daya4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamantra4864Nārāyaņakavaca4861 to 4863Nārāyaņāstākşarīmantra4870, 4871NārāyaņāstottarašītaNārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstottarašīta4868Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nārāyaņāstramantra4871Nrsimhasadaksarāmantra4821Natanagōpālamantra4852Navadūtīmantra4854, 4855Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Nrsimhasōdasāksarīmantra.Nrsimhasōdasāksarīmantra.NrsimhasōdasāksarīmantraNrsimhasōdasāksarīmantra. | 4882 |
| Nārāyaņahrdaya4868 to 4870Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamālāmantra4864Nārāyaņamantra4864Nārāyaņakavaca4861 to 4863Nārāyaņāstāksarīmantra4870, 4871Nārāyaņāstottarašīta4868Nārāyaņāstottarašīta4868Nārāyaņāstottarašīta4868Nārāyaņāstottarašīta4868Nārāyaņāstramantra4868Nārāyaņāstramantra4868Nārāyaņāstramantra4868Nārāyaņāstramantra4871Nārāyaņāstramantra4871Nārāyaņāstramantra4871Nārāyaņāstramantra4871Nārāyaņavarmamantra4855Natanagōpālamantra4854Navadūtīmantra4854Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Navāksarīmahālaksmī- mantra4858Nrsimhasīdastāksarīmālāmantra | 4891 |
| Nārāyaņamālāmantra4864Nrsimhānustubhamantra.4882,Nārāyaņamantra4864Nrsimhānustubhamantra.4882,Nārāyaņakavaca4861 to 4863Nrsimhasahasranāma-Nārāyaņāstāksarīmantra.4870, 4871Nrsimhasahasranāma-Nārāyaņāstöttarašīta4868Nrsimhasadaksaramantra.Nārāyaņāstramantra4870, 4871Nrsimhasadaksaramantra.Nārāyaņāstöttarašīta4868Nrsimhasadaksarāmantra.Nārāyaņāstramantra4865 to 4868Nrsimhasahasrāksarīmantra.Nārāyaņavarmamantra4852 to 4868Nrsimhasahasrāksarīmantra.Natanagōpālamantra4854, 4855Nrsimhasādasksārīmantra.Navadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasādasksarīmantra.Navāksarīmahālaksmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraNasimhāsādaksarīmālāmantra4858 | |
| Nārā yaņamantra4864toNārā yaņā stāk sarīmantra 4861 to 4863Nrsimhasahasranāma-Nārā yaņā stāk sarīmantra4870, 4871stötraNārā yaņā stottarašīta 4868Nrsimhasahasranāma-Nārā yaņā stramantra 4868NrsimhasadaksaramantraNārā yaņā stramantra 4867NrsimhasadaksarāmantraNārā yaņā stramantra 4868NrsimhasahasrāksarīmantraNārā yaņā stramantra 4865toNārā yaņā stramantra 4865Nrsimhasahasrāk sarīmantraNārā yaņa varmamantra 4852Nrsimhasahasrāk sarī-Natanagō pālamantra 48544852Navadātīmantra 48544855Navāk sarīmahālak smī 4858Nrsimhatā panī yamantramantra 4858Nrsimhatā panī yamantra | |
| Nārāyaņākavaca4861 to 4863Nrsimhasahasranāma- stötraNārāyaņāstāksarīmantra.4870, 4871stötraNārāyaņāstottarašīta4868Nrsimhasahasranāma- stötraNārāyaņāstramantra4868Nrsimhasadaksaramantra.Nārāyaņāvarmamantra4871Nrsimhasahasrāksarīmantra.Nārāyaņavarmamantra4851 to 4868Nrsimhasahasrāksarīmantra.Nārāyaņavarmamantra4852Nrsimhasahasrāksarīmantra.Natanagōpālamantra4852vidhānaNavadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasōdašāksarīmantra.Navāksarīmahālaksmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraNaviksarīmahālaksmī- mantra4858Nrsimhatāpanīyamantra | 4897 |
| Nārāyaņāstāksarīmantra.4870, 4871stötrastötraNārāyaņāstottarašīta4868Nrsimhasadaksaramantra.4802,Nārāyaņāstramantra4868Nrsimhasadaksarāmantra.4892,Nārāyaņavarmamantra4871Nrsimhasadaksarāksarīmantra.4892,Nārāyaņavarmamantra4851Nrsimhasahasrāksarīmantra.4892,Natanagōpālamantra4852vidbānaNavadūtīmantra4854,4855Nrsimhasōdašāksarīmantra.Navadūtīmantra4854,4855Nrsimhasōdašāksarīmantra.Navāksarīmahālaksmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraNasimbāyutāksarimālāmantra4858Nrsimhatāpanīyamantra | |
| Näräyanästöttaraśıta4868Nrsimhasadaksaramantra.4892,Näräyanästramantra4871Nrsimhasadaksaramantra.4892,Näräyanavarmamantra4851Nrsimhasahasräksarīmantra.Nrsimhasahasrāksarīmantra.Nārāyanavarmamantra4855 to 4868NrsimhasahasrāksarīNatanagöpālamantra4852vidbānaNavadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasödašāksarīmantra.Navadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasödašāksarīmantra.Navāksarīmahālaksmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraNasimhasā4858Nrsimhatāpanīyamantra | 4882 |
| Nārāyaņāstramantra4871Nārāyaņāvarmamantra4871Nārāyaņavarmamantra4871Nārāyaņavarmamantra4871Natanagōpālamantra4852Navadūtīmantra4852Navadūtīmantra4854Navādķsarīmahālaksmī- mantra1000000000000000000000000000000000000 | 4893 |
| Nārāyaņavarmamantra4865 to 4868Nrsimhasahasrākşarī- vidhānaNaţanagōpālamantra4852vidhānaNavadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasōdaśākşarīmantra.Navākşarīmahālakşmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraNavātsarīmahālakşmī- mantra4858Nrsimhatāpanīyamantra | 4894 |
| Naţanagōpālamantra4852vidbānaNavadūtīmantra4854, 4855Nrsimhasōdašākşarīmantra.Navākşarīmahālakşmī- mantra4858NrsimhatāpanīyamantraMantra4858Nrsimhatāpanīyamantra | , |
| Navadūtīmantra4854,4855Nrsimhasödašāksarīmantra.Navāksarīmahālaksmī- mantraNrsimhatāpanīyamantraNantra4858Nrsimhāyutāksarīmālāmantra | 4895 |
| Navāksarīmahālaksmī- mantra Nrsimhatāpanīyamantra Mantra 4858 | 4893 |
| mantra 4858 Nrsimbāyutāksarimālāmantra | 4884 |
| | 4897 |
| Navāksarīdurgāmahā- | |
| mantra with Nyāsa 4857 | |
| Navamudrāmantra 4856 | |
| Navanītacōragōpālamantra 4855 Padayugamantra 4919 | 4920 |
| Navagrahakalpa 4854 Pādukāmantra | 4930 |
| Navagrahamantra 4852 to 4854 Pādukānjana | |
| Navagrahastötra 4854 Pākalapaţţi | 4930 |
| Navaratnamālā 4902 Pakşatrayōdasīvrata | 4930 4854 |
| Navasiddhamantra 4857 Paksirājasāluvamantra | |
| | 4854 |

vi

INDEX:

| | | | PAGE |
|-------------------------------|-------|-------|------|
| Pañcabāņamantra | ••• | 4907, | 4908 |
| Pañcabă ne śvarīmantra | | 4908, | 4909 |
| Pañcadaśāk ārīmantra | | 4902, | 4903 |
| Pañcadaśīkavaca | | | 4903 |
| Pañcadaśīmūlamantra- | | | |
| vyākhyā | | 4905, | 4906 |
| Pañcākșarīmālāmantra | *** | | 4916 |
| Pañcākṣarīmantra | | 4915, | 4916 |
| Pañcākūvarīmantra | | | 4901 |
| Pañcamukhahanūman- | | | |
| mantra | | 4909, | 4910 |
| Pañcamukhaśarabhasāl | uva- | | |
| mantra | | | 4909 |
| Fañcangarudranyasa | | 4917, | 4918 |
| Pañcapranamantra | | | 4906 |
| Pañcasi nhāsanēśvarī- | | | |
| mantra | | 4914, | 4915 |
| Pañcavaktrahanūmanm | nālā- | | |
| mantra | | 4912, | 4913 |
| Pañcavaktrahanüman. | | | |
| mantra | | 4910, | 4911 |
| Pāņimantra | | | 4928 |
| Pápayyalinga | | | 4764 |
| Parabrahmavidyāmant | ra. | | 4920 |
| Paramagurumantra | | 4920, | 4921 |
| Parāmantra | | | 4924 |
| Parā nibāmantra | | | 4925 |
| Para n esthigurumantra | ••• | 4921, | 4922 |
| Parāprasādamantra | | 4923, | 4924 |
| Parāśā mbhavīmantra | | | 4926 |
| Parāsampuțitamätrkā- | | | |
| mantra | | | 4927 |
| Parāsampuţitamatrka- | | | |
| nyāsa | | | 4927 |
| Paraśurāmamantra | | | 4923 |
| Pārijātāpahārakagōpāl | ā | | |
| mantra | | | 4931 |
| Parjanyahōmavi?hi | | | 4917 |
| Parōmātra ētimantra | | | 4928 |
| Pārthivē śvarasaubhāyy | a- • | | |
| cin tāmaņimahāvidyā | - | | |
| mantra | ••• | | 4931 |
| Pārvatīmuntra | | | 4933 |

| | PAGE |
|--|-------------|
| Parvatīpancāksaramantra | 4932 |
| Pāśupatamantra 4933, | 4934 |
| Pāsupatāstra | 5083 |
| Pāśupatāstramālāman tra | 4937 |
| Pāsupatāstramantra 4934 te | 4936 |
| Pātālogurudamuntra | 4929 |
| Pirdagopālamantra 4937 | , 4938 |
| Pracandabhairavadigban- | |
| dhana | 4945 |
| Pradosapañe Asarimantra. | 4966 |
| Pralayukalobhairavamala- | |
| mantra | 4967 |
| Pralayakālahan ūman- | |
| mantra | 4969 |
| Pralayakālānalabhuirava- | |
| mälämantra | 4969 |
| Pralayaka lavīrabhadra- | |
| | . 4968 |
| Pränapratisthäkalpa | 4831 |
| | , 4970 |
| | , 4973 |
| Pränaprazisthävidhi | 4974 |
| Pranavamantra | 4947 |
| | , 4947 |
| Denter The surface | 4975 |
| Prapañcanyāsa | 4966 |
| Prāsādapuñcak, arīmantra, 4975 te | |
| D = -2 = - | 4979 |
| | 3010 |
| ! rāsāduparāparārāsāda- mantrā 4978 | 4070 |
| | 4979 |
| Praśnalaksana | 4859 |
| Prasūtimantra | 4.970 |
| Fratāpahanūmanmālā- | 10.10 |
| mun!ra | 4949 |
| Pratāpalanūmanmantra. | 4948 |
| Pratāpasundarīmantra | 4948 |
| Pratrkriyāśūlinīdigban. | |
| Phd mamalamantra | 4260 |
| Pratikriydsülinädurga - | |
| vidyāmantra | 4:/50 |
| Pratikriyāśūlinīmantra | 4951 |
| Pratyangirābhadrakālī- | |
| mantra | 4956 |

.

vii

viii

INDEX.

| | 1 |
|---|----------------------------------|
| PAGE Protuctionalization diama 4052 to 4055 | PACE |
| Pratyangirādıgbandhana. 4953 to 4955 Pratyangirākuvaca 4952, 4953 | Rajarajē svarīs odašāks arī- |
| | mantra 5144, 5145 |
| Pratyangirāmālāmantra. 4960, 4961 | Rājarājēśvarīsōđašībrahma- |
| Pratyangirāmantra 4957 to 4959 | vidyā 5145 |
| Pratyangirāmantrapārā- | Rājurājēśvarīkavaca 5140 to 5142 |
| yana 4959 | Rājarājēśvarītripurasun- |
| Pratyangirāparamēśvarī- | darīmantra 5142, 5143 |
| mūlavidyāmabāmantra, 4956 | Rājašyāmalāmantra 5148 |
| Pratyangirāsūkta 4961 to 4964 | Ruktacāmuņdīmantra 5132 |
| Pratyangirāsūktavyākhyā 4965 | Rāmānusmŗti 4929 |
| Prayõgavijai asārāvalī 5107 | Rāmastavarāja 4868 |
| Pūrvāmnāyamantra- | Ranarangabhairara- |
| mālikā 5115, 5138 | mantra 5133 |
| Puindinimantra 4942 | Ranganāthastotra 4868 |
| Pundarīkāksamantra 4938 | Ratipriyāmantra 5133, 5134 |
| Pūrņagiripīthamantra 4944 | Ratnagõpālamantra 5135 |
| Purandarapañcamukha- | Ratnurarşayöpālamantra. 5134 |
| hanumanmantra 4940 | Rgvēda 5128 |
| Puraścaryāsankalpa 4941 | Rudrahōma 4831 |
| Purusasūktamantra 4942 | Rudrakavaca 4929 |
| Pürva idhänyäsa 4944 | Rudrayāmala 4782, 4784, |
| Puşpādhyāya 4929 | 4799, 4800, 4803, |
| Pūtanāstanopātrgöpāla- | 5001, 5003, 5005, |
| mantra 4943 | 5006, 5048, 5049, 5053 |
| P.uspāñjali 5080 | Rudrayāmalatantia 4905 |
| Putraprasadagauri- | |
| mantra | |
| Putrakāmē țisaubhari- | |
| mantra 4929, 4940 | |
| | Śābaramantra 4752 |
| | Şadāmnāya 5080, 5098, |
| and the second se | 5138, 5139, 5143 |
| | Sadāmnāyamantra 5087, |
| Rāghavaikāk aramantra 5136 | 5111 to 5113 |
| | |

| | | | | 0100 |
|----------------------|-------|------|----|--------------|
| Rāghavamantra | | | | 5135 |
| Rājalak, mīhŗdaya | | | | 5147 |
| Rājalak; mīnārāyaņa- | | | | |
| hrdaya | | | | 5 146 |
| Rajamatangimalamantr | ·a. | | | 5139 |
| Rajamātangīmantra | | 5137 | to | 5139 |
| Rājarā, ēsvarīmantra | 6.0.0 | | | 5143 |
| Rājarājēsvarībrahma. | | | | |
| vidyā | • • • | | | 5142 |
| | | | | |

| Sābaramantra | • • • | 4752 |
|-----------------------|---------|------------|
| Şadāmnāya | 5 | 080, 5098, |
| | 5138, 5 | 139, 5143 |
| Şadāmnāyamantra | ••• | 5087, |
| | 511 | 1 to 5113 |
| Śaktipańcāksarimantr | a | 4902 |
| Śāmayya | | 4854 |
| Sanatkumāramantra | | 4790 |
| Saptasati | | 4973 |
| Śarabhasāluvamantra | ••• | 4968 |
| Sarasvatīdvādašanāma | in. | 4902 |
| Sarasvatīmantra | | 4902 |
| Sarasvatīpūjāvidhāna | ٠,٠ ٠ | 4854 |
| Sarvēśalinga (Mājēti) | | 4764 |

| | PAGE |
|---------------------------|-------------|
| Sarvēsalinga (Paņditārā- | |
| dhya) | 4807 |
| Satarudriyajapahömär- | |
| cānābhisēkanyāsavidhi. | 4831 |
| Şatpañcāsikā | 4809 |
| Saundaryalahari | 4830, 4902, |
| · · · | 4973 |
| Śivanāmāvali | 4929 |
| Śivapañcāksarīmantra | 4831 |
| Śivāşţöttaraśatanamavali. | 4929 |
| Śivasahasranāmāvali | 4831 |
| Śivastötra | 4429 |
| Skāndapurāņa | 5023, 5024 |
| Somavāravratodyāpana | 4917 |
| Srībhāgavata | 4939 |
| Śrīsūkta | 4973 |
| Śrividyāmālāmantra | 4753 |
| Śrīvidyāmantra | 5021 |
| Śrīvidyānandanātha | 4930 |
| Srīvidyațikā | 4905, 4906 |
| Subrahmaņyāşţöttara- | |
| śatanämāvali | 4752 |
| Sudarśanakavaca | 4818 |
| Sūryakavaca | 4818 |
| Suryanārāyaņasaptāryā- | |
| stōtra · | 4831 |
| Suryanārayaņastotra | 4868 |
| Svalpajātaka | 4859 |
| Śvasakāśakarmavipāka | 4854 |
| Śyāmalādaņdaka | 4902 |
| | |
| | |
| | |
| Tājakasāra | 5003 |
| Tattvatrayaśödhana | 4931 |
| Trailōkyamaṅgalakavaca | 4789, 4790 |
| Tailōkyamōhanarāma- | |
| kavaca | 4791, 4792 |
| Trcamantra | 4780 |
| Tripurasundarīkavaca | 4782, 4783 |
| | |

| | | | PAGE |
|------------------------|-----|---------|------|
| Tripurasundarīmantra. | | | |
| nyāsa | | | 4786 |
| Tripurasundaritraslöky | | | |
| mõha n akavaca | | 4783 to | 4785 |
| Tripurasundaryaştöttar | | | |
| śata' | | | 4902 |
| Tripuțimantra | | 4781, | 4782 |
| Trividhacakranirnaya | *** | | 4859 |
| Trivikramagayatri | | | 4789 |
| Tryambakamantra | | 4792 to | 4794 |
| Tryambakamrtyuñjaya | | | |
| mantra [·] | | | 4795 |
| Tryambakarudrakavaca | | | 4796 |
| Tulasīkavaca | | 4779, | 4780 |
| Turyagāyatrīmantra | | 4778, | |
| Turiyāmbāmantra | | | 4777 |
| Tvaritāmantra | | 4797 to | 4799 |
| Ivaritā pārvatīm antra | | | 4797 |
| Tiraskarinīmantra | | 4775, | 4776 |
| Tārakabrahmamantra | | , | 4774 |
| Tattvanyāsa | | 4772, | |
| | | , | 2,.0 |

| Uddā narēsvaratantra | | 4814, 4815, |
|----------------------|-----|-------------|
| | | 4822, 4823 |
| Upamanyustötra | *** | 4830 |

| Vämakëśvaratantra | 5001, 5002 |
|--------------------------|------------|
| Vāmēsvaratantra | 5141, 5142 |
| Vanadurgāmahāmantra | 4902 |
| Vasisthästaka | 4928 |
| Vidyādašaka | 4902 |
| Virabhadrabadabānala- | |
| mālāmantra | 4818 |
| Virabhadramantra | 5137 |
| Virabhadrāstaka | 4928 |
| Virançsimhamantra | 4814 |
| Viraśaivapūjāsankalpa | 4929 |
| Vīrēšalinga (Śivatenka). | 4807 |
| Vişnvaşţaka | 4929 |
| Vișņu pūjāvidhāna | 4854 |

в

Iripurasundarīmantra ...

mantra 4786 to 4788

4785

.

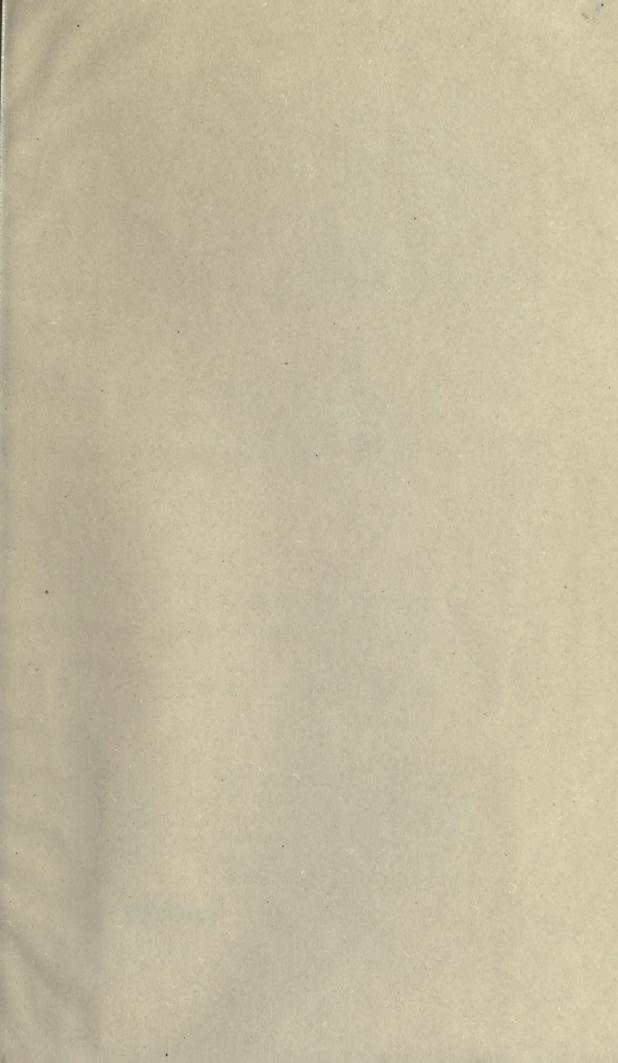
Tripurasundarīmālā-

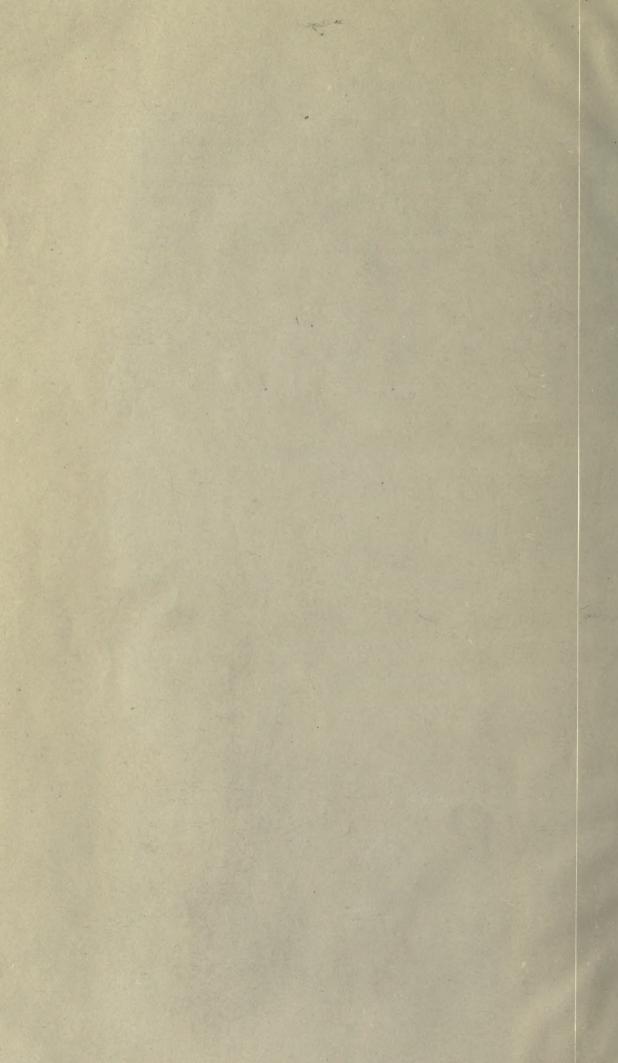
ix

| | PAGE | | PAGE |
|-------------------------|------|-------------------------|------|
| Ya-imā-vi śvēti-sūkta- | | Yantrakacchaputa | 4973 |
| mantra | 5128 | Yantrapratisthāmantra | 5128 |
| Yamalārjunabhañjanagō- | | Yavanahōrā | 4859 |
| mālumantus | 5129 | Yōg in īnyāsa | 5131 |
| | 0129 | Yo-jāta-iti-sūktamantra | 5132 |
| Yamunājalavihāragōpāla- | - | Yuktamätrkäsarasvati- | |
| mantra | 4136 | mantra | 5130 |
| mantea | 4136 | | 5130 |

26

oto





FOR USE IN LIBRARY ONLY

PLEASE DO NOT REMOVE CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY

| Z | Madras, India. Government |
|--------|-----------------------------|
| 6621 | Oriental Manuscript Library |
| M186S3 | A descriptive catalogue of |
| 1912 | the Sanskrit manuscripts in |
| v.13 | the Government Oriental |
| | Manuscripts Library, Madras |

